SUBJECT INDEX OF THE BIBLE

बाइबल की विषयावली

अर्थात्

धर्मपुस्तक के भिन्न २ विषयों पर खोज करने का विशेष सूचीपत्र ।

जो

प्रसिद्ध अङ्गरेज़ी इन्डेक्सों की सहायता से तैयार की गई है ।

संग्रहकर्त्ता—

प्रभु सेवक यूनस सिंह ।

लन्डन मिशन अल्मोड़ा ।

THE NORTH INDIA CHRISTIAN TRACT AND BOOK SOCIETY, ALLAHABAD.

1st *Edition*
1000 *Copies.*

1925

Price 12 *annas.*
दाम १२ आना ।

भूमिका ।

बाइबल का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिये अंग्रेजी भाषा में विशेष कर दो पुस्तकें काम में लाई जाती हैं। एक को कंकार्डेन्स और दूसरी को इन्डेक्स कहते हैं। कंकार्डेन्स में शब्दों की सूची हुआ करती है जिसकी सहायता से इस बात का पता चलता है कि अमुक शब्द अथवा पद कहां पाया जाता है। इन्डेक्स में विषयों की सूची होती है और यह दिखाया जाता है कि अमुक विषय पर क्या २ कहा गया है। हाल ही में हिन्दी बाइबल की एक कंकार्डेन्स पुस्तक "बाइबल की शब्दावली" नाम से प्रकाशित की गई है आशा है कि हिन्दी प्रेमी उस पुस्तक से उचित लाभ उठावेंगे।

यह पुस्तक बाइबल के विषयों का इन्डेक्स है और "बाइबल की विषयावली" नाम से आपके साम्हने रखी जाती है। इस पुस्तक की सहायता से आप को किसी विषय का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सकता है। मान लिया कि आप को "विश्वास" पर व्याख्यान देना है और कंकार्डेन्स (शब्दावली) के द्वारा आपको वह पद भी मिल गया है जिस में "विश्वास" शब्द का प्रयोग किया गया है परन्तु अभी तक आप को इस बात का ज्ञान नहीं कि सम्पूर्ण बाइबल में विश्वास के विषय में क्या शिक्षा दी गई है। सो यदि आप के पास यह दूसरी पुस्तक हो तो आप इसके द्वारा "विश्वास" शब्द के नीचे वे सब बातें लिखी पावेंगे और कुछ ही समय के परिश्रम से विश्वास के विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेंगे।

इस पुस्तक के काम में लाने के विषय में केवल इतना

कहना है कि वर्त्तमान समय में किसी एक बात के लिये कितने एक शब्द काम में लाये जाते हैं अर्थात कोई "विवेक" कहता है और कोई "अंतःकरण" सो जब एक शब्द के नीचे पूरा २ पता न चले तो दूसरा शब्द ढूंढ़ना चाहिये। इसी प्रकार "भविष्यद्वक्ता" को लीजिये आजकल कोई २ इस के स्थान पर "नबी" के शब्द को प्रयोग कर रहे हैं सो यदि "नबी" के नीचे इस विषय में कुछ न लिखा हो तो भविष्यद्वक्ता शब्द से आपका मनोर्थ सिद्ध हो जाएगा।

प्रिय पाठक यह पुस्तक बड़े परिश्रम से तैयार की गई है और इसके तैयार करने में प्रसिद्ध अंग्रेज़ी बाइबल इन्डेक्सों की सहायता ली गई है। यद्यपि यह अंग्रेज़ी बाइबल के समान बाइबल के संग २ ही छापी नहीं गई है तथापि आशा है कि पाठकगण इसको बाइबल के संग ही स्थान देंगे। यदि इस लेखक की यह तुच्छ भेंट ग्रहण हो तो शीघ्र ही "बाइबल की नामावली" पुस्तक जिसमें बाइबल के नामों की सूची होगी पाठकों की भेट की जायेगी। अन्त में यही प्रार्थना है कि जो कोई भी इस पुस्तक को काम में लगावे वह बाइबल के अक्षय भण्डार के धन से धनी हो जाये।

अलमोड़ा।

प्रभु में आपका सेवक-

यूनससिंह।

बाइबल-विषय-सूची।

अं

अंगुली—देखो, उंगली।

अंगूठा—काटा गया. न्यायी १:७. देखो निर्दयता।

अंगूर—खट्टे—यहेज १८:२. इकट्ठा करना. लैव्य १९:१०. व्यवस्था. २३:२४; २४:२०,२१।

—**की बेल**—परमेश्वर की मण्डली से तुलना की गई. भजन ८०:८-१७. यश. ५:१-७; २७:२,३. यिर्म. २:२१. यहेज. १९:१०-१४. मत्ती २१:३३-४०. मार्क १२:१,२. लूक २०:९,१०; मसीह के लोग डालियां हैं, योहन १५:१-८. बुरी व्यवस्था ३२:३२. यश. ५:४. यिर्म. २:२१. यहेज. १७:३-१०।

—**की बारी**—नूह ने लगाई. उत्प. ९:२०. नाबोत की. १ राजा २१. का दृष्टान्त. मत्ती २०:१; २१:३३; मार्क. १२:१; लूक २०:९. के विषय में नियम. निर्ग. २२:५; २३:११. लैव्य. १९:१०; २५:३. व्यवस्था २०:६; २२:९; २३:२४; २४:२१।

—**इकट्ठा करने का समय**—खुशी. न्यायी. ९:२७. यश. १६:९, १०. यिर्म. २५:३०; ४८:३३।

अंतःकरण—पाप के विषय में दोषी ठहराता है. उत्प. ३:१०; ४:१३; ४२:२१; १ शम. २४:५। भजन ३२:३. नीति. २०:२७. मत्ती २७:६. लूक ९:७. योहन ८:९. रोम २:१५।

—विश्वास से पवित्र किया जाता है. १ तिम. १:१९; ३:९; २ तिम. १:३. इब्र॰ ९:१४; १०:२,२२; १३:१८; १ पित. ३:१६।

—भले का फल—प्रेरित २४:१६. रोम. १३:५; १४:२२; १ कर. १:१२. १ पित. २:१९।

—दूसरों का आदर किया जाए. रोम. २४:२१; १ कर. ८; १०:२८.

—अपवित्र किया हुआ. १ तिम. ४:२. तीत. १:१५.

—मूर्ख. प्रेरित. २६:६. रोम १०:२।

अंधेर—देखो—सताना, अन्याय।

आंख—परमेश्वर की. व्यवस्था ११:१२. २ इति. १६:९. नीति. १५:३.

—धर्मियों पर. एज्रा. ५:५. भजन. ३२:८; ३३:१८; ३४:१५; १ पित. ३:१२।

—दण्ड देते हुए निकालना. गिन. १६:१४. न्यायी १६:२१; १ शम. ११:२; २ राजा २५:७. यिर्म. ३६:७; ५२:११।

—अगर ठोकर खिलाये तो निकाल दो. मत्ती. ५:२९; १८:९; मार्क. ९:४७।

—देखी सेवा—मना की गई. इफिसी. ६:६; कल. ३:२२।

आंख—देखो, आंख।

अ

अखमीरी—रोटी—कब काम में लाई जावे। निर्गमन १२:३९; १३:७; २३:१५; लैव्य. २:४; ७:१२; ८:२६; गिनती ६:१९।

—चिन्ह—१ कुर. ५:७।

अगनी—देखो, आग।

अचानक—सेना को अचानक घेर लेना—यहोशू ११:७; न्यायियों ७:१९-२२. १ शमूएल ३०:१६।

अठवारा—देखो, सप्ताह।

अतिथि सेवा—की आज्ञा. रोमा १२:१३; तीतुस १:८; इब्र. १३:२; १ पितर ४:९।

—उदाहरण—इब्राहीम की. उत्पत्ति १८; लूत की. उत्पत्ति १६; लाबान की उत्पत्ति २४:३१; यत्रू की. निर्गमन २:२०; मनूहा की. न्यायी १३:१५; शमूएल की १ शम. ९:२२; दाऊद की. २ शम. ६:१९; बर्जिलिया. २ शम. १७:२७, १९:३२; शुनीमत की. २ राजा ४:८; नहेम्याह. नह. ५:१८; अय्यूब की. ११:१७; जक्कई की. लूक १९:१८; लुदिया की. प्रेरित १६:१५; पबलिय की. प्रेरित २८:७; गायस की. ३ योहन. ५ ।

अदण्ड—दुष्ट समझते हैं कि वे दण्ड न पायेंगे. अय्यूब २२:१३; भजन १०:४-६, ११ १३; १४:१; ५०:२१; ५६:७; ६५:५; ७३:११; ९४:७; सभोपदेशक ८:११; यशायाह २९:१५; ४७.१०; यहेजकेल. ८:१२; ६:९ ।

अद्भुत—मसीह को नाम दिया गया. यशाया ६:६; (देखो निर्गमन १५:११; न्यायी १३:१८; यशाया २५:१) ।

अदृढ़ता—देखो, अयोग्यता ।

अधर्म—के विरुद्ध कहा गया. मीका २:१-३; हबक्क. २:९:१३. देखो, पाप ।

अधर्मी—उसके आचार और व्यवहार. भजन. ५:९; १०:२-११; ११:२; १२:२-४; १४:२-४; १७:९-१४; ५६:२-६; ५७:४-६; ५८:१-५; ५९: १-७; ६४:१-६; ७१:१०: नीति. ४:१४-१७. सभोपदेशक ९:१८ ।

—वह ईश्वर से नहीं डरता. भजन. ३६:१ ।

—उसका दुःख. अय्यूब १५:२०; १८:५-२१. यशायाह ५७:२०; ५९: ९-११ ।

—की याद घृणित है. भजन ६:५. नीति १०:७ ।

—का दण्ड. अय्यूब २१:१८; भजन १:४; ३५:५; ८३:१३; यशायाह ५:२४; २९:५; होशे १३:३; मलाकी ४:१; मत्ती ३:१२; लूक ३:१७;

—उनकी प्रार्थना सुनी नहीं जाती. देखो प्रार्थना।

अधिकार—उनके लिये उचित आदर जिन को अधिकार है. निर्गमन २२:२८; अय्यूब ३४:१८; नीति २४:२१; सभोपदेशक १०:४, २०;

अनुवाद—(भेद खोलना—मतलब बताना) स्वप्नों का भेद खोलना ईश्वर का दान है. उत्पत्ति ४०:८. दानियेल २:२७ (गिनती १२: ६; अय्यूब ३३:१५, १६) देखो स्वप्न, दर्शन ।

अनन्त जीवन—मसीह में पाया जाता है. योहन ३:१५,१६,३६; ४: १०; ५:२४; ६:४७,५४; १०:२८; १७:२; रोम. ५:१०; ६:४-११. २३; १ योहन ५:११, २० ।

—प्रभु मसीह के द्वारा परमेश्वर का दान है. भजन १३३:३. रोम. ६:२३. योहन ६:२७,५४; १ योहन १:२; २:२५; यहूदा २१. प्रकाशित २:७; २१:६ ।

—की आशा. मत्ती १९:२६; २५:४६; मार्क १०:३०. लूक १८:३०. रोम ६:२२; गलाती ६:८; तीतुस १:२; ३:७ । .

—को पाने के लिये क्या करना चाहिये, मत्ती १९:१६. मार्क १०: १७. लूक १०:२५; १८:१८ ।

—परमेश्वर को जानना है. योहन १७:३.

—एक बड़ा भंडार है. योहन ३:१५,३६; ६:२७-५४; १०:२८; ११:२५. २६; रोम. ६:११,२३. इफसी २:६; १ तिम. ६:१२,१९; १ योहन ५:११, १३ ।

अन्धियारा—उज्याले से अलग किया गया. उत्पत्ति १:२,५; यशा. ४५:७ ।

—अलौकिक. उत्पत्ति. १५:१२, निर्गमन १०:२१; १४:२०. यहेशू. २४:७. प्रकाशित. ८:१२; ९:२; १६:१०. क्रूश के समय. लूक २३:४४ ।

—दंड का चिन्ह. मत्ती. ८:१२; २२:१३; २ पितर २:४,१७; यहूदा ६ ।

—मन का. अय्यूब ३७:१९. नीति २:१३. सभोपदेशक २:१४; यशा. ८:२२; ९:२; ४२:७. योएल २:२. लूक १:७९. योहन १:५; ३:१९; ८:१२; १२:२५; १ योहन १:५; २:९. रोमी १३:१२. कर. ४:५ २ कर. ४:६; ६:१४; १ थिस. ५:४; १ पितर २:९ ।

—शक्तियां. लूक २२:५३. इफिसी ५:११; ६:१२. कल. १:१३ ।

अन्धा—उसके विषय में नियम. लैव्य व्यवस्था. १९:१४. व्यवस्था. २७:१८ ।

—अन्धे—यिरुशलीम से निकाले गये. २ शम. ५:६ ।

—लोग अन्धे किये गये. सूरियानी. २ राजा ६:१८. पावल. प्रेरित ९:८ इलिमास. प्रेरित. १३:११ ।

—प्रभु मसीह ने चंगा किया. मत्ती. ९:२७; १२:२२; २०:३०. मार्क ८:२२; १०:४६. लूक ४:१८; ७:२१. योहन. ९ ।

—पन—आत्मिक. भजन ८२:५ यशा ५६:१०; ५९:९. मीका ३:११. मत्ती ६:२३; १५:१४; २३:१६; योहन १:५; ३:१९; ९:४१ १ कर. २:१४; २ पितर १:९; १ योहन २:९. प्रका. ३:१७ ।

—दण्ड से अन्धे किये गये. भजन ६९:२३. यशा. ६:९; २९:९; ४४:१८. मत्ती १३:१३; योहन १२:४०. प्रेरित २८:२६. रोम. ११; २ कर. ३:१५; ४:४ ।

—पन से दूर होने की प्रार्थना. भजन १३:३. ११९:१८ ।

—पन—प्रभु ने दूर किया. २ कर. ३:१४; ४:६. इफिसी ५:८; कुल. १:१३; १ थिस. ५:४; १ पितर २:९ ।

अन्धेर—देखो, सताना, अन्याय ।

अन्न—देखो—भोजन ।

अन्यजाति—देखो, अन्यदेशी ।

अन्यदेशी—उनकी उत्पत्ति. उत्पत्ति १०:५ ।

—उनकी बुरी दशा. रोम. १:२१; १ कर. १२:२; इफिसी २; ४:१७ १ थिस. ४:५ ।

—उन पर परमेश्वर की आज्ञा. योएल ३:९ ।

—उनके विश्वास करने के विषय में भविष्यद्वाक्य. यशा ११:१०; ४२:१; ४९:६ (मत्ती १२:१८. लूक २:३२. प्रेरित १३:४७) यशा. ६२:२. यिर्मया. १६:१९. होशे. २:२३. मलाकी १:११. मत्ती ८:११ ।

—भविष्यद्वाक्य पूरे हुए. योहन १०:१६; प्रेरित ८:३७; १०:१४; १५; रोम. ९ इत्यादि. इफिसी २; १ थिस. १:१ ।

अन्याय—मना किया गया. निर्गमन २२:२१; २३:२,६. लैव्य १९:१५. व्यवस्था १:१७; १६:१९; २४:१७; २७:१९. अय्यूब ३१:१३।

—रद्द किया गया. नीति १८.५; २८:२१; २९:७. सभोपदेशक ५:८।

—डांटा गया. भजन ८२. यशया १:२३; ५:२३; १०:१. यिर्मयाह ५:२८; २१:१२; २२:३,१३-१९. विलाप. ३:३४-३६. यहेज. २२:२९. मीकाह ३:६. जक. ७:९. मलाकी. ३:५. लूक १६:१०।

—देखो—दुःख देना, सताना।

—के संग राजा को क्या करना चाहिये. भजन १:१.।

—देखो अधर्म।

अनर्थ—देखो—व्यर्थ।

अपना इनकार—नीति २३:२. यिर्मयाह ३५; लूक ३:११; १४:३३. प्रेरित २:४५; २०:२४. रोम. ६:१२; ८:१३; १४:२०; १५:१. गल. ५:२४. फिल. २:४. तीत २:१२. इब्र. ११:२४; १ पितर २:११।

—मसीह का अपना इनकार करना. मत्ती ४:८; ८:२०. रोम. १५:३. फिल. २:६. देखो ख्रीष्ट।

—प्रभु ने शिष्यों को इसकी शिक्षा दी. मत्ती १०:३८; १६:२४. मार्क ८:३४. लूक ९:२३।

—उदाहरण—इब्राहीम. इब्र. ११:८. मूसा इब्र. ११:२४. रैकाबी यर्म. ३५. शिष्य. प्रेरित २:४५. पावल. प्रेरित २०:२४; १ कर. ६:१९ फिल. ३:७।

अपनी इच्छा—डांटी गई है. भजन ७५:५; तीत. १:७; २ पितर २:१०।

अपनी परख—इसकी आज्ञा दी गई है. १ कर. ११:२८; २ कर. १३:५ (भजन ४:४. विलाप ३:४०)।

अपनी पसन्द—भजन ७५:५. नीति ३:५; २६:१२. यश. ५:२१. यर्म. ९:२३. होशे १२:८. लूक १८:११ रोम १:२२; ११:२५; १२:१६. प्रकाश ३:१७; १८:७।

अपने को क्रूश पर चढ़ाना—रोम ६:६; ८:१३. १ कर. ४:९; १५:३१; २ कर. १:५-९; ४:१०-१२. गल. २:२०; ५:२४; ६:१४,१७. फिल. ३:१०. कल. १:२४; ३:५; २ तिम. २:११; १ पितर ४:१३।

अपने को बश में रखना—नीति १२:१६; १४:१७,२९; १५:१; १६:३२; २३:२; २५:८; २९:११,२०. सभोपदेशक ७:९. प्रेरित २५:२५. १ कर. ९:२५. गल. ५:२३. तीत. १:८. याकूब १:१९; २ पितर १:६।

अपने विषय में ज्ञान रखना—अय्यूब १३:२३।

—बढ़ाया जाये. मत्ती ७:३-५. लूक ६:४१,४२।

अपमान—देखो—निन्दा।

अपराध—के संग क्या करना चाहिये. नीति १०:१२; १७:९ (मत्ती १८:१५. गल ६:१)।

—मान लेने की शिक्षा—याकूब ५:१६।

अपराधी—देखो, दुष्ट।

अपवित्रता—भीतर से निकलती है. मत्ती १५:१०-२०. मार्क ७:१५-२३.

—बात में मना की गई. इफिसी ४:२९; ५:४ कल. ३:८ (मत्ती १२:३४-३८. लूक ६:४५. याकूब ३:२।

—परमेश्वर के नाम की. २ इतिहास ३३:७; ३६:१४. यर्म. ७:३०. यहेज ७:२१,२२; ८:५; ४४:७. दान. ११:३१ सपन ३:४. प्रेरित २१:२८।

—वेदियों की. निर्गमन २०:२५; २ राजा २३:६ मल. १:७।

—सबत की. यश. ५६:२,६. यहेज. २०:१३,१६,२१,२४।

—देखो, अशुद्ध।

अपस्वार्थ—डांटा गया. यश. ५६:११. रोम. १५:१; १ कर. १०:२४; २ कर. ५:१५. फिल. २:४,२१; २ तिम. ३:२; याकूब २:८।

अविवाहित—रहना कब भला है। १ कर. ७:१-४०।

अविश्वास—पाप है. योहन १६:९. तीत. १:१५. रोम. ११:३२; १ योहन ५:१०।

—क्योंकर होता है—मार्क १६:१४; लूक ८:१२; २४:२५. योहन ५:३८; ८:४५; १२:३९; १०:२६; प्रेरित १९:९. २ कर. ४:४; इफिसी २:२; २ थिस. २:१२; इब्र. ३:१२।

—दुनिया इसके कारण डांटी जाती है. योहन ३:१८; ५:२४।

—का असर, १ राजा १७:१८; २ राजा ७:२; भजन ७८:१९; १०६:२४. यश. ५३:१. मत्ती २४:११. योहन १२:३७; १६:९. प्रेरित १४:२; १९:९. इब्र. ३:१२।

—के उदाहरण—हव्वा. उत्पत्ति ३:४; मूसा और हारून. गिनती २०:१२. इस्राएली. गिनती १३:१४. व्यवस्था. ९:२३. भजन ७८:१०६. शोमरोन का प्रधान. २ राजा ७:२,१७. जिखरियाह. लूक १:२०. थोमा. योहन २०:२५. यहूदी. मत्ती १३:५७. लूक २२:६७. योहन ५:३८. ७:५. १२:३७. प्रेरित १४:२; १७:५. रोम. ३:३; ११:२०. इब्र. ३:१६।

—उनके विषय में चितावनी. मत्ती १०:१७. योहन २०:२७-२९. इब्र. ३:१२; ४:११।

अविश्वासी—उनका संग छोड़ना चाहिये. रोम. १६:१७; २ कर. ६:१४ फिल. ३:२; १ तिम. ६:५।

—उनका दंड. मार्क १६:१६. योहन ३:१८: ८:२४; रोम. ११:२०. इफिसी ५:६; २ थिस. २:१२ इब्र. ३:१६; ४:११; ११:६; याकूब ५; २ पितर २; ३; यहूदा ५; प्रकाश २१:८।

अभिमान—देखो—घमन्ड, अहंकार।

अभिलाषा—देखो, इच्छा।

अभिषिक्त—देखो, चुना हुआ।

अभिषेक—देखो—खीष्ट. उसके विरुद्ध उठना भजन २:१-५; ४६:६; प्रेरित ४:२५, २६।

—परमेश्वर उसका आदर करता है. १ शम. २४:६; २६:९,११; २ शम. १:१४-१६, २१।

—करना. राजा को ३ शम. १०:१; १६:१३; २ शम. ५:३; १ राजा १:३९; २ राजा ९:३, ६; ११:१२; १ इतिहास ११:३; २९:२२; २ इतिहास २३:११।

पुजारी का (याजक का) देखो. पुजारी व याजक।

—भविष्यद्वक्ता का. १ राजा १९:१६।

—प्रभु की देह को मत्ती २६:६-१३; मार्क १४:३-६; लूक ७:३७-५०; २३:५६; २४:१; योहन ११:२; १२:३-९, १९:३८-४० ।

—आत्मा का. २ कर. १:२१,२२; १ योहन २:२०, २७. देखो भजन ४५:७; इब्र. १:६ ।

—आनन्द का चिन्ह—२ शम. १२:२०; १४:२; भजन २३:५; ४५:७; १०४:१५, यशायाह ६१:३ ।

—करने का तेल—किस २ वस्तु से बनता है. निर्गमन ३०:२२-३३; ३७:२९ ।

अमर—अमरता—परमेश्वर की. १ तिम. १:१७; ६:१६ ।

—मनुष्यों की. रोम. २:७; १ कर. १५:५३ ।

—पुराने नियमानुसार आशा. अय्यूब १९:२३-२७; भजन १६:१०-११ १७:१५; ७३:२२; दान. १२:२. अय्यूब १३:१५; भजन २३:४; ३७:३७. नीति १०:२८; ११:४,७,८; १२:२८; १४:३२; यशा: ५७:१,२ ।

—इसी लिये नाशमान अविनाश को पहिनता है. १ कर. १५:५३, ५४; २ कर. ५:४ ।

—सुसमाचार के द्वारा प्रकाश में लाया गया. २ तिम. १:१० ।

अमलदारी—मुल्की और धार्मिक. २ इतिहास १९:११. मिली हुई. १ इतिहास २६:२९-३२ ।

अयोग्यता—अय्यूब ४:५; यर्म. ३७:१६-२१; ३८:१४-२८ ।

अर्थ—देखो, अनुवाद, स्वप्न ।

अर्धांगी—मसीह ने चंगा किया. मत्ती ४:२४; ८:६; ९:२. मार्क ८:७; ९:३३ ।

—शिष्यों ने चंगा किया. प्रेरित. ८:७; ९:३३ ।

अर्पण—देखो, संस्कार, चढ़ाना ।

अवकाश—देखो, अवसर, समय ।

अशुद्ध—आत्मा—देखो, भूत, अपवित्रता ।

—पशु. लैव्य. ११; २०:२५; व्यवस्था. १४:३ ।

—वचन, दूर किया जाय. कल. ३:८ ।

अशुद्धता—के विषय में नियम. लैव्य. ५; ७; ११; १२; १५; २२. गिनती. ५; १९. व्यवस्था २३:१०; २४:१. देखो, व्यवस्था २७:२०-२३. नीति ६:२३-३५; ७:६-२७; ९:१३-१८ ।

असन्तोष—एस्तेर. ५:१३. नीति ६:३४,३५ ।

—डांटा गया. योहन ४:४-१० देखो, कुड़कुड़ाना ।

असमान्य अधिकार—इसको खोने का भय. मत्ती ५:१५,१६; ८: ११,१२; ११:२२-२४; १२:४१-४५; २२:१-१० लूक ४:२३-२७; ८: १६; ११:२४-२६,३१,३२; १३:२८, ३०; १४:१५-२४; १७:१७; १९: २०-२६; रोम २:१७-२९; ६:१,२; ११:१७-२२. इब्र. ६:४-८; १०:२६-६०, २ पितर २:२०-२२ ।

—आत्मिक—उसका मूल्य. रोम ३:१-३; ४:१-११ ।

—अयोग्य को देना उचित नहीं. मत्ती ७:६. प्रेरित १३:४६; १८:६; २८:२४-२८ ।

—संसारिक. प्रेरित. १६:३७; २२:२५ ।

असत्य—देखो, झूठ ।

असर—दबाव—अखसी. यहोशू २४:३१. न्यायी २:७ प्रेरित २७:२९. २ पितर. १:१३ १५ ।

अस्वीकार—देखो, रद्दी करना ।

अस्त्र—जो परखे नहीं गये उनको उठाने से हानि. १ शम. १७:३९ ।

—आत्मिक—रोम. ६:१३; १३:१२; २ कर. ६:७; १०:४; इफिसी ६:१७ ।

अहंकार—देखो, अहङ्कार ।

अहङ्कार—डांटा गया—अय्यूब ११:१२; नीति ३:७; १२:१५; १४:१२; १५:३२; १६:२५; २०:६; २१:२; २५:२७; २६:५,१२,१६; २८:११; ३०:१-५,१२,१३. यश. ५:२१; १०:१२,१३; १९:११. यम. ८:८. रोम. ११:२५; १२:१६ ।

अक्षय—अक्षय धन. लूक. १२:३३ ।

—अक्षय मुकुट. १ पितर. ५:४ ।

अज्ञानता—से जो पाप हैं उनके लिये प्रायश्चित्त. लैव्य ४; गिनती १५:२२ ।

—से प्रभु को क्रूश पर चढ़ाया. लूक २३:४३; प्रेरित ३:१७ ।

—से जो अपराध हो उनके लिये क्षमा. गिनती १५:२५; लूक २३: ३४, योहन ९:४१; १५:२२,२४. प्रेरित १७:३०; १ तिम. १:१३; इब्र. ५:२ (रोम. ३:२५) ।

—का असर. भजन ७३:२२; यश. ५६:१०-१२. रोम. १०:३; ११:२५; २ कर. ३:१४. इफिसी ४:१८. १ थिस. ४:५; १ पितर १:१४ ।

—डांटी गई. १ कर. १४:३८ ।

आ

आकाश—देखो, स्वर्ग ।

आग—का खम्भा, देखो, खम्भा. निर्गमन १३:२१. नहेम. ९:१२.

—में परमेश्वर का प्रगट होना. निर्गमन ३:२; १३:२१; १९:१८. व्यवस्था. ४:१२ (इब्र. १२:२९) २ शम. २२:१३. यश. ४:५; यहेज. १:४. दान. ७:१०. मल. ३:२; मत्ती ३:११; प्रकाश. १:१४; ४:५ ।

—शुद्ध करनेहारी—भजन ६६:१०. यश. ४८:१०. मल. ३:२. मार्क ९:४९; १ कर. ३:१३ ।

—बदला लेनेहारी. उत्पत्ति १९:२४. लैव्य. १०:२. गिनती ११:१०; १६:३५; २ राजा १:१०. मत्ती १३:४०-४२; २५:४१. मार्क ९:४३, ४६. लूक १७:२९; २ थिस. १:८. यहूदा ७. प्रकाश ८:८. २०:९, १०,१४; २१:८ ।

—परमेश्वर के वचन का चिन्ह. भजन ३९:३. यर्म. २०:९; २३:२९; प्रेरित २:३ ।

—भेंट जलाने के लिये. उत्पत्ति १५:१७. लैव्य ९:२४; न्यायी १३:२०; १ राजा १८:३८; २ इतिहास ७:१ ।

—सबत के दिन न जलाई जाये. निर्ग. ३५:३; १६:२३ ।

—से जो हानि हो जाये. उत्प. १९:२४. निर्ग. ९:२३ लैव्य. १०;

गिनती ११:१; १६:३५; २ राजा १:१०. आमोस ७:४; २ थिस. १:८; प्रका. ८८।

—नरक की सदा लौं जलनेहारी. व्यवस्था ३२:२२. यश. ३३:१४; ६६:२४: मार्क. ९:४४. यहूदा ७. प्रका. २०:१०।

—शिमशोन ने पलिश्तियों के खेतों में लगाई. न्यायी १५:५.

—बेदी की जो कभी न बुझाई जाए. लैव्य ६:१२,१३।

—और प्रकार की न जलाई जावे. निर्ग ३०:९ लैव्य १०:१।

—परमेश्वर भस्म करनेहारी आग है. इब्र. १२:२९।

आगे से ठहराना—धर्मियों को. रोम ८:२९,३०; ९:७-२८. इफिसी १:५-११।

—देखो, चुनना।

आगे बढ़ना—तरक्की करना—पवित्रताई में. २ कर. ३:१८, १०:५; १३:९: इफिसी ४:१५. फिल. १:६,९ ११; ३:१२-१४. कल १:१० १ थिस. ३:१२; ४:१,१०; २ थिस. १:३; १ पितर १:५-८; ३:१८।

आचरण—खीष्टियानों का. फिल. १:२७।

आटा—गेहूं का, बलिदान में काम में लाया जाता था. निर्ग. २९:२; लैव्य. २:२।

आत्म घात—अहीतोपेल का. २ शम. १७:२३. यहूदा का. मत्ती २७:; प्रेरित १:१८।

आत्मा—पवित्र आत्मा, ईश्वर का आत्मा।

—**उसका मनुष्यत्व**—अनादि. इब्र. ९:१४. सर्वव्यापक. भजन १३९:७-१३. सर्वज्ञानी १ कर. २:१०. सर्वशक्तिमान. लूक १:३५ रोम. १५:१९. महिमा का और ईश्वर का आत्मा १ पितर ४: १४. नये जन्म का देनेहारा. योहन ३:५, ६ (१ योहन ५:४) धर्मपुस्तक का लिखवानेहारा २ तिम. ३:१६ (२ पितर १:११) ज्ञान का मूल. यश. ११:२; योहन १४:२६; १६:१३; १ कर. १२:८. आश्चर्यमय शक्ति का देनेहारा. मत्ती १२:२८ (लूक ११:२०).

प्रेरित १९:११ (रोम १५:१९). उसका सेवकों को चुनना और भेजना. प्रेरित. १३:२,४ (मत्ती स ९:३८ प्रेरित २०:२८)।

—इस बात के विषय में बताता है कि सुसमाचार कहां प्रचार किया जाये. प्रेरित १६:६; ७:१०।

—धर्मी पुरुषों के भीतर वास करता. योहन १४:१७ (१ कर. १४:२५) ३:१६ (१ कर. ६:१९)।

—मण्डली का शान्तिदाता. प्रेरित ९:३१ (२ कर. १:३)

—मण्डली को शुद्ध करता. यहेज. ३७:३८. रोम. १५:१६।

—साक्षी. इब्र. १०:१५. १ योहन ५:९।

—पाप और धर्म और विचार के विषय में समझाता. योहन १६:८-११।

उसका पुरुषत्व।

—वह सृजता और प्राण देता है अय्यूब. ३३:४।

—वह अपने सेवकों को आज्ञा देता है यश. ४८:१६. प्रेरित १३:२; २०:२८।

—उन्हें उपदेश करने को भेजता है. प्रेरित. ८:२९; १०:१९,२०।

—पावल को बिथूनिया जाने से रोकता है. प्रेरित १६:६-७।

—वह अपने भक्तों में और उनके द्वारा बोलता है. प्रेरित १:१६. १ पितर १:११. १२;२ पितर १:२१।

—वह पापियों के संग विवाद करता. उत्पत्ति ६:३; दुखी होता. यश. ६३:१०; सिखाता. योहन १४:२६; १ कर. १६:१३. धर्मियों के संग रहता. योहन १४:१७. खीष्ट के विषय में साक्षी देता. योहन १५:२६; डांटता. योहन १३:८; ले जाता. योहन १६:१३. खीष्ट की महिमा प्रगट करता. योहन १६:१४. धोखा दिया जा सकता. प्रेरित ५:९. उससे लड़ सकते. प्रेरित ७:५१. शान्ति देता. प्रेरित ९:३१. हमारी दुर्बलता में सहायता देता. रोम ८:२६. सब विचारों को जानता. रोम. ११:३३, ३४ (१ कर. २:१०, ११).

—उसमें अपने आप में शक्ति है. रोम. १५:१३. शुद्ध करता. रोम.

१५:१६ १ कर. ६:११. अपनी इच्छानुसार कार्य करता है १ कर. १२:११।

—शान्तिदाता—पिता से भेजा जाता है. योहन १५:२६।

—दिया जाता है।

मसीह के द्वारा व मसीह से. यश. ६१:१; लूक ४:१८।

पिता से. योहन. १४:१६।

मसीह की प्रार्थना के द्वारा. योहन १४:१६।

मसीह के नाम में भेजा जाता है. योहन १४:२६।

बाप से मसीह के द्वारा भेजा जाता है. योहन १५:२६; १६:७।

—वह शान्ति दाता होकर

सदा धर्मियों के संग रहता. योहन १४:१६. धर्मियों में व उनके संग रहता. योहन १४:१७. धर्मी उसे जानते हैं. योहन. १४:१७. वह धर्मियों को शिक्षा देता है. योहन १५:२६. मण्डली को बनाता. प्रेरित. ९:३१।

परमेश्वर के प्रेम को दिखाता. रोम. ५:३-५. धर्मियों को आनन्द देता. रोम. १४:१७. गला. ५:२२; १ थिस. १:६. आशा देता. रोम. १५:१३. गल. ५:५. संसार उसे नहीं पा सकता. योहन १४:१७।

—गुरु व शिक्षक—

उसकी बाचा दी गई. नीति. १:२३।

ज्ञान का आत्मा. यश. ११:२; ४०:१३,१४।

—दिया जाता है :—

धर्मियों को. नहेम. ९:२०; १ कर. २:१२,१३।

प्रार्थना के उत्तर में. इफिसी. १:१६,१७।

इसकी आवश्यकता. १ कर. २:९,१०।

—वह गुरू होकर।

धर्म के मार्ग पर चलाता. यश. ३०:२१; यहेज. ३६:२७।

धर्मियों को सिखाता है कि अपने सतानेहारों को क्या उत्तर दें. मार्क १३:११. लूक १२:१२।

भविष्य की बातें प्रगट करता. लूक २:२६; प्रेरित. २१:११।

मसीह की बातें याद दिलाना. योहन १४:२६।
सत्य में चलाता. योहन. १४:२६; १६:१३।
मसीह की बातें प्रगट करता. योहन. १६:१४।
मण्डली के फैसले में सहायता देता. प्रेरित. १५:२८।
परमेश्वर की बातें प्रगट करना. १ कर. २:१०,१३।
सेवकों को सिखाने के योग्य बनाता. १ कर. १२:८।
प्राणिक मनुष्य उसकी बातें ग्रहण नहीं करता. १ कर. १२:८।
सब को उससे शिक्षा पाने का नेवता है. प्रकाश. २:७, ११, २९।

—उसके चिन्ह, निशान।

पानी—योहन. ३:५; ७:३८, ३९।
सींचना. उपजाऊ करना. भजन. १:३; यश. २७:३, ६; ४४:३, ४;५८:११।
तर व ताज़ा रखना. भजन ४६:४; यश. ४१:१७, १८।
मुफ़ दिया जाता. यश. ५५:१; योहन ४:१४; प्रकाश. २२:१७।
साफ़ करना. योहन. १६:१; ३६:२५; इफिसी. ५:२६. इब्र. १०:२२.
बहुत, योहन. ७:३७, ३८।
आग—मत्ती. ३:११।
उज्ज्वल करना. निर्ग. १३:२१. भजन. ७८:१४।
पवित्र करना. यश. ४:४. मला. ४:२, ३।
खोजना. सपन्याह. १:१२ (१ कर. २:१०)।
हवा—पवन।
शक्तिमान. १ राजा. १९:११ (प्रेरित २:२)।
जिलाना. यहेज. ३७:९,१०, १४।
स्वतन्त्र. योहन. ३:८; १ कर. १२:११।
अपनी इच्छा से बहता. योहन. ३:८।
तेल. भजन. ४५:७।
पवित्र करना. निर्ग. २९:७; ३०:३०; यश. ६१:१।
शान्ति देना. यश. ६१:३. इब्र. १:९।

चमकाना. मत्ती. २५:३, ४; १ योहन २:२०, २७।
चङ्गा करना. लूक. १०:३४. प्रकाश. ३:१८।
वर्षा और ओस. भजन. ७२:६।
अदृश्य. २ राम. १७:१२ (मार्क. ४:२६-२८.)।
ताजा करना. भजन. ६८:९. यश. १८:४।
बहुत. भजन. १३३:३।
उपजाऊ करना. यहेज. ३४:२६, २७. होशे ६:३; १०:२; १४:५।
कपोत. कबूतर. मत्ती. ३:१६।
भोला. मत्ती. १७:१६ (गल. ५:२२)।
शब्द. यश. ६:८।
चलाना. यश. ३०:२१ (योहन १६:१३)।
बोलना. मत्ती. १०:२०।
चिताना. इब्र. ३:७-११।
छाप.
प्रमाणिक. योहन. ६:२७; २ कर. १:२२।
सुरक्षित. इफिसी. १:१३, १४; ४:३०।
फटी हुई जीभें. प्रेरित. २:३, ६-११।
—पवित्र आत्मा का दान.
पिता से. नहेम. ९:२०. लूक ११:१३।
मसीह को बिन अन्दाज के. योहन ३:३४।
पुत्र के द्वारा. योहन. २०:२२।
दिया जाता है।
शिक्षा के लिये. नहेम. ९:२०।
प्रभु मसीह के ऊंचा किये जाने पर. भजन ६८:१८; योहन ७:३९।
प्रार्थना के उत्तर में. लूक. ११:१३. इफिसी. १:१६, १७।
मसीह की प्रार्थना के द्वारा. योहन. १४:१६।
धर्मियों को शान्ति के लिये. योहन १४:१६।
उनको जो पश्चात्ताप करते व विश्वास करते. प्रेरित. २:३८।

उनको जो परमेश्वर की आज्ञा पालन करते. ५:३२ ।
उनको जो यहूदी नहीं हैं. प्रेरित. १०:४४. ४५; ११:१७; १५:८ ।
बहुत हैं. भजन. ६८:६; योहन ७:३८, ३६ ।
फलदार बनाना. यश. ३२:१५ ।
सदा लों रहनेहारा है. यश. ५६:२१; हाग्गै २:५; १ पितर ४:१४ ।
परमेश्वर के अनुग्रह का प्रमाण. यहेज ३६:२६ ।
धर्मियों की मिलकियत का बयाना. २ कर. १:२२; ५:५; इफ. १:१४ ।
विश्वास के द्वारा मिलता. गला. ३:१४ ।
मसीह के संग मेल की एक साक्षी है. १ योहन ३:२४; ४:१३ ।

साक्षी—इब्र.१०:१५; १ योहन. ५:६ ।

कहलाता है—

पिता का आत्मा. मत्ती १०:२० ।
मसीह पुत्र का. रोम ८:६; गल. ४:६; १ पितर. १:११ ।
पुत्रत्व का. रोम. ८:१५ ।
भस्म करने का. यश. ४:४. ।
युक्ति और पराक्रम का. यशायाह. ११:२ ।
भय का. यश. ११:२ ।
महिमा का. १ पित. ४:१४ ।
अनुग्रह का. जकर्या. १२:१०; इब्र. १०:२६ ।
पवित्रताई का. रोम. १:४ ।
न्याय का. यश. ४:४; २८:६ ।
ज्ञान का. यश. ११:२ ।
जीवन का. रोम. ८:२; प्रकाश. ११:११ ।
बाचा का. इफिसी १:१३ ।
नबूवत का. प्रकाश १६:१० ।
प्रकाश का. इफिसी. १:१७ ।
सत्यता का. योहन. १४:१७; १५:२६; १६:१३; १ योहन. ४:६ ।

बुद्धि और समझ का. यश. ११:२; इफ. १:१७ ।

परमेश्वर की सात आत्माएं. प्रकाश. १:४ ।

—दिया गया ।

यूसफ को. उत्पत्ति. ४१:३८. बसलेल को. निर्ग. ३१:३; ३५:३१. सत्तर पुरनियों को. गिनती. ११:१७. बिलाम को. गिन. २४:२; यहोशू को. गिन. २७:१८. शावल को. १ शम. १०:१०; ११:६; १६:२३. उसके सेवकों को. १ शम. १६:२०; अमासै को. १ इतिहास १२:१८. इलीशा को. २ राजा. २:६. अजर्याह को. २ इतिहास १५:१. भविष्यद्वक्ताओं को. नहेम. ६:३०. देखो. यश. १; ६; ४८: १६; यर्म. १; यहेज १; ११; दान. ४:८; २ पितर. १:२१ ।

जिखरिया. इलिशबा और मरियम को. लूक १:४१, ६७. शिमोन और हन्ना को. लूक. २:२५, ३८. शिष्यों को. प्रेरित २:४; ६:३; ७:५५; ८:२९; ९:१७; १०:४५. प्रकाश. १:१०. सब धर्मियों को भजन ५१: ११; लूक. ११:१३; योहन १४:१७; १ कर. ३:१६; ६:१९; १२:१३; यहूदा २०; इफ. १:१३; १ थिस. ४:८.

उसका पिछला नेवता. प्रकाश. २२:१७ ।

उसके फल. गल. ५:२२; इफ ५:९ ।

उसके विरुद्ध बोलना. मत्ती १२:३१; मार्क. ३:२९; लूक १२:१०. ।

आत्मा—खीष्ट विरोधी का—१ योहन. ४:३ ।

दासत्व का. रोम. ८:१५; आगमवक्ता का. प्रेरित १६:१६. गूंगेपन का. मार्क. ६:१७; भय का. २ तिम. १:७. जलन का. गिन. ५:१४. नीन्द (जड़ता) का. रोम. ११:८ ।

आत्माएं—परखी जाएं. १ योहन. ४:१ ।

—अशुद्ध—देखो भूत ।

आत्मिक दान—देखो, आत्मा के दान ।

भीतरी आवश्यकता. प्रेरित. १७:१८; १ कर. १:१८-२३; २:७-१५; ३:१८-२० ।

गीत. देखो भजन. इफ. ५:१९; कल. ३:१६ ।

सेना. इफिसी ६:१२ ।

हथ्यार. २ कर. १०:४. इफिसी. ६:१३-१७; १ थिस ५:८ ।

देह. १ कर. १५:४४. फिल. ३:२१; १ योहन ३:२. (लूक २४:३१, ३६-४३. योहन २०:१६,२७; २१:१२,१३) ।

घर और बलिदान. १ पितर. २:५ ।

वस्तुओं की तुलना की जाये. १ कर. २:१३ ।

आत्मिक गान—यहूदियों में. निर्ग. १५:१; १ इति. ६:३१; १३:८; २ इति. ५:१३; २०:२२; २६:३०. नहेम. १२:२७ ।

ख्रीष्टियानों में. मत्ती. २७:३०. याक. ५:१३ ।

इफ. ५:१९; कल. ३:१६ ।

—देखो भजन ।

आदत—बुरी का बल यर्म. १३:२३ ।

आदर—परमेश्वर को. भजन. २६:२; ६६:२ ७१:८; १४५:५. नीति. ३:९. मलाकी १:६; ५:१३; १६:७ ।

परमेश्वर की ओर से दिया गया. १ राजा ८:१३. एस्तर. ८:१६ ।

नीति. ३:१६; ४:८; ८:१८; २२:४; २६:२३. दान. ५:१८. योहन. १२:२६ ।

माता पिता को दिया जाए. निर्ग. २०:१२; व्यवस्था ५:१६; मत्ती ५:४; १६:१६. मार्क ७:१०; १०:१६. लूक १८:२०. इफिसी ६:२ ।

बूढ़ों को दिया जाए. लैव्य. १६:३२; १ तिम. ५:१ ।

राजा को. १ पितर २:१७ ।

स्त्री से पुरुष को. १ पितर ३:१७ ।

आधार—देखो भरोसा, शरण ।

आधीनता—ईश्वर के आगे की जाए. याकूब. ४:७ ।

अधिकारियों के आगे. १ पितर. २:१३; ५:५; इब्र. १३:१७; इफि. ५:२१. देखो. पति, पत्नी, माता पिता. इत्यादि ।

आनन्द—परमेश्वर के लोगों का. १ इतिहास. १२:४०. एज्रा. ६:१६.

नहेम. ८:१०; भजन. १६:११; ८९:१६; १४९:२. यश. ३५:२; ६१:१०; ६०:१५. हब. ३:१८. लूक. १०:२०. योहन. १५:११. रोम. १४:१७. फिल. ३:३; १ थिस. १:६।

दुःख के पीछे. भजन. ३०:५; १२६:५; नीति. १४:१०; यश. ३५:१०; ६१:३; ६६:१०; यर्म. ३१:१३. योहन. १६:२०; २ कर. ६:११. याकूब. १:२।

किस प्रकार प्रगट किया जाए. इफिसी. ५:१९. कल. ३:१६. याकूब. ५:१३।

स्वर्ग में, एक पापी के पश्चात्ताप करने पर. लूक. १५:७,१०. मसीह का अपने शिष्यों पर. योहन. ३:२९; १७:१३. इब्र. १२:२. पावल का मंडलियों के विश्वास पर. २ कर. १:२४; २:३; ७:१३; फिल. १:४; २:२; ४:१; १ थिस. ३:१६; ३:९; २ तिम. १:४; फिलेमून. ७।

योहन प्रेरित का. ३ योहन ४।

बुराई का. अय्यूब. २०:५. नीति. १४:१३; १५:२१. सभोपदेश. २:१०; ७:६; ११:९. यश. १६:१०; याकूब. ४:९।

आनन्द—संसारिक—उसकी व्यर्थता. सभोप. २ पर्व. इत्यादि।

उसके विरुद्ध शिक्षा. लूक. ८:१४; १६:१९. फिल. ३:१९; २ तिम. ३:४. तीतस. ३:३. इब्र. ११:२५; याकूब. ५; १ पितर. ४; २ पितर. २:१३।

उसकी हानि. यश. ४७:८. लूक. ८:१४. १ तिम. ५:६; २ तिम. २:४. रोम. १:३२; २ थिस. २:१२।

आना—मसीह का. मत्ती. २४:३,२७; २५:३१; १ कर. १५:२३; १ थिस. २:१९; ३:१३; ४:१५; २ थिस. २:१,८; याकूब. ५:७,८; २ पितर. १:१६; ३:४; १ योहन. २:२८।

आमीन—आमेन्—स्वीकार करने पर. गिनती. ५:२२; व्यवस्था. २७:१५।

प्रभु मसीह का एक नाम. प्रकाश. ३:१४।

का अर्थ. २ कर. १:२०।

आमेन्—देखो, आमीन।

आरम्भ—मसीह कहलाता है. कल. १:१८. प्रकाश. १:८; ३:१४; २१:६; २२:१३. देखो. यश. ४१:४; ४४:६; ४८:१२; कल. १:१५. प्रकाश. १:११,१७; २:८।

मसीह आरम्भ से है. योहन. १:१, २; १ योहन. १:१. देखो. नीति. ८:२२,२३; इब्र. ७:३।

में स्वर्ग और पृथिवी सृजे गये. उत्पत्ति. १:१।

प्रभु मसीह के आश्चर्य कर्मों का. योहन. २:११।

आराम—देखो सुख, विश्राम।

आरोग्यगता—एक आशीष है. उत्पत्ति. ४३:२८; व्यवस्था ३४:७; भजन. ४१:६. फिल. २:२७; ३ योहन. २।

दृष्टान्ती. भजन. ४२:११. नीति. ३:८; १२:१८; यश. ५८:८. यर्म. ८:१५; ३०:१७; ३३:३६।

के यहूदी नियम. लैव्य. १३ से १५. व्यवस्था. २३:१२-१४।

—आत्मिक—परमेश्वर में मिलती है. निर्ग. १५:२६; २ इतिहास ३०:२०. भजन. ६:२; ३०:२; ४१:४; ४२:११; ४३:५; ६७:२; १०३:३; १०७:२०. यश. ३०:२६; यर्म. ३:२२; १७:१४; ३०:१७; ३३:६; होशे. ६:१; ७:१; ११:३।

मसीह में. यश. ५३:५. मल. ४:२; १ पितर. २:२४।

—स्वभाव की; नीति. ३:८; ४:२२; १२:१८; १३:१७; १६:२४; यश. ५८:८. यर्म. ८:१५-२२।

आलस्य—दोष ठहराया गया. नीति. १२:२४,२७; १५:१९; १८:९; १९:१५,२४; २१:२५; २२:१३; २६:१३-१६; २४:३०. सभोप. १०:१८. मत्ती. २५:२६. रोम. १२:८।

उसके विरुद्ध चितावनी. नीति. ६:४. रोम. १२:११; १३:११; १ थिस. ५:६. इब्र. ६:१२।

आलसी—नीति ६:६; १०:२६; १३:४; २०:४; २६:१६।

आशा —पवित्रात्मा के द्वारा परमेश्वर और यीशु मसीह पर. भजन. १६:९; २२:९; ३१:२४; प्रेरित २८:२०; रोम १५:१३. योएल ३:१६; प्रेरित. २४:१५ ।

—परमेश्वर का दान है. गल. ५:५: २ थिस. २:१६; तीत. १:२; १ पितर. १:३ ।

—की आशीष. अय्यूब ११:१८. भजन १४६:५; नीति १०:२८; १४:३२; यर्म. १७:७. विलाप ३:११. प्रेरित २४:१५; रोम १२:१२; १५:४; १ कर. १३:१३; इफ. १:१८; ४:४; कल. १:५; इब्र ३:६ ।

—के विषय में शिक्षा. भजन ३१:२४; ४२:५; १३०:७; विलाप ३: २६. रोम. ८:२४; १५:१३; कल १:२३; तीतस २:१३; इब्र ३:६; ६:११: १ पितर १:१३ ।

—का असर. रोम. ५:५; ८:२४; १५:४; १ कर. १३:७: १ योहन. ३:३ ।

—अधर्मियों की. नीति. ११:७, धर्मियों की. अय्यूब ११:१८; भजन ३१:२४; ३३:१८; १४६:५. नीति १०:२८; १४:३२; यशा. ५७:१०. यर्म. १७:७. विलाप. ३:२१ ।

—मसीही की आशा की बुनियाद. रोम. ८:२४-३९. कल. १:२७ ।

आशीर्वाद—देखो आशीष ।

आशीष—इसहाक की. याकूब ने पाई. उत्पति २७:२७ ।

याकूब ने अपने पुत्रों को दी. उत्पति. ४८:१५; ४९ ।

मूसा ने दस कबीलों को दी. व्यवस्था. ३३ ।

और स्राप दोनों इस्राएलियों के साम्हने रखे गये. व्यवस्था. ११ २६ ।

देने की रीति. गिनती ६:२२ ।

नियम का संदूक उठाने के समय. गिनती. १०:३५ ।

आश्चर्य कर्म—परमेश्वर की आज्ञा से, मूसा और हारून ने दिखाये. निर्गमन. ४:३; ७:१०; ७ से १२ पर्व. १४:२१; ५:२५; १७:६; गिनती १६:२८; २०:११; २१:८ ।

यहोशु से. ३:४; ६; १०:१२. शिमशोन से. न्यायी. १४-१६. शमुएल से. १ शम. १२:१८. किसी भविष्यद्वक्ता से. १ राजा १३:४. एलियाह से. १ राजा १७ व १८ पर्व. २ राजा १. इलीशा से. २ राजा २ से ६; १३:२१. यशायाह. २ राजा २०:९।

—नये धर्म नियम के.

शिष्यों से. लूक १०:१७. पितर से. प्रेरित ३; ५; ९:३२।

इस्तीफान से. प्रेरित. ६:८. फिलिप से. प्रेरित. ८:६. पावल से प्रेरित. १३; १४; १६; १९:२०; २८।

—प्रभु यीशु खीष्ट के. देखो, खीष्ट।

—जो प्रभु यीशु मसीह के कामों के साक्षी थे. मत्ती ११:५; मार्क १६:१७, योहन २:११,२३; ३:२; ५:३६; ९:३१-३३; १०:२१, २५, ३८; ११:४५; १४:१०-१४. प्रेरित २:२२; १०:३८; १४:३. इब्र २:४।

आषा—देखो, आशा।

आस्रा—देखो आशा।

आहार—मनुष्य और पशुओं के लिये दिया गया. उत्पत्ति. १:२९: ९:३; भजन. १०४:१४. १४५:१६; १४७:८।

—देखो —भोजन.

आज्ञा—निकटता. व्यवस्था. ३०:११-१४. रोम. १०:८।

नयी. योहन १३:३४; १५:१२. १७; १ योहन २:७, ८; ३:२३; ४:२१ (१ पितर. १:२२; १ योहन ३:११)।

दास—निर्गमन. २०:२-१७; ३४:२८. व्यवस्था ४:१३; ५:६-२२. ९:९-११, १७; १०:१-५।

परमेश्वर की माननी चाहिये. व्यवस्था ६:१, २, १७-२५; ७:११; ८:६; १२:२८. मत्ती ५:१७; १९:१७. मार्क १०:१७-२०; लूक १८:२०. योहन १४:१५-२३।

बालकों को सिखाई जाएं. निर्ग. १२:१६; १३:८, १४. व्यवस्था ६:७, २०; ११:१९।

परमेश्वर की खरी—२ शम. २२:३१. भजन १२:६; १८:३०; १९:८; ११९:१४०; नीति ३०:५ ।

दो बड़ी—मत्ती. २२:३६-४०. मार्क १२:२९-३१. लूक १०:२५-२८ (व्यवस्था ६:५: १०:१२; ११:१३. याकूब २:८). देखो व्यवस्था ।

आज्ञा उलंघन करनेहारे—उनका मार्ग महज है. अय्यूब १२:६; २१:७-१२; भजन ३७:३५; ७३:३-१२; यर्म. ५:२८, १२:१, २. मल. ३:१५ मत्ती ७:१३, १४. कठिन हो जाता है. नीति: १३:१५ (भजन ३७:१०, १३, ३५, ३६; ७३:१८-२० ।

आज्ञाकारी—परमेश्वर की. इसके विषय में शिक्षा. निर्ग. १९:५; २३:२१. लैव्य. २६:२३; व्यवस्था ४-८; ११; २९. यशा. १:१९. यिर्म. ७:२३; २६:१३; ३८:२०. प्रेरित. ५:२९. याकूब. १:२५ ।

से आशीस. निर्ग. २३:२२; व्यवस्था २८.३०; नीति २५:१२ ।

यशा. १:१९; इब्र. ११:८; १ पितर १:२२; प्रकाश २२:१४ ।

बलिदान से उत्तम है. १ शम. १५:२२. भजन. ५०:८. मीकाह. ६:६ ।

रैकाबियों की. यिर्म. ३५ ।

मसीह की. रोम. ५:१९. फिल. २:८. इब्र. ५:८ ।

बिश्वास की. रोम. १:५; १६:२६; २ कर. ७:१५; १ पितर १:२. ।

माता पिता की. इफिसी. ६:१: कल. ३:२० ।

पति की. तीत. २:५ ।

स्वामी की. इफिसी ६:५. कल. ३:२२; तीत २:९ ।

अधिकारियों की. तीत. ३:१; इब्र. १३:१७ ।

आज्ञा न मानना—परमेश्वर की. उसका बुरा फल. लैव्य. २६:१४; व्यवस्था ८:११; २०: २८:१५. यहोशू ५:६; १ शम. २:३०; १२:१५; भजन. ७८:१०. यशा. ३:८; ४२:२४. यिर्म. ९:१३; १८:१०; २२:२१; ३५:१४. इफिसी. ५:६. तीत. १:१६; ३:३. इब्र. २:२ ।

उदाहरण—आदम का. उत्पत्ति ३; फिरौन. निर्ग. ५:२. आकन.

यहोशु. ७. न्यायी. १ शम. १३:६,१५. एक नबी की. १ राजा. १३:२१. यूनाह की. यूनाह १:२ इत्यादि. इस्राएल का. न्यायी. १:२७-३६; ३:६,७; ६:१; ८:३३-३५; १०:६; २ इतिहास. ३६:१५,१६. यशा. १:२-६; ३०:१,२,८-१०; ५७:३-११; ६३:१०; ६५:२-५; ६६:४. यिर्म. १:१६. २:५-१३,१९; ७:२४-२८. यहेज. २:३-८; ३:६-२७; ५:६-११; ८:५-१८; १६:१५-५९; आमोस. २:१२; सप. ३:२. जकर्याह. १:४; मला. २:११-१७।

इ

इच्छा—परमेश्वर की—रुक नहीं सकती. दान ४:१७,३५. योहन १:१३. रोम ६:१६. इफिसी १:५. याकूब. १:१८।

मसीह ने पूरी की. मत्ती २६:४२; मार्क १४:३६. लूक २२:४२. इब्र. १०:७. योहन ४:३४; ५:३०. (भजन ४०:८)।

—किस प्रकार पूरी की जाये. योहन ७:१७. इफिसी. ६:६. कल. ४:१२; १ थिस ४:३; ५:१८. इब्र. १३:२१; १ पितर २:१५; ४:२; १ योहन २:१७; ३:२३।

चढ़ा देनी चाहिये याकूब. ४:१५. मत्ती ६:१०. प्रेरित. २१:२४; रोम. १:१०; १५:३२।

—मनुष्य की व ईश्वर की. योहन १:१३. इफिसी २:३. रोम. ९:१६; १ पितर. ४:३।

—परमेश्वर की सेवा करने में. यश ६:८. मत्ती ४:१९-२२; ८:२२; ९:९; १६:२७-३०. मार्क. २:१४; १०:२८-३१; लूक ५ २७ २९; ९:५७-६२. योहन. १:४३; १२:२६; २ कर. ९:७।

—देखो. अभिलाष, चाहना।

इनकार—देखो—मुकरना।

इब्राहीम की सन्तान—कहाने का अर्थ. मत्ती ३:९. योहन ८:३९. रोम. २:२३; ९:७. गल. ३:७,२९ फिल. ३:३-७।

इस्राएली इतिहास—मसीहियों का प्रतिरूप. १ कर. १०:१-११; २ कर. ३:७ १५. गल. ४:२२-३१।

ई

ईजाद्—देखो, रचना।

ईश्वर—सर्व शक्तिमान परमेश्वर—उत्प. १७:१. निर्ग. ६:३. गिन. २४:४. रूत १:२०. अय्यूब. ५:१७. भजन. ६८:१४;९१:१. यश. १३:६. यहेज. १:२४. योएल. १:१५; २ कर. ६:२८. प्रकाश १:८।

सृजनेहारा—उत्प. १; २; व्यवस्था. ४:१९. नहेम. ९:६; अय्यूब ३३:४; ३८; भजन. ८: १९:१; ३३:६; ८९:११; ९४:९; १०४; १३६; १४६:६; १४८; नीति. ३:१९; ८:२२; सभोप. १२:१. यश. ३७:१६; ४०:२८; ४३:७,१३; ४४:८. यिर्म. १०:१२; ३२:१७. जकर्या. १२:१. योहन. १:३. प्रेरित १७:२४ रोम. १:२५; कल. १:१६; इब्र. १:१०; ३:४; ११:३; १ पितर ४:१९. प्रकाश. ४:११।

परमेश्वर का सलूक—

हमारे पहिले माता पिता के संग. उत्पति. ३।
नूह श्रोर पापी संसार के संग उत्पति. ६-९।
इब्राहीम के संग. उत्पति. १२-२४।
लूत के संग. उत्पति. १९।

इसहाक, याकूब श्रोर एसाव के संग. उत्पति. २२; २५; २६; २८।
यूसफ के संग. उत्पति. ३९।

मूसा श्रोर हारून के संग. निग. ३,७।
फिरौन श्रोर मिस्र के लोगों के संग. निर्ग. ७; ८।
मिस्र में मरियां भेजना. निर्ग. ७ से. १३।

निस्तार पर्व श्रोर इस्राएलियों का छुटकारा. निग. १४।
इस्राएलियों के बयाबान में ४० वर्ष तक घूमने में. निर्गमन, लैब्य व्यवस्था, व्यवस्था विवरण नाम पुस्तकों को देखो।
मन्न अथवा मानू भेजना. निर्गमन. १६.१५।
दस आज्ञाश्रों को देना. निर्ग. २०।

अपनी महिमा प्रगट करता. निर्ग. २४।
इस्राएलियों से बाचा बांधता. निर्ग. ३४।
भजन तम्बू बनाने को आज्ञा देता. निर्ग. ३५; ४०।
बलिदानों के विषय में नियम ठहराता. लैव्य. १ गिन. २८।
हारून को पवित्र करता. लैव्य. ८; ९।
आशीस और स्राप ठहराता. लैव्य. २६; व्यवस्था. २७।
मूसा और हारून को कनान देश में जाने से रोकता. गिन. २०:१२।
आग के सांप भेजता और पीछे पीतल के सांप के द्वारा चंगा करता. गिन. २१।
—बिलाम और बालाक. गिन. २२।
यहोशू को यरीहो और आई के जीतने में सहायता देना. यहोशू. १; ३; ४; ६; ७; ८।
कनान के राजाओं को जीतने में. यहोशू. १०-१२।
गिदोन. यिप्तह और शिमशोन के संग. न्यायी. ६; १०; १३।
नाओमी और रूत के संग. रूत १:४।
हन्ना, एली और शमुएल के संग. १ शम. १:३।
शावल के संग. १ शम. ९-३१; १ इतिहास. १०।
दाऊद के संग. १ शम. १६-३१; २ शम. १-२४; १ राजा. १,२;११. १ इतिहास. ११-२३; २८; २९।
सुलैमान के संग. १ राजा. १-११; २ इतिहास. १,९।
रहबाम और यरोबाम के संग. १ राजा १२-१५, २ इतिहास. १०-१२।
अहाब के संग. १ राजा. १६-२२; २ इतिहास. १८।
एलिय्याह के संग. १ राजा. १७-२२; २ राजा. २।
एलीशा के संग. २ राजा. २-९।
हिजकिय्याह के संग २ राजा. १८-२१. २ इति. २९-३२. यशा. ३६-३९।
योशिय्याह के संग. २ राजा. २२; २३; २ इति. ३४; ३५।
फारस देश में यहूदी बंधुवों के संग. एस्तेर. १-१०।

छुड़ाये हुए यहूदियों के संग. एज्रा. १-१०. नेहम्. १-१३।
अय्यूब और उसके मित्रों के संग. १; २; २८-४२।
यशय्याह के संग. २ राजा १९; २०; २ इति. २६: ३२।
यिर्मयाह. २ इति. ३५; ३६; यिर्म. २६; ३५-४३।
दानियेल के संग. दान १ १०।
नबूकदनेस्सर के संग. दान. ४।
शद्रक, मेशक् और अबेदनगो के संग. दान. ३।
योना के संग. योना. १-४।

—परमेश्वर का प्रकाश व दर्शन दिया गया।

यशायाह को. यहूदा व इस्राएल के विषय में. यश. १-१२; इधर उधर की जातियों के विषय में. १३-२३: पश्चात्ताप न करनेहारे यहूदियों के विषय में. २४: ३९।
यिर्मयाह को. यहूदा के विषय में. १-२५, २७-३३; ४४।
यहेजकेल को. यहूदा के विषय में. ३-७. मन्दिर के विषय में ८-११. यहूदा को चितावनी १२-१९. न्याय के विषय में २०-२३. यरूशलीम के नष्ट होने के विषय में २४. दूसरी जातियों के विषय में २५-३२. शिक्षा और आज्ञा. ३३-३९: नया यरूशलीम ४०-४८।

—आत्मा—योहन ४:२४; २ कर. ३:१७।

बतलाया गया है कि वह
सर्व शक्तिमान है. उत्प. १७:१; निर्ग. ६:३. प्रतापी. निर्ग. १५:११; भजन. १४५:५. अनुग्रहकारी है. निर्ग. ३४:६,७; भजन. ११६:५. दयालु. निर्ग. ३४:६,७. भजन ८६:५. धीरजवन्त. गिन. १४:१८. मीक. ७:१. खरा. व्यवस्था. ३२:४; यश. ४५:२१; अनादि. व्यवस्था. ३३:२७; भजन ९०:२७: प्रकाश. ४:८-१०. जलन रखने हारा ईश्वर है. यहोशू. २४:१९. नहेम १:२. दया करनेहारा २ राजा. १३:२३. महान. २ इति. २:५; भजन ९६:१०. धर्मी. एज्रा. ९:१५; भजन १४५:१७. उसका गूढ़ भेद पाया नहीं जा

सकता. अय्यूब ११:७; ३७:२३. भजन १४५:३. यश. ४०:२८. रोम ११:३३. १:१७. भला. भजन २५:८; ११९:६८. सीधा, भजन २५:८, ९२:१५; पवित्र. भजन ६६:९; यश. ५:१६; परम प्रधान. भजन ८३:१८. प्रेरित. ७:४८. अविनाशी. भजन १०२.२६,२७. याकूब. १:१७; सर्वज्ञानी. भजन १३९.१-६. नीति. ५:२१. सर्व व्यापक. भजन १३९:७. यिर्म. २३:२३. प्रकाश. यश. ६०:१९. याकूब १:१७; १ योहन १:५; सत्य. योहन १७:३. सिद्ध. मत्ती ५:४८ नाशमान. रोम. १:२३. बुद्धिमान. रोम. १६:२७; १ तिम. १:१७; विश्वासयोग्य. १ कर. १०:१३; १ पितर ४:१९; अमर. १ तिम. १:१७; ६:१६. भस्म करनेहारी अग्नि. इब्र. १२:२९. प्रेम. १ योहन ४:८,१६ ।

—**उस के समान कोई नहीं है.** निर्ग. ९:१४; व्यवस्था. ३३:२६; २ शम. ७:२२. यश. ४६:५,९ यिर्म. १०:६ उसके सिवा. व्यवस्था. ४:३५. यश. ४४:६. उसके सन्मुख यश. ४३:१० उसके समान उत्तम. मत्ती. १९:१७ ।

—स्वर्ग और पृथिवी परिपूर्ण है. १ राजा ८:२७ यिर्म. २३:२४.

—आत्मा और सच्चाई से उसका भजन करें. योहन ४:२४ ।

—**की महिमा**—

मसीह में प्रगट की गई. योहन. १:१४. २ कर. ४:६; इब्र. १:३. उसके शक्ति के कामों में. प्रगट की गई. निर्ग. १५:१,६: रोम. ६:४. पवित्रताई में. निर्ग. १५:११, नाम में. व्यवस्था. २८:५८; नहेम. ९:५. पराक्रम में. अय्यूब. ३७:२२. भजन ९३:१; १०४:१; १४५.५,१२; यश. २:१०. कामों में. भजन. १९:१; १११:३ ।

—वर्णन किया गया है कि वह प्रतापमय है. भजन ८:१; ११३:४ । सदा लों रहनेहारी है. भजन १०४:३१. बड़ी है. भजन १३८:५; धनी है. इफिसी. ३:१६ ।

—प्रगट की गई. मूसा पर. निर्ग. ३४:५-७ (निर्ग. ३३:१८-२३) उसकी मंडली पर. व्यवस्था. ५:२४. भजन १०२:१६ मंडली को प्रकाशित करती है. यश. ६०:१,२. प्रकाश. २१:११,२३.

स्तिफान पर प्रेरित ७:५५।
—दिखाई गई. १ इति. १६:२४. भजन. १४५:५,११।
—प्रगट करती है. भजन ५७:५।
—धर्मी देखना चाहते हैं. भजन. ६३:२; ९०:१६।
—उसके लिये प्रार्थना की जाती है. भजन. ७९:९।
—पृथिवी भरी हुई है. यश ६:३।
—दूसरों को न दी जाए. यश. ४२:८।
—उस से डरना चाहिये. यश. ५९:१९।
—उसका ज्ञान जगत को भर देगा. गिन. १४:२१. हब. २:१४।

—की भलाई—

—बताई गई. भजन. २५:८. नहेम. १:७. मत्ती. १९:१७।
—बहुतायत से है. निर्ग. ३४:६. भजन ३३:५. बड़ी है. नहेम. ९:३५. जकर्या. ९:१७. रहनेहारी है. भजन. २३:६. ५२:१. सन्तुष्ट करती है. भजन. ६५:४. यिर्म. ३१:१२, १४. संपत्ति से परिपूर्ण है. भजन १०४:२४. रोम. २:४. सभों के लिये है. भजन १४५:९. मत्ती. ५:४५
—प्रगट की गई—पाप क्षमा करने में. भजन ८६:५. २ इति. ३०:१८. मंडली पर. भजन. ३१:१९. विलाप. ३:२५. कंगालों की सहायता करने में. भजन ६८:१०. भलाई करने में. भजन. ११९:६८; १४५:९. हमारी आवश्यकता पूरी करने में. प्रेरित. १४:१७।
—से मनुष्य पश्चात्ताप करने का आग्रह पाते हैं. रोम. २:४।

—के दान—

मुफ्त हैं और बहुत हैं गिन. १४:८. रोम. ८:३२।
परमेश्वर की इच्छानुसार दिये जाते हैं. सभोप. २:२६; दान. २:२१. रोम १२:६; १ कर. ७:७।
सब आशीसें हैं. याकूब. १:१७; २ पितर. १:३।

—के आत्मिक दान :—

मनोरथ पूरा करना. भजन. ४:७; २१:२. शान्ति. भजन. २९:११. सामर्थ्य और शक्ति. भजन ६८:३५. प्रभु मसीह के द्वारा है. भजन

६८:१८ (इफिसी ४:७,८. योहन ६:२७)—मसीह सब से बड़ा है. यशा. ४२:६; ५५:४. योहन ३:१६; ४:१०; ६:३२,३३—एक नया मन. यहेज. ११:१६—के लिये प्रार्थना. मत्ती ७:७,११; योहन १६:२३,२४. —बिश्राम. मत्ती ११:२८; २ थिस. १:७—पवित्रात्मा. लूक ११:१३ प्रेरित. ८:२०—अनुग्रह. भजन. ८४:११. याकूब. ४:६—बुद्धि. नीति २:६; याकूब. १:५—महिमा. भजन ८४:११. योहन. १७:२२—पश्चात्ताप. प्रेरित. ११:१८—धर्मी जीवन. रोम. ५:१६,१७—अनन्त जीवन. रोम. ६:२३—ईश्वर कभी पछतानेवाला नहीं. रोम. ११:२६—विश्वास, इफिसी २:८; फिल. १:२६—एक दूसरे की भलाई में काम में लावें. १ पितर. ४:१० ।

—के संसारिक दान :—

बारिश और अनाज. उत्प. २७:२८. लैव्य. २६:४,५; यशा. ३०,२३. प्रेरित. १४:१७—शान्ति. लैव्य. २६:६. १ इति. २२:२—के कारण हम ईश्वर को याद करें. व्यवस्था. ८:१८. बुद्धि. २ इति. १:४२. —सब भली वस्तुएं. भजन ३४:१०. १ तिम. ६:१७—सारे प्राणी पाते हैं. भजन १३६:२५; १४५:१५,१६—जीवन. यशा. ४२:५—लिये और काम में लाये जावें. नीति. ३:१३; ५:१९,२०; १ तिम. ४:४,५—के लिये प्रार्थना करो. जकर्याह १०:१. मत्ती. ६:११—भोजन, वस्त्र. मत्ती. २६:२५,३३. उदाहरण. मत्ती. २५:१५-३० ।

का अपने लोगों से आनन्दित होना—

—इसकी बड़ाई. सपन्‌ ३:१७ ।

—इसका कारण—उनकी :—

भक्ति. १ इति. २९.१०; नीति ११:२०—परमेश्वर से भय करना. भजन. १४७:११—उसकी दया पर भरोसा करना. भजन. १४७:११. —नम्रता. भजन १४९:४—उस से प्रार्थना करना. नीति. १५:८. —पश्चात्ताप. लूक. १५:७,१०. विश्वास. इब्र. ११:५,६ ।

—इसके कारण परमेश्वर देता है :—

अधिकार. गिन. १४:६; १ पितर. १:४—उनका भला करना. व्य-

वस्था. २८:६३. यिर्म. ३२:४१. प्रेरित १४:१७—उन को बढ़ाता. व्यवस्था. ३०:६—छुड़ाता. २ शम. २२:२०—शान्ति देता. यश. ६५:१६।

—उदाहरण—सुलैमान. १ राजा: १०:१।

—की व्यवस्था—

—अटल है. मत्ती. ५:१८।

—दी गई :—

आदम को. उत्प. २:१६,१७ (रोम ५:१२-१४)—नूह को. उत्प. ९:६. —इस्राएलियों को. निर्ग. २०:२. भजन ७८:५—मूसा के द्वारा. निर्ग. ३१:१८. योहन ७:१९—दूतों के द्वारा. प्रेरित ७:५३. गल. ३:१९. इब्र. २:२।

—बतलाई गई :—

पूरी. भजन. १९:७. रोम. १२:२—शुद्ध. भजन. ११:८—बहुत बिस्तार वाली. भजन. ११९:९६—सत्य. भजन ११९:१४२—पवित्र, यथार्थ और उत्तम. रोम. ७:१२—आत्मिक. रोम. ७:१४—भारी नहीं है. १ योहन. ५:३।

—को पूरे मन से मानना. व्यवस्था २७:२६. गल. ३:१०. याकूब २:१०।

—हृदय की—सच्चाई से पूरा करना. भजन ५१:६. मत्ती. ५:२८; २२:३७।

—मनुष्य पूरी २ आज्ञाकारी नहीं कर सका. १ राजा. ८:४६; सभोप. ७:२०. रोम. ३:१०।

—मनुष्य का कर्त्तव्य है कि करे. सभोप. १२:१३।

—मनुष्य इसके द्वारा धर्मी नहीं ठहरता. प्रेरित. १३:३९; रोम. ३:२० २८. गल. २:१६; ३ ११।

—मन साक्षी देता है. रोम. २:१५।

—सब मनुष्यों ने तोड़ी है. रोम ३:९,१९।

—पाप के विषय में ज्ञान देती है. रोम ३:२०; ७:७।

—क्रोध जन्माती है. रोम. ४:१५ ।

—मनुष्य स्वभाव से है उसके अधीन नहीं. रोम ७:५; ८:७ ।

—प्रेम उसको पूरा करता है. रोम. १३:८,१०. गल. ५:१४. याकूब. २:८ ।

—खीष्ट लों हमें पहुंचाती है. गल. ३:२४ ।

—उसको उलंघन करना पाप है. १ योहन ३:४ ।

—उसका आज्ञाकारी होना :

अति. आवश्यक है. १ कर. ७:१९—प्रेम की परख है. १ योहन. ५:३—धर्मियों का एक स्वभाव है. प्रकाश. १२:१७ ।

—उसको पूरा करने की भाग्यवानी. भजन ११९:१; मत्ती. ५:१९; १ योहन ३:२२,२४. प्रकाश. २२:१४ ।

—**मसीह ने**—उसकी बड़ाई अधिक कर दी. यश. ४२:२१—उसको पूरा किया. मत्ती ५:१७—उसका अर्थ खोला. मत्ती. ७:१२; २२:३७-४० ।

—उस से प्रेम रखने मे चैन प्राप्त होता है. भजन. ११९:१६५ ।

—धर्मियों को चाहिये कि :—

उसे अपने बोल चाल में काम में लावें. निर्ग. १३:९—उसे खोजें. एज्रा ७:१०—उसके अनुसार चलें नहेम. १०:२९—उसको समझने के लिये प्रार्थना करें. भजन ११९:१८—बल के लिये प्रार्थना करें कि पालन कर सकें. भजन. ११९:५५—उस से आनन्दित होवें. भजन ११९:७७. रोम. ७:२२—प्रेम रखें. भजन. ११९:९७,११३—जब दूसरे उसे दूर करें तो शोक करें. भजन ११९:१३६—अपने हृदय में लिखें. यिर्म ३१:३३. (इब्र. ८:१०)—उसे याद करें. मल ४:४—उस के बन्धन से छुड़ाये गये. रोम ६:१४; ७:४,६; गल. ३:१३—उस के स्राप से मुक्त हुए. गल. ३:१३ ।

—दुष्ट :—

उसे भूल जाते हैं २ इति. १२:१. यिर्म ९:१३—उस के अनुसार चलना नहीं चाहते. भजन. ७८:१०—उसे फेंक देते हैं. यश. ५:२४.

—उसे सुनना नहीं चाहते यश. ३०:९. यिर्म ६:१९ भूल जाते. होशे. ४:६—उसे तुच्छ जानते. आमोस. २:४ ।

—उसे न मानने का दण्ड. नहेम. ६:२६,२७. यश. ६५:११-१३. यिर्म. ६:१३-१६ ।

—वह न्याय करने का नियम है. रोम. २:१२ ।

—बिश्वास से स्थिर किया गया. रोम. ३:३१ ।

—धर्मियों के जीवन का सहारा है. १ कु. ६:२१. गल. ५:१३,१४.

—उसे विधि के अनुसार काम में लावें. १ तिम. १:८ ।

—के गुण—

सनातन. उत्प. २१:३३. निर्ग. ३:१४. व्यवस्था ३२:४०; ३३:२७. अय्यूब १०:५; ३६:२६; भजन. ९:७; ९०:२; ९२:८; ९३:२; १०२:१२; १०४:३१; १३५:१३; १४५:१३; १४६:६,१०; सभोप ३:१४. यश. ९:६; ४०:२८; ४१:४; ४३:१३; ४८:१२; ५७:१५; ६३:१६. यिर्म. १०:१०. विलाप. ५:१९. दान. ४:३,३४; ६:२६. मीका. ५:२; हब. १:१२; रोम. १:२०; १६:२६; इफिसी ३:९; १ तिम. १:१७; ६:१६; २ पितर ३:८; प्रकाश. १:८; ४:९; २२:१३ ।

अचल. स्थिर. गिन. २३:१९; १ शम. १५:२९. भजन. ३३:११; ११९:८९. मल. ३:६; प्रेरित ४:२८. इफिसी. १:४. इब्र. १:१२; ६:१७; १३:८. याकूब १:१७ ।

सर्वज्ञानी. अय्यूब २८:६; ३४:२१; भजन १३९; नीति १५:३. यश. ४४:७. यहेज. ११:५; मत्ती. १२:२५. योहन २:२४; रोम १:२० ।

सर्व व्यापक. अय्यूब. २३:९; २६; २८; भजन १३९; नीति १५:३. प्रेरित. १७:२७ ।

अदृश्य—निर्ग ३३:२०. अय्यूब. २३:८. योहन १:१८; ४:२५; ५:३७. कुल. १:१५; १ तिम. १:१७; ६:१६; इब्र. ११:२७; १ योहन ४:१२ ।

गूढ़ भेदवाला. अय्यूब ११:७; २६:१४; ३७:१५; भजन १४५:१३; सभोप. ८:१७. रोम ११:३३ ।

अथाह. अय्यूब ५:९; ९:१०; ११:७; २६:१४; ३६:२६; ३७:५. भजन. ३६:६; ४०:५. १०६:२; १३९:६; सभोप. ३:११; ८:१७; ११:५; यशा. ४०:१२ ४५:१५; मीकाह ४:१२; १ तिम. ६:१६ ।

पवित्रता ई—उत्प. ३५:२; निर्ग. ३:५; १४:१५; १९:२०; २८:३६;

३४:५; ३९:१०. लैव्य. ११:४४; २१:८; यहोश ५:१५; १ शम. २:२; १ इति. १६:१०; भजन २२:३; ३०:४; यश. ६:३; ४३:१५; ४१:७; ५७:१५; यिर्म. २३:९. होशे ४:२; लूक. १:४९. प्रेरित. ३:१४; रोम. ७:१२; १ योहन २:२०. प्रकाश. ४:८; १९:१।

न्याय—उत्प. २:१६; ३:८; ४:९; ६:७; ६:१५; १८:१७,१९. निर्ग. ३२:३३. लैव्य. ४; ७:२०; १८:४; २६:२१. गिन. ११; १४; १६; १७; २०; २५; २६:६४; २७:१२; ३५; व्यवस्था. १:३१; ४:२४; ५; ६; ९:४; १०:१७; २५:१७; २८:१५; ३१:१६; ३२:३५,४१; यहोशू ७:१. न्यायी. १:७; २:१४; ६:५६; १ शम. २:३०; ३:११; ६:१६; १५:१७; २ शम. ६:७; १२:१; २२; २४:११; १ राजा ८:२०; २ इति. ६:१७; १६:७. एज्रा ८:२२. नहेम. ९:३३. अय्य. ४:१७; ८; १०:३; ११:११; १२:६; १३:१५; १४:१५; ३४:१०; ३५:१३; ३७:२३; ४०:८. (देखो. भजन.) नीति. ११:२१ १५:८; २८:६; ३०:५. सभोप. ५:८; ८:१२; ९:२. यश. ४५:२१. यिर्म. ५:३; ९:२४; २३:२०; ३२:१९; ५०:७; ५१:६. विलाप. १:१८. यहेज. ७:२७; १६:३५; १८:१०; ३३:१७. दान. ४:३७; ९:१४. होशे. ४:५. नहेम. १:३. हब. १:१३. सपन. ३:५; मल. २:१७; ४:१. मत्ती. १० १५; २०:१३; २३:१४. लूक १२:४७; १३:२७. योहन ७:१८. प्रेरित. १०:३४; १७:३१. रोम. २:२; गल. ६:७. इफिसी. ६:८; कल. ३:२५. याकूब. १:१३. १ योहन १:६. प्रकाश. १५:३; १६:१७।

ज्ञान, बुद्धि और बल. उत्प. १; ३: ६-९; ४१:१६; निर्ग. ४:१, ११; ७:१०; १२:२६; १४; १५; ३३:८; ३४:५; ३५:३०; ३६. गिन. ११:२३; १२; २३:९; २३:४; २४:१. व्यवस्था ३; ४:३२; ५:२४; ६:२२; ७; १०; २६; २८:१८; २९:२९; ३२:४. यहोश ३; ६; ७:१०; २३ ६; २४; न्यायी २; १ शम. २; ४; ५; १२:१८; १४:६; १६:७; १७:३७,४६; १८:१०; २३; २ शम. ७:२२; १ राजा. ८:२७; २२:२२. १ इति १६:२४; १७:४; २२:१८; २८:६; २९:११; २ इति. ६:१८; १४:११; २०:६; नहेम. ९:५; अय्य. ४:६; ५:९; ९; १०:४; ११:१२; १९:६; २१:१७; २२:२३; २६:६; ३३; ३४:२२; ३५:४१. (देखो भजन) नीति.

३:१९; ५:२१; ८:२२; १५:३; १६:९; १९:२१; २१:३०. सभोप. ३:११; ७:१३; यशा. २:१०; ६:३; १२:४; १४:२४; २८:२९; २९:१६; ३०:१८; ३३:१३; ४०:२९; ४१:२१; ४२:८; ४३:१३; ४४:६,२३; ४५:२०; ४६:५; ४७:४; ४८:३; ५२:१०; ५५.११; ५९:१; ६०:१; ६६:१; यिर्म. ३:१४; ५:२२; १०:६; १४:२२; २९:२३; ३२:१०. बिलाप. ३:३७. यहेज. ८:१२; ११:५; २२:१४. दान. २:२०; ३:१७, २९; ४:३४; ६:२६. योएल. २:११. आमोस. ५:१२; ८:७. हब. २:१४. मल. ३:१६. मत्ती ५:४८; ६:१३; ९:३८; १०:२६; १२:२५; १९:२६; २२:२९. मार्क ५:३०; १२:१५. लूक. १:४८; १२:५; १८:२७. योहन १:१४; २:२४; ५:२६; ६:६१; ११:२५; १६:१९; १८:४; १९;२८; २०:१७. प्रेरित १:२४; २:१७; ७:५५; १५:१८. रोम. १:२०; ४:१७; प्रेरित १:२४; २:१७; ७:५५; १५:१० रोम. १:२०; ४:१७; ८:२९; ११:३४; १५:१९; १६:१७; १ कर. २:९,१५; २ कर. ४:६; १२:९ १३:४; गल. २:८. इफिसी १:१९; ३:७; ६:१०; फिल. १:६; ३:२१ कल. ३:४; १ तिम. १:१२, १७. इब्र. १:३; २:११; ४:१२; याकूब. ४:६; १ पितर. २:२०; १ योहन. १:५; ३:२०. यहूदा. १, २४; प्रकाश १:८; ४:११; ५:१३; ११:१७; १९:६; २१:३ ।

बिश्वासयोग्य और सत्य—गिन. २३:१९. व्यवस्था. ७:८. यहोशू. २१:४५; २ शम. ७:२८; १ राजा. ८:५६. भजन १९:९; ८९:३४; १०५:८; १११:७; ११७; ११९:८६,१६०; १४६:६. यशा. २५:१; ३१:२; ४६:११; ६५:१६; यिर्म. ४:२८. बिलाप. २:१७. यहेज. १२:२५. मत्ती. २४:३५. योहन. ७:२८. रोम ३:४; १ कर. १:९; १५:५८; २ कर. १:१८, १ थिस. ५:२४; २ थिस. ३:३; २ तिम. २:१३. तीतु. १:२. इब्र. ६:१८; १०:२३; ११:११; १३:५; २ पितर ३:९. प्रकाश. १:५; ३:७; १५:३; १६:७ ।

दया, भलाई और प्रेम—उत्प. १:२८; ३:१५; ४:४; ८; ९; १५:४; १६:७; १७; १८:१६; १९:१२; २१:१२; २२:१५; २४:१२; २६:२४; २८:१०; २९:३१; ३२:९,२४; ३९:२; ४६. निर्ग. १:२०; २:२३; ३:७;

६; १६; १७; २०:६; २२:२७; २३:२०; २६:४५; ३२:१४; ३३:१२; ३४:६; लैव्य. ४:३५; ६; ३:४०. गिन. १४:१८; २१:७. व्यवस्था ४:२९; ७:७; ८; १०:१५; १८:१५; २०:४; २८:१; ३०; ३२:७,४३; ३३; यहोशू २०. न्यायी. २:१६; ६:३६; १०:१५; १३; १५:१८; १ शम. २:९; ७; २५:३२; २ शम. ७:५; १२:१३; १ राजा. ८:५६; २ इति. १६:९; ३०:६. एज्रा. ८:१८. नहेम. २:१८; ९:१७. अय्य. ५:१७; ७:१७; ११:६; ३३:१४; ३६:११; ३७:२३. भजन. ३४:८; ३६:५; ६९:१६. नीति. ८:३०; ११:२०; १८:१०; २८:१३. सभोप. २:२६; ८:११. यश. २५:४; २७:३; ३०:१८; ३८:१७; ४०:२९; ४३:१; ४८:९,१७; ४६:१५; ५४:७; ३१:३,१२; ३२:३६; ३३:११; ४४:२८. बिलाप. ३:२२, ३१. यहेज. २०:१७; ३३:११. दान. ६:६. होशे. २:१६; ११:१४; १३:१४; १४:३. योएल २:१३. मीका. ७:१८. नहेम. १:७. हब. ३:१८. सपन ३:१७. मल. ३:६,१६; ४; मत्ती. ५:४५; १९:१७; २३:३७. लूक १:५०,७८; ५:२१; ६:३५; १३:६. योहन. १:४,९; ३:१६; ४:१०; १४; १५:९; १६:७; १७. प्रेरित. १४:१७. रोम. २:४; ३:२५; ५:५; ८:३२; ६:२२; ११; २ कर. १:३. १२:६; १३:११. गल. १:४; इफिसी. २:३,१७; ४:६; १ तिम. २:४; ६:१७; २ तिम. १:८. तीत. १:३; ३:२०; २ पितर ३:९,१५. १ योहन. १; यहूदा. २१. प्रकाश. २:३. देखो भजन।

जलन रखना—निर्ग. २०:५; ३४:१४; व्यवस्था ४:२५; ५:६; ६:१५; २६:२०; ३२:१६. यहोश. २४:१६. भजन ७८:५८; ७६:५; यहेज. १६:२३. होशे. १; २; योएल. २:१८. सपन. १:१८. जकर्या १:१४; १ कर. १०:२२. प्रकाश. २:४।

सब का न्याय करनेहारा—उत्प. १८:२५; व्यवस्था. ३२:३६. न्यायी. ११:२७. भजन. ७:११; ६:७; ५०; ५८:११; ६८:५; ७५:७; ६४:२; सभोप. ३:१७; ११:६; १२:१४. यश. २:४; ३:१३. यर्म. ११:२०; प्रेरित. १०:४२; रोम. २:१६. २ तिम. ४:८. इब्र. १२:२३. यहूदा. ६. प्रकाश. ११:१८; १८:८; १६:११।

मन को जांचनेहारा—१ इति. २८:६; भजन. ७:६; ४४:२१; १३६:२०.

नीति. १७:३; २४:१२; यिर्म. १७:१८; प्रेरित. १:२४. रोम. ८:२७. प्रकाश. २:२३।

धाम और शरण. व्यवस्था ३३:२७; २ शम. २२:३; भजन ६:६; ४६:१; ५७:१; ५६:१६; ६२; ७१:७; ६१; ६४:२२; १४२:५: यश. ८:१४. यहेज ११:१६; इब्र. ६:१८।

उद्धारकर्त्ता—भजन १०६:२१; यश. ४३:३,११; ४५:१५; ४६:२६; ६०:१६; ६३:८. यिर्म. १४:८. होशे. १३:४; लूक. १:४०।

—के नाम :—

ज्योतियों का पिता. याक. १:१७।

स्वर्ग का परमेश्वर. यहेज. ५:११; नहेम. १:४:२,४।

सेनाओं का परमेश्वर. भजन. ८०:७,१४,१९।

पवित्र. अय्य. ६:१०; भजन १६:१०. यश. १०:१७. होशे. ११:६. हब. १:१२; १ योहन. २:२०।

इस्राएल का पवित्र—२ राजा. १६:२२; भजन ७१:२२. यश. १:४. यिर्म. ५०:२९; ५१:५; यहेज. ३६:७।

मैं जो हूं. निर्ग. ३:१४।

जल उठनेहारा. निर्ग. ३४:१४।

यहोवा—निर्ग. ६:३. भजन. ८३:१८. यश. १२:२; २६:४।

राजाओं का राजा. १ तिम. ६:१५. प्रकाश १७:१४।

जीवता ईश्वर. व्यवस्था. ५:३६. यहोश. ३:१०।

प्रभुओं का प्रभु. प्रका. १७:१४. व्यवस्था १०:१७. १ तिम. ६:१५।

पराक्रमी ईश्वर. भजन. ५०:१; यश ९:६; १०:२१., यिर्म. ३२:१८; भजन. ७:१७।

परम प्रधान ईश्वर. गिन २४:१८. भजन. ५७:२; दान. ३:२६।

—पिता :—

मत्ती ११:२५; २८:१६. मार्क १४:१६. लूक. १०:२१; २२:४२; २३:३४, ४६; योहन १:१४. प्रेरित १:४; २:३३. रोम. ६:४; ८:१५; ११:२८; १५:६; १ कर. ८:६; १५:२४; २ कर. १:३; ६:१८; गल.

१:१, ३, ४; ४:२,६; इफिसी. १:१७. फिलिप.. २:११,२२; कल. १:१६; २:२; १ थिस. १:१; २:११; इब्र. १२:७; ९. याकूब १:२७; ३:९; १ पितर १:२, १७; २ पितर १:१७; १ योहन १:२; २ योहन ३:४,९; यहूदा १ ।

—**पुत्र**—मत्ती ११:२७; मार्क १३:४२; लूक १:३२. योहन १:१८; प्रेरित ८:३७; ६:२०. रोम. १:४; २ कर. १:१६. गल. २:२१. इफिसी. ४:१३. इब्र. ४:१४; १ योहन २:२२; प्रकाश. २:१८. देखो. खीष्ट ।

—**पवित्रात्मा**—देखो आत्मा—ईश्वर का, पवित्र ।

ईश्वर का भवन—उस से प्रेम. भजन २६:८, २७:४, ३६:८, ४३:३,४; ६३:२; ६५:४; ६६:१३-१५; ८४:१-१०; १२२:१-८; १३२:७-९. के लिये जलना. भजन ६९:९. मत्ती २१:१२. मार्क ११:११. लूक १९:४५. योहन २:१५. उसको सजाना. यश. ६०:१३ ।

ईश्वर की प्रेरणा—धर्मपुस्तक के लिये. लूक १:७०. प्रेरित. १:१६; ३:२१; रोम १:२; २ तिम. ३:१६. इब्र. १:१; २ पितर १:२१. देखो. गिन. १२:६-८. रोम. १५:४; १ कर. १०:११ ।

ईश्वर के पुत्र—उत्प. ६:४. दुत. अय्य. १:६; २:१; ३८:७ देखो पुत्रत्व ।

ईश्वर भक्ति—का भेद. १ तिम. ३:१६. कब फलदाई हो सकती है. १ तिम. ४:८; ६:५,६. अब और आनेवाले जीवन की प्रतिज्ञा की गई. १ तिम. ४:८. ऐसे लोग सताये जायेंगे. २ तिम. ३:१२ ।

उ

उंगली—ईश्वर की. निर्ग. ८:१६; ३१:१८. लूक. ११:२० ।

—**खीष्ट की**. योहन. ८:६ ।

उजाड़ना—दान ८:९-१४, ९:२७; १२:११. मत्ती २४:१५. मार्क १३:१४. लूक २१:२०. उसके चित्र. यश. १४:२३. २४:१-१२; ३२:१३; ३४:९-१५. सपन. २:१४ ।

उजियाला—उत्प.१:३. यिर्म ३१:३५.(देखो, ज्योति,प्रकाश)—परमेश्वर के अनुग्रह का चिन्ह. निर्ग. १०:२३; भजन ४:६; २:१; ९७:११. यश. ९:२; ६०:१९ ।

—परमेश्वर के वचन के द्वारा आता है. भजन. १९:१८; ११९:१०५, १३०. नीति. ६:२३ ।

—आश्चर्यमय—मत्ती. १७:२; प्रेरित. ६:३ ।

—मसीह. जगत का—लूक २:३२. योहन १:४; ३:१९; ८:१२,३५. प्रकाश २१:२३ ।

—के पुत्र. इफिसी ५:८; १ थिस. ५:५; १ पितर २:९ ।

—परमेश्वर है. १ तिम. ६:१६; १ योहन १:५ ।

उड़ाऊ—खाऊपन. डांटा गया. व्यवस्था. २१:२०. नीति. २३:१-३,२०, २१; २५:१६. यश. २२:१३. आमोस ६:४;१ पितर ४:३; यहूदा १२ ।

उतावली—धनी होने के लिये करना—डांटी गई है. नीति. २०:२१; २८:२०-२२; १ तिम. ६:९—आत्मा, डांटी गई. नीति. १४:२९; २९:२०. सभोप. ५:२; ७:६; ८:३. दान. २:५. याक. १:१९ ।

उत्तेजक औषधि—२ शम. १६:२. भजन. १०४:१५. नीति ३१:६ १ तिम. ५:२३ ।

उत्पन्न—देखो, जन्म ।

उत्साह—परमेश्वर के लिये. गिन. २५:७-१३. २ शम. ६:१४; ७:१-३; १ राजा १९:१०,१४; २ राजा १०:१६; १ इति. १७:१,२. भजन. ११९:१३६, १५८. यहेज ६:४; २ इति. ९,२ ।

—आत्मा—रोम. १२:११. गल. ४:१८. प्रकाश. ३:१६ ।

—पागलपन का. प्रेरित. ७:४५; ८:१-३; ६:१. २; १३:३४; २१:२७; २२:३-५; २३:७,१२; २६:९-११. गल. १:१४. फिल. ३:६; १ थिस. २:१४-१६ ।

—को वश में रखना. मत्ती. ८:४; ६:३०; १२:१६; १६:२०. मार्क १:४२, ४३; ५:१९; लूक ८:३८; ६:२१; १ कर. १४:२६-३३ ।

—फिर देखो. २ कर. ७:११, रोम. १०:२ ।

ऊ

ए

ऐ

ओ

ओस—एक आशीस. उत्प. २७:२८. व्यवस्था. ३३:१३—एक चिन्ह. न्यायी. ६:३७—दृष्टान्त रूपी. व्यवस्था ३२:२; भजन ११०:३; १३३:३. नीति. १९:१२. यशा. २६:१६. श्रेष्ठगीत. ५:२; होशे ६:४; १३:३; १४:५. मीका ५:७।

ऋ

ऋण—भरा जाए—भजन ३७:२१. नीति ३:२७. मत्ती २२:२१. मार्क १२:१७. लूक २०:२५. रोम १३:७,८।
—देखो, उधार।

ऋणी—उनका दृष्टान्त. मत्ती १८:२१. लूक ७:४१; १६; (मत्ती ६:१२)।

ऋतु—परमेश्वर समय पर देता है. उत्प. १:१४; ८:२२; व्यवस्था ११:१४. अय्यूब ३८:२२-३२. यिर्म. ५:२४. योएल २:२३. प्रेरित १४:१७—देखो, वर्षा।
—देखो, समय।

क

कंगाल—जिन्हें परमेश्वर ने किया है. अय्य. २४:४. भजन. १०:२. नीति. १३:८; १४:२०; १८:२३; १९:४; ३०:९. सभोप. ६:१५. याक २।
—पन के कारण. नीति. ६:६; १०:४; १३:४; १९:१५; २०:१३; २३:२१; २८:१९।
—उनका दुःख. निर्ग. २२:२५; २३:३; व्यवस्था १५:७; २४:१२. अय्य. २४:९. भजन १२:५, १४:६; ८२:३; यशा. ३:१४. यिर्म. २२:३; नीति. १४:३१; १७:५; २२:१६, २२; २८:३; सभोप. ५:८. आमोस. २:६; ४; ५:११; ८; ४; जकर्याह ७:१०. याक. २:२।
—उनके संग उचित व्यवहार. निर्ग २३:११; लैव्य १९:१०; २३:२२; २५:२५. व्यवस्था. १५:७. भजन ४१:१; ११२:९. नीति. १४:२१;

२१:१३; २६:७. यश. ५८:७; २ कर. ८; ६; गल. २:१०; १ तिम. ६:१७।

—तुच्छ न समझे जाएं. लैव्य १६:१५. व्यवस्था १:१७; १६:१६. नीति २४:२३; २८:२१. याक. २।

—उनके संग परमेश्वर की बाचा. अय्य. ५:१५; भजन ६:१८; ६८:१०; ६६:३३; ७२:२; १०२:१७; ११३:७; १३२:१५; १४४:१०; १४६:६. सपन. ३:१२; जकर्या ११:७।

—परमेश्वर की दृष्टि में धनवानों के बराबर हैं. निर्ग ३०:१५. अय्य. ३१:१५ ३४:१६. भजन. ४६:२. नीति. २२:२. याक. २:५।

—मंडली में उनके लिये प्रबन्ध. प्रेरित. ६:१; १ कर. १६:१, २ कर. ८:६. गल २:१०।

—जो मन के हैं सो धन्य हैं. मत्ती ५:३; लूक ६:२०; यश. ६६:२।

कटनी—के विषय में बाचा. उत्प. ८:२२. यिर्म ५:२४।

—न्याय के दिन का दृष्टान्त. यश. १७:५. यिर्म ५१:३३।

—आत्मिक. योएल ३:१३. मत्ती ६:३७, ३८; १३:३०, ३६. लूक १०:२. योहन ४:३५. प्रकाश १४:१५।

—का आनन्द. यश ६:३; १६:६, १०. यिर्म. ४८:३३।

—की उचित बिधि. रूत. २:४-१७।

कठिनाइयां—धार्मिक. उत्प. १८:२३,३२; २१:१; ३२:२४. भजन ३७; ७३; ७४:१; ८६:३८-५१. यश. ६३:१७. यिर्म. ४:१०; १२:१; २०:७; ३२:१६-२७. योना १:३:४. मत्ती १६:१०-१२; १२:१३-२४. लूक १०:३८-४२; १८:१८-२७; २०:१६-४४. योहन ३:४-१३; ४:६: २६; ६:६१-६३; ११:२४-२७, ४० इत्यादि।

कटोरा—देखो, पियाले।

कठोर—मन करना. डांटा गया है. व्यवस्था १५:७; १ शम. ६:६; २ राजा १७:१४. नहेम. ६:१६, १७, २६. भजन ६५:८. नीति २१: २८; २६:१४; २६:१. यश ६३:१७. यिर्म. ५:३; ७:२६. यहेज ३:७.

दान. ५:२०. मार्क ३:५; ६:५२; ८:१७; १६:१४. इब्र ३:८—१५:४:७.
१ योहन ३:१७

—इसका फल. निर्ग. ५ से १४ पर्ब. व्यवस्था. २:३०. यहोशु. ११:२०.
योहन १२:४० ।

कड़ा—देखो, कठोर ।

कनान—के पहिले निवासी. उत्प. १०:१५-१८; १४:५, व्यवस्था २:१०-
१५; २०-२३; ६:२; यहोशू ११:२१, २२; १५:१३, १४ ।

—के उपजाऊ होने के विषय में. लैव्य २०:२४. गिन. १३:२७; १४:८;
१६:१३, १४. व्यवस्था ६:३; ८:७-९; ११:६-१२ ।

कनानी—उनकी दुष्टता. उत्प. १५:६. लैव्य. १८:२४, २५. व्यवस्था
६:५ ।

—इस्राएलियों को उन्हें दूर करने की आज्ञा. निर्ग. २३:३१-३३;
३४:११-१६. गिन. २१:७-१७; ३३:५२-५५. व्यवस्था ७:२०, २०:
१३-१८. यहोशु. ६:२१; १०:२८-४० ।

कपट—देखो, छल ।

कंपड़ा—देखो, वस्त्र

कपोत—देखो, कबूतर ।

कबर—के विषय में नियम. गिन.१६:१६ ।

—के ऊपर विजय. भजन १६:१०, ११. यशा. २५:८; २६:१६. यहेज.
३७:१ १२.होशे १३:१४. योहन ५:२८; १ कर. १५:५५. इब्र. २:१४,
१५. प्रकाश २०.१३, १४ ।

—में न ज्ञान है न काम. अध्य. १४:१२-२१. भजन ६:५; ३०:६; ८८:
१०-१२; ११५ १७. सभोप. ९:५; यश. ३८:१०, ११, १८ ।

कवी—अन्य देशियों के वचन. प्रेरित. १७:२८, १ कर. १५:३३. तीत.
१:१२ ।

कविता—यहूदी कविताएं. उत्प. ४:२३; ६:२५-२७; ४६:२-२७. निर्ग.

१५:१-२१. गिनती. २१:१७, १८, २७-३०. न्यायी. ५; १ शम. १:१७-२७ ।

कबूतर—नूह की नौका से उड़ाया गया. उत्प. ८:८—बलिदान में काम आता था. उत्प. १५:९. लैव्य. १२:६, १४:२२—दृष्टान्त रूपी. भजन ६८:१३; ७४:१९. श्रेष्ठ गीत. १:१५; २:१४—पवित्रात्मा उसके रूप में आया. मत्ती ३:१६ ।

कम असल—देखो—बिजन्मा ।

कमर बंध-पटुका—प्रधान याजक का. निर्ग. २८:४ ।

दृष्टान्त रूपी. यश. ११:५. इफिसी. ६:१४. प्रकाश १:१३, १५:६. यिम. १३:१ ।

कर—परमेश्वर के लिये. गिन. ३१:२८-४०—दुःख देनेहारा. १ राजा. १२:१-१४. २ इति. १०:१-१४—सुलैमान कनानियों पर लगाता है. १ राजा. ९:२१. २ इति. ८:८—मिस्री लोगों ने इस्राएलियों पर लगाया. २ राजा. २३:३३—कैसर को देना उचित है व नहीं. मत्ती. २२:१७. मार्क. १२:१४. लूक २०:२२. फिर देखो. रोम. १३:६, ७ ।

कर उगाहनेहारे—उनका स्वभाव. मत्ती. ५:४६; ९:११; ११:१९; १८: १७. लूक ३:१२ ।

—उन में से कितने यीशु पर विश्वास करने लगे. मत्ती. २१:३२. लूक. ५:२७; ७:२९; १५:१; १९:२ ।

और फरीशी का दृष्टान्त. लूक १८:१० ।

कर्त्तव्य—मनुष्य का व्यवस्था. ६:२; १०:१२; सभोप. १२:१३. मीका. ६:८. लूक. १७:१०—पालन न करने का दण्ड. १ शम. २:२७-३६ ।

करुणा—देखो. कृपा, दया ।

कर्म—देखो काम ।

करुबी—अदन की बारी की रक्षा करते. उत्प. ३:२४—तम्बू के भीतर

रखे गये. निर्ग. २५:१८, ३०:७. मन्दिर में. १ राजा ६:२५; २ इति. ३:१०. (देखो. १ शम. ४:४; भजन ८०:१. यहेज ४१:१८). यहेजकेल का दर्शन. यहेज. १; ६; १० ।

कलंक—बलिदान निष्कलंक हो. निर्ग. १२:५. लैव्य. १:३; व्यवस्था १७:१ --मसीह का प्रतिरूप. १ पित. १:१९—मंडली का. इफ. ५:२७ ।

—याजक इस से रहित हो. लैव्य. २१:१६ ।

—हमारा कलंक प्रभु मसीह पर लगाया गया. यश. ५३:६; इब्र. ६:२८; १ पितर. २:२४; १ योहन ३:५ ।

कल्याण—देखो मेल, शान्ति ।

कहावत—मनुष्यों की परमेश्वर के वचन के बराबर न समझी जाए. मत्ती. १५:१-६. मार्क. ७:६-१३. कल. २:८—यहूदियों की. गल. १:१४—अधर्मियों की छोड़ देनी चाहिये. १ पितर १:१८—प्रेरितों की. १ कर. ११:२, २३; १५:३; २ थिस. २:१५: ३:६ ।

कांच—का समुद्र. प्रकाश. ४:६; १५:२ ।

कातर—सुकर्म्म करने में. गलाती ६:६ ।

कान—परमेश्वर के हमारी प्रार्थनाओं को सुनने के लिये खुले हुए हैं. भजन १०:१७, ३८:६, ६५:२, ६६:६ ।

सुनने से आशीष—२ शम. ७:२७; भजन. ४५:१०; ७८:१; ६४:६. नीति १५:३१; २०:१२; २२:१७; यश. ५०:४; ५५:३. मत्ती. ११:१५ ।

काव्य—देखो, कविता ।

काम—में निराशा—गिन. ११:१०:१५; १ राजा १६:४-१४; यश. ४६:४. यिर्म. १५:१०; २०:७-१० ।

प्रायश्चित्त के दिन न किया जाए. लैव्य २३:२८ ।

—परमेश्वर हमारे कामों के अनुसार फल देता है. उत्प. ४:७; अय्य.

३४:११. भजन ६२:१२. नीति २४:१२. यिर्म. १७:१०; ३२:१६. एज्रा ३०:२०. मत्ती १६:२७. रोम २:६; १ कर. ३:८; २ कर. ५:१०; ११:१५; १ पितर १:१७. प्रकाश. २:२३; २०:१२; २२:१२ ।

—भले काम—प्रभु मसीह की संगत के फल. मत्ती ६:२२,२३; ७:१६-१८. १२:३३-३५. लूक ६:४३-४५; ११:३४-३६. योहन १५:८-१६. रोम ६:२२. २ कर. ६:८. गल. ५:२२. फिल. १:११. कल. १:१०; २ थिस. २:१७ ।

—जो परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य हैं. भजन॰ ११:११. यशा. ५८: १०-१२ ।

—ज़रूरी—मत्ती ७:२१-२७. लूक ६:४६-४६. रोम ८:१, १३; १ कर. १५:५८. इफिसी. २:१०; ४:२४. तीत. ३:८,१४; याक. १:२२-२७; २:२४-२६; १ योहन २:३-६; ३:६-१०, १७-२४ ।

—उनके द्वारा त्राण नहीं मिल सकता. लूक १७:७-१०. योहन ६:४४, ६५. रोम ६:३२; १०:३; ११:६; १ कर. ४:४. गल. ३:१०-१२. इ-फिसी २:९. तीत. ३:५ ।

देखो—आश्चर्य कर्म, परिश्रम ।

कार्य—देखो, काम ।

कारीगर—उत्प. ४:२१,२२. निर्ग. ३१:२-६; ३५:३०-३५; ३६:१-४; १ शम. १३:१६. २ शम. ५:११; १ राजा ५:१५; ७:१४; २ राजा. १२:१२. २२:६; २४:१६; १ इति. २२:२,१५; २६:५; २ इति. २:७,१४; २४: १२: श्रेष्ठ गीत. ७:१. यशा. ३:३; ४०:२०; ४१:७; ४४:१२-१३; ४६: ६. यिर्म. १०:६; २४:१. प्रेरित १६:२४; २ तिम. ४:१४ ।

काल—**अकाल**—का बिस्तार पूर्वक बर्णन. यिर्म. १४:१-६; योएल १—कनान देश में. उत्प. १२:१०—मिस्र देश में. उत्प. ४१:५६. —इस्राएल में. रूत १:१; २ शम. २१:१; १ राजा १८:२; २ राजा ६:२५; ७; लूक ४:२५ ।

—परमेश्वर की ओर से दण्ड—यशा. १४:३०; ५१:१६. यिर्म. ११:२२

काल—

१४:१२-१५; १५:२; १८:२१; २४:१०; २७:८; २९:१७; ३८:२. यहेज. ५:१२-१७; १४:२१।

—परमेश्वर के बचन का. आमोस. ८:११।

किरिया—जल्दी में खाना मना है. निर्ग. २०:७. लैव्य १९:२२. व्यवस्था ५:११. मत्ती ५:३३-३७. याक. ५:१२।

—खा कर परमेश्वर ने अपने बचन को पूरा किया. उत्प. २३:१६-१८. भजन ८९:३,३५,४९; ९५:११; १०५:९; ११०:४; १३२:११. यश. ४५:२३; ५४:९; ६२:८. यिर्म. ४४:२६; ४९:१३. आमोस ४:२; ६:८; ८:७. मीका. ७:२०. लूक. १:७३. प्रेरित. २:३०; ७:१७. इब्र. ३:११; ६:१३-१८; ७:२१।

—खाने के बिषय में नियम. लैव्य ६:३; १९:१२; गिन. ३०:२; भजन १५:४ (मत्ती ५:३३; याक. ५:१२)।

—आज्ञा दी गई. निर्ग. २२:११. गिन. ५:२१; १ राजा. ८:३१. एज्रा १०:५।

—के उदाहरण—उत्प. १४:२२; २१:३१; २४:२. यहोशू. १४:९; १ शम. २०:४२; २८:१०. भजन. १३२:२।

—वे जिन्हों ने जल्दी में किरिया खाई. एसाव. उत्प. २५:३३—इस्राएल याहेशू ९:१९—याप्ता. न्यायी. ११:३०—शावल. १ शम. १७:२४—हेरोद. मत्ती. १४:७. मार्क ६:२६।

कुआं—बैतलहम का. १ इति. ११:१७, १८।

—की आवश्यकता. उत्प. २१:२५-३०; २६:१८, २०-२२, ३२. यहोशू १५:१९. न्यायी. १:१५; २ इति. २६:१०; ३२:२-४।

—जिस में यूसफ डाला गया. उत्प. ३२; ४०:१५।

कुइच्छा—के बिरुद्ध शिक्षा. रोम ६:१२; १३:१४; गल. ५:२४; इफ. २:३; ४:२२; १ तिम. ६:९; २ तिम. २:२२. तीत. २:१२; ३:३; १ पितर १:१४; २:११; ४:२; २ पित. १:४; २:१०।

कुंजी—कुंजियां—ज्ञान की. लूक ११:५२. दाऊद की. यश. २२:२२;

प्रकाश. ३:७—स्वर्ग के राज्य की. मत्ती १९:१९; १८:१५-१८. योहन २०:२३; १ कर. ५:३-५; २ कर. २:५-७; १ तिम. १:२०. तीत. ३:१०.
—नरक व मृत्यु की प्रकाश १:१८, ६:१; २०:१।

कुकर्म—करना उचित नहीं है. निर्ग. २२:१६; लैव्य. १५:२०; गिन. २५; व्यवस्था. २२:२१; २३:१७; नीति. २:१६; ५:३; ६:२५; ७; ६:१३; २२:१४; २३:२७; २५:३; ३१:३; सभोप. ७:२६ होशे. ४:११; मत्ती. १५:१६; मार्क. ७:२१; प्रेरित. १५:२०. रोम. १:२६: १ कर. ५:६; ६:६; २ कर. १२:२१; गल. ५:१६; इफ. ५:५; कुर्ल. ३:५; १ थिस. ४:३; १ तिम. १:१०; इब्र. १३:४; १ पितर. ४:३; यहूदा ७; प्रकाश. २:१४; २१:९; २२:१५।

—आत्मिक—यहेज. १६:२६; होशे. १; २; ३; प्रकाश. १४:८; १७:२; १८:३; १५:२।

—देखो—अधर्म, व्यभिचार।

कुचल—देखो, घायल।

कुटम्ब—कुटम्बी—का कर्त्तव्य—व्यवस्था. २५:५; रूत. ३:९-१३. देखो, नातेदार।

कुटिल—देखो—कुकर्म, अधर्म।

कुड़कुड़ाना—मसीह के विरुद्ध—लूक ५:३०; १५:२; १९:७. योहन. ६:४१।

—परमेश्वर के विरुद्ध. निर्ग. १४:१०-१२; १५:२३-२४; १६:२-८; १७:३. गिन. ११:२-६; १४:२-५; १६:१-३५; २०:१-६. योनाह ४. (भजन १०६:२५)।

—डांटा गया. नीति १९:३. विलाप. ३:३७-४०. योहन ६:४३; १ कर. १०:१०. फिल. २:१४. यहूदा. १६।

कुत्ता—अशुद्ध पशु समझा गया. व्यवस्था २३:१८ (१ शम. १७:४३; २४:१४; २ शम. ३:८; ९:८; १६:९; २ राजा ८:१३. भजन ५९:६. मत्ती ७:६; १५:२६. मार्क. ७:२७. फिल. ३:२; प्रकाश. २२:१५।

—बैरियों को उसके समान समझते थे. भजन २२:१६।

कुत्ता—

—झूठे गुरुओं को. यश. ५६:१०. फिल. ३:२ ।

—आधीनी प्रगट करता है. २ शम. ९:८. मत्ती १५:२७ ।

—के सब्रो का दृष्टान्त. नीति. २६:११; २ पितर २:२२; प्रकाश. २२:१५ ।

कुपन्थ—देखो, झूठा धर्म ।

कुम्हार—परमेश्वर की शक्ति का प्रतिरूप. यश. ६४:८. यिर्म. १८:२. रोम. ९:२१ ।

—प्राचीन. १ इति. ४:२३ ।

कुरूप करना—मना किया गया. लैव्य १९:२७,२८; २१:५; व्यवस्था १४:१. (यश. १५:२; यिर्म. ९:२६; १६:६,७; ४१:५; ४७:५; ४८:३७. मत्ती ६:१६ ।

कुल—देखो, जाति, गोत्र ।

कुंवरपन—कब २ उचित है. मत्ती १९:१०-१२, २१. मार्क १०:२९; लूक १८:२९; १ कर. ७:६-४०; ९:५,१९,२३ ।

—पर शोक करना पड़ा. न्यायी. ११:३७,३८ ।

कुंवारी—से मसीह ने जन्म लिया. मत्ती १:१८; लूक. १:२७ ।

—कुवांरियों का दृष्टान्त. मत्ती २५:१ ।

कुशल—देखो, चैन ।

के बिषय में पावल का उपदेश. १ कर. ७:२५ ।

कृतघ्नता—देखो, नाशुक्रगुजारी ।

कोड़े—दण्ड देते समय उनकी संख्या. व्यवस्था २५:३. २ कर. ११:२४ ।

—मारना. यहूदियों का दस्तूर. व्यवस्था २५:३—रोमी दस्तूर. प्रेरित १६:३७, ३८; २२:२५—प्रभु मसीह को. मत्ती २७:२६. मार्क १५:१५. लूक २३:१६. योहन १९:१—पावल को. प्रेरित १६:२३,३७; २२:२४; २ कर. ११:२४ ।

कोढ़—की बिधि. लैव्य. १३—शुद्ध करने की बिधि. लैव्य १४; २२:४;

व्यवस्था २४:८—घर में. लैव्य १४:३३; मिरियम का. गिन. १२:१०—नामान का. २ राजा ५; उज्जियाह का. २ इति. २६:१९।

कोढ़ी—मसीह ने चंगे किये. मत्ती ८:३; मार्क. १:४१; लूक ५:१२; १७:१२—वह छावनी से बाहर रहे. लैव्य. १३:४६. गिन. ५:२; १२:१४।

कोप—मनुष्यों का—श्रय्य. ५:२; भजन ३७:८. न्यायी १२:१६; १४:२९; १५:१८; १६:३२; १९:११,१९; २१:१९,२४; २५:२८. २७:३; २९:२२; ३०:३३; सभोप. ७:९. मत्ती ५:२२. रोम. १२:१९. गल. ५:२०. इफिसी. ४:२६,३१; कल. ३:८; १ तिम. २:८. तीत १:७; याक. १:१९।

—भभकर धधकता है. नीति १५:१; २१:१४; २५:१५; २९:८. सभोप १०:४।

—उदाहरण—काईन. उत्पत्ति ४:५—एसाव. उत्प. २७:४१—याकूब. उत्प. ३१:३६—शिमोन और लेवी का. उत्प. ३४:७; ४९:५—मूसा. निर्ग. १६:१५; २०:१०. भजन. १०६:३३—बिलाम. गिन. २२:२७—शावल. १ शम. २०:३०—अहाब. १ राजा २१:४—नामान. २ राजा. ५:११—आसा. २ इति. १६:१०—उज्जियाह. २ इति. २६:१९—हामान. एस्तर. ३:५—नबूकदनेस्सर. दान. ३:१३. योनाह. ४—हेरोद. मत्ती २:१६—यहूदियों का. लूक ४:२८—नहेमय्या का. नहेम.५:६; १३:१७।

—प्रभु मसीह का. मार्क ३:५; १०:१४।

—**परमेश्वर का पाप पर.** उत्प. ३:१४; ४; व्यवस्था २९:२०; ३२:१९. यहोश. २३:१६; २ राजा २२:१३. एज्रा. ८:२२. भजन ७:११; २१:८; ७८:२१,५८; ८९:३८, ९०:७; ९९:८; १०६:४०; नीति १:२८. यश. १; ३:८; ९:१३; १३:९; ४७:६; यिर्म. ७:१९; ४४:३. नहूम. १:२; योहन. ३:३६. रोम १:१८; २:५; १ कर. १०:२२; इफिसी. ५:६. कल. ३:६. १ थिस. २:१६. इब्र. ३:१८; १०:२६. प्रकाश. २१:८; २२।

—कोप करने में धीमा है. भजन १०३:८. यश. ४८:९; योहन ४:२. नहूम १:३।

—ठीक है. भजन ५८:१०. विलाप. १:१८. रोम. २:५; ३:५; ९:२२; प्रकाश. १६:५।

—क्योंकर प्रगट किया जाता है. उत्प. १६; निर्ग. १४:२४. अय्यूब. ९:१३; १४:१३; भजन. ७६:६; ७८:४९; ९०:७. यश. ९:१९. यिर्म. ७:२०; १०:१०. विलाप. १; यहेज. ७:९. नहूम. १।

—न्याय के दिन प्रगट किया जायेगा—सपन. १:१४. मत्ती २५:४१. रोम. २:५; २ थिस. १:८; २ पितर ३; प्रकाश. ६:१७; ११:१८; १९:१५।

—से डरना चाहिये. निर्ग ३२:११; २ शम. २४:१७. भजन २:१२; ६; ३०:५; ३८; ३९:१०; ७४; ७६:७; ७९:५; ८०:४; ९०:११. यश. ६४:९. विलाप. ६:३९. दान. ९:१६. मीका. ७:९. हब. ३:२; मत्ती १०:२८. लूक १८:१३।

मसीह ने शान्त कर दिया. लूक २:११,१४. रोम. ३:२५; ५:९; २ कर. ५:१८. इफिसी. २:१४. कल. १:२०; १ थिस. १:१०; १ योहन २:२।

पश्चात्ताप के द्वारा. १ राजा २१:२९. अय्यूब. ३३:२७. भजन. १०६:४३; १०७:१९. यिर्म. ३:१२; १८:७; ३१:१८; योएल. २:१४. लूक १५:१८।

कोमल—देखो—नम्र, दीन।

कोसना—देखो, स्राप।

कृतज्ञ—२ शम. १९:३३-४०. लूक ७:३७-४६।

कृतघ्न—देखो, नाशुक्रगुजार।

कृपा—आपस में बढ़ाई जाए. रूत १:८; ३:१०; २ शम. २:६. नीति. ३१:२६. रोम १२:१०. इफिसी. ४:३२. कल. ३:१२; १ थिस. ४:९. इब्र. १३:१; २ पितर १:७।

—अपने शत्रुओं पर की जाए. देखो, ईश्वर।

—भाइयों पर. व्यवस्था. २२:१-४,८; २४:६,१०-१३; १ कर. १३:४; २ कर. ६:६।

—उदाहरण—उत्प. २४:१८-२०; ५०:२१. निर्ग. २:१७. यहोश. २:१२;

६:२५. रूत २:८-१६. १ शम. २०:८-१६; २ शम. ६:१-७. एस्तर ४:६. यिर्म. ४०:१-५. प्रेरित. २८:२ ।

क्रूश—पर मसीह की मृत्यु—देखो, ख्रीष्ट ।
—की सामर्थ्य. १ कर. १:१८. २४ ।
—का बयान करने की महिमा. १ कर. १:२३; २:२. गल. ३:१; ६:१२-१४ ।
—से ठोकर. १ कर. १:१८,२३; गल. ५:११; ६:१२. फिल. ३:१८ ।
—की निन्दा. फिल. २:७,८. इब्र. १२:२ ।
—उठाया जाये. देखो अपने का क्रूश पर चढ़ाना ।

क्रोद्ध—देखो, कोप ।

क्लेश—देखो, दुःख ।

ख

खड्ग—देखो, खड्ग ।

खजूर—की डालियां—लैव्य. २३:४०. नहेम. ८:१५. योहन. १२:१३. मत्ती २१:८. मार्क ११:८—जीत का चिन्ह. प्रकाश. ७:९ ।
—के पेड़ खोदे गये. १ राजा ६:२९,३२,३५; ७:३६; २ इति. ३:५. एज्रा ४०:१६ ।
—यरीहो नगर. व्यवस्था ३४:३. न्यायी. १:१६; ३:१३; २ इति. २८:१५ ।

खड्ग—एदन की बारी के पाटकों पर. उत्प. ३:२४—परमेश्वर का. व्यवस्था ३२:४१; ३३:२९. न्यायी. ७:१८; १ इति. २१:१२. भजन १७:१३. यश. २७:१; ३४:६; ६६:१६. यिर्म. १२:१२; ४७:६. यहेज. ५:२; २१:३-५,१०; ३०:२४; ३२:१०. सपन. २:१२. जकर्या १३:७.
—प्रभु मसीह का. प्रकाश. १:१६; २:१२; १९:१५,२१—परमेश्वर का वचन उस से तेज है. इब्र. ४:१२ ।

खण्ड—भाग—भले और बुरे के बीच में. निर्ग. ८:२३—सुसमाचार के

द्वारा किया गया. यिर्म. २६:१६-१६. मत्ती १०:३४-३६. लूक १२:
५१. योहन ७:१२,४३; ६:१६;. १०:१९. प्रेरित. १३:४५; १४:४;
१७:४-६; १९:९; २८:२४—सफलता प्राप्त करने में हानिकारक है.
मत्ती १२:२५-२९. मार्क ३:२३-२७. लूक ११:१४-१९—पिछली बार
जो किया जायेगा. मत्ती १३:४१,४७-५०; २२:१०-१४; २५:३१-४६।

—इस्राएलियों के मध्य में. न्यायी ५:१५-१७,२३।

—होने में पाप—रोम. १६:१७; १ कर. १:१०-१४; ३:३-२३; १४:२६-
३८; १ थिस. ६:१३; २ थिस. ३:६।

खतना—की रीति का चलाना. उत्प. १७:१०-१४—की रीति को मानना.
उत्प. १७:१४; ३४:१४-१७. निर्ग. ४:२५; १२:४८—कनान देश में
प्रवेश करने के आगे. यहोश ५:२-९।

—के समय नाम रखना. लूक १:५९; २:२१।

—क्यों मसीहियों को कराना उचित है. प्रेरित १५:१-३१; गल. २:१-
१५; ५:२-६,११; ६:१२-१६।

—सच्चा और उसकी आवश्यकता. रोम. २:२५-२९; ३:१,२।

—मन का. लैव्य. २६:४१. व्यवस्था. १०:१६; ३०:६. यिर्म. ४:४;
६:१०; ९:२६. यहेज. ४४:७. रोम २:२९. फिल. ३:३. कल. २:११।

खम्बा—नमक का, लूत की पत्नी बन गई. उत्प. १९:२६. लूक
१७:३२।

—याद के लिये खड़े किये गये. याकूब का. उत्प. २८:१८; ३५:२०—
अबिसलूम का. २ शम. १८:१८. (देखो. उत्प. ३१:४५,५१,५२.
३५:१४,२०. निर्ग २४:४)।

आग का. निर्ग. १३:२१,२२; १४:२४; ३३:९,१०; गिन. ६:१५-२३;
१०:११,१२,३४. व्यवस्था. ३१:१५. नहेम. ६:१२. भजन ६९:७।

—मन्दिर में बनाये गये. १ राजा ७:१५-२१; १०:१२।

—बाबुल को ले गये. यिर्म. ५२:२०।

—सामर्थ्य के प्रतिरूप समझे गये. यश. १६:१९. यिर्म. १:१८. गल.
२:९; १ तिम. ३:१५. प्रकाश. ३:१२।

ख्रीष्ट—परमेश्वर का पुत्र—
३५; ३:२२; ४:३,६; ४:३४,३१. योहन. १:३४, ४०; ३:१६,१८, ३५,३६; ५:२२,२३; ६:४०,६९; १२:२६; १३:३; १४:१३; १५:२२; १६:२७,३०; १७:१; १६:७; रोम १:६; ५:१०; ८:३,२६,३२; १ कर. १:९. गल. १:१६; ४:४, ६; कल. १:१३; १ थिस. १:१०. इब्र. १:२, ५,८; ३:६; ४:१४; ५:५,८; ६:६; ७:३; १ योहन १:३,७; ३:२३; ४:९,१०; ५:६ ।

—मनुष्य का पुत्र—मत्ती ८:२०; ६:६; १०:२३; ११:१६; १२:८, ३२,४०; १३:३७,४१; १६:१६; १७:६, २२; २४:२७, ३०,४४; २५:३१; २६:२,२४,४५. मार्क ८:३८; ६:१२,३१,१३:१४; लूक ५:२४; ६:२२; ६:२२, २६; ११:३०; १२:८; १७:२२; १८:८; १६:१०; २१:३६; २२:४८; योहन १:५१; ३:१३; ५:२७; ६:२७,५३,६२; ८:२८; १२:२३,३४; १३:३१. प्रेरित. ७:५६; प्रकाश १:१३ ।

—इम्मानुएल—यश ७:१४; ८:८; मत्ती १:२३ ।

—बचन—योहन १:१-१४. प्रेरित. १०:३६; १ योहन ५:७. प्रकाश १६:१३ ।

—ईश्वर का मेम्ना—योहन १:२६, ३६; प्रकाश. ५:६; ६:१, १६; १२:११; १३:८; १५:३; १६:७; २२:१३ ।

मध्यस्थ—गल. ३:१६: १ तिम. २:५. इब्र. २:१७; ७:२५; ८:६; ६:१५; १०:१०; १२:२,२४; १३:१५ ।

—यहोवा हमारी धार्म्मिकता—यिर्म २३:६; ३३:१६; मल. ४:२; प्रेरित १०:३१. रोम ५:१८. फिल. १:११. इब्र. ७:२; २ पितर १:१ ।

—तेजोमय प्रभु—१ कर. २:८. याक. २:१ ।

—राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु—प्रकाश १६:१६ ।

—नबी, याजक और राजा—व्यवस्था १८:१५. यश. ४६; ५०; ५१; ५२. मत्ती. २:२; २३:३६; २४:४; २५:३४. लूक ४:१,२५,१६, १८,२४; ५:३,१७,३२; १६:४१; २१:१०,२५; २२:३४; २३:२,

खीष्ट—नबी, याजक और राजा—

२७; योहन १८:३७; १९:१४,१९ प्रेरित. १७:७; १ तिम. १-१७; ६:
१५. इब्र. १:८; २:१७; ३:१. प्रकाश. १:५; ११:१५; १५:३; १७:१४:
१९:१६।

अलफा और ओमिगा—प्रकाश. २१:६; २२:१३।

—का संसारिक जीवन—

उसके आश्चर्यमय जन्म का सन्देशा. यश. ७:१४; ११:१; मत्ती १:
१८; लूक १:३१. बैतलहम में पूरा हुआ. मत्ती १:२५; लूक २:७.
दूतों ने उसका समाचार सुनाया. लूक २:९-१४।

पूर्व देश के पण्डित उसको भेंट चढ़ाते. मत्ती २:१।

खतना और मन्दिर में भेंट चढ़ाना. लूक २:४६।

मिस्र देश में ले जाया गया. मत्ती २:१३।

मन्दिर में पण्डितों से बातचीत. लूक २:४६।

योहन से बपतिसमा पाना. मत्ती ३:१६. मार्क १:९. लूक ३:२१.
योहन १:३२; ३:२४।

शिष्यों को चुनना. मत्ती ४:१८. मार्क १:१६. लूक ४:३१; ५:१०.
योहन १:३८।

उपदेश करना और लोगों को चंगा करना. मत्ती ४:१२, मार्क १:१४.
लूक ४:१६।

फरीशी उसके विरुद्ध उठते हैं. मत्ती ९:३४।

उसका अपने दुःख और मृत्यु के विषय में आगे से कहना. मत्ती
१६:१७,२०. मार्क ८:९,१०; लूक ९:१।

तेजस्वी दिखाई देना. मत्ती १७. मार्क ९।

प्रभु भोज मुकर्र करना. मत्ती २६ मार्क १४. लूक २२. (१ कर.
११:२३)।

यहूदा ने पकड़वा दिया. मत्ती २६. मार्क १४. लूक २२. योहन १८.
प्रेरित १।

शिष्यों ने उसे छोड़ दिया. मत्ती २६ योहन १८।

हन्ना और कियाफा महायाजक और फिर पिलात और हेरोद के आगे

ख्रीष्ट का संसारिक जीवन—

ले जाया जाना. मत्ती २६:५७; २७. मार्क १४:५४; १५. लूक २३. योहन १८:१९ ।

पिलात ने निर्दोषी ठहराया परन्तु फिर भी यहूदियों को सौंप दिया. मत्ती २७; मार्क १५. लूक २३. योहन १८:१६ ।

क्रूश पर चढ़ाया गया. मत्ती २७. मार्क १५. लूक २३. योहन १६ ।

उसकी हड्डी तोड़ी न गई. योहन १६:३३ ।

पसली छेदी गई..योहन १६:३४ ।

कपड़े बांटे गये. मत्ती २७:३५. मार्क. १५:२४. लूक २३:३४. योहन १६:२४ ।

प्राण देना. मत्ती २७:५० ।

गाड़ा जाना. मत्ती २७. मार्क १५. लूक २३. योहन १६. और कबर का पहरा. मत्ती २७:६६ ।

जी उठना. मत्ती २८. मार्क १६. लूक २४. योहन २०:२१ ।

पितर को बहाल करना. योहन २१:१५ ।

स्वर्ग पर चढ़ जाना. मार्क १६. लूक २४. प्रेरित. १:९,१० ।

स्तीफान ने उसे स्वर्ग में देखा. प्रेरित ७:५५ ।

स्वर्ग में जाने के पीछे दिखाई दिया—पावल को. प्रेरित. ९:४; १८:६; २२:८—योहन को. प्रकाश. १:१३ ।

—के काम इस संसार में—

पण्डितों से प्रश्न करना. लूक २:४६ ।

परीक्षा किया जाना. मत्ती ४. मार्क १:१२. लूक ४ ।

पर्वत पर उपदेश. मत्ती ५; ६; ७ ।

मन्दिर को शुद्ध करना. भजन ६९:९ योहन २:१४ ।

निकोदीम को शिक्षा देना. योहन ३ ।

सोम्रिरोनी स्त्री से बात करना. योहन ४ ।

लोगों का उसको राजा बनाना. योहन ६:१५ ।

भाइयों का उसको चिढ़ाना. योहन ७:४ ।

लोगों की साक्षी. मत्ती १६:१३. मार्क ८:२७. लूक ९:१८. योहन ७:१२ ।

ख्रीष्ट के काम—संसार में—

योहन बपतिस्मा देनेहारे को सन्देशा भेजना. लूक ७:२२ ।
शिमोन फरीशी के घर उस पर तेल डाला जाना. लूक ७:३६ ।
कफर्नाहूम में कर देना. मत्ती १७:२४ ।
शिष्यों को दीनताई की शिक्षा देना. मत्ती १८. मार्क ९:३३. लूक ९:४९: २१:२४ ।
गालील से निकल कर यहूदिया को जाना. मत्ती १९:१ ।
त्याग के विषय में शिक्षा. मत्ती ६:३. लूक १६:१८ ।
व्यभिचारी स्त्री को क्षमा करना. योहन ८ ।
मर्था और मरियम की तुलना. लूक १०:३८-४२ ।
बच्चों को आशीष देना. मत्ती १३:१९. मार्क १०:१३. लूक १८:१५ ।
जक्की के घर जा उतरना. लूक १९:२ ।
बैतनिया में मरियम का उस के सिर पर तेल डालना. मत्ती २६:६. मार्क १४:३. योहन १२:३ ।
यिरूशलीम में प्रवेश करना. मत्ती २१. मार्क ११. लूक १९. योहन १२ ।
मन्दिर को शुद्ध करना. मत्ती २१:१२. मार्क ११:१५. लूक १९:४५ ।
गूलर के वृक्ष को सुखाना. मत्ती २१:१९. मार्क ११:१२ ।
यूनानियों का यीशु को देखना. योहन १२:२० ।
उसका उत्तर. योहन १२:२३ ।
प्रधान याजकों को. लूक २०:३. फरीशियों को. मत्ती २२:१५ ।
सदूकियों को. मार्क १२:१८ ।
पिता से महिमा पाना. योहन १२:२८ ।
महायाजक उस को मार डालने की चेष्टा करते हैं. मत्ती. २६:३. मार्क १४:१—यहूदा को पकड़वाने के लिये रुपये देना. मत्ती २६:१३. मार्क. १८:१०. लूक २२:३. योहन १३:१८ ।
निस्तार पर्व के लिये आज्ञा. मत्ती २६:१७. मार्क १४:१२. लूक २२:७ ।
पितर के इनकार करने के विषय में कहना. मत्ती २६:३४. मार्क १४:२९. लूक २२:३१. योहन १३:२६ ।
अपनों से प्रेम. योहन १३:१ ।

खीष्ट के काम—संसार में—

अपने शिष्यों के पांव धोना. योहन १३:५।

अपने शिष्यों के लिये नमूना. योहन १३:१५।

अपने शिष्यों को शान्ति वचन कहना. योहन १४।

शान्तिदाता की आज्ञा. योहन १५:१६।

शिष्यों के लिये प्रार्थना. योहन १७।

गतसमनी की बारी में प्रार्थना. मत्ती २६:३६. लूक २२:४४।

पकड़ा जाना. मत्ती २६:५०. मार्क १४:४६. लूक २२:५४. योहन १८:१२।

तलवार चलाने से रोकना. मत्ती २६:५२. योहन १८:११।

प्रधान याजकों के आगे } देखो संसारिक जीवन।
पिलात व हेरोद के आगे }

बैरियों के लिये प्रार्थना करना. लूक २३:३४।

अपनी माता को सौंपना. योहन १९:२५।

पश्चात्ताप करनेहारे चोर को क्षमा करना. लूक २३:४३।

शतपति की साक्षी. मत्ती २७:५४. मार्क १५:३९. लूक २३:४७।

—की शिक्षा—

गालील देश में पश्चात्ताप का उपदेश. मत्ती ४:१७।

नासरत में. लूक ४:१६।

राजा का सुसमाचार. मत्ती ४:२३. मार्क १:१४।

योहन बपतिस्मा देनेहारे के विषय में साक्षी. मत्ती ११:७. लूक ७:२४; २०:४।

कोराजीन. कफर्नाहूम और बैतसैदा पर शोक. मत्ती ११:२०. लूक १०:१३।

पिता और पुत्र के विषय में उपदेश. योहन ५; ८:१८,४२; १०:१५; १२:२३।

जीवन की रोटी के विषय में. योहन ६:२६।

इब्राहीम के सन्तान. योहन ८:३१।

प्राचीनों की कहावतों के विषय में. मत्ती १५:१. मार्क ७:१।

—की शिक्षा—

फरीसियों के चिन्ह ढूंढ़ने पर उत्तर. मत्ती १२:३८;१६:१; मार्क ८:११; लूक ११:१६;१२:५४. योहन २:१८।

शिष्यों को नम्रता का उपदेश. योहन १३:१४।

फरीसियों व सदूकियों को उपदेश. मत्ती २३; मार्क १२.३८. लूक ११:३७; २०:४५।

यरूशलीम के नाश होने और पिछले दिनों के विषय में उपदेश. मत्ती २४; मार्क १३. लूक १३:३४;१७:२०;१६:४१. २१।

मन्दिर में उपदेश. लूक १६:४७।

उसका थके और बोझ से दबे हुए लोगों को बुलाना. मत्ती ११:२३।

सुसमाचार के लिये दुःख सहना. लूक ३४:२६ (मत्ती १०:१७)

न्याय के विषय में. मत्ती १६. मार्क १०।

धनी लोगों के विषय में. मत्ती १६:१६. मार्क १०:१७. लूक १२:१३; १८:१८।

कर देने के विषय में. मत्ती २२:१५. मार्क. १२:१३. लूक २०:२०।

मृतकों के जी उठने के विषय में. मत्ती २२:२२. मार्क १२:१८।

दो बड़ी आज्ञा. मत्ती २२:३५. मार्क १२:२८।

दाऊद का पुत्र. मत्ती २२:४१. मार्क १२:३५. लूक २०:४१।

विधवा के छदाम के विषय में. मार्क १२:४१. लूक २१:१।

जागते रहने के विषय में. मत्ती. २४:४२. मार्क. १३:३३; लूक १:३४; १२:३५।

—शिक्षा—पर्वत पर उपदेश—धन्य कौन हैं. मत्ती ५:१. पृथिवी के लोण. ५:१३. जगत के प्रकाश. ५:१४. फरीसी व सदूकियों का धर्म. ५:२०. भाई से बैर. ५:२२. भाई से मेल. ५:२४. व्यभिचार. ५:२७. दहिना हाथ व दहिनी आंख. ५:२६,३०. स्त्री को त्यागना. ५:३२,३३. किरिया खाना. ५:३३. आंख के बदले आंख. ५:३८. पड़ोसी व शत्रुओं से प्रेम. ५:४३. सिद्ध होना. ५:४८—दान. मत्ती ६:१ प्रार्थना. ६:५. मनुष्यों से बड़ाई ६:७. प्रभु की प्रार्थना. ६:९. लूक ११:२. उपवास. मत्ती ६:१६. पृथिवी पर माल इकट्ठा करना.

मजूरी के सेवक. मत्ती २०:१-१६।
दो पुत्र. मत्ती २१:२८-३२।
दाख की बारी के दुष्ट माली. मत्ती २१:३३-४५।
राजा के पुत्र का विवाह. मत्ती २२:२-१४।
गूलर के वृक्ष पर कोंपल फूटना. मत्ती २४:३२-३४।
घर का जागता हुआ स्वामी. मत्ती २४:४३।
विश्वासयोग्य और दुष्ट सेवक. मत्ती ४५-५१।
दस कुवांरियों का. मत्ती २५:१-१३।
तोड़ों का. मत्ती २५:१४-३०।
राज्य जिसमें फूट हो. मार्क ३:२४।
गुप्त में बीज का उगना. मार्क ४:२६-२९।
जलता हुआ चिराग. मार्क ४:२१. लूक ११:३३-३६।
परदेश जाने वाला मनुष्य. मार्क १३:३४-३७।
तिनका और लट्ठा. लूक ६:४१:४२।
पेड़ और फल. लूक ६:४३-४५।
महाजन और उसका ऋणी. लूक ७:४१-४७।
नेक शोमिरोनी. लूक १०:३०-३७।
मित्र जो रात में आया. लूक ११:५-९।
मूर्ख धनवान. लूक १२:१६-२१।
बादल और आंधी. लूक १२:५४-५७।
सूखा हुआ गूलर का वृक्ष. लूक १३:६-९।
भोज में ऊंचा स्थान. लूक १४:७-११।
गढ़ बनानेहारा. लूक १४:२८-३०।
राजा जो लड़ाई करने को जाता है. लूक १४:३१-३३।
लोण का स्वाद. लूक १४:३४,३५।
खोई हुई भेड़. लूक १५:३-७।
खोया हुआ सिक्का. लूक १५:८-१०। ०
उड़ाऊ पुत्र. लूक १५:११-३२।
अधर्मी भंडारी. लूक १६:१-८।

—दृष्टान्त—

धनवान और इलियाजर. लूक १६:१९-३१।

स्वामी और उसका दास. लूक. १७:७।

न हटनेहारी बिधवा. लूक १७:१-८।

फरीशी और कर उगाहनेहारा. लूक १८:९-१४।

दस मोहरों का दृष्टान्त. लूक १९:१२-२७।

जीवन की रोटी. योहन ६:४७।

अच्छा चरवाहा. योहन १०:१-६।

अंगूर और दाखलता. योहन १५:१-५।

—के आश्चर्य कर्म—

जल से दाखरस बनाना. योहन २:६-१०।

एक साहिब के रोगी पुत्र को चंगा करना. योहन. ४:४६-५४।

एक शतपति के सेवक को चंगा करना. मत्ती ८:५-१३।

मछलियों को पकड़वाना—लूक. ५:४-६. योहन. २१:६।

अशुद्ध भूतों को निकालना. मत्ती ८:२८-३२; ९:३२,३३; १५:२२-२८; १७:१४-१८. मार्क. १:२३-२७।

पितर की सास को चंगा करना. मत्ती ८:१४,१५।

कोढ़ियों को शुद्ध करना. मत्ती ८:३; लूक. १७:१४।

अर्द्धाङ्गी को चङ्गा करना. मार्क २:३-१२।

सूखे हुए हाथ वाले को चङ्गा करना. मत्ती. १२:१०-१३।

एक निर्बल रोगी को चङ्गा करना. योहन ५:५-९।

मृतकों को जिलाना. मत्ती ९:१८,१९,२३-२५; लूक ७:१२-१५; योहन ११:११-४४।

एक स्त्री को चङ्गा करना. मत्ती ९:२०-२२।

अंधों की आंखें खोलना. मत्ती ९:२७-३०. मार्क ८:२२-२५; योहन ९:१-७।

एक बहिरे गूंगे को चङ्गा करना. मार्क ७:३२-३५।

भीड़ को खिलाना. मत्ती १४:१५-२१; १५:३२-३८।

समुद्र पर चलना. मत्ती १४:२५-२७।

—आश्चर्यकर्म—

मछली के मुंह से सिक्का निकालना. मत्ती १:२७।

तूफान को थमा देना. मत्ती. ८:२३-२६; मार्क ४:३७; लूक ८:२३।

जहाज का तुरन्त पहुंच जाना. योहन ६:२१।

कुबड़ी स्त्री को चङ्गा करना. लूक १३:११-१३।

एक जलन्धरी को चङ्गा करना. लूक १४:२-४।

गूलर के वृक्ष को सुखा देना. मत्ती २१:१९।

मलखूस के कान को चङ्गा करना. लूक २२:५०,५१।

योहन के शिष्यों के आगे आश्चर्य कर्म. लूक ७:२१,२२।

बहुत से रोगियों को चङ्गा करना. मत्ती ४:२३,२४; १४:१४; १५:३०; मार्क १:३४. लूक ६:१७-१९।

ख्रीष्ट का तेजस्वी दिखाई देना. मत्ती १७:१-८।

उसका जी उठना. लूक २४:६ (योहन १७:१८)।

जब द्वार बन्द थे तब भीतर आना. योहन २०:१९।

स्वर्गारूढ़ होना. मार्क १६:१९. लूक २४:५१; प्रेरित. १:९।

—का आचरण—

पवित्र. लूक १:३५. प्रेरित. ४:२७. प्रकाश. ३:७।

धर्मी. यश. ५३:११. इब्र. १:२. जक. ९:९. प्रेरित २२:१४।

उत्तम. मत्ती. १९:१६।

सच्चाई—यश. ११:५. १ थिस. ५:२४; योहन १:१४; ७:१८; १ योहन ५:२०।

निष्पाप. यश. ५३:९. १ पितर. २:२२. योहन ८:४६. २ कर. ५:२१।

निष्कलंक. १ पितर १:१९।

निर्दोषी. मत्ती २७:४।

सूधा. इब्र. ७:२६।

परीक्षा में जय पानेहारा. मत्ती ४:१-१०।

पिता परमेश्वर की इच्छा पर चलनेहारा. भजन ४०:८. योहन. ४:३४; १५:१०।

अपने माता पिता के आधीन. लूक २:५१.

—आचरण—

धुन में रहनेहारा. लूक २:४९. योहन २:१७; ८:२९।

नम्र. यश. ५३:७. जक. ९:९. मत्ती ११:२९।

मन में दीन. मत्ती ११:२९।

दयालु. इब्र. २:१७।

सब कुछ सह लेनेहारा. यश. ५३:७. मत्ती २७:१४।

धीरजवान. १ तिम १:१६।

दया. यश. ४०:११. मत्ती १५:३२. लूक ७:१३; १९:४१।

भलाई करनेहारा. मत्ती ४:२३,२४; ९:३५. प्रेरित. १०:३८।

प्रेमी. योहन १३:१; १५:१३।

अपना इन्कार करनेहारा. मत्ती ८:२०, २ कर. ८:९।

आधीन. लूक २२:२७. फिल. २:८।

अपनी इच्छा मारनेहारा. लूक २२:४२।

क्षमा करनेहारा. लूक २३:३४।

उसके भक्तों को उसके सदृश होना है. रोम ८:२९।

—की दया :—

—उसके याजकीय दर्जे के लिये अति आवश्यक है. इब्र. ५:२,७।

—प्रगट की गई।

थके और बोझ से दबे हुए लोगों के लिये. मत्ती ११:२८-३०।

जो विश्वास में कम थे. यश. ४०:११; ४२:३. मत्ती. १२:२०।

जिनकी परीक्षा होती है. इब्र. २:१८।

जो दुःखी हैं. लूक ७:१३. योहन ११:३३।

जो रोगी है. मत्ती १४:१४. मार्क १:४१।

गरीबों पर. मार्क ८:२।

पापियों पर. मत्ती ९:३६. लूक १२:४१. योहन ३:१६।

—से प्रार्थना करने में साहस पकड़ना चाहिये. इब्र. ४:१५।

—की महिमा—

ईश्वर-पुत्र मत्ती ३:१७. इब्र. १:६-८।

—महिमा—

पिता के बराबर. योहन १०:३०,३८।

पहिलौटा. कल. १:५,१८।

पहिलौठा. इब्र. १:६।

प्रभुओं का प्रभु. प्रकाश. १७:१४।

तत्व की मुद्रा. कल. १:१५. इब्र. १:३।

सृजनेहारा—योहन १:३. कल. १:१६. इब्र. १:२।

परमेश्वर से आशीष पाया हुआ. भजन ४५:२।

मध्यस्थ. १ तिम. २:५. इब्र. ८:६।

नबी. व्यवस्था. १८:१५,१६ (प्रेरित. ३:२२)।

महायाजक. भजन ११०:४. इब्र. ४:१५।

राजा. यश. ६:१-५ (योहन १२:४१)।

न्यायी. मत्ती. १६:२७; २५:३१,३३।

चरवाहा. यश. ४०:१०-११. यहेज. ३४. योहन १०:११; १४।

मण्डली का सिर. इफिसी १:२२।

सत्य ज्योति. लूक १:७८,७९. योहन. १:४,९।

मण्डली की नेव. यश. २८:१६।

मार्ग. योहन १४:६. इब्र. १०:१९,२०।

सत्य. १ योहन. ५:२०; प्रकाश. ३:७।

जीवन. योहन ११:२५; कल. ३:४; १ योहन ५:११।

देहधारी. योहन १:१४।

—जो उसके बचन से प्रगट होती है. लूक. ४:२२. योहन ७:४६।

—कामों से. मत्ती १३:५४. योहन २:११।

—निष्पाप होने से. इब्र. ७:२६-२८।

—अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होने से. भजन ४५:२. योहन १:१४।

—तेजस्वी दिखाई देने से. मत्ती १७:२ (२ पितर १:१६-१८)।

—महिमा पाने से. प्रेरित. ७:५५,५६. इफिसी. १:२१।

त्राण पाये हुए उसकी महिमा प्रगट करते है. इब्र. ५:८-१४; ७:१-१२।

सुसमाचार में प्रकाशित होती है. यश ४०:५।

उसके प्रगट होने पर सन्त आनन्द करते हैं. १ पितर ४:१३।
सन्त लोग स्वर्ग में देखेंगे. योहन १७:२४।

—का ईश्वरत्व—

—यहोवा के समान. कल. १:१६; यश. ६:१-३ (योहन १२:४१); यश. ८:१३,१४; १ पित. २:८; यश. ४०:३ (मत्ती ३:३) यश. ४०: ११; ४४:६ (प्रकाश. १:१७) यश. ४८:१२-१६ (प्रकाश १२:१२). यिर्म. २३:५,६ (१ कर. १:३०) योएल. २:३२; प्रेरित २:२१; १ कर. १:२; यश. ३:१ (मार्क १:२, लूक २:२७. इब्र. १३:२०. याकूब २:१)।

—सनातन ईश्वर और सृजनहार—न्यायी और आज्ञाकर्त्ता. भजन ४५:६,७; १०२:२४-२७. (इब्र. १:८,१०-१२) यश. ६:६. सभोप. १२:१४ (१ कर. ४:५). यिर्म. १०:१० (योहन १५:२०) होशे १:७ (तीत २:१३) योहन १:१; रोम ९:५; २ कर. ५:१०; २ तिम. ४:१.

—परमेश्वर का साथी और उसके बराबर—जक. १३:७. योहन ५:१७, २३; १६:१५. फिल. २:६; १ थिस. ३:११; २ थिस. २:१६,१७।

—स्वर्ग का प्रभु. सबत का प्रभु, सब का प्रभु—उत्प. २:३ मत्ती. १२:८. प्रेरित १०:३६; रोम १०:११-१३; १ कर. १५:४७।

—परमेश्वर का पुत्र. मत्ती २६:६३-६७. योहन १:१४,१८; ३:१६,१८. १ योहन ४:६. पिता के संग एक—योहन १०:३०,३८; १२:४५; १४:७-१०; १७:१०.

—पिता के समान पवित्रात्मा भेजता है. योहन १४:१६ (१५:२६)

—सृजनहार, बचानेहार, योहन १:३. कल. १:१६,१७. इब्र. १:२,३।

—उस में ईश्वरत्व की सारी पूर्णता है. कल. २:९।

—मृतकों को उठाना. योहन ५:२१; ६:४०,५४।

—अपने आप जी उठता है. योहन २:१९,२१; १०:१८।

—सनातन, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी. भजन ४५:३. यश. ९:६; मीका ५:२. मत्ती १८:२०; २८:२०. योहन १:१; ३:१३; १६: ३०; २१:१७. फिलिप ३:२१. कल. १:१७. इब्र. १:८-१०. प्रकाश१:८।

—ईश्वर शुद्ध करनेहारा, और जो अपने तई मंडली को देता है. इफिसी ५:२७ (यहूदा २४:२५) प्रकाश ५:९ (तीतस २:१४)।

—ईश्वरत्व—

—आकाश बाणी के द्वारा सिद्ध किया गया. मत्ती ३:१७; १७:५; योहन १२:२८।

थोमा ने उसे माना. योहन २०:२८।

उसका लोहू ईश्वर का लोहू कहलाया. प्रेरित २०:१८।

उसकी प्रतिष्ठा की जाती है. प्रेरित ७:५६, २ कर. १२:८,६; इब्र. १:६; प्रकाश. ५:१२।

उस पर विश्वास किया जाता है. भजन २:१२ (१ पित २:६) यिर्म. १७:५,७ (योहन १४:१)।

सन्त उसमें वैसे ही रहते हैं जैसे ईश्वर में. रोम ६:११. गल. २:१६. २ कर. ५:१५।

—का मनुष्यत्व—सिद्ध किया गया—उसके

देहधारी होने से. मत्ती १:१८. लूक १:३१।

जन्म लेने से. मत्ती १:१६,२५, २:२; लूक २:७,११।

हमारे मांस और लोहू का भागी. इब्र. २:१४. योहन १:१४।

उसका मन हमारा जैसा था. मत्ती २६:३८. लूक २३:४६. प्रेरित. २:३१. खतना कराने से. लूक २:२१।

बुद्धि और डील में बढ़ने से. लूक २:५२।

रोने से. लूक १६:४१. योहन ११:३५।

भूखा होने से. मत्ती ४:२; २१:१८।

पियासा होने से. योहन ४:७. १६:२८।

थकने से. योहन ४:६।

दुःखी पुरुष होने से. यश. ५३:३,४. लूक २२:४४. योहन ११:३३; १२:२७।

निन्दित होने से. मत्ती २६:६७. लूक २२:६४।

ठट्ठा किये जाने से. लूक २३:११।

कोड़े खाने से. मत्ती २७:२६. योहन १६:१।

क्रूश पर चढ़ाये जाने से. लूक २३:३३. भजन २२:१६।

मृत्यु से. योहन १६:३०।

—मनुष्यत्व—

पसली छेदे जाने से. योहन १९:३४ ।

गाड़े जाने से. मत्ती २७:५९,६०. मार्क १५:४६ ।

जी उठने से. प्रेरित ३:१५; २ तिम. २:८ ।

वह पाप को छोड़के सब बातों में हमारे समान हुआ. प्रेरित ३:२२; फिल. २:७,८. इब्र. २:१७. योहन ८:४६; १८:३८. इब्र. ४:१५; ७:२६, २८; १ पितर २:२२; १ योहन ३:५ ।

यह उसके मध्यस्थ होने के लिये अति आवश्यक था. योहन २०:२७. १ योहन १:१,२ ।

—वह वंश में से था :—

स्त्री के. उत्प. ३:१५. यश. ७:४. यिर्म. ३१:२२. लूक १:३१. गल. ४:४ ।

इब्राहीम के. उत्प. २२:१८. (गल. ३:१६. इब्र २:१६) ।

दाऊद के. २ शम. ७:१२,१६. भजन ८९:३५.३६. यिर्म. २३:५. मत्ती २२:४२. मार्क १०:४७. प्रेरित २:३०; १३:२३. रोम. १:३ ।

—की वंशावली . मत्ती १:१; लूक ३:२३ ।

—उसने अपने आप इसको माना. मत्ती ८:२०; १६:१३ ।

—उसको मानना, ईश्वर को मानना है. १ योहन ४:२ ।

—मनुष्यों ने उसको माना. मार्क ६:३, योहन ७:२७; १९:५. प्रेरित २:२२ ।

—ख्रीष्टविरोधी उसको नहीं मानता. १ योहन ४:३; २ योहन ७ ।

—की पदवियां—

दूसरा आदम. १ कर. १५:४५ ।

सहायक. १ योहन २:१ ।

अलफा और ओमिगा. प्रकाश. १:८; २२:१३ ।

आमीन. प्रकाश. ३:१४ ।

प्रेरित. इब्र. ३:१ ।

विश्वास का कर्त्ता और सिद्ध करनेहारा. इब्र. १२:२ ।

ईश्वर की सृष्टि का आदि. प्रकाश. ३:१४ ।

परमधन्य और अद्वैत पराक्रमी. १ तिम. ६:१५ ।

त्राण के कर्त्ता. इब्र. २:१० ।

—पदवियां—

कोने का पत्थर. इफिसी २:२०; १ पितर २:६ ।
प्रधान रखवाला. १ पितर ५:४ ।
सूर्य का उदय. लूक १:७८ ।
सारी जातियों की मन भावनी वस्तुएं. हाग्गै. २:७ ।
इम्मानुएल. मत्ती १:२३ ।
अनन्तकाल का पिता. यशाया. ९:६ ।
विश्वासयोग्य साक्षी. प्रकाश. १:५ ।
पहिला और पिछला. प्रकाश १:१७ ।
ईश्वर. योहन २०:२८; १ योहन ५:२० ।
अच्छा चरवाहा. योहन १०:१४ ।
अधिपति. मत्ती २:६ ।
महायाजक. इब्र. ३:१ ।
मंडली का सिर. इफिसी. ५:२३. कल. १:१८ ।
सब वस्तुओं का अधिकारी. इब्र. १:२ ।
पवित्र. भजन १६:१०. यश. ४१:१४. मार्क १:२४ ।
त्राण का सींग. लूक १:६९ ।
मैं हूं. योहन ८:५८ (निर्ग. ३:१४)
यीशु. मत्ती १:२१; १ थिस. १:१० ।
धर्मी जन. प्रेरित ७:५२ ।
राजा. मत्ती. २:२; २१:५; जक. ९:९. योहन १:४९; १ तिम. ६:१५. प्रकाश १५:३; १७:१४ ।
मेम्ना. योहन. १:२९,३६. प्रकाश. ५:६,१२; १३:८; २१:२२; २२:३ ।
ईश्वर का मेम्ना—देखो, मेम्ना ।
यहूदा के कुल का सिंह. प्रकाश. ५:५. उत्प. ४९:९ ।
सभों का प्रभु. प्रेरित. १०:३६ ।
तेजोमय प्रभु. १ कर. २:८ ।
सर्वशक्तिमान ईश्वर. प्रकाश. १५:३ ।
धार्मिकता. यिर्म. २३:६ ।

—पदवियां—

मध्यस्थ. १ तिम. २:५ ।
वाचा का दूत. मलाकी. ३:१ ।
मसीह. दान. ६:२५. योहन १:४१ ।
याकूब का शक्तिमान्, यश. ६०:१६ ।
भोर का उज्वल तारा. प्रकाश. २२:१६ ।
नासरी. मत्ती २:२३ ।
जीवन का कर्त्ता. प्रेरित ३:१५ ।
शांति का प्रधान. यश. ६:६ ।
राजाओं का अध्यक्ष. योहन. १:५ ।
भविष्यद्वक्ता. लूक २४:१६. योहन ७:४० ।
छुड़ानेहारा. अय्यूब १६:२५; यश. ५६:२०; ६०:१६ ।
पुनरुत्थान और जीवन. योहन ११:२५ ।
दाऊद का मूल. प्रकाश २२:१६ ।
यीशै की जड़. यश. ११:१० ।
कल आज और सर्वदा एकसां. इब्रि १३:८ ।
त्राणकर्त्ता. २ पितर २:२०; ३:१८ ।
प्राणों का गड़ेरिया और रखवाला. १ पितर २:२५ ।
दाऊद का पुत्र. मत्ती ६:२७ ।
ईश्वर का पुत्र. लूक १:३५. योहन १:४६ ।
मनुष्य का पुत्र. योहन ५:२७; ६:२७ ।
परमधन्य का पुत्र. मार्क १४:२१ ।
सर्व प्रधान का पुत्र. लूक १:३२ ।
धर्म का सूर्य्य. मलाकी ४:२ ।
सत्य मार्ग और जीवन. योहन १४:६ ।
अद्भुत, युक्ति करनेहारा, पराक्रमी. यश. ६:६ ।
वचन. योहन १:१; १ योहन ५:७ ।
परमेश्वर का वचन. प्रकाश. १६:१३ ।
जीवन का वचन. १ योहन. १:१ ।

—पदवियां—

—मंडली का सिर।

ईश्वर से ठहराया गया. इफिसी १:२२।

उसने आप कहा कि मैं कोने के सिरे का पत्थर हूं. मत्ती. २१:४२.

पावल ने भी कहा. इफिसी. ४:१२,१५; ५:२३।

उसे सब बातों में प्रधानता प्राप्त है. १ कर. ११:३. इफिसी १:२२. कल. १:१८।

वह अपने शिष्यों को आज्ञा देता है. मत्ती. १०:१,७; २८:१९. योहन २०:२१।

वह धर्म की विधियों को ठहराता है. मत्ती २८:१९. लूक २२:१९,२०।

दान बांटता है. भजन ६८:१८. इफिसी. ४:८।

मसीही उसमें परिपूर्ण होते हैं. कल. २:१०।

—रूपक—

हारून—निर्ग. २८:१. लैव्य. १६:५. इब्र. ४:१५; १२:२४।

हाबील. उत्पति. ४:८. १०; इब्र. १२:२४।

इब्राहीम. उत्पति. १७:५. इफिसी ३:१५।

आदम. रोम. ५:१४; १ कर. १५:४५।

दाऊद. २ शम. ८:१५. भजन ८९:१९. यहेज. ३७:२४।

एल्याकीम—यशाया. २२:२०।

इसहाक. उत्प. २२:२. इब्र. ११:१७।

याकूब. उत्प. ३२:२८. योहन ११:४२. इब्र. ७:२५।

योनाह. योना. १:१७. मत्ती १२:४०।

यूसफ. उत्प. ५०:१९,२०. इब्र. ७:२५।

यहोशु. यहोशु १:५; ११:२३. प्रेरित २०:३२. इब्र. ४:८।

मेल्कीसेदेक. उत्प. १४:१८,२०. इब्र ७:१।

मूसा. गिन. १२:७. व्यवस्था. १८:१५. प्रेरित. ३:२२; ७:३७. इब्र. ३:२।

नूह. उत्प. ५:२९; २ कर. १:५।

शिम्शोन. न्यायी. १६:३०. कल. २:१४,१५।

सुलेमान. २ शम. ७:१२. लूक १:३२।

—रूपक—

मलकिसिदक. जक. ४:७,९, इब्र. १२:२,३ ।

नूह का जहाज. उत्प. ७:१६ ।

नियम का सन्दूक. निर्ग. २५:१६ ।

याकूब की सीढ़ी. उत्प. २८:१२. योहन १:५१ ।

निस्तार पर्ब्ब. निर्ग. १२; १ कर. ५:७ ।

मेम्ना. निर्ग. १२:३. यश. ५३:७; योहन १:२९. प्रेरित ८:३२; १ पित. १:१९. प्रकाश. ५:६; ६:१; ७:९; १२:११; १३:८; १४:१; १५:३; १७:१४; १९:७; २१:९; २२:१ ।

मान्न—निर्ग. १६:११. योहन ६:३२. प्रकाश २:१७ ।

चटान. निर्ग. १७:६; १ कर. १०:४ ।

पहिला फल. निर्ग. २२:२९; १ कर. १५:२० ।

सोने का दीवट. निर्ग. २५:३१. योहन ८:१२ ।

पीतल की वेदी. निर्ग. २७:१,२; इब्र. १३:१० ।

हौदी. निर्ग. ३०:१८; जक. १३:१; इफिसी ५:२६ ।

होम बलि. लैव्य. १:२; इब्र. १०:१० ।

मेलबलि. ३:१; इफिसी २:१४ ।

पाप बलि. लैव्य ४:२; इब्र. १३:११ ।

प्रायश्चित के दिन के आचार. लैव्य १६:१५; इब्र. ९:१२ ।

जीता हुआ बकरा. लैव्य १६:२०; यश. ५३:६ ।

पीतल का सर्प. गिनती २१:९; योहन ३:१४ ।

शरण के नगर. गिनती ३५:६; इब्र. ६:१९ ।

मन्दिर. १ राजा ६:१,३८; योहन २:२१ ।

निवासस्थान. इब्र. ९:८,११ ।

पर्दा. इब्र. १०:२० ।

खीष्ट—झूठे—उनके विषय में चितावनी. मत्ती ७:१५; २४:४,५,११,२४; मार्क. १३:२२; प्रेरित २०:२९; २ थिस. २:८; १ तिम. ४:१; २ पितर २:१; प्रकाशित. १३ ।

—विरोधी—१ योहन २:१८,२२; २ योहन ७. देखो २ थिस. २:३;
१ तिम. ४:१ ।

—का आत्मा—१ योहन ४:३ ।

ख्रिष्टीयान—दुख पावे तो लज्जित न होवे. १ पितर ४:१६ ।

—शिष्य पहिले कहलाये. प्रेरित ११:२५ ।

खेद—देखो, दुःख, शोक ।

ग

गंगाल—ढाला हुआ. १ राजा. ७:२३; २ इति. ४:२ ।

गंभीर— मंडली के रखवाले को होना चाहिये. १ तिम. ३:४,८,११;
तीत. २:२७ ।

गंवार—होने का दण्ड. १ शम. २५:३६-३८ ।

गढ़ना—देखो, रचना ।

गड़हा—कबर, मृत्यु. अय्यूब १७:१६; ३३:१८. भजन २८:१; ३०:३;
८८:४; १४३:७; यश. १४:१५; ३८:१७; यहेज. २६:२०; ३२:९ ।

—बन्दीगृह, यश. २४:२२; जक. ९:११ ।

गड़ेरिया—देखो चरवाहा ।

गति—देखो, मार्ग ।

गन्धरस—निर्ग. ३०:२३. एस्तेर २:१२; भजन ४५:८. श्रेष्ठ गीत १:१३;
मत्ती २:११; मार्क १५:२३; योहन १९:३९ ।

गरज—निर्ग. ९:२३; १ शम. ७:१०; १२:१८; भजन ७८:४८; देखो
निर्ग. १९:१६; प्रकाश. ४:५; १६:१८ ।

—सात. प्रकाश. १० ।

गर्व—देखो, घमण्ड, अहंकार ।

गवाही—देखो, साक्षी ।

गहने—उत्प. २४:२२; ,३५:४; ४१:४२; निर्ग. ३:२२; ११:२; १२:३५;

—गहने—
३२:२,३; ३३:४-६; गिनती. ३१:५०. न्यायी ५:३०; ८:२१,२४; नीति. १:९; २५:१२. गीत. १:१०. यश. ३:१८-२३. यिर्म. २:३२; ४:३०. यहेज. १६:१२; दान. ५:७. होशे. २:१३; १ तिम. २:९; १ पितर ३:३।

गाड़ना—इस्राएलियों की विधि. उत्प. २३:४-१५; २५:९; ४९:३१; व्यवस्था. २४:६; १ राजा १३:३१; मत्ती २७:७; मार्क १४:८; लूक २३:५६. योहन १२:७; १९:४०. प्रेरित ८:२।
—मिस्रियों की विधि. उत्प. ५०:२-११,२६।
—बुराई के कारण गाड़े न गये. गिनती १४:२९. व्यवस्था २८:२६; १ शम. १७:४४,४६; २ राजा ९:१०. भजन ७९:२,३; १४१:७. सभोपदेशक ६:३. यश. १४:१९,२०; यिर्म. ७:३३; १४:१६; १६:४, ६; १९:७; २२:१९; २५:३३; ३४:२०. यहेज ६:५. इब्र. ३:१७।

गाना—निर्गमन. १५:२१; १ शम. १८:७।

गानेहारे—आराधना के समय उनके वस्त्र. २ इतिहास ५:१२।

गाली—देखो, अशुद्ध वचन, अपवित्रता—बात में।

गिनना—मूसा का लोगों को गिनना. गिनती १; २; २६—दाऊद का लोगों को गिनना—२ शम. २४:१-१७; १ इति. २१:१-१७।
—लावियों का गिना जाना. गिनती. ३:१४; ४:३४।
—के लिये बलिदान. निर्ग. ३०:११-१७; ३८:२५।

गिरना—आदम और हव्वा का पाप में गिरना. उत्प. ३. रोम ५:१२; १ कर. ५:२१।
—का भय. इब्र. ६:६; १०:२६-३१,३९; १२:१७; २ पित. २:२०; ३:१७; प्रकाश. २:५।

गीत—मूसा का. निर्ग. १५—पानी के लिये. गिन. २१:१७—परमेश्वर की दया के लिये. व्यवस्था ३२—मूसा का और मेम्ने का, प्रकाश. १५:३।

—गीत—

—दबूरा का. न्यायी. ५;—हन्ना का. १ शम. २;—दाऊद का. २ शम. २२, (देखो भजन) मरियम का. लूक १:४६;—जिखरियाह का. लूक १:६८;—दूतों का. लूक २:१३;—शिमोन का. लूक २:२९—निस्तार पाये हुए लोगों का. प्रकाश ५:६; १६।

—गाना—उसकी शक्ति. १ शम. १०:५,६; १६:१६, २३; २ राजा ३:१५।

—स्वर्गी. प्रकाश. ५:८-१४; १४:२,३; १५:३,४।

—गाने बजाने की चीजें—इनका चलानेहारा. उत्प. ४:२१, उनका आराधना के समय प्रचार किया जाना. निर्ग. १५:२०, २ शम. ६:५; १ इतिहास १५:१६-२८; १६:५,६; २५:१-७; २ इति. ५:११-१४; ७:६; १३:१२-१४; २०:२८; २३:१३; २९:२५-२८; ३०:२१; २४:१२; ३५:१५-२५. नहेम. १२:३५,३६।

गुणानुवाद—देखो, स्तुति।

मूर्त्तिपूजक लोगों का अपनी पूजा के समय बजाना. दान. ३:५-१५।

—देखो, भजन।

गुनगुना—बुरा ठहराया गया—प्रकाश. ३:१५,१६।

गुप्त—बिचार, ईश्वर को मालूम हैं. भजन ७:९; २६:२; ४४:२१; ९०:८; १३९:२३, २४; यिर्म. ११:२०; १७:१०; २०:१२, मत्ती ६:४,६,१८; रोम. २:१५,१६. इब्र. ४:१२,१३; प्रकाश २:२३।

—अपराध त्याग देने चाहिये. अय्यूब ३१:३; भजन १९:१२; मत्ती ५:२१-३०; १५:१०-२०।

—बातें ईश्वर के अधिकार में हैं. व्यवस्था २९:२९. अय्यूब. १५:८. २९:४. यश. ४५:१५, दान. २:११. देखो. भेद. रोम. ११:३३:३४; १ कर. २:११।

—उन पर प्रगट किये जाते हैं जो परमेश्वर से डरते हैं. भजन २५:१४; नीति ३:३२; दान २:१९; आमूस ३:७; मत्ती ११:२५ १३:३५, १६:१७; २ कर. २:१०।

गुप्त :—

प्रार्थनाएं. उपवास और दान गुप्त में किये जाएं. मत्ती ६:१-१८।

परमेश्वर सब गुप्त प्रगट कर देगा. सभोप. १२:१४; मत्ती १०:२६,२७ मार्क ४:२२; लूक २:३५; ८:१७; १२:३; रोम. २:१६, १ कर. ३:१३; ४:५।

—भेद छिपा रखना चाहिये. नीति. ११:१३; २०:१६, २५:९।

गुम्मट—बाबुल का. उत्प. ११—पनुएल का. न्यायी ८:९—शिकम का. न्यायी ९:४६,४७—थीबेज का. न्यायी ९:५१—शिलोआम का जो गिर पड़ा. लूक १३:४।

गुरू—देखो, यीशु।

गूंगा—सताया न जाए. नीति ३१:८।

—ख्रीष्ट ने चंगा किया. मत्ती ९:३२; १२:२२।

—जिखरिया को दण्ड दिया गया. लूक. १:२०।

गूलर—(अंजीर) हिजकिय्याह चंगा किया गया. २ राजा २०:७; यश. ३८:२१।

—यिर्मयाह नबी ने दर्शन देखा. यिर्म. २४:१।

—का वृक्ष जिसे प्रभु यीशु ने सुखाया. मत्ती २१:१९; मार्क ११:१३।

—का दृष्टान्त. मत्ती २४:३२; लूक १३:६; २१:२९।

गोत्र—गमन—बड़ा भारी व्यभिचार है. उत्प. १९:३०-३८; ३५:२२; ३८:१२-२६; २ शम. १३:१७-१४; १६:२२; मार्क ६:१७; १ कर. ५:१।

—निन्दित ठहराया गया. उत्प. ४९:४; लैव्य. १८; २०:१७. व्यवस्था विवरण २२:३०; २७:२०; १ इतिहास ५:१; यहेज. २२:११; आमोस २:७।

गौं—देखो समय—देखो, जाति।

गृहदेव—उत्प. ३१:१९,३४,३५; न्यायी १७:५; १८:१४-२०; १ शम. १९:१३; २ राजा २३:२४; यहेज. २१:२१. होशे ३:४. जक. १०:२।

घ

च

चक्की :—

—का पाट, बंधक न रखा जाये. व्यवस्था. २४:६ ।

—के पाट की नाईं एक पत्थर. प्रकाश. १८:२१ ।

चट्टान—जिस पर मंडली की बुनियाद डाली गई. मत्ती १६:१८; १ कर. ३:११; इफिसो. २:२०; २ तिम. २:१९; प्रकाश. २१:१४ ।

—आज्ञाकारी होने की तुलना की गई. मत्ती. ७:२४; लूक. ६:४८ ।

—ख्रीष्ट की जंगलवाले से तुलना की गई. १ कर. १०:४; देखो. निर्ग. १७:६; गिनती २०:१०; भजन. ७८:२०; यश. ४८:२१ ।

—परमेश्वर की तुलना की गई. व्यवस्था. ३२:४-३७; १ शम. २:२; २ शम. २२:२-४७; भजन. १८:२-४६; २८:१; ३१:२,३; ४२:६; ६१:२; ६२:२, ७; ७१:३; ८९:२६; ९४:२२; ९५:१; यश. १७:१०; २६:४; ३२:२ ।

—देखो, पत्थर ।

चढ़ाई—देखो—हमला ।

चढ़ाना—वस्तुएं जो परमेश्वर को चढ़ाई गईं. लैव्य. २७:२१; २८:२९; गिनती. १८:१४; व्यवस्था. २:२४; ३:६; ७:२,२६; १३:१८; २०:१७; यहोशू. ६:१७,१८; ७:१-१५; २२:२०; १ इतिहास. २:७; रोमी. ९:३; १ कर. १२:३. गलाती. १:८,९ ।

चढ़ावा—देखो, बलिदान ।

चतुर—नीति १२:१६,२३; १३:१६; १४:८,१५,१८; १५:५; १६:२१,१८:१५; १९:१४; २२:३. होशे. १४:९ आमोस. ५:१३ ।

—देखो, बुद्धिमान ।

चतुराई—संसारिक. इसका फल. १ राजा. १२:२६-३० ।

चन्दा—सन्तों के लिये. प्रेरित. ११:२९; रोमी. १५:२६; १ कर. १६:१ ।

चमकना—परमेश्वर के मुख का. गिनती. ६:२५; भजन. ३१:१६; ५०:२; ६७:१; ८०:१. दान. ९:१७ ।

—मूसा के मुख का, निर्ग. ३४:२९; २ कर. ३ ।

—ख्रीष्ट के मुख का. मत्ती १७:२; लूक. ९:२९; प्रेरित. ९:३; प्रकाश. १:१६ ।

चमकना :—

—विश्वासियों का. वे पृथिवी की ज्योति हैं. मत्ती. ५:१६; फिल. २:१५; योहन ५:३५. स्वर्ग के राज्य में भी चमकेंगे. दान. १२:३; मत्ती. १३:४३ ।

—सुसमाचार का॰ २ कर. ४:४; यश. ९:२ ।

चरणों की पीढ़ी—परमेश्वर की. मन्दिर कहलाता है. १ इति. २८:२; भजन. ९९:५; १३२:७ ।

—पृथिवी कहलाती है. यश. ६६:१; मत्ती. ५:३५; प्रेरित. ७:४९ ।

—परमेश्वर के शत्रु बनाये जाते हैं. भजन. ११०:१; मत्ती. २२:४४; इब्र. १०:१३ ।

चरवाहा—परमेश्वर (ख्रीष्ट). योहन. १०:१४; इब्र. १३:२५; १ पितर. २:२५; ५:४. देखो यश. ४०:११; जक. ११:१६; १३:७ ।

—इस्राएल का. भजन. २३:१; ८०:१; यहेज. ३४:११ ।

—अपने झुण्ड का. यश. ६३:११ ।

—सुस्त चरवाहा. जक. ११:१७ ।

—मजदूर चरवाहा. योहन. १०:१२ ।

चरवाहे—उत्प. ४६:३२,३४; ४७:३; यिर्म. ३३:१२; यहेज. ३४:२; लूक. २:८ ।

चराई—आत्मिक. भजन. २३:२; ७४:१; ७९:१३; ९५:७; १००; यहेज. ३४:१४; योहन. १०:९ ।

चर्चा—देखो, बात. बातचीत ।

चलना—परमेश्वर के सङ्ग—व्यवस्था. ५:३३;२८:९; यहोश २२:५; १ राजा. ८:३६; भजन. १; ११२; नीति. २:७; यश. २:३; ३०:२१; यिर्म. ६:१६;७:२३; यहेज.३७:२४—हनोक. उत्प. ५:२४—नूह. उत्प. ६:१५ ।

—विश्वास से, प्रेम से. इत्यादि. रोमी. ६:४; ८:१; १३:१३; २कर. ५:७; गल. ५:१६; इफिसी. ५:२; फिल. ३:१६; कल. १:१०;२:६; १ योहन १:६; प्रकाश.३:४; २१:२४ ।

चार—जीवधारी—यहेज. १:५; १०:१०; प्रकाश. ४:६; ५:१४; ६:६।

—राज्य. दान. २:३९; ७:३७,१६।

—गुणा—बदला. निर्ग. २२:१; २ शम. १२:६; लूक. १९:८।

चाल चलन—देखो ख्रीष्टियानों का आचरण।

चालीस—दिन. तूफान रहा. उत्प. ७:१७।

—मूसा पर्बत पर रहा. निर्ग. २४:१८।

—भेदिये कनान देश में रहे. गिनती. १३:२५।

—जुलियन इस्राएल के साम्हने आता रहा. १ शम. १७:१६।

—एलिया ने होरेब पर्बत तक यात्रा की. १ राजा. १९:८।

—योना नबी ने निनवाह में प्रचार किया. योना. ३:४।

—हमारे प्रभु ने उपवास किया. मत्ती. ४:२; मार्क. १:१३; लूक. ४:२।

—प्रभु ने दर्शन दिया. प्रेरित. १:३।

चालीस कोड़े—व्यवस्था. २५:३; एक कम. २ कर. ११:२४।

—**वर्ष**—मन्न भेजा गया. निर्ग. १६:३५; गिन. १४:३३; भजन. ९५:१०।

—चैन रहा. न्यायी. ३:११; ५:३१; ८:२८।

चाहना—देखो, इच्छा।

चिट्ठी—दाऊद की यूआब को. २ शम. ११:२४—इजाबेल की. १ राजा २१:९—सूरिया के राजा की. २ राजा ५:५—येहू की. २ राजा. १०:१—एलियाह नबी की. २ इति. २१:१२—हिजकिय्याह की. २ इति. ३०:१—बिशलाम की. एज्रा. ४:७—अर्तक्षत्र की. एज्रा. ४:१७—तत्नै की. एज्रा. ५:६—अश्शूर के राजा की. यशा. ३७:१०,१४—यिर्मयाह की. यिर्म. २९:१—प्रेरितों की. प्रेरित. १५:२३—क्लौडियस की. प्रेरित २३:२५।

—**डालना**—ईश्वरकी इच्छा जानने की रीति. लैव्य. १६:८; नीति. १६:३३।

—कनान देश बांटा गया. गिनती. २६:५५; यहोशू. १५।

शावल राजा बनाया गया. १ शम. १०:१७।

चिट्ठी डालना :—

—यूनातन पकड़ा गया. १ शम. १४:४१,४२ ।

—ख्रीष्ट का वस्त्र बांटा गया. मत्ती. २७:३५; मार्क. १५:२४ (भजन. २२:१८) ।

—मथियास. प्रेरित चुना गया. प्रेरित. १:२६ ।

चिड़िया—देखो, पक्षी ।

चिन्ता—देखो, सोच ।

चिन्ह—ढूंढ़ना—यश. ७:११-१४; मत्ती. १२:३८; १६:१-४; मार्क. ८:११, लूक ११:१६; योहन. ४:४८; ६:३०,३१; १ कर. १:२२ ।

—ख्रीष्ट के दूसरी बार आने का—मत्ती. २४:३,१५,३०. मार्क. १३:४; लूक २१:७,२५,३२ ।

—ख्रीष्ट देने से नकारता है. मत्ती. १२:३९; १६:४. मार्क. ८:१२; लूक ११:२९ ।

—प्रभु यीशु का जी उठना. मत्ती. १२:४०; १६:४. लूक ११:२९. भविष्यद्वक्ताओं से दिये गये—यश. २०:२-६; ३८:७,८,२२; यिर्म. १९:१-११; २७:१-४; २८:१०; ३२:६-४४; ५१:६०; यहेज. ४:१-१२; ५:१-४; २४:१५-२४; ३७:१५-१९. होशे. १:२-९; ३:१-३; जक. ११:७-१४ । झूठे—व्यवस्था. १३:१-३; मत्ती. ७:२२,२३; २४:२४; २ थिस. २:९; प्रकाश. १३:१३, १४; १६:१४ ।

चिल्लाना—देखो, रोना, शोक, बिलाप, धूम मचाना ।

चित्रकारी—गिन. ३३:५२; नीति. २५:११. यश. २:१६; यिर्म. २२:१४. यहेज. ८:१२.—आंख, मुंह को संवारना—२ राजा. ९:३० यिर्म. ४:३०. यहेज. २३:४० ।

चुगली—खाना—मना है. लैव्य. १९:१६; भजन. १५:३; ३४:१३. नीति १६:२८; १८:८; २५:२३; २६:२०,२२. रोम. १:२९,३०. २ कर. १२:२० ।

चुनना—भला अथवा बुरा. यहोशू. २४:१५-२४. १ राजा. १८:२१. यहेज. २०:३९; योहन. ६:६७-६९ ।

देखो, आगे से ठहराना ।

चुना हुआ—पत्थर. १ पितर. २:६; यश. ४२:१ ।

—परमेश्वर का. यशा. ४५:१; ६५:९ ।

—सुसमाचार के अनुसार. मत्ती. २४:२२; मार्क. १३:२०; लूक. १८:७; रोमी. ८:३३; ११:५; कल. ३:१२; २ तिम. २:११. तीत. १:१; १ पितर. १:२; योहन १३ ।

—भाइयों का चुना जाना. १ थिस. १:४ ।

—उनका असमान्याधिकार और कर्त्तव्य. मार्क. १३:२०; लूक. १८:७; रोम. ८:२९: १ कर. १:२७; २ पितर. १:१० ।

—चुनी हुई स्त्री—२ योहन. २ ।

चुपचाप—देखो, गूंगा ।

चेत—देखो, सचेत ।

चैन—विश्वासियों के लिये परमेश्वर का दान. अय्यूब. ३४:२९; नीति १:३३; यश. ३०:१५; ३२:१७,१८; ३३:२०; यिर्म. ३०:१०; १ थिस. ४:११; १ तिम. २:२; याक. ३:१७,१८; १ पितर. ३:४ ।

—देखो, विश्राम ।

चोर—का दंड. निर्ग. २२:२; व्यवस्था. २४:७. जक. ५:४; १ कर. ६:१०; १ पित. ४:१५—की चाल. अय्यूब. २४:१४. यिर्म. २:२६; ४९:९ लूक. १०:३०; योहन. १०:१—खीष्ट का दूसरी बार आना, आधी रात को आनेवाले के समान होगा. मत्ती. २४:४३; लूक. १२:३९, १ थिस. ५:२; २ पित. ३:१०; प्रकाश. ३:३; १६:१५ ।

चोरी—कहां से निकलती है. मत्ती. १५:१९; मार्क. ७:२२ ।

निर्ग. २०:१५; २१:२६, लैव्य. १९:११; व्यवस्था. ५:१९; २४:७; भजन ५०:१८. जक. ५:४; मत्ती १९:१८; रोम. १३:९. इफिसी. ४:२८; १ पितर ४:१५ ।

लौटाने में क्या देना होगा. निर्ग. २२:१; लैव्य. ६:४; नीति. ६:३०, ३१ ।

चौक—देखो, मार्ग ।

चौकस—रहना—मत्ती. २४:४२; २५:१३; २६:४१; मार्क. १३:३५; लूक

छाप :—

९:४—प्रेरितों की. १ कुर. ९:२—विश्वासियों की परमेश्वर की सत्यता पर. योहन. ३:३३ ।

—पुस्तक पर सात छाप. प्रकाश. ५:१,५,९—उनका खोलना. प्रकाश. ६:१ से ८:१ तक ।

—लगाना. ख्रीष्ट की कबर पर. मत्ती. २७:६६—विश्वासियों पर. प्रकाश ७:३-८ ।

छापा—खोदना, निर्ग. २८:११; ३२:४; ३८:२३; ३९:६; १ राजा. ७:३१, ३६; २ इति. २:१४; ३:७ ।

छाया—स्वर्गीय वस्तुओं का. इब्र. ८:५; १०:१ ।

—मनुष्य के जीवन की तुलना. १ इति. २९:१५; अय्यूब. ८:९; १४:२: भजन. १०२:११; १०९:२३; १४४:४, सभोप. ८:१३ ।

—ईश्वरीय पंखों का. भजन. १७:८; ३६:७; ५७:१; ६३:७. देखो. रूत. २:१२; भजन. ६१:४; ९१:१. यश. २५:४; ३२:२; ४९:२; ५१:१६ ।

छावनी—देखो, तम्बू ।

छिपाना—देखो, गुप्त ।

छुटकारा—परमेश्वर का धर्मियों को देना, भजन. ३४:६,१५,१७,१९ ३७:१७,२४; ४०:२; ९१:३-१६ मीका ७:८ ।

—लूत को. उत्प. १४; १९—मूसा को निर्ग. २—इस्राएलियों को. निर्ग १४. न्यायी. ४; ७; १५; १ शम. ७; १४; १७. २ राजा. १९; २ इति. १४; २०—दानियेल और उसके मित्रों को. दान. ३:१९; ६:२२ ।

—प्रेरितों को. प्रेरित. ५:१९; १२:७; १६:२६; २८:१, २ तिम. ४:१७ ।

—ख्रीष्ट के द्वारा. रोम. ५; गल. १:४; ३; ४; इफिसी. १; २; कल. १; इब्र. ९; १०; तीत. २:१४; १ पित. १:८; प्रकाश. ५:९ ।

—मनुष्य की शक्ति से बाहर है. भजन. ४९:७-९. सभोप. ८:८. देखो. अय्यूब १४:४. यिर्म. १३:२३ योहन. ३:५,६. इफिसी. २:३ ।

—भूमि का. लैव्य. २५; नेह. ५:८ ।

छुटकारा :—

—पहिलौठों का. निर्ग. १३:११. गिन. ३:१२ ।

—देखो, श्राण, उद्धार,

छुटकारा देनेहारा—अय्यूब. १९:२५. भजन. १९:१४; ७८:३५. न्यायी. २३:११; यश. ४१:१४; ४७:४; ५९:२०; ६३:१६. यिर्म. ५०:३४. होशे. १३:१४ ।

छुड़ाये हुये—उनका आनन्द. भजन. १६:११; ३६:८; ६५:४; यश. ३५: १०; ५१:११ ।

छूछे हाथ—परमेश्वर के आगे जाना वर्जित है. निर्ग. २३:१५; ३४: १९,२०; व्यवस्था १६:१६ ।

—संसारिक वस्तुओं से. सभोप. १:२-११,१४,१७; २:१-११,१७; ३: १९; ४:४-८,१६; ५११-१७; ६:२-१२; ७:६; ८:१०,१४; ११:८,१०; १२:८,१२ ।

छूना—ख्रीष्ट के वस्त्र को. मार्क. ५:२८; ६:५६; लूक ६:१९ ।

छोटा—चार छोटे जन्तु. नीति. ३०:२४-२८ ।

छोड़ना—देखो, स्त्री को त्यागना ।

ज

जगत—का सृजा जाना, देखो सृष्टि ।

—हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसमें मन न लगावें. मत्ती. ४:१०; लूक ४:८. रोम. १२:२. २ कर. ६:१४-१७. गल. १८:१४; २ तिम. २:४. तीत. २:१२; १ योहन. २:१५. याक. १:२७ ।

—ख्रीष्ट और उसके शिष्यों का विरोधी है. मत्ती. १०:२१-२५, ३५-३९. योहन. १५:१८-२४; १६:२,३,३३; १७:१४; २ तिम. ३:१२; याक. ४:४; १ योहन ३:१३; ४:५,६; ५:१९ ।

—नष्ट हो जायेगा. १ कर. ७:३१; २ थिस. १:८; २ पित. ३:७,१०; १ योहन २:१७. प्रकाश. २०:११ ।

—अपने आप बुरा नहीं है. उत्प. १:३१; भजन. २४:१; १०४:२४;

जगत :—

रोम. १४:१४,२०; १ कर. १०:२६; १ तिम. ४:४; तीत. १:१५. देखो, अय्यूब. २८:७; नीति. ८:२२-३१; योहन. ३:१७; १२:४७।

—देखो पृथिवी।

जन — देखो, पुरुष, मनुष्य।

जन्तु—देखो, पशु।

जन्म—अपने जन्म के दिन को बुरा कहना. अय्यूब. ३:२-१०; १०:१८-१९. यश. ४५:९-१३. यिर्म. १५:१०; २०:१४-१८।

—नया. योहन. १:१२,१३; ३:३-८. देखो, नया जन्म।

जन्म दिन—मनाना. उत्प. ४०:२०; मत्ती. १४:६. मार्क. ६:२१।

जन्म के विषय में आगे से कहा गया—इसमाएल के उत्प. १६:११—इसहाक के. उत्प. १८:१०—शिमशोन के. न्यायी. १३:३—शमुएल के. १ शम. १:११,१७—योशिय्याह के. १ राजा. १३:२—शुनेमित के पुत्र के. २ राजा. ४:१६—योहन बपतिस्मा देनेहारे के. लूक. १:१३—खीष्ट के. उत्प. ३:१५. यश. ७:१४ मीका. ५; लूक १:३१।

जबड़ा—शिमशोन ने उसके द्वारा जीत पाई. न्यायी. १५:१५।

—से पानी बहने लगा. न्यायी. १५:१९।

जयवन्त—होने की बड़ाई और इनाम. १ योहन. २:१३; प्रकाश. २:७. ११,१७,२६; ३:५,१२,२१; २१:७।

जल—सृष्टि का. उत्प. १:२,६,९।

—प्रलय का. उत्प. ६:१७; ७:६।

—के आश्चर्यकर्म—उत्प. २१:१९. निर्ग. १५:२३; १७:६; गिनती. २०:७; २ राजा. ३:२०।

—जलनवाले की जांच. गिन. ५:१७।

—बपतिस्मा में काम में लाया गया. मत्ती. ३:११. प्रेरित. ८:३६; १०:४७।

—ख्रीष्ट जल पर चला. मत्ती. १४:२५; मार्क. ६:४८; योहन. ६:१९।

—उदाहरण के रूप में वर्णन हुआ. भजन. ६५:९. यश. ४१:१७; ४४:

जल :—

३; ५५:१; यिर्म. २:१३. यहेज. ४७. जक. १३:१; योहन. ३:५; ४:
१०; ७:३८. प्रकाश. ७:१७; २१:६; २२ ।

—दुःख का जल. १ राजा. २२:२७ ।

जल उठनेहारा (ईश्वर)—निर्ग.२०:५; व्यवस्था. २९:२०; भजन.
७८:५८. सप. १:१८; जक. १:१४; १ कर. १०:२२ ।

जलती हुई झाड़ी—में परमेश्वर प्रगट हुआ. निर्ग. ३:२; मार्क. १२:
२६. लूक. २०:३७. प्रेरित. ७:३५ ।

जलन—नीति. ६:३४; श्रेष्ठ गीत. ८:६ ।

—की भेंट. गिनती. ५:११ ।

—उपजानेहारी प्रतिमा. यहेज. ८:३ ।

—के साथ बदला देना. यहेज. १६:३८ ।

—देखो, डाह ।

जलना—देखो, सन्देह करना ।

जल प्रलय—के विषय में चितावनी. उत्प. ६:१७. भेजा जाना. ७:११;
मत्ती. २४:३८; २ पितर. २:५. थम गया. उत्प. ८ ।

जवान—को उपदेश. लैव्य. १९:३२: नीति. १:८. सभोप. १२:१ ।
खीष्ट का नमूना. लूक. २:४६,५१; तीत. २:४; १ पित. ५:५ ।

जुवानी—में जल्दी करना. १ राजा. १२:८-२०; २ इति. १०:८-१९ ।

—दीनताई दिखाना. अय्यूब. ३२:६ ।

—कभी २ बूढ़ों से अधिक बुद्धिमानी दिखाते. अय्यूब. ३२:९. भजन.
११९:१०० ।

—के दिनों में स्मरण रखना चाहिये. सभोप. ११:९; १२:१; २ तिम.
२:२२ ।

—में अधिक आधीनी से हानि है. १ कर. १६:११; १ तिम. ४:१२;
तीत. २:१५ ।

जवाबदेही—सभोप. ११:८; ९; १२:१३,१४; रोम. २:५-१२; ३:२ ।

जहाज—देखो, नौका ।

जी उठना :—
३:३, १ थिस. ४:१५; ५:२ ३; इब्र. ६:२; १ पितर. १:११; १ योहन ३:२।
—यहूदी पितर खीष्ट के विषय में. मत्ती. २८:११-१५।
—पिछला जीवन कैसा होगा. मत्ती. २२:३० मार्क. १२:१८-२५. लूक २०:३७-३६. योहन. १४:२; १ योहन. ३:२।
—जी उठा हुआ देह. १ कर. १५:४२-५४; २ कर. ५:१-४।
—विधि क्या होगी. रोम. ८:११; १ कर. १५:३५-५४. फिल. ३:२१; १ थिस. ४:१६-१८।
—खीष्टीय विश्वास की आवश्यकता. प्रेरित. १:२२; ४:२,३३; १७:१८; रोम ६:५; १ कर. १५:१३-१९. इफिसी. २:६. कल. २:१२,३:१।
—धर्मी और अधर्मियों का. दान. १२:२; मत्ती. १३:४८; २५:२४-४१; योहन ५:२९, प्रेरित. २४:१५. रोम. १४:१०; २ कर. ५:१०।

जीत—के द्वारा अधिकार मिला. न्यायी. ११:२१-२७।
—पाप और मृत्यु पर. १ कर. १५:५५-५७; १ योहन. ५:४. प्रकाश. २:७,११,१७,२६; ३:५,१२.२१; २१:७. देखो. यश. २५:८. होशे. १३:१४; १ योहन. २:१३,१४; ४:४।
—खीष्ट के द्वारा. १६:३३; १ योहन. ३:९; ४:४।
—विश्वास के द्वारा. १ योहन. ५:४, ५।

जीतना—देखो, जयवन्त।

जीभ—देखो, जिह्वा।

जीवता—जल खीष्ट का दान है. योहन. ४:१०; ७:३८; प्रकाश. ७:१७ देखो. यिर्म. २:१३; १७:१३. जक. १४:८।

जीवधारी—चार. यहेज. १:४-२८; ११:२२; प्रकाश. ४:६-९; ५:६. १४; ६:१; ७:११; १४:३; १५:७; १९:४।

जीवन—परमेश्वर का दान. उत्प. २:७; अय्यूब. १२:१०. भजन. ३६: ९; ६६:९; दान. ५:२३, प्रेरित. १७:२८।
—किस को वाचा दी गई कि बड़ा होगा—निर्ग. २०:१२; व्यवस्था.

जीवन :—

५:३३; ६:२; नीति. ३:२, ९:११; १०:२७; इफिसी. ६:३ ।

—की असत्यता. अय्यूब. ७:१; ९:२५; १४:१: भजन. ३९:५; ७३:१९; ८९:४७; ९०:५,९; सभोप. ६:१२; यश. ३८:१२; याक. ४:१४; १ पित. १:२४ ।

—किस प्रकार बिताना उचित है. लूक. १:७५; रोम. १२:१८; १४:८; फिलि. १:२१; १ पितर. १:१७ ।

—हिजकिय्याह राजा का बढ़ाया गया. २ राजा २०; २ इतिहास. ३२:२४. यश. ३८ ।

—आत्मिक—रोम. ६:४; ८; गल. २:२०; इफिसी. २:१. कल. ३:३ ।

—सदा का—खीष्ट के द्वारा परमेश्वर का दान. योहन. ६:२७,५४; १०:२८; १७:३; रोम. २:७; ६:२३; १ योहन. १:२; २:२५. यहूदा. २१. प्रकाश. २:७; २१:६ ।

—किस को बाचा दी गई. योहन. ३:१६; ५:२४: १ तिम. १:१६ ।

जूआ—खीष्ट का सहज है. मत्ती. ११:३०; १ योहन. ५:३. देखो, मीका ३:३ ।

जूती—उतरना, यहूदी रीति थी. व्यवस्था. २५:९,१०. रूत. ४:७ ।

—आदर का चिन्ह था. निर्ग. ३:५; यहोश. ५:१५. प्रेरित. ७:३३ ।

—दुःख का चिन्ह. २ शम. १५:३० ।

जैतून—पेड़ों का दर्शन. जक. ४:३. प्रकाश. ११:४ ।

—धर्मियों की तुलना की गई. भजन. ५२:८ ।

—योनातन का दृष्टान्त. न्यायी. ९:८ ।

ज्योति—देखो, उजियाला, प्रकाश. दर्शन ।

ज्योतिषी—उनकी विद्या असफल हो जायगी. यश. ४०:१३-१५. दान. २:४,७; ५:७ ।

ज्वलन—देखो, ईश्वर ।

झ

झगड़ना—बुरा है. नीति. २०:३; २९:१७; १ थिस. ४:११; २ थिस. ३:११; १ तिम. ५:१३; १ पितर ४:१५ ।

झगड़ा—परमेश्वर के साथ, बर्जित है. रोम. ९:२०; १ कर. १:२० ।
मनुष्यों के साथ. मार्क. ९:३३; रोम. १४:१; फिल. २:१४; १ तिम. १:४; ४:७; ६:२०; २ तिम. २:१४; तीत. ३:९. देखो, मुकद्दमा ।

झालर—गिन. १५:३७-४०; व्यवस्था. २२:१२; मत्ती. २३:५ ।

झिलम—जूलियत का १ शम. १७:५ ।
—परमेश्वर का. रोम. १३:१२; २ कर. ६:७; १०:३; इफिसो. ६:१; १ थिस. ५:८ ।

झुकना—मूर्ती के साम्हने बर्जित है. व्यवस्था. १३:१० ।
देखो, दण्डवत ।

झूठ—किस २ समय बोला गया. उत्प. ४:९; १२:१३; १८:१५; २०:२; २६:७; २७:१९; ३१:३५; ३७:३१,३२; यहोश. २:४; ९:९; न्यायी. ४:१८-२१; १६:१०; १ शम. १९:१४; २०:६,२८,२९; १ राजा. १३:१८; २ राजा. ५:२२; ८:१०,१४; मत्ती. २६:६९-७५; मार्क. १४:६६-७२; लूक. २२:५६-६२. योहन. १८:१७-२७; प्रेरित. ५:१-८ ।
—शैतान झूठों का पिता है. उत्प. ३:४ योहन. ८:४४, प्रेरित ५:३ ।
परमेश्वर घिन्न खाता है. नीति. ६:१६,१९; १२:२२ ।
—बर्जित है. लैव्य. १९:११; कल. ३:९ ।
—दण्ड के योग्य ठहराया गया. लैव्य. ६:२; १९:११; भजन. ५८:३; ६२:४; ६३:११; ११९:२९, १६३. नीति. ६:१७,१९; १२:२२, १९:५, ९. इफिसी. ४:२५. कल. ३:९ ।

झूठा धर्म—कुपन्थ. निन्दित ठहराया गया. १ कर. ११:१९, गल. ५:२० २ पितर. २:१, देखो, रोम. १६:१७, १ कर. १:१०; ३:३; १४:३३; फिल. २:३; ४:२; तीत. ३:१०; यहूदा. १९ ।
—कभी २ भूल से समझा जाता है. प्रेरित. २४:१४ ।

झूठी किरिया खाना—निन्दित ठहराया गया. निर्ग. २०:१६; लैव्य. ६:३; १९:१२; व्यवस्था ५:२०; यहेज. १७:१६; जक. ५:४; ८:१७; १ तिम. १:१० ।

ट

टालमटाल करना--२ शम. २०:५,६ ।

मुक्ति के काम में हानि है. भजन. ३२:६; यश. ५५:६; मत्ती. ५:२५; २५:११; योहन. ७:३४; ८:२१; ९:४; २ कर. ६:२; इब्र. ३:१३ ।

टिकटी—एस्तर. ७:१० ।

टिड्डी—निर्ग. १०:४; व्यवस्था. २८:३८; भजन. १०५:३४; प्रकाश. ९:३ ।

भोजन करने की आज्ञा. लैव्य. ११:२२; मत्ती. ३:४ ।

वर्णन हुआ है. नीति. ३०:२७. नहेमया. ३:१७; प्रकाश. ९:९ ।

टीमटाम—देखो, नुमाइश ।

ठ

ठगना—देखो, छल ।

ठहरना—परमेश्वर के लिये उत्प. ४९:१८. भजन. २५:५,२१; २७:१४; ३३:२०; ३७:७,९,३४; ४०:१; ५२:९; ५९:९; ६२:१; १२३:२; १३०:६ ।

—खीष्ट के लिये—१ कर. १:७; १ थिस. १:१०; २ थिस. ३:५ ।

—पवित्रात्मा के लिये.प्रेरित. १:४ ।

ठट्ठा—निन्दित ठहाराया गया. नीति १७:५; ३७:१७. यिर्म. १५:१७. यहूदा १८ ।

—करनेहारे. दंड दिये गये. उत्प. २१:९; २ राजा. २:२३ ।

—खीष्ट का. मत्ती. २७:२९. लूक. २३:११ ।

ठट्ठा करनेहारे—उत्प. २१:९; २ राजा. २:२३; १ इति. ३०:१०; ३६:१६; नहेम. २:१९; ४:१-३. विलाप. १:७. ।

—निन्दित ठहराये गये. अय्यूब. १६:१०; भजन. ३५:१९-२१; ४०:१५; ७०:३; नीति. १७:५. यश. २८:२२; यहूदा. १८ ।

—माता, पिता का. नीति. ३०:१७ ।

—पाप का. नीति. १४:९ ।

ठोकर—किसी को न देना. मत्ती. १६:२३; १७:२७; १८:६-१०; मार्क. ९:४२; लूक. १७:१,२; रोम. १४:२१; १ कर. १०:३२; २ कर. ११:२९. फिल. १:१०; १ कर. ८:१३; २ कर. ६:३ ।

ठोकर—

—क्रूश की—मत्ती. ११:६; लूक. ७:२३; रोम. ९:३३; १ कर. १:२३; गल. ५:११; १ पित. २:८।

—लगानेहारों से क्या करना. रोम. १६:१७. मत्ती. ५:२९,३०; मार्क. ९:४३-४७।

ड

डगमगानेहारा—इब्र. १०:२३; याक. १:६।

डर—परमेश्वर का. निर्ग. २३:२७; अय्यूब. ६:१४; ३:४३।

भजन. २:११; ५:७; ११९:३८।

से आशीष. व्यवस्था. ५:३९; भजन. २५:१४; ३१:१९; ३३:३८; ३४:७-९; ८५:९; १०३:११-१७; ११२:५,१०; ११५:१३; १४५:१९; १४७:११. नीति. १०:२७. १४:२६; १५:१६,३३; १९:२३; २२:४. सभोप. ८:१२; गल. ४:२; लूक. १:५०; प्रकाश. ११:१८।

—भूलने का जोखिम. उत्प. २०:११; व्यवस्था. २८:५८-६२; लूक. १२:५. इब्र. १०:२६-३१।

—पवित्रता के लिये आवश्यक है. २ कर. ७:१।

—देखो, भय।

डाह—नीति. ४०:३०; २७:४; सभोप. ४:४; मत्ती. २७:१८. प्रेरित. ७:९; रोम. १:२९; १ कर. ३:३; २ कर. १२:२०; गल. ५:२१; १ तिम. ६:४; तीत. ३:३; याक. ४:५।

—वर्जित है. भजन. ३७:१; नीति. ३:३१; २४:१,१९; रोम. १३:१३; १ पित. २:१।

—का बुरा फल. अय्यूब. ५:२; नीति. १४:३०; यश. २६:११; याक. ३:१६।

—से यूसुफ बेचा गया. प्रेरित. ७:९।

—देखो, जलन।

डेरा—देखो, तम्बू।

डौल—देखो, रूप।

ढ

ढाढ़स—देखो, शान्ति।

ढाल—परमेश्वर हमारी. उत्प. १५:१; व्यवस्था. ३३:२९. भजन.५:१२; २३:२०; ५९:११; ८४:९,११; ११५:९,११. नीति. ३०:५।

—परमेश्वर की सत्यता हमारी. भजन. ९१:४।

—विश्वास की. इफिसी. ६:१६।

—सुलेमान राजा की. १ राजा. १०:१७—जुलियत की. १ शम. १७:६।

ढिठाई—१ राजा. १२:६-१९; २ इति. १०:६-१९।

त

तंबू—देखो, तम्बू।

तख्ती—पत्थर की. व्यवस्था की. निर्ग. २४:१२; ३१:१८।

—उनका तोड़ा जाना. निर्ग. ३२:१९. व्यवस्था. ९:१५।

—नयी बनाई गईं. निर्ग. ३४. व्यवस्था. १०।

—पत्थर की और दिल की. २ कर. ३:३।

तर्क-विचार—लूक. ९:५०।

तन्दुरुस्ती—के नियम. व्यवस्था २३:१४-१४।

तपना—देखो, जलन।

तपस्या—मत्ता ३:४ (२ राजा. १:८) ११:१८; मार्क. १:६; लूक. ७:३३; १ तिम. ५:२३; २ तिम. २:३।

—झूठी. रोम. १४:२; कल. २:१६-२३; १ तिम. ४:३-८।

—सच्ची की विधि. रोम. १४:२०,२१; १ कर. ८:११-१३; ९:२७; १०:३१-३३।

तम्बू—परमेश्वर का. उसका बनाया जाना. निर्ग. २५ से २७; ३६ से ३८; ४०:३४. गिन. ९:१४।

—मूसा के द्वारा आराधना के लिये ठहराया जाना. लैव्य ८:१०।

तम्बू—
उसको उठाने और ले जाने के विषय में. गिन. १:५०,५३; ३; ४; ६:१८; १ इति. ६:४८ ।
—शिलोह में खड़ा करना. यहोशू. १८:१ —गिबोन में खड़ा करना. १ इति. २१:२६ ।
—मे दाऊद की प्रीति. भजन. २७; ४२; ४३; ८४; १३२ ।
—साक्षी का. गिन. १७:७; १८:२; २ इति. २४:६; प्रेरित. ७:४४ । निर्ग. ३८:२१—स्वर्ग में. प्रकाश. १५:५ ।
—सच्चा. इब्र. ८:२; ६:२ ।
—मनुष्य के देह का. २ कर. ५:१; २ पितर. १:१३ ।
—का पर्ब. लैव्य. २३:३४; गिन. २६:१२; व्यवस्था. १६:१३; २ इति. ८:१३; एज्रा. ३:४; जक. १४:१६; योहन. ७:२ ।

तलघर—यिर्मया डाला गया. ३७:१६; ३८:६ ।

तलवार—देखो, खड्ग ।

तसल्ली—देखो, शान्ति ।

ताड़ना—देखो—शिक्षा ।

तान—देखो, परख ।

तारा—ख्रीष्ट के जन्म पर दिखाई दिया. मत्ती. २:२ ।
—ख्रीष्ट, भोर का तारा. प्रकाश. २२:१६—भविष्यद्वाक्य. गिनती. २४:१७ ।
—बड़ा स्वर्ग से गिरा. प्रकाश. ८:१०; ६:१ ।

तारे—सृजे गये. उत्प. १:१६ ।
—उनका व[illegible] रूप. १५:५; ३७:९; न्यायी. ५:२०; १ कर. १५:४१; इब्र. ११:१२; यहूदा. १३; प्रकाश. ८:१२; १२:१ ।
—उनकी पूजा न की जाए. व्यवस्था. ४:१९ ।
—भोर के. अय्यूब. ३८:७ ।

तितर बितर होना—इस्राएलियों का. एस्त. ३:८. यश. ११:१२; योहन ७:३५ ।

तितर बितर होना—

—के विषय में भविष्यद्वाक्य. यिर्म. २५:३४; यहेज. ३६:१९. सपन्याह ३:१० ।

तुरही—अनिश्चय शब्द. १ कर. १४:८ ।

—जो पिछली बार फूंकी जायेगी. १ कर. १५:५२. १ थिस. ४:१६ ।

—की फूंक—गिनती. १०:५ ।

तुरहियां—उनका काम. गिनती. १०; यहोश. ६:४; न्यायी. ८; भजन ८१:३; यहेज. ७:१४; ३३:३; योएल. २:१ ।

—मन्दिर में काम में लाई गई. १ इति. १३:८; १५:२४; २ इति. ५:१२; २१:२७; भजन. ९८:६ ।

—का पर्ब. लैव्य. २३:२४; गिनती. २९ ।

—सात. प्रकाश. ८; ९; ११ ।

तेज—देखो, ईश्वर ।

तेल—दीपकों के लिये. निर्ग. २७:२०; लैव्य: २४:१ ।

—अभिषेक करने के लिये. निर्ग. ३०:३१: ३७:२९ ।

—अन्न बलि में काम में लाया गया. लैव्य. २:१ ।

—का आश्चर्य्य कर्म. १ राजा. १७:१२; २ राजा. ४:१ ।

—उदाहरण के रूप में. भजन. २३:५; १४१:५; यश. ६१:३; जक. ४:१२; मत्ती २५:१ ।

—सुगन्धित. ख्रीष्ट पर ढाला गया. मत्ती. २६:७; मार्क. १४:३; लूक ७:३७; योहन. ११:२; १२:३ ।

तौल—सच्ची हो. लैव्य. १९:३५; व्यवस्था २५:१३; नीति. ११:१; १६:११; २०:१०,२३; यहेज. ४५:१०. मीका. ६:११ ।

त्यागना—देखो, स्त्री को त्यागना ।

थ

थूकना—गिनती. १२:१४; व्यवस्था. २५:९. अय्यूब. ३०:१० ।

—ख्रीष्ट के मुंह पर. (यश. ५०:६) मत्ती. २६:६७; २७:३०; मार्क. १०:३४; १४:६५; १५:१९ ।

द

दण्ड—पाप के लिये. जगत भर को. भजन. १४:३; ५३:३; रोम. ३:१२, १९; ५:१२; ६:२३ ।

—अविश्वास के लिये. योहन. ३:१८ ।

—व्यवस्था से. २ कर. ३:६,९ ।

—पश्चात्ताप न करने और कपट के लिये. मत्ती. ११:२०; २६:१४ ।

—हमारे कर्मानुसार. २ कर. ११:११ ।

—झूठे शिक्षकों को. २ पितर. २:१; यहूदा. ४ ।

—से ख्रीष्ट ने मुक्त किया. योहन. ३:१८; ५:२४. रोमी. ८:१,३३ ।

—अन्तिम. मत्ती. २५:४६; प्रकाश. २०:१५ ।

दण्डवत—ईश्वर के आगे. उत्प. ४७:३१; ४८:१२; निर्ग. ४:३१; १२:२७; २०:५; २३:२४; ३४:८; लैव्य. २६:१; गिनती. २२:३१; यहोशू. २३:७; न्यायी. २:१९; २ राजा. ५:१८; १७:३५; १ इति. १९:२०; २ इति. २०:१८; २९:३०; भजन. ७२:९ ।

—आदर का चिन्ह—उत्प. १८:२; २७:२९; ३३:३; ३७:१०; ४२:६; ४३:२६,२८; ४८:१२; ४९:८; निर्ग. ११:८; २ शम. २४:२०; १ राजा १:२३,४७,५३; २:१९; २ राजा. २:१५; एस्तर. ३:५ ।

—कृतज्ञता प्रकट करने के लिये । निर्ग. ४:३१; १२:२७; २०:५; व्यवस्था. ५:९; यहोशू. ५:१४; २३:७,१६; न्यायी. २:१२; १७:१८; २ राजा. ५:१८. नहेम ८:६. भजन ९५:६; मीका. ६:६ ।

दण्ड-विधियां—जला देना. उत्प. ३८:३४; लैव्य. २०:१४; २१:९ ।

—लटका देना. उत्प. ४०:२२; व्यवस्था २१:२३; एज्रा ६:११; एस्तर २:२३; ७:१० ।

—कोड़े मारना. लैव्य. १९:२०; व्यवस्था. २५:१; मत्ती. २७:२६; प्रेरित. २२:२५ ।

—पत्थरवाह करना. लैव्य. २०:२; २४:१४; १ राजा. २१:१०; योहन ८:५९; प्रेरित. ७:५८; १४:१९ ।

दण्ड विधियां—

—सिर काटना. २ राजा. ६:३१; १०:७, मत्ती. १४:१०. देखो. इब्र. ११:३६।

—क्रूश पर चढ़ाना. मत्ती. २०:१६; २७:३१ इत्यादि।

दबाव—देखो, असर।

दया—देखो, कृपा।

अय्यूब. ६:१४; भजन. ३५:१३; जक. ७:६; रोम. १२:१५; २ कर. ११:२६; गल. ६:२; कल. ३:१२; इब्र. १३:३; याक. १:२७; १ पितर. ३:८।

—खीष्ट की. मत्ती. १५:३२; २०:३४. लूक. ७:१३,२१; इब्र. २:१७; ४:१५; ५:२।

—करने की आज्ञा. अय्यूब. ६:१४. यश. ६:१४. यश. १:१७; ५८:६, ७; जक. ७:६; मत्ती. १८:२४-३५; लूक. १०:३०-३७; १६:१६-३१. इब्र. १३:३; याक. १:२७।

दयालु—देखो कृपा, दया।

दयावन्त—,, ,, ,,

दरिद्र—देखो, कंगाल।

दर्पण—खीष्टियान इसके द्वारा सत्य को जानते हैं. १ कर. १३:१२।

—के समान खीष्ट के तेज को प्रगट करते हैं. २ कर. ३:१८।

दर्शन—ईश्वर के देखो, ईश्वर. स्वप्न, ज्योति, उजियाला, प्रकाश।

—दिये गये—इब्राहीम को. उत्प. १२:७; १५:१-१७; —मूसा और प्राचीनों को. निर्ग. २४:९-११—मूसा को. ३३:११,१८-२३; ३४: २९-३५—बालाम को. गिन. २४:४—मीका को. १ राजा. २२:१६-२३; २ इतिहास. १८:१८-२१—एलीपज को. अय्यूब. ४:१२-१७; —यशायाको. यश. ६:१-८—यिर्मिया को. यिर्म. १:११-१३; २४:१-८—यहेजकेल को. यहेज. १:४-२८; २:९; ३:१ ३,१२-१४; ८:१-१६; ६; १०; ११; ३७:१-१४; ४० से ४८—बेलशजर को. दान. ५:५; —दानियेल को. दान. ७ से १२—आमोस को. आमोस. ७:१-६; ८:१—जकरिया को. जक. १:७ से २:४; ३:१ से ६:८—स्तिफान को.

दर्शन—

प्रेरित. ७:५५—पावल को. प्रेरित. ६:३-६; १६:६; १८:६; २२:६-११,१७; २:१६-१६; २ कर. १२:१-४—पितर को. प्रेरित १०:९-१६; —कर्नेलियस को. प्रेरित. १०:३,३०—जो योहन को दिये गये. प्रकाशितवाक्य को देखो।

दशमास—इब्राहीम ने मलिकसिदक को दिया. उत्प. १४:२०; इब्र. ७:६।

—ईश्वर को देना चाहिये. उत्प २८:२२; लैव्य. २७:३०; नीति. ३:९; मल. ३:८।

—लावियों को. गिन. १८:२१; २ इति. ३१:५; नहेम १०:३७, इब्र. ७:५।

—पर्बियों और कंगालों के लिये. व्यवस्था. १४:२३,२७।

—याकूब ने देने का वचन दिया. उत्प. १४:२०—हिजकियाह के समय में दिया गया. २ इति. ३१:५-११—नहेम्याह के समय में. नहेम. १०:३८; १२:४४; १३:१२—न देना अपराध है. मल. ३:८-१०।

दाख—देखो, अंगूर।

—लता - रस—देखो, अंगूर।

—की बारी, देखो अंगूर का फल।

—मधु—देखो, मदिरा।

दाढ़ी—के विषय में नियम—लैव्य. १६:२७; २१:५; देखो. २ शम. १०:४; यिर्म. ४१:५; यहेज. ५:१।

दान—भजन. ४१:१; ११२:६; नीति. १४:२१; १६:१७; २२:६; २८:२७. मत्ती. ६:१-४; लूक. ११:४१; १२:३३; प्रेरित ६:३६; १०:२; ११:२६, ३०; २४:१७; रोम १५:२५-२७; १ कर. १६:१,२; २ कर. ८; ९; फिल. ४:१८; १ तिम. ६:१८, १६। •

—परमेश्वर के. उनको काम में लाना. मत्ती. १३:१२; २५:१४-३०; मार्क. ४:२५; लूक. ८:१८; ११:३३; १६:१२-२७।

—सब अच्छे, परमेश्वर से मिलते हैं. १ राजा. ३:६-१३; २ इति.

दुःख—

सत्य के लिये सहना. मत्ती. ५:१०; १ पित. ३:१४,१६; इब्र. १०: ३२-३४; ११:२५।

—में शान्ति. उत्प. १६:७-११; २१:१७,१८; १ शम. १:६-१८; २ राजा. २०:१-११. २ इति. ३२:२४. अय्यूब. ४१:१०,१२; भजन. २७:५; ३०:७-१२; ३१:१९-२२; ३४:१८; १०२:२; ११९:५०, ८२; १४२:२; यश. २५:८,३८; ४१:१३; ६१:१-३; यिर्म. ३१:१३; ५०:४,५; मत्ती. ५:४; लूक ६:२१; ७:१३. योहन. १६:२०; २ कुर. १:४ १०; ७:६; प्रकाश. ७:१७; २१:४।

—में अपने अपराध को मानना. गिन. २१:७. अय्यूब. ७:२०. भजन. ३२:३-५; यश. ६४:५,६. यिर्म. ३१:१८. मीका. ७:९; लूक १५:२१।

—से छुटकारा—उत्प. २१:१९. गिन. २१:९. न्यायी. ३:९,१५; ४:४-२४; ७:२२; ११:३३; भजन. २२:५; ३४:४-७,१९; ४०:२; ५५:१८; ५६:१३; ६९:१४; १०७:६; यश. ६३:९; योना. २; २ कुर. १:१० २ तिम. ३:११, ४:१७; इब्र. २:१५।

—सहना – १ शम. ३:१८; २ शम. १२:१५-२३. अय्यूब. १:२१,२२; २:१०, १३:१५; भजन. ३७:१-७; ३८:१३,१४, ३९:९. यश. ४०:३१. विलाप. ३:२६-४०. मत्ती. १०:२२. लूक. २१:१९. रोम. ५:३,८:२३-२५; १२:१२; २ कुर. १:८-१०. इब्र. १०:३४-३६; १२:१. याक. १: २-४; ५:१०।

—में सहारा—व्यवस्था. ४:३०,३१; २ इति. ६:२४-३९; ७:१३, १४. अय्यूब. ३३:२३-२६. भजन. ४६:५; ७३:२६; १४५:१९. यश. २५:४; ३५:३,४; ४३:२; ५४:११-१३. यिर्म. १६:१९; ३९:१७,१८. नहूम. १:७. मत्ती. ११:२८; २४:२२. योहन. १४:१,२७; १६:३३ प्रेरित. १४:२२. रोम. ८:१८,३१-३७. इब्र. १२:१२; प्रकाश. २:१०।

देखो—शोक।

दुःखी—के संग व्यवहार. अय्यूब ६:१४. भजन. ८२:३. नीति. १७:७; २२:२२; १ तिम. ५:१०. याक. १:२७।

—की पुकार—निर्ग. ३२:३१,३२; गिन. ११:११-१५; १२:१३; यहोशू. ७:६-९; न्यायी. २:४; ३ ९,१५; ४:३; ६:७; १०:१०; १ शम. १:१०-

दुःखी—

१६. २ शम. २४:१०; २ राजा. १९:१६; २०:१,२; २ इति. १४:११; २०:६; एज्रा. ९:६. नहेम. ६:३२; अय्यूब. ३; १०:१; १६; १७; १९; २३; भजन. ६:१-७; ७:१-५; १८:६; ३०:६-१०; ३८:१-२२; ४४:९-१७; ५१:१-१५; ५५:१-२३; ६०:१-३,१०,११; ६९:१-२९; ७१:१-४; ७४:१-२३; ७९:१-११; ८०:१-१९; ८८:१-१८; ९४:१-६; १०२:१-११; ११:५-१०; १०९:१-२९; १२०:१-७; १३०:१-३, यश. १३:१९. यिर्म. ६:१; १४:७-९; १५:१० १८; १७:१५-१८; १८:१९-२३; २०:७-१३. विलाप कीपुस्तक. दान. ९:३-१९ योना. २ मीका. ७:१; हब. १: २,३; मत्ती २६:३०-४२; २७:४६. मार्क. १४:२४-३६; १५:३४. लूक. २२:४२.याक. ५:४,१३ ।

दुर्बल—देखो, निर्बल ।

दुर्भाग्य—अय्यूब. ३०:१-३१ ।

दुर्भाव—देखो, डाह, छल, कपट इत्यादि ।

दुलहा—ख्रीष्ट स्वर्गी—मत्ती. ९:१५; २५:१-१०; मार्क. २:१९; लूक. ५: ३४. योहन. ३:२९ ।

दुल्हिन—मंडली-ख्रीष्ट की. योहन. ३:२९. प्रकाश. २१:२;२२:१७. देखो, मंडली ।

दुष्ट—उन पर न्याय आज्ञा. अय्यूब. ५:३-५; ८:१२-२२; १५:२०-३५; १८:५-२१. २०:४-२९; २१:१७-२१; २७:१३-२३; ३६:१२-१४. भजन ११:६; ३७:९-२२,३५,३६; नीति. २:२२; सभोप. ८:१३; यहेज. ५:१२-१७; १४:१०; नहूम. १:३; मत्ती. १३:४२; २५:४६; योहन. ५:२९; कल. ३:६; २ थिस. २:१२; २ पितर. २: प्रकाश. २०:९; २१:८; २२:१५ ।

—डरपोक होते हैं. नीति. २८:१ ।

—उनकी बढ़ती थोड़े समय की है. अय्यूब. २०:५; २१:७-१५; भजन. ३७:१; ४९:१६-२०; ७३:१-२०. सभोप. ७:१५; ८:१३. नीति. ३: ३१; २४:११९ ।

—को शान्ति नहीं—यश. ४८:२२; ५७:२१ ।

दुष्ट—

के सङ्ग मिताई करना वर्जित है. उत्प. १३:१२,१३; गिन. १६:२६; २ इति. १६:२; नीति १:१४-१७; ४:१४; १४:७; यशा. ५२:११; मत्ती. १८:१७; रोम. १६:१७; १ कर. ५:९ ११; २ कर. ६:१४.१७; १ कर. ५:६-११; २ कर. ६:१४-१७. इफिसी. ५:११; २ थिस. ३:६,१४; १ तिम. ६:५; २ योहन. १०; प्रकाश. १८:४. और देखो, शैतान ।

दुष्टता—देखो—अधर्म, कुकर्म, पाप ।

दुष्टात्मा—देखो—शैतान ।

दुहराना—व्यर्थ, प्रार्थना न की जाये. मत्ती. ६:७; १ राजा. १८:२६ ।

दूत—उनका चरित्र, कर्त्तव्य और दर्जा. २ शम. २४:२०; १ राजा. १९:५. नहेम. ३:६; अय्यूब. २५:३; ३८:६; भजन. ६८:१७; ९१:११; १०३:२०; १०४:४; १४८:२; यश. ६:२; दान. ६:२२; मत्ती. १३:३९; १६:२७; १८:१०; २४:३१; २५:३१; २५:३१; मार्क. ८:३८; लूक १५:७; १६:२२; प्रेरित. ७:५३; १२:७; २७:२३; इफिसी. १:२१; फिल. २:९; कल. १:१६; २:१०: १ थिस. ४:१६; २ थिस. १:७; १ तिम. ३:१६; ५:२१; इब्र. १:६; २:२; १२:२२; १ पित. १:१२; ३:२२; २ पित. २:११. यहूदा. ९. प्रकाश. ५:२; ७; ११; १२:७; १४:६; १७ ।

—ने खीष्ट के जन्म का समाचार दिया. लूक. २:१३ ।

—खीष्ट की सेवा की. मत्ती ४:११; २६:५३; लूक. २२:४३; योहन. १:५१ ।

—सन्त लोग उनका न्याय करेंगे. १ कर. ६:३ ।

—उनकी पूजा करना वर्जित है. कल. २:१८ प्रकाश. १९:१०; २२:९ ।

—आज्ञा उलंघन करनेहारे: २ पित. २:४; यहूदा. ६. देखो. १ राजा. २२:२२; अय्यूब १:६; २:१; ४:१८; भजन. ७८:४९ ।

—वाचा का दूत—निर्ग. १४:१९; २३:२०-२३; ३२:३४; ३३:२,१४. यश. ६३:९. मलाकी. ३:१ ।

दूत—

—मंडली के दूत. प्रकाश. १:२०; २; ३; इत्यादि।

—दिखाई दिये—हागार को. उत्प. १६:७; २१:१७—इब्राहीम को. उत्प. १८ इत्यादि—लूत को. उत्प. १९;—बिलाम को गिन. २२:२३—इस्राएलियों को; न्यायी. २;—गिदोन को. न्यायी. ६:११ —मनोहा की स्त्री को. न्यायी. १३:३—दाऊद को. २ शम २४:१६; १ इति. २१:१६—एलियाह को. १ राजा. १९:७,—दानिएल को. दान. ८:१६; ९:२१, १०:११, १२—यूसफ को. मत्ती. १:२०—मरियम मगदलिया को. मत्ती. २८:२,७—जिखरियाह को लूक १:११. —मरियम को. लूक. १:२६—गड़ेरियों को लूक. २:८-१२—पितर को. प्रेरित. ५:१९; १२:७. फिलिप को. प्रेरित. ८:२६. कर्णीलिय को. प्रेरित. १०:३—पावल को. २७:३०. देखो. ३४:७, ३५:५, जक. १:११।

दूदा फल—उत्प. ३०:१४-१६।

दूसरी मृत्यु—देखो, मृत्यु।

द्रव्य—देखो धन।

दृष्टान्त—पुराने धर्मनियम के विख्यात—न्यायी ८:१०-१५; २ शम. १२:१-४; १४:५,७; १ राजा. २०:३९; २ राजा. १४:८; २ इति. २५:१८।

—उपदेश के रूप में. गिन. २३:७; २४; ५,१६; भजन. ७८:२; अय्यूब २७; नीति. २६:९।

—भविष्यद्वक्ताओं के. यश. ५:१; यिर्म. १३:१; १८; २४; २७; यहेज. १६; १७; १९; २३; २४; ३१; ३३; ३७।

—खीष्ट के—देखो, खीष्ट।

—देखो, नमूना।

दृष्टि—देखो, दर्शन, आंख।

देवता—झूठे. उनकी उपासना वर्जित है. उत्प. ३५:२; निर्ग. २०:३; २३:१३,३२,३३; ३४:११-१७. व्यवस्था. ७:१६; १२:२९-३२; यहोशू. २३:७; २४:१४, २३; १ शमि. ७:३; २ राजा. १:३; यिर्म. १:१६; २:११; ७:६,१८।

—उपासना का दण्ड. निर्ग. २२:२०; व्यवस्था. ७:५; १७:२-७; ३०:

देवता—

१७. १८. यहोशू. २३:१६ ; २४:२०; न्यायी. २:३; ६:७-१०; १०:७; १ शम. ५:१-७; १ राजा. ११:४-१२; ३३; २ राजा. १:१६; १७:६-२३; १ इति. ५:२५. २६; भजन. १६:४. यिर्म. ५:११; १८:१५-१७; ४४:१-२८. होशे ४:१३ ।

—उनकी वेदियां तोड़ दी जाएं. गिन. ३३:५२; व्यवस्था. १२:२,३ ।

—इस्राएलियों ने उनकी पूजा से व्यवस्था को तोड़ा. न्यायी. २:११-१९; १०:६; २ इति. २८:२३-२५, ३३:३-५ ।

— वे बचा नहीं सकते. व्यवस्था. ३२:३७, ३८ न्यायी. १०:१४; १ राजा. १८:२७; २ राजा. १८:३३-३५; १९:१२,१८; २ इति. ३२:१३-१९. यशा. १०:१०,११; ३६:१८-२०; ३७:१२,१९. यिर्म. २:१८; ११:१२; १४:२२ ।

—देखो, मूरत, मूर्तिपूजा ।

देवदारु—लुबनान के. न्यायी. ९:१५; भजन. ९२:१२; १०४:१६; १४८:९. गीत. ५:१५; यशा. २:१३. यहेज. १७:३ ।

—घर बनाने के काम में लाये गये—२ शम. ५:११; ७:२,७; १ राजा. ५:६; १०-६; १५-१८; ७:११; ९:११; १ इति. १४:१; १७:१; २२:४; २ इति. २:३, ८. गीत. १:१७; ८:९. यिर्म. २२:१४, १५. सपन्या. २:१४ ।

देवपूजक—देखो मूर्तिपूजक, अन्यदेशी ।

देश—इस्राएलियों का, उसका लम्बान, चौड़ान. उत्प. १५:१८. निर्ग. २३:३१. गिन. ३४:१-१२. व्यवस्था. १:७; ११:२४; ३४:१-४. यहोशू. १:४; १ राजा. ४:२१; २ इति. ९:२६. भजन. ८०:११ ।

देशप्रेम—देखो, स्वदेशानुराग ।

देह—(मनुष्य का). तुच्छ न समझा जाए. लैव्य. १९:२८; २१:५; व्यवस्था. १४:१.

—शुद्ध रखा जाए. रोम. १२:१; १ कुर. ६:१३. १ थिस. ४:४ ।

—मसीही का पवित्रात्मा का मन्दिर है. १ कुर. ३:१६; ६:१९; २ कुर. ६:१६ ।

—देह—

—मृतकों के विषय में व्यवस्था. लैव्य. २१:११; गिनती. ५:२; ९:६; १५:११; व्यवस्था. २१:२३ हाग्गै. २:१३ ।

—फिर उठाया जायेगा. मत्ती. २२:३०; १ कर. १५:१२; फिल. ३:२१ ।

—ख्रीष्ट का—(इब्र. १०:५) लूक. २:३५. छेदा गया. मत्ती. २७:५८; मार्क. १५:४२; लूक. २३:५०. योहन. १५:३८ ।

—मंडली कहलाती है. रोम. १२:४; १ कर. १०:१७; १२:१२; इफिसी. १:२२; ४:१२; ५:२३; कल. १:१८; २:१९; ३:१५ ।

दो—एक से भले. सभोप. ४:९-१२ ।

दोष—देखो, अपराध ।

दोष लगानेहारा—उसके संग व्यवहार. मत्ती. ५:११,१२; १ कर. ४:१०;

—का प्रभाव. नीति. १६:२८ ।

—सेवक की स्त्री न हो. १ तिम. ३:११ ।

—पत्र ख्रीष्ट का. मत्ती. २७:३७; मार्क. १५:२६ ।

दौड़—जीवन का एक उदाहरण. भजन. १९:५: सभोप. ९:११; १ कर. ९:२४ इब्र. १२:१ ।

दौलत—देखो, धन ।

द्वार—भेड़ों का, ख्रीष्ट है. योहन. १०:९ ।

ध

धन—(माल, सम्पत्ति) ईश्वर देता है—१ शम. २:७; नीति. १०:२२; सभोप. ५:१९. सच्चा लूक. १६:११; १ कर. १:३०. इफिसी. ३:८; कल. २:३; १ पित. २:७. संसारिक—व्यवस्था. ८:१७; १ इति. २९:१२; भजन. ४९:६; नीति. ११:४; १५:१६; २३:५; २७:२४; सभोप. ४:८; ५:१०; ६; यिर्म. ९:२३; ४८:३६; यहेज. ७:१९; सपन्या. १:१८; मत्ती. ६:१९; १३:२२; १ तिम. ६:१७. याक. १:११; ५:२; १ पित. १:१८ ।

—नाशमान है. १ तिम. ५:१७ ।

—धन—

—की हानि. व्यवस्था. ८:१३; ३२:१५; नहेम्या. ९:२५; नीति. १५:१७; १८:२३; २८:११; ३०:८; सभोप. ५:१२; होशे. १२:८. मीका. ६:१२; मत्ती. १३:२२; १९:२३; मार्क. १०:२२; लूक. १२:१५; १ तिम. ६:१०; यस्क. २:६; ५:१ ।

—को उचित रीति से काम में लाना. १. इति. २९:३; अय्यूब. ३१:१६,२४; भजन ६२:१०. यिर्म. ९:२३; मत्ती. ६:१९; १९:२१; लूक. १६:९; १ तिम. ६:१७; याक १:९; १ योहन. ३:१७ ।

—को उचित रीति से काम में न लाना. अय्यूब. २०:१५; ३१:२४; भजन. ३९:६; ४९:६; ७३:१२. नीति. ११:२८; १३:७,११; १५:६; सभोप. २:२६; ५:१०; याक. ५:२—दुष्ट मनुष्य के धन का अन्त. अय्यूब. २१:१३; २७:१६; भजन. ५२:७; नीति. ११:४; २२:१६; सभोप. ५:१४; यिर्म. १७:११; मीका. २:३; हब. २:६; लूक. ६:२४; १२:१६; १६:१९. याक. ५:१ ।

—स्वर्ग में इकट्ठा किया जाये. मत्ती. ६:२० ।

—सन्तुष्ट नहीं कर सकता. सभोप. २:१-११; ५:१०-१७; ६:२; १ तिम. ६:९,१०; १२; याक. १:१०,११; ५:१-५ ।

धनी—देखो, धन ।

धनुक—देखो, धनुष ।

धनुर्धारी—उत्प. २१:२०; २७:३; १ शम. ३१:३; १ राजा. २२:३४; २ राजा. ९:२४; १ इति. १०:३; २ इति. १८:३३; नहेम. ४:१६ ।

धनुष—आकाश में. उत्प. ९:१३-१७. यहेज.१:२८ ।

—बाण. उत्प. ४८:२२. यहोशू. २४:१२; १ शम. १८:४; २ शम. १:१८-२२; २ राजा. ९:२४; भजन. ४४:६; ७८:५७; यिर्म. :४९:३५. होशे. ७:१६. प्रकाश ६:२ ।

धन्य—उत्प. १२:३; भजन. १:१; ६५:४; ८४:४,५; ११२:१ यश. ३०:१८; मत्ती. ५:४,६; २५:३४; लूक. ६:२१; १२:३७; १४:१५; रोम. ४:६,९ ।

—वे हैं जो चुने गये, बुलाये गये और जिनकी ईश्वर से ताड़ना

—धन्य—

होती है. भजन. ६५:४; इफिसी. १:३,४; यश. ५१:२; प्रकाश. १९:९; (भजन. ८४:१२)।

—वे हैं जो ईश्वर से डरते, उस पर बिश्वास करते और उस से आनन्दित होते हैं, भजन २:१२; ३४:८; ४०:४; ८४:१२; यिर्म. १०:७ (भजन. १२८:१४; ११२:१)—जो सुनते और आज्ञा पालन करते हैं. भजन. ११९:२; मत्ती. १३:१६; लूक. ११:२८; याक. १: २५; प्रकाश. १:३; २२:७-१४।

—जो खीष्ट को जानते, विश्वास करते और उसके कारण दुःख सहते हैं. मत्ती १६:२६,१७; ११:६; लूक.१:४५; गल. ३:९ (लूक ६:२२)।

—जो परीक्षा को सहते हैं. याक. १:१२।

—जो जागता रहता और पाप नहीं करता. प्रकाश. १६:१५।

—पापियों को चिताता है. नीति. २५:२५।

—प्रभु में मरते हैं. प्रकाश. १४:१३।

—वे जो अपवित्र न हुए, शुद्ध मन, धर्मी, धर्मियों की सन्तान. विश्वासी, मन में दीन, दयावन्त, सच्चे, मेल करानेहारे. भजन. ११९:१; मत्ती ५:८. भजन. १०६:३; नीति. १०:६; २०:७; भजन. ५:१२; ११२:२; नीति. १:२८. मत्ती. ५:३,५,७,९।

—दूसरों को देनेहारे. व्यवस्था. १५:१०; भजन. ४१:१. नीति. २२:९. लूक. १४:१२,१४—जिन के पाप क्षमा किये गये. भजन. ३२:१,२; रोम. ४:७।

—वह मनुष्य जो धन्य ठहरे. याकूब. उत्प. २७:२७; ४८:३; यूसफ. उत्प. ४८:९, १४; बारह जातियां. व्यवस्था. ३३।

धन्यवाद्—प्रभु भोज के समय देना. मत्ती. २६:२७; मार्क. १४:२३; लूक. २२:१७; १ कर. ११:२४।

—भोजन के समय. मार्क. ८:६; योहन. ६:११. प्रेरित. २७:३५; रोम. १४:६; इफिसी. ५:२०; १ तिम. ४:३।

—शिक्षा—भजन. ३४:३; ५०:१४; ९५:२; १०:४; १०:२२; १३६; २ कर. ९:१२ फिल. ४:६; कल. २:७; ४:२; प्रकाश. ७:१२. देखो. भजन।

—धन्यवाद—

—धन्यबाद न देना. देखो, नाशुक्रगुजारी ।

धन्यबादियाँ—मत्ती. ५:३-११; लूक. ६:२०—२२ ।

धर्म—शुद्ध और निर्मल. याक. १:२० ।

—जो काम में देखा जावे. यश. १:१०-१८; ५८; होशे. ६:६; मीका. ६:८; मत्ती ७:२१-२३; ६:१३; १२:७; लूक. ६:४६; १३:२६,२७; रोम. २:१३; याक. १:२२-२७; १ योहन. ३:७ ।

—लोगों का धर्मी ठहरना अय्यूब. ३६:७; भजन. १; ५:१२; १४:५; १५; १९:३,११; ३२:११; ३४:१५; ३७; ५२:६; ५५:२२; ५८:१०; ६४:१०; ८६; ६२:१२; ९७:११; १२५:३; १४६:८; नीति. २:७; ३:३२; १०-१३; १२:२६; २८:१; यश. ३:१०; २६:२:६०; २१. यहेज. १८. मत्ती. १३:४३; प्रेरित. १०:३५; रोम. २:१०; १ पितर ३:१२; १ योहन. ३:७; प्रकाश. २२:११—जो विश्वास से ठहराये गये—उत्प. १५:६; भजन. १०६:३१; रोम, ४:३; गल. ३:६; याक. २:२३ ।

—मण्डली का खीष्ट के द्वारा ठहराया जाना. यश. ५४:१७; यिर्म. २३:६; ३३:१६. होशे. २:१६; मल. ४:२; रोम १:१७; ३:२२; १०:३; १ कर. १:३०; २ कर. ५:२१. फिल. ३:८; तीत. २:१४; २ पित. १:१ ।

धर्म के लिये प्राण देना—पहिला खीष्टियान जिस ने प्राण दिया. प्रेरित. ७; २२:२०—उनकी पुकार. प्रकाश. ६:६,१० ।

धर्म के सेवक—१ कर. १:६,१४; गल. ६:६; १ तिम. ५:१७,१८; रोम. १५:२७. देखो, सेवक ।

धर्मपुस्तक—ईश्वर की जो पवित्रातमा के द्वारा दी गई. प्रेरित. १:१६; २ तिम. ३.१६; इब्र. ३:७; २ पितर. १:२१ ।

—खीष्ट ग्रहण करता और उस से शिक्षा देता था. मत्ती. ४:४; मार्क. १२:१०; लूक.२४:२७; योहन. ७:४२ ।

—खीष्ट की साक्षी देती है . योहन ५:३६; प्रेरित. १०:४३; १८:२८; १ कर. ५:५ ।

—धर्मपुस्तक—

—से शिक्षा लेना चाहिये भजन. १९:७; ११६:९; योहन. १७:१७; प्रेरित. २०:३२; रोम. १५:४; १६:२६; २ तिम. ३:१६,१७।

—त्राण के निमित्त बुद्धिमान कर सकता है. योहन. २०:३१; रोम. १:२; २ तिम. ३:१५; याक. १:२१; २ पितर. १:१६।

—ध्यान दे कर सिखाया जाए. व्यवस्था ६:६; ११:१६; १ पितर. २:२।

—बिल्कुल बदला न जाए. व्यवस्था. ४:२; नीति. ३०:६; १ तिम. १:१३; प्रकाश. २२:१८।

—खोजा जाए. योहन. ५:३६; प्रेरित. १७:११।

—परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिया. लूक. १६:३१; रोम. ३:२; ६:४; इब्र. १:१—पिछले दिनों में खीष्ट के द्वारा दिया गया. इब्र. १:२—उसी ने उसे पूरा भी किया. मत्ती. ५:१७; लूक. २४:२७. येहन. १६:२४; प्रेरित. १३:२६।

—प्रेरितों ने उसकी दोहाई दी. प्रेरित. २; ३; ८:३२; १७:२; १८:२४; २८:२३।

—तुच्छ जाननेहारों का उसी से न्याय किया जायेगा. योहन. १२: ४८. इब्र. २:३; १०:२८; १२:२५।

धर्मी—देखो, धर्म।

धर्मी ठहराना—देखो, निर्दोष ठहराना।

धात—सब से पहिले काम में लाया गया. उत्प. ४:२२।

—का काम जाननेहारे—निर्ग. ३१:४; ३५:२४-३८. न्यायी. १७:४; १ राजा. ७:१४; २ इति. १:५; २:१४; ४:१६. यिर्म. ६:२६; १०:६; ५१:१७; प्रेरित. १६:२४. देखो. शब्दावली में सोनार।

धार्मिक शोक—से पश्चात्ताप होता है. २ कर. ७:१७।

धिक्कारना—देखो, स्राप।

धूम मचाना—कब आशीर्स जनक है. सभोप. ७:२; मत्ती. ५:४; लूक. ६:२१।

—धूम मचाना—

—मृतकों के लिये. उत्प. ५०:३; गिन. २०:२९. व्यवस्था. १४:१; २ शम. १:१७; ३:११; १२:१६; १८:३३; १९:१; सभोप. १२:५; यिर्म. ६:२६; ९:१७; २२१० ।

—याजकों का लैव्य. २१:१; यहेज. ४४:२५ ।

—देखो, रोना, शोक, विलाप ।

धूम मचानेहारे—उनके लिये शान्ति. अय्यूब. २९:२५; रोम. १२:१५; २ कर. १:४; १ थिस्. ४:१८ ।

धूप—निर्ग. ३०:२२; ३७:२९ ।

—चढ़ाया गया. लैव्य. १०:१; १६:१३; गिन. १६:४६ ।

—उदाहरण के रूप में. प्रकाश ८:३ ।

धूलि—भूमि की धूल से मनुष्य बनाया गया. उत्प. २:७; ३:१९; १८:२७; अय्यूब १०:९; ३४:१५; भजन. १०३:१४; १०४:२९ सभोप. १२:७ ।

—शोक का चिन्ह—यहोशू. ७:६; अय्यूब. २:१२; विलाप २:१० ।

—देखो, भूमि ।

धोखा—पाप है. उसका दण्ड. उत्प. ३४; २ शम. १३ ।

—व्यवस्थानुसार दण्ड. निर्ग. २२:१६.१७; व्यवस्था. २२:२८,२९ ।

—देखो, छल ।

धोखे से मारना—उदाहरण. न्यायी. ३:२१-२३; २ शम. १:१०; ३:२७; २०:१०; १ राजा. १५:२७:२९; १६:१0; २ राजा. ९:२४,२७, ३३; १०:६,७; ११:१,२०; १४:१९; १५:१०,१४,२५,३०; २१:२३; २५:२५; २ इति. २२:९,१०; २३:१५; २५:२७; ३३:२४; यिर्म. ४१:१-३ ।

धोना—व्यवस्था के अनुसार. निर्ग. २९:४; लैव्य. ६:२७; १३:५४; १४:८; व्यवस्था. २१:६; २ इति. ४:६ ।

—पांवों का. उत्प. १८:४; २४:३२; ४३:२४; १ शम. २५:४१; लूक. ७:३८; १ तिम. ५:१० ।

—धोना—

—हाथों का. व्यवस्था. २१:६; भजन. २६:६; मत्ती. २७:२४; लूक ११:२० ।

—ख्रीष्ट ने अपने शिष्यों के पांव धोये. योहन. १३ ।

—झूठा विचार अनुचित है. मार्क. ७:३; लूक. ११:३८ ।

—उदाहरण के रूप में. अय्यूब. ६:३०. यश. १:१६; ४:४; तीत. ३:५; इब्र. १०:२२. इफिसी. ५:२६ ।

—ख्रीष्ट के लोहू में. १ कर. ६:११; प्रकाश. १:५; ७:१४ ।

ध्यान—इसहाक का. उत्प. २४:६३ ।

—परमेश्वर के बचन पर करना. व्यवस्था १८:१८,१९; यहोशू. १ ८; भजन. १:२; ११९:१५,२३,२४,४८,७८,९७,९९,१४८; १३९:१७, १८; १४३:५; नीति. ४:२०-२२; ७:१-४; १ तिम. ४:१५ ।

—देखो, विचार ।

न

नगर—प्राचीन. उत्प. १०:१०,११. गिनती. १३:२२ ।

—के विरुद्ध युद्ध करने के नियम. व्यवस्था. २०:१०-१८ ।

—शरण के. गिनती. ३५:६-३४. व्यवस्था. १९:१-१३. यहोशू. २० ।

नमस्कार—रोम. १६:१-१६; १ कर. १६:१९-२१; २ कर. १३:१३; फिल. ४:२१,२२; कल. ४:१०-१८; २ थिस. ३:१७; २ तिम. ४:१९. तीत. ३:१५. फिलेमून. २३; इब्र. १३:२४; ३ योहन. १४ ।

नबी—नबूवत, देखो भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वाणी ।

नमूना—ख्रीष्ट का. मत्ती. ११:२९; योहन. १३:१५; रोम. १५:५; फिल. २:५; १ पित. २:२१—नबियों का. इब्र. ६:१२; याक. ५:१० ।

—प्रेरितों का. १ कर. ४:१६; ११:१; फिल. ३:१७; ४:९; १ थिस. १:६ ।

—अच्छा साम्हने रखना चाहिये. मत्ती. ५:१६; १ तिम. ४:१२; १ पित. २:१२—धर्मियों का लेना चाहिये. यश. ५१:१,२; १ कर. ४:१६; ११:१; फिल. ३:१७; ४:९; १ थिस. १:६; २ थिस. ३:७,९;

—नमूना—

इब्र. ६:१२; ११; १२:१. याक. ५:१०; बुरा. न लेना चाहिये. १ राजा. २२:४,४८; २ इति. २१:३५. भजन. १:१; २६:४. नीति. १:१०; २:१२; ४:१४; १२:११; १३:२०; १४:७; २२:२४. यिश. ४१: ६,७. यिर्म. १५:१७; १ कर. ५:६-११; १५:३३; इफिसी. ५:७-११. इब्र. ४:११।

—देखो, दृष्टान्त।

नम्रता—के उदाहरण—उत्प. ३२:१०; ४१:१६. निर्ग. ४-१०-१६; ६:१२: २ शम. ७:१८,१६. भजन. ११९:१४१; १३१:१,२. यिर्म १:६; दान. २:३०; मत्ती. १५:२७; २६:२२; मार्क. ७:२८; १४:१६.योहन. ३:२७. ३०; १३:१-१७; १ तिम. १:१२-१६; प्रकाश. ४:१०।

—परमेश्वर चाहता है. अय्यूब. २२:२६. भजन. ९:१२; १०:१७; १३८: ६; नीति ३:३४. यश. ५७:१५. लूक. १:५२; १४:७-११; १८:६-१४. याक. ४:६; १ पितर. ५:५।

—के लिये उपदेश किया गया. नीति. ६:८; ११:२; १६:१६; १६:२०, २५; २५:६,७.१२; २७:२.होशे. १३:१; मत्ती. ५:३; २०:२६-२८; २३: १२. मार्क. १०:४३-४५. लूक. २२:२४-२६. रोम. ११:२०; १२:३; ४:२; फिल. २:३-५. कल. ३:१२ :

—ख्रीष्ट के उदाहरण से जोर दी गई. मत्ती. ११:२६।

—एक बच्चे का उदाहरण. मत्ती. १८:२-४ मार्क. ६:३६. लूक. ६:४६-४८—के नमूने से दूसरों को आशीष पहुंचती है. भजन. ३४:२; इफिसी. ६८:३२।

—झूठी. कल. ३:१८-२३।

—दीनताई—देखो, दीनताई।

नया—कोई वस्तु नहीं है. सभोप. १:६,१०; ३:१५।

—सब वस्तु नयी की जाएंगी. प्रकाश. २१:५।

—चान्द का पर्ब. गिनती. १०:१०. लैव्य. २३:२४,२५. देखो. १ शम. २०:५,६,२६; २ राजा. ४:२३. आमोस. ८:५।

—जन्म—योहन. ३:३,६; १ पितर, १:२३।

पिछला. मत्ती. १९:२८. प्रेरित. ३:२१. प्रकाश. २१:५।

नया जन्म—

—मनुष्य की आत्मा का. योहन. १:१३; ३:३-५; तीत. ३:५. याक. १:१८; १ पित. १:३; २ पित. १:४; १ योहन. ३:९; ४:९; ५:११,८. देखो. यश. ६२:१-३; इफिसी. ४:२४. कल. ३:१०; याक. १:२१ ।

—**जीवन**—रोम. ६:४; ७:२५; १२:२; इफिसी. ४:२१-२४; कल. ३:९. १०; और भी. १ कर. ५:७; २ कर. ५:१७; गल. ६:१५; तीत; ३:५; प्रकाश. ३:१२ ।

नरक—(हादीस) कबर. प्रेरित २:३१; १ कर. १५:५५; प्रकाश. २०:१३ ।

—महा दुःख का स्थान. मत्ती. ११:२३; १३:४२; २५:४१,४६; लूक. १६:२३; २ पितर. २:४; प्रकाश. १४:१०; २०:१०,१५ ।

—किस के लिये ठहराया गया है. भजन. ९:१७; नीति. ५:५; ७:२७; ९:१८; मत्ती ५:२२; २३:१५; २५:४१. लूक. १६:२३. और देखो. यश. ५:१४; १४:९; ३३:१४; मत्ती. ३:१२ ।

—**का दण्ड**—मत्ती. २३:१४; मार्क १६:१६; योहन. ५:२९; रोम. ३:८; १३:२; २ थिस. २:१२; १ तिम. ५:१२; २ तिम. २:३ ।

—देखो, अधोलोक ।

नरहिंसा—देखो, हिंसा ।

नशा—देखो, मदीरा, मतवाला, इत्यादि ।

नाचना—आनन्द का चिन्ह है. निर्ग. १५:२०; ३२:१९. न्यायी ११:३४: १ शम २१:११; २ शम. ६:१४; सभोप. ३:४।

—हेरोदियास की पुत्री का. मत्ती. १४:६. मार्क ६:२२ ।

नाजीर—होने की विधि. गिनती. ६ ।

नातेदार—ख्रीष्ट के, उनका स्वभाव. मार्क. ३:२१ योहन ७:५ ।

नाप—(तौल) लोगू (लैव्य. १४:१०) कब (२ राजा ६:२५) ओमेर (निर्ग. १६:३६; लैव्य. ५:११; १४:१०) हीनु (निर्ग. २९:४०) वत् एपा. (यश. ५:१०. यहेज. ४५:११) होमेर (यश ५:१०. यहेज. ४५:१४) मटके (योहन २:६)

—लम्बाई नापने के लिये. अंगुल (निर्ग २५:२५ भजन ३९:५) बित्ते (निर्ग. २८:१६; १ शम. १७:४) हाथ. (उत्प. ६:१५,१६;

—नाप—

व्यवस्था ३:११) पुरसा प्रेरित. २७:२८. कोश. (लूक २४:१३. योहन. ११:१८) मील. मत्ती. ५:४१. ।

नापना—पवित्र नगर को नापना. यहेज. ४०; जक. २:१; प्रकाश. ११:१, २१:१५ ।

नाम—अच्छा—लिया जाये. नीति. १५:३०; २२:१; सभोप. ७:१ ।

—खतने के समय दिया जाता था. लूक. १:५६; २:२१ ।

—**परमेश्वर** का—मूसा पर प्रगट किया गया. निर्ग ३:१३-१५. देखो. निर्ग. ६:२-७; १५:३; ३४:५; भजन. ८३:१८. यश. ४७:४; ४८:२; यिर्म. ४६:१८; ४८:१५; ५१:५७ ।

—मनुष्यों को आदर से लेना चाहिये. निर्ग. २०:७ लैव्य. १८:२१; १६:१२; व्यवस्था ५:११; २८:५८. भजन. १०३:१; ११:१६; मत्ती. ६:६; लूक. १:४६;११:२; १ तिम. ६:१ ।

—**ख्रीष्ट का.** उसके नाम पर प्रार्थना की जाये. योहन. १४:१३,१४; १५:१६; १६:२३-२६; १ कर. १:१० ।

—धन्य मानना चाहिये. इफिसी. ५:२०; इब्र.१३:१५ ।

—में सब कुछ किया जाये. कल. ३:१७ ।

—से आश्चर्यकर्म हुए. मत्ती. ७:२२; मार्क ९:३८; लूक ९:४६; १०:१७; प्रेरित. ३:६; ४:७-१२,३०; १६:१८; १६:१३-१६ ।

—सब नामों से बड़ा है. फिल. २:६ ।

—का लेनेहारा कुकर्म से अलग रहे. २ तिम. २:१६ ।

—जो परमेश्वर से बदले गये. उत्प. १७:५,१५; ३२:२७; २ शम. १२:२५; मनुष्य से बदले गये. उत्प. ४१:४५; दान. १:७ ।

—ख्रीष्ट से जोड़े गये. मार्क. ३:१६, १७ ।

—प्रेरितों से. प्रेरित. ४:३६ ।

नाश—देखो, उजाड़ना, बिनाश ।

नाशुक्रगुजारी (कृतघ्नता)—परमेश्वर को. रोम १:२१ ।

—के उदाहरण. इस्राएली. व्यवस्था. ३२:१८; शावल. १ शम. १५; १७—दाऊद. २ शम. १२:७,९—नबूखदनसर. दान. ५—कोढ़ी. लूक. १७।

—नाशुक्रगुज़ारी (कृतघ्नता)।

—का दण्ड. नहेम. ९:२७. होशे. २:८,९. नीति. १७:१३. यिर्म. १८:२०।

—दुष्टों का लक्षण है. भजन. ३८:२०; २ तिम. ३:२।

नास्तिक—उनकी मूर्खता. भजन. १०:४; १४:१; ३५:१।

निकट—परमेश्वर के निकट से—भागना. उत्प. ३:८. योना. १:३,१०। असम्भव है. भजन. १३९:७-१२. यिर्म. २३:२४. आमोस. ९:२,३. योना. २:१०।

—परमेश्वर इस्राएलियों के निकट रहा. निर्ग. ३३:१४,१५. यश. ६३:९. देखो. बादल का खम्बा।

शैतान भागता है. अय्यूब. १:१२; २:७।

—बड़ा भयानक है. निर्ग १९:१६।१८. व्यवस्था. ३३:२; न्यायी. ५:४. भजन. ९:३; १८:७-१६; ६८:२,८; ९७:५; ११४:७. यश. ६४:१-३. यिर्म. ४:२६; ५:२२. यहेज. ३८:२०. मीका. १:३,४. नहूम. १:५,६. हब. ३:३-६—में आनन्द की भरपूरी. भजन. १६:११।

—विशेष स्थानों में, उत्प. २८:१७; १ शम. ४:४; २ शम. ६:२; २ राजा. १९:१५; २ इति. २०:९. भजन ९:११; ८०:१; ९९:१; यश. ३७:१६।

—गवरियेल सदा खड़ा रहता है. लूक. १:१९।

निकम्मा—देखो, व्यर्थ।

निकृष्ट मन—देखो. मन।

निकास—देखो, लैव्य. १५।

निठुरता—यिर्म. ३:३; ५:३; ६:१५; ७:२७,२८; ८:४-१२; यहेज. २:४-८. ३:७-९. सपयाह. ३:५।

निन्दा—बांझ की. देखो, बांझ।

—खीष्ट की. लूक. ६:२२; योहन. १६:२; २ कर. १२:१०; १ तिम. ४:१०. इब्र. १०:३२; ११:२६; १ पितर. ४:१४।

—ईश्वर की निर्ग. २०.७; भजन. ७४:१८; यश. ५२:५; यहेज. २०:२७; मत्ती. १५:१९; लूक. २२:६५; कल. ३:८; प्रकाश. २:९; १३:५,

—निन्दा—

६; १६:६—का दण्ड, मृत्यु. लैव्य. २४:१६; १ राजा. २१:१० ।

—पर दया. १ तिम. १:१३ ।

—ख्रीष्ट पर दोष लगाया गया. मत्ती. ९:३; २६:६५; मार्क. २:७; लूक. ५:२१; योहन. १०:३३ ।

—मनुष्य जिन पर झूठा दोष लगाया गया. १ राजा. २१:१३; प्रेरित. ६:१३; ७:५४ ।

—समय, जिन में दाऊद के कारण निन्दा हुई. २ शम. १२:१४; १ तिम. ५:१४; ६:१ ।

—पवित्रात्मा की. मत्ती. १२:३१; मार्क. ३:२८; लूक. १२:१०; १ योहन. ५:१६ ।

निपुणता—न्यायी. ८:१-३; नीति. २५:१७; २७:१४; मत्ती. २१:२३—२७; २२: १५-२२; मार्क, ११:२७-३३; १२:१३-१७. लूक. २०:१-८, १९-२६. प्रेरित २३:६-९ ।

नियम—देखो, व्यवस्था, व्यवहार, विधि. वाचा ।

नया—यिर्म. ३१:३१—३३; ३२:४०. यहेज. ३७:३६; इब्र. ८:६-१३; १०: १६. देखो, शब्दावली में ।

निरादर—देखो, निन्दा ।

निर्णय—क्योंकर प्रगट होता है. निर्ग. ३२:२६. गिन. १४:२४. व्यवस्था ६:५. योहोशू. १:७; २४:१५; १ राजा. १८:२१; २ इति. १५:१२. यश. ५६:६; लूक. ९:६२; १ कर. १५:५८. इब्र. ३:६,१४. याक. १:८; ४:७ ।

—करने में इधर उधर मुड़ना वर्जित है. व्यवस्था. ५:३२; १ राजा. १८:२१; भजन. १८:८; मत्ती. ६:२४. याक. १:८ ।

—के उदाहरण. मूसा. निर्ग. ३२:२६—कालिब. गिन. १३:३०—यहोशू यहोशू २४:१५—रूत. रूत. १:१६—पावल. प्रेरित. २१: १३. गल. १:१६ ।

निर्दयता—दण्डित ठहराई गई. निर्ग. २३:५; भजन. २७:१२; नीति. ११:१७; १२:१०. यहेज. १८:१८ ।

—निर्दयता—

—के उदाहरण, शिमोन और लेवी. उत्प. ३४:२५—फिरौन. निर्ग १:८—अदोनीबिजेक. न्यायी. १:७—हेरोद. मत्ती. २:१६ (न्यायी ९:५; २ राजा ३:२७; १०; १५:१६)।

निर्दोष ठहराना—व्यवस्था को पूरा करने से न होगा. भजन. १४३:२; प्रेरित. १३:३९ रोम. ३:२०; ४: १ कर. ४:४; गल. २:१६-२१; ३:११; ५:४; तीत. ३:५-७; देखो. अय्यूब. ९:२; भजन. १३०:३।

—विश्वास से. उत्प. १५:६. हबा २:४; प्रेरित. १३:३९. रोम. १:१७; ३:२८; ५:१; गल. ३:११. इब्र. १०:३८।

—अनुग्रह से. रोम. ३:२४; तीत. ३:७।

—कर्म से. याक. २:१४-२६; देखो. इब्रियों के नाम की पत्री।

निर्बन्धता—देखो, छुटकारा।

निर्बल—को ईश्वर बल देता है. यश. ४०:२९-३१।

—के संग कैसा व्यवहार करना चाहिये. रोम. १४:१-६; १५:१; १ कर. ८:७-१३; ९:२२; २ कर. ११:२९; १ थिस. ५:१४।

निर्बुद्धि—देखो, मूर्ख।

निर्मल—देखो, पवित्रता, शुद्ध।

निरासा—में पड़ना न चाहिये. गिन. ११:१५-१७; १ राजा. १९:४-८; भजन. २७:१३; नीति. २४:१०; सभोप. २:२०; यिर्म. ५१:४६. योना. २:७; ४:३,८; लूक. १८:१; २ कर. ४:१; ८,१६. गल. ६:९; इफिसी. ३:१३; इब्र. १२:३-५; प्रकाश. २:३।

—के उदाहरण. यश. ५१:२०; यिर्म. ८:१८; ४५:३; विलाप. १:२२; ५:१७-२२; मत्ती. २७:५. प्रेरित १:१८; २ कर. १:८।

निष्कलंक—देखो, निर्दोष।

निष्फल—देखो, व्यर्थ।

निवास-स्थान—परमेश्वर का. उसका बनाया जाना. निर्ग. २५ से २७ —पर्व; ३६ से ३८; ४०:३४; गिन. ९:१४।

—को मूसा ने अभिषेक किया. लैव्य. ८:१०।

प

पत्थरवाह—लैव्य. २०:२; २४:१४; व्यवस्था. १३:१०; १७:५; २२:२१।

—अकन को. यहोशू. ७:२५।

—नाबात को. १ राजा. २१।

—स्तीफान को. प्रेरित. ७:५८।

—पावल को. प्रेरित. १४:१९; २ कर. ११:२५।

पत्नी—अपने पति के और कर्त्तव्य, उत्प. ३:१६; निर्ग. २०:१४; रोम. ७:२; १ कर. ७:३; १४:३४; इफ. ५:२२,३३; तीत. २:४; १ पित. ३:१।

—उत्तम. नीति. १२:४; १८:२२; १९:१४; ३१:१०।

—व्यवस्थानुसार नियम. निर्ग २१:३,२२; २२:१६. गिन. ५:१२; ३०. व्यवस्था २१:१०-१५; २४:१. यिर्म. ३:१; मत्ती. १९:३।

—मंडली की प्रतिरूप. इफ. ५:२३; प्रकाश. १९:७; २१:९।

पद—बाहरी रीति पर कुछ लाभ का नहीं. गल. २:२०-२३; देखो, अधिकार, अध्यक्ष।

पन्थ—देखो, मार्ग।

परख—मन की, परमेश्वर करता है. भजन. २६:२; ६६:१०. नीति. १७:३; यिर्म. ११:२०; १ थिस. २:४।

—बिश्वास की. अय्यूब. २३:१०; जक. १३:९; इब्र. ११:१७: याक. १:३; १ पितर. ४:१२; प्रकाश. ३:१०. देखो, परीक्षा।

परदा—देखो, घूंघट।

—निवास स्थान के. निर्ग. २६:३६।

परदेशी—(इस्राएलियों के मध्य में)।

—उन के संग व्यवहार. निर्ग. २२:२१; २३:९; लैव्य. १९:३३. व्यवस्था. १:१६; १०:१८; २३:७; मल. ३:५; १ तिम. ५:१०; इब्र. १३:२।

—नये धर्म नियम के अनुसार कोई नहीं. रोम. १०:१२; १ कर. १२:१३; गल. ३:२८; इफ. २:१९. कल. ३:११।

—जो सुलेमान के समय में इस्राएलियों के मध्य में रहते थे. २ इति. २:१७,१८; ८:७,८।

—परदेशी—

—पर अत्याचार. उत्प. ११:५. न्यायी. ११:२२-२५ ।

—के संग व्याह. इत्यादि विषयों की बिधि व नियम. निर्ग. १२:४३; ३४:१६. लैव्य. १७:१०; २२:१०; २४:१६. गिन. १:५१.१८:७; १९:१०; ३५:१५; व्यवस्था ७:३; १७:१५; २५:५; ३१:१२. यहोशू. ८:३३. एज्रा. १०:२; नहेम. १३:२७. यहेज. ४४:९ ।

—देखो, मुसाफिर (१ पित. २:३) ।

पर्व—तीन वार्षिक. निर्ग. २३:१४; ३४:२३; लैव्य. २३; गिन. २९; व्यवस्था १६ ।

—सुलेमान का. १ राजा. ८:१; २ इति. ७:१ ।

—क्षयर्ष राजा का. एस्तेर. १ ।

—पुरीम का. एस्तेर. ९:२० ।

परमतग्राही—यहूदी प्रेरित. २:१०; ६:५; १३:४३ ।

परमपरागतकथा—परमेश्वर के बचन से बड़ी न समझी जाये मत्ती. १५:१-९; मार्क. ७:६-१३. कल. २:८ ।

—यहूदी, पावल खूब जानता था. गल. १:१४ ।

—मूर्त्तीपूजकों की छोड़ देनी न चाहिये. १ पितर. १:१८ ।

—प्रेरितों की ग्रहण करो. १ कर. ११:२,२३; १५:३; २ थिस. २:१५; ३:६ ।

परमप्रधान—परमेश्वर का एक नाम. उत्प. १४:१८,१९,२०,२२. व्यवस्था. ३२:८. भजन. ७८:३५,५६ ।

परमेश्वर—देखो, ईश्वर ।

परोलक—देखो, नरक, अधोलोक ।

परिमाण—देखो, नाप ।

पराक्रम—देखो, ईश्वर का पराक्रम ।

परिवर्तन—पापियों का, परमेश्वर की ओर से होता है. १ राजा. १८:३७. भजन. ११:७; ७८:३४; नीति. १:२३; यिर्म. ३१:१८; योहन. ६:४४; प्रेरित. ३:२६; ११:२१. (देखो. भजन. ५१:१३;

—पवित्रता—

३:१३; ४:७; ५:२३; २ तिम. १:९; तीत. २:३; इब्र. १२:१४; १ पितर. १:१५,१६; २:५; २ पित. ३:११; प्रकाश. २२:११।

—यहोवा के लिये. निर्ग. २८:३६; ३९:३०; जक. १४:२०,२१।

देखो, शुद्धता॰।

पवित्र वस्तु हरण—लैव्य. १०:१; गिन. ३:४; २६:६१; २ राजा. २१:५-७; २ इति. ३३:५-७; दान. ५:२-५; ६.२७; मत्ती. २४:१५; मार्क. १२:१४; लूक २१:२०; रोम २:२२।

पवित्र लोग—देखो, सन्त।

पवित्र स्थान—परमेश्वर अपने लोगों का है. यश. ८:१४. यहेज. ११:१६।

—में परमेश्वर की आराधना. भजन. २७:४; ६३:२; ६८:२४; ७३:१७; ७७:१३; १३४:२; १५०:१; यश. १६:१२।

—की सुन्दरता. भजन. २९:२; ९६:६; यश. ६०:१३।

—को तुच्छ जानना, उसे अशुद्ध करना. भजन. ७४:७; यश. ६३:१८; विलाप. १:१०; २:२०; यहेज. २३:३८; दान. ८:११,१३; ९:२६; ११:३१; सपन्या. ३:४।

पवित्रात्मा—देखो, आत्मा. ईश्वर का आत्मा।

योहन. १४:१६; १ योहन. २:१ इत्यादि।

पशु—सृजे गये. उत्प. १:२४।

—उनको नाम दिये गये. उत्प. २:२०।

—मनुष्य को उन पर प्रभुता दी गई. उत्प. १:२४-२६; ९:२; भजन. ८:६-८।

—नूह की नौका में रखे गये. उत्प. ६:१९-२२।

—हानि पहुंचाने पर, दंड दिया जाये. निर्ग. २१:२८-३६; २२:५।

—को हानि पहुंचाने का दण्ड. निर्ग. २१:३३।

—की रक्षा. निर्ग. २२:२७-२८. व्यवस्था. १४:२१; २२:४,६,७; २५:४; नीति. १२:१०; १ कर. ९:९; १ तिम. ५:१८।

—पशु—

परमेश्वर उनका रक्षक. भजन. ३६:६; १०४:१०-१८ ।

का स्वभाव. अय्यूब. ६:५; ३८:३९-४१; ३९; ४०:१५-२४; ४१; भजन. १०४:२०-२२; यश. १:३; ३८:१३,१४; यिर्म. २:२४; ४:७; ५:८; ८:७; १४:५,६; २५:३८; आमोस. ३:४,१२ ।

परमेश्वर की स्तुति करते हैं. भजन. १४८:१०. यश. ४३:२० ।

पश्चात्ताप—याकूब के पुत्रों का. उत्प. ४२:२१,२२—शावल का. १ शम. २४:१६; २६:२१—दाऊद का. २ शम. १२:१३; २४:१०—इस्राएलियों का. न्यायी. २:४,५; १०:१०-१६; १ शम. १२:१०—मनश्शेह का. २ इति. ३३:१२-१९—इफ्राइम का. यिर्म. ३१:१८-२०.
—निनवे का. योना. ३:५-१०—पितर का. मत्ती. २६:७५. मार्क १४:७२: लूक. २२:६२—चोर का. लूक. २३:४०—करने के लिये दावत. यिर्म. ४:१४; यहेज. १८:३०; ३३:११. होशे. १२:६; १४:१; योएल. २:१२. जक. १:३. मल. ३:८-१०. मत्ती. ३:२; ४:१७; मार्क. १:४,१५; २:१७. लूक. ३:३,८. प्रेरित. २:३८; ३:१९; ८:२२. रोम. १३:११-१४. याक. ५:१-६. प्रकाश. २:५,१६; ३:३,१९ ।

—करने की आवश्यकता. यश. १:१६-२० ।

—सच्चे के चिन्ह. अय्यूब. ३४:३१. ४०:४,५. ४२:५,६ ।

—ग्रहण होना. व्यवस्था. ३०:१-१०; १ राजा. २१:२९ ।

पहिये—दर्शन. योहन. १:१५. ३:१३. १०:१ ।

पहरुवा—उनका कर्त्तव्य. २ शम. १८:२५; २ राजा. ९:१७; भजन. १२७:१। श्रेष्ठ गीत. ३:३; ५:७; यश. १:५,११. ५२:८; यिर्म. ६:१७. ३१:६; यहेज. ३:१७; ३३; हब. २ १ ।

—दुष्ट. यश. ५६:१० ।

पहिला फल—के विषय में नियम. निर्ग. २२:२९; २३:१६; ३४:२६; लैव्य २३:९; गिन. २८:२६ ।

—चढ़ाने की विधि. व्यवस्था २६:५ ।

—याजकों का भाग. गिन. १८:१२; व्यवस्था. १८:४ ।

पहिलौठा—उत्प. ४३:३३. व्यवस्था. २१:१५; २ इति. २१:३; कल. १:१५ (इब्र. १२:२३)।

—परमेश्वर को चढ़ाये हुए हैं. निर्ग. १३:२,१२; २२:२९; ३४:१९; व्यवस्था. १५:१९।

—किस प्रकार छुड़ाये गये. निर्ग. ३४:२०. गिन. ३:४१; ८:१८।

—मिस्र में मारे गये. निर्ग. ११:४; १२:२९।

पहुंच—विश्वास से, परमेश्वर के निकट. रोम. ५:२; इफ. २:१८; ३:१२; योएल २:१२; योहन. १४:६; याक. ४:८।

—का सौभाग्य. भजन. ६५:४; ७३:२८; यश. २:३; यिर्म. ३१:६.

—देखो प्रार्थना।

पहेली—शमसून की. न्यायी. १४:१२।

पक्षपात—घृणित ठहराया गया है. निर्ग. २३;३,६; लैव्य. १९:१५; व्यवस्था. १:१७; १६:१९; २७:१९. भजन. ८२:१-३; ९४:२०; नीति. १८:५; २४:२३; २८:२१; यश. १:२३; १०:१,२; मल. २:९; १ तिम. ५:२१; याक. २:१-४; ३:१७. देखो सताना भी. २ इति. १९:७; प्रेरित. १०:३४; रोम. २:११. इफ. ६:९; कल. ३:२५।

पक्षी—भजन. १०४:१७. मत्ती. ८:२० (देखो. उत्प. १:२०; ७:६; भजन. १४८:१०।

—का वर्णन किया गया. नीति. १:१७; ६:५; यिर्म. १२:९; आमोस. ३:५. प्रकाश. १८:२।

—जो बलिदान के काम में आती थीं. उत्प. १५:९; लैव्य. १४:४; लूक. २:२४।

—जो अशुद्ध समझी जाती थीं. लैव्य. ११:१३. व्यवस्था. १४:१२।

—के घोसले. व्यवस्था. २२:६।

पत्र—देखो, चिट्ठी।

पत्रियां—शिफारिशी. प्रेरित. १८:२७; रोम. १६:१; २ कर ३:१।

पाखण्ड—ख्रीष्ट ने इसका विरोध किया. मत्ती. २३:१३-३३. मार्क. १२:३८-४०; लूक. ११:३७-४४; २०:४६, ४७।

—पाखण्ड—

खीष्ट ने उसकी पोल खोली. मत्ती. २१:२३; २२:१५-२२; मार्क. १२:१३-१७; लूक. २०:३-७,१९-२६; योहन. ८.६-९ ।

इस पर क्रोध प्रगट किया. मत्ती. ६:२-१६; १५:७; १६: ३ मार्क. ७:६; लूक. ६:४२; १२:१,५६; १३:१५ ।

की बुराई. यश. ३२:६ ।

पाखण्डी—अय्यूब. १३:१६; १५:३४; २०:५; ३४:१०: ३६:१० ।

बिन आशा के है. अय्यूब ८:१३; २७:८ ।

पाठ—बहुत, देह को थकाता है. सभोप. १२:१२ ।

पानी—देखो, जल ।

पाप—क्या है. व्यवस्था. ९:७; यहोशू. १:१८. नीति. २४:९; रोम. १४:२३. याक. ४:१७; १ योहन. ३:४; ५:१७ ।

—का आरम्भ. उत्प. ३:६,७; मत्ती १५:१९; रोम. ५:१२; १ योहन. ३:८; ८:४४. का रंग ढंग. नीति. १४:३४; १५:९; ३०:१२; यश. १:१८; ५९:३. यिर्म. ४४:४. इफ. ५:११ इब्र. ३:१३,१५; ६:१; ९:१४; मार्क. २:१५ ।

—का डंक मृत्यु. १ कर १५:५६ ।

—सब पाप में जन्म लेते है—उत्प. ५:३; अय्यूब. १५:१४; २५:४; भजन. ५१:५; रोम. ३:९; गल. ३:२२ ।

—खीष्ट अकेला निष्पाप है. २ कर. ५:२१; इब्र. ४:१५; ७:२६; १ योहन. ३:५. उसका लोहू हमें शुद्ध करता है. योहन १:२९. इफ. १:७; १ योहन. १:७; ३:५ ।

—का मूल. लूक. १३:१ ।

—से पश्चात्ताप करना और उसको मान लेना. अय्यूब. ३३:२७; भजन ३८:१८; ९७:१०; नीति. २८:१३; यिर्म. ३:२१; रोम. १२:९; १ योहन. १:९ ।

—से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना, लड़ना. भजन. ४:४; १९:१३; ३९:१; ५१:२; १३९:२३,२४; मत्ती. ६:१३; रोम. ८:१३. कल. ३:५. इब्र. १२:४ ।

—पाप—

—हमें बैकुण्ठ से दूर रखता है. १ कर. ६:६; गल. ५:१६. इफ. ५:५; प्रकाश. २१:२७।

—की मजूरी मृत्यु. रोम. ६:२३।

पापमोचन—देखो, त्राण, छुटकारा, क्षमा, उद्धार।

का दण्ड. उत्प. २:१७. यहेज. १८:४; रोम. ५:१३; इब्र. १०:२६. याक. १:१५।

पापी—देखो, दुष्ट।

—देखो, अधर्म, कुकर्म।

पास—देखो निकट।

पिछला—दिन. १ तिम. ४:१-३; २ तिम. ३:१-५; २ पित. ३:३. प्रकाशित वाक्य पूरा।

पिटारी—निर्ग. २:३।

पिता—परमेश्वर हमारा. देखो, ईश्वर. १ इति. २६:१०. यश. ९:६; ६३:१६; ६४:८; मत्ती. ६:९; लूक. ११:२. योहन. २०:१७।

—संसारिक. उनका कर्त्तव्य. व्यवस्था २१:१८; नीति ३:१२; १३:२४; १९:१०; २२:६,१५; २३:१३;२९:१५,१७; लूक. ११:११. इफ. ६:४; कल. ३:२१ इब्र. १२:६।

बच्चे उनकी आज्ञा पालन करें. निर्ग. २०:१२. नीति. ६:२०. इफ. ६:१; कल. ३:२०।

पियक्कड़—देखो, मतवाला।

पियाल—धूप से भरे हुए. प्रकाश. ५:८।

सात, परमेश्वर के कोप के भरे हुए. प्रकाश. १५:१ से १७:१; २१:७।

पीछे हटना—इस्राएलियों का. यिर्म. ३:६-१४,२२; ७:२४; ३२:२२-३५.

—अमोन का. यिर्म. ४९:४॥

—को मान लेना नहेम. १:६; ७; ९:३४,३५; यश. ६४:५-७. यिर्म. १४:७; दान ९:५-१३।

—पेड़—

खीष्टीय मंडली के विषय में भविष्यद्वाक्य. यहेज. १७:२२-२४।

अशूर के लोगों की तुलना की गई. यहेज. ३१:३-९।

दुष्ट की तुलना. यहूदा. १२।

पेन्तिकोष्ट—का पर्ब. लैव्य. २३:१६. व्यवस्था. १६:९।

—के दिन पवित्रात्मा दिया गया. प्रेरित. २।

पौधा—उदाहरण के रूप में काम में लाया गया. भजन. १२८:३; १४४:१२; श्रेष्ठ गीत. ४:१३; यश. ५:७; ५३:२; यिर्म. २:२१; यहेज. ३४:२९; मत्ती. १५:१३।

पृथिवी—सृजा जाना. उत्प. १:१—उपजाऊ बनाई गई. उत्प. १:११;

—स्रापित की गई. उत्प. ३:१७—तूफान आया. उत्प. ७:१०।

—की आग मे नष्ट होना. मीका. १:४; सपन्या. ३:८; २पित. ३:७; प्रकाश २०:९।

— नयी. २ पितर. ३:१३; प्रकाश. २१:१. (यश. ६५:१७; ६६:२२) पर परमेश्वर की दया और कृपा. भजन. ३३:५; ११९:६४।

—परमेश्वर की है. निर्ग. ९:२९; १९:५; व्यवस्था. १०:१४; १ इति. २९:११; अय्यूब ४१:११; भजन. २४:१; ५०:१२; ८९:११; १ कुर. १०:२६-२८. प्रकाश. ४:११ —जाती रहेगी. भजन १०२:२५,२६ यश. ५१:६; २ पित. ३:७,१०।

—पृथिवी की सहायता पर भरोसा रखना व्यर्थ है. भजन. ४९:६-९; ११८:८,९; १४६:३; यश. ३०:१-३; ३१:१-३; ३६:४-६; ४०:२३ यिर्म. ३:२३; १७:५-७, यहेज. १७:१५-२०; होशे. १:७; जक. ४:-६; मत्ती. १६:२३।

प्यास—आत्मिक. यश. ५५:१; योहन. ४:१४; ६:३५; ७:३७; प्रकाश २१:६; २२:१७।

प्रकाश—परमेश्वर की ओर से न मिला. १ शम. ३:१।

—गुप्त भेदों का. दान. २:१९,२२-२९,४७; १०:१।

—विनाश के पुत्र का. २ थिस. २:३-८।

—परमेश्वर के कोप का. रोम. १:१८।

—प्रकाश—

—परमेश्वर के धर्म का. रोम. १:१७; ३:२१।

—परमेश्वर की महिमा का. रोम. ८:१८; १ पित. ४:१३; ५:१।

—परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा करता. १ कर. २:१०।

—आनेहारी वस्तुओं का. प्रकाशित वाक्य की पुस्तक।

—और देखो, दर्शन, प्रगट होना. उजियाला।

प्रकृति—परमेश्वर की महिमा दिखाती है. अय्यूब. ३८:३९. भजन. १९:१-६; १०४; १४८:७-९. प्रेरित. १४:१७; रोम. १:२०।

प्रगट—होना, खीष्ट का. मत्ती. २:११-१३. योहन. १:१४; २:११; १ तिम. ३:१६; १ योहन. १:२; ३:५-८।

—ईश्वर के धर्म्म का. रोम. ३:२१; २ थिस. १:५।

—परमेश्वर के प्रेम का. १ योहन. ४:९।

—आत्मा का. १ कर. १२:७।

—परमेश्वर के वचन का. तीत. १:३।

—परमेश्वर के पुत्रों का. रोम. ८:१९।

प्रचार—करना. सुसमाचार का. लूक. ४:१८. प्रेरित. २:१४-४०; ३:१२-२६; ४:८-१२; ५:२९-३२; ७; १०:३४-४३; १३:१६-४१; १७:-२२-३१।

—पश्चात्ताप का. योना. ३; मत्ती. ३:१-१२; १२:४१; मार्क. १:२-८. ३:१-१८; ११:३२; १ पितर. ३:२०; २ पितर. २:५।

—नूह का. २ पितर. २:५।

—देखो, शिक्षा।

प्रचारक—देखो, सभोपदेशक।

प्रणाम—देखो, दंडवत।

प्रताप—देखो, ईश्वर।

प्रतिफल—के प्रसिद्ध अवसर. गिन. १६:२९-३५; ३१:८; यहोशू. १३:२२; न्यायी. १:७; ८:१९; ९:२४,५६; १६:२८-३०; २०:४०-४८; १ शम. २:३४-३६; १५:३३; २ शम. ४:९-१२; १२:१५-२२; १५:१४-३०; १८:१४; १ राजा. २:५,८; २८-३४,४६; ११:९-३५; १३:२४; २ राजा

२:२४; ६:३०-३७; ११:३५; २ इति. ३२:२१; यश. २२:१५-१६; ३७:२६; यिर्म. २०:१-६; २८:१७; २६:३२; आमोस. ७:१०-१७. योना. १:४-१७. प्रेरित. १:१८; ५:१-११; १२:२३।

—परमेश्वर की व्यवस्था का. अय्यूब. ४:७-६; २२:५-१०; २४; २७: १३-२३; भजन. ७:१४-१६; ६:१५-१७; ५२:१-७; ५८:१०; ६८:२१; ७३:१७-२०; ८६:३०-३२; १०६:६-२०; नीति. ११:३१; १७:१३; २६:२७; २८:१०; यश. ३:११; ३०:१२-१७; ३३:१; ६५:११-१५; यिर्म. २१:१४. यहेज. १८:५-३०; मीका. ५.९; मत्ती. ३:१०-१२; ७:१६; १३:४०-४२; १६:२७; मार्क. ४:२४. लूक. ६:४६; रोम. २:६-११; २ थिस. १:६-६; २:८; २ पित. २:६-१३; प्रकाश. २:५,१६,२३; ३: १६; १६; २२:१५।

—इस्राएल को. न्याय. २:१४; ३:८. भजन. १०६:१३-४४; यश. ६:६-१४; ४२:२४. यहेज. ६:३-७; २०:२२-४४; होशे. १:४; २:९-१३; ३:४; ४:६-६. आमोस. २:१४-१६. मीका. ३:४; ६:१३-१६।

—से यिरूशलीम चिताया गया. यश. १:२-८; ५१:१७-२०. यिर्म. १:१६; ५:१-१७; ७:१७-२०; ८:१-३,१३-१६; ९:७-२२; १५:७; १६: १०-१३; १९; २१:३-१०; २२:५-९; २६:१५-२६; यहेज. ५:५-१७; ८:१८; १२:११-२०; २२:१३-३१; २३:२२-४६; २४:६-१४; ३३:२१-२६; ३६:२३. विलाप की पुस्तक. योएल. १:६-१८. मीका. ३:१२; ४:१०; सपन्या. १; मल. २:११-१३; ३:५; मत्ती. ८:१२; २१:४३, ४४; २३:३४-३६; २४:१-२८; २७:२५. मार्क. १३:१४-२०. लूक. १३:३५; १९:४१-४४; २३:२८-३१।

—बाबुल को. प्रकाश. १९:२०।

—परमेश्वर की ओर से अन्याय नहीं. रोम. ३:४-१९।

—हमारे पापों के अनुसार. लूक. १२:४७,४८।

प्रतिमा—देखो, रूप।

प्रतिष्ठा—देखो, आदर।

प्रतिज्ञा—परमेश्वर की. भजन. ८९:३; रोम. १:२; इफ. ३:६; २ तिम. १:१; इब्र. ६:१७; ८:६ ।

—पूरी होंगी वह बहुमूल्य हैं. गिन. २३:१९. व्यवस्था. ७:९. यहोशू २३:१४; १ राजा. ८:५६. भजन. ७७:८; ८९:३; १०५:४२; २ कर. १:२०; गल. ३:२१. इब्र. ६:१७; २ पितर. १:४ ।

—परमेश्वर याद रखता है. भजन. १०५:४२; लूक. १:५४; तीत. १:२; इब्र. १०:२३ ।

—उनके पूरा होने के लिये प्रार्थना की जाए. उत्प. ३२:९,१२; १ इति. १७:२३; यश. ४३:२६ ।

—पश्चात्ताप करनेहारों और लौटनेहारों के संग. निर्ग ३४:७; भजन. ६५:३; १०३:९,१३; १३०:४; यश. १:१८; २७:५; ४३:२५; ४४:२२; ४५:१५; ४६:१३; ५३; ५५; यिर्म. ३१:३४; ३३:८; यहेज. ३३:१६; ३६:२५; मीका. ७:१८; रोम. ४; ५; २ कर. ६:१८; ७:१; इफ. २:१३ ।

—उठाने, संभालने और सिद्ध करने के लिये. भजन. २३; ३७:१७; ४२:८; ७३:२६; ८४:११; ९४:१४; १०३:१३; यश. २५:८; ३०:१८; ४०:२९; ४१:१०; ४३:४; ४६:३; ४९:१४; ६३:९; यिर्म ३१:३; होशे. १३:१०; १४:४; सपन्या. ३:१७; जक. २:८; १०; रोम. १६:२०; १ कर. १०:१३; १५:५७; २ कर. ६:१८; १२:९; इफ. १:३; १ पित. १:३; ५:७ ।

—जो भिन्न मनुष्यों से की गयी. आदम से. उत्प. ३:१५—नूह से. उत्प. ८:२१; ९:९—इब्राहीम से. उत्प. १२:७; १३:१४; १५:१७; १८:१०; २२:१५;—हागार से. उत्प. १६:१०; २१:१७;—इसहाक से. उत्प. २६:६—याकूब से. उत्प. २८:१३; ३१:३; ३२:१२; ३५:११; ४६:३—दाऊद से. २ शम. ७:११; १ इति. १७:१०—सुलेमान से. १ राजा ९; २ इति. १:७; ७:१२ ।

—खीष्ट ने अपने शिष्यों से की. मत्ती. ६:४,३३; ७:७; १०; ११:२८; १२:५०; १६:१८,२४; १७:२०; १९:२८; २८:२०; लूक. ९-१२; १२:३२; २२:२९; योहन. १४-१६; २०:२१ ।

—प्रतिज्ञा—

—अन्यदेशी उसके भागी हैं. इफ. ३ ।

—जो खीष्ट में पूरी हुई. २ शम. ७:१२; प्रेरित. १३:२३; लूक. १:६९-७३ ।

—कंगाल और अनाथों से. व्यवस्था. १०:१८; भजन. ६:८; १०:१४; १२:५; ६८:५; ६९:३३; ७२:१२; १०२:१७; १०७:४१; १०९:३१; ११३:७; १४६:९ नीति. १५:२५; २३:१०; यिर्म. ४९:११. होशे. १४:३ ।

—संसारिक वस्तुओं के विषय में. निर्ग. २३:२५; लैव्य. २६:६; भजन ३४:९६; ३७:३; ९१:१०२:२८; ११२; १२१:३; १२८; नीति. ३:१०. यश. ३२:१८; ३३:१६. मत्ती. ६:२५. फिल. ४:१९; १ तिम. ४:८ ।

—के विषय में उपदेश. इब्र. ४:१ ।

—देखो, वाचा ।

प्रतीत—देखो, विश्वास ।

प्रधान—का आदर. निर्ग. २२:२८; सभोप. १०:२०. प्रेरित. २३:५; रोम. १३:१-६; २ पितर. २:१०. यहूदा. ८. देखो. प्राचीन, राजा, न्यायी, अधिकारी, अध्यक्ष इत्यादि ।

—सभा के घर के. मत्ती. ९:१८. मार्क. ५:२२. लूक. ८:४१. प्रेरित. १३:१५; १८:८,१७ ।

—यिहूदियों के. योहन. ३:१; ७:४०; १२:४२ ।

—जिन्हें मूसा ने चुना. निर्ग. १८:२५ ।

—देखो, राजकुमार, अध्यापक ।

प्रधानता—खीष्ट सब पर अधिकार रखनेहारा है. इफ. १:२१; कल. १:१६; २:१०. देखो, फिल. २:१०. इब्र. १:४ ।

प्रबंध—की आवश्यक्ता. गिन. ४:५; २ शम. ६:६-९; १ इति. १३:९-१२; १५:१३; कल. १४:४०. तीत. १:५ ।

प्रबल—देखो, जयवन्त ।

प्रभु—का दिन. प्रकाश. १:१० ।

—की प्रार्थना. मत्ती. ६:९ ।

—प्रभु भोज—

भोज, ख्रीष्ट के देह और लहू का. १ कर. १०:१६ ।

स्थापित किया गया. मत्ती. २६:२६; मार्क. १४:२२; लूक. २२:१६; १ कर. ११:२३ ।

के लिये अपनी परीक्षा करनी. प्रेरित. २:४२; २०:७; १ कर. १०:२१; ११:२८ ।

शुद्ध मन से न लेना. १ कर. ११:२७ ।

—देखो, ख्रीष्ट ।

प्रभुता—देखो, अधिकार ।

प्रमाण—देखो, परख, जांच, परीक्षा ।

प्रसन्न—देखो, आनन्द, सुख ।

प्रस्तुत—दया के कार्य में. नीति. ३:२७,२८ ।

प्राकृतिक—मनुष्य परमेश्वर के कार्यों की ओर ध्यान नहीं देता. मत्ती. १६:२३; १ कर. १:१८,२३; २:१४; ३:१-३ ।

प्राचीन—देखो, प्रधान ।

—प्रेरितों के समय विशपों की पदवी से मित्रता न रखा जाता था. प्रेरित. २०:१७, २८; तीत. १:५,७ ।

प्राण—मत्ती. १६:२६; मार्क. ८:३७ ।

देखो, जीवन ।

प्राण देना—देखो, धर्म के लिये प्राण देना ।

प्राणी—नये. योहन. ११:६; ३६:२२; रोम ६:४; ७:६; २ कर. ५:१७. गल. ६:१५. इफ. २:१०; ४:२४. कल. २:१२; ३:१ ।

—चार जीवते. यहेज. १:५; १०; ११:२२; प्रकाश. ४:६-९; ५:६, १४; ६:१; ७:११; १४:३; १५:७; १९:४ ।

प्रात—देखो, यश ।

प्रायश्चित—व्यवस्थानुसार. निर्ग. २९:२९, ३०; लैव्य. १. इत्यादि ।

—का दिन. लैव्य. १६; २३:२६ ।

—मरी दूर करने के लिये किया गया. गिन. १६:४३ ।

—ख्रीष्ट ने दिया. रोम. ३:२४; ५:३; २ कर. ५:१८; गल. १:४; ३:१३; तीत. २:१४; इब्र. ६:२८; १ पित. १:१९; २:२४; ३:१८; १ योहन. २:२; प्रकाश. १:५; १३:८।

—के विषय में भविष्यद्वाक्य. यश. ५३; दान. ९:२४. जक. १३:१,७; योहन. ११:५०।

—प्रभु भोज के द्वारा याद किया जाता है. मत्ती. २६:३६; १ कर. ११:२३।

—पाप के लिये. रोम. ३:२५; १ योहन. २:२; ४:१०।

—देखो, बलिदान।

प्रायश्चित-स्थापन—निर्ग. २५:१७; २६:३४; ३७:६; लैव्य. १६:१३; १ इति. २८:११; इब्र. ९:५।

—ख्रीष्ट कहलाता है. रोम. ३:२५।

प्रार्थना—का समय, मनशा और उदाहरण. १ इति. १६:३५; अय्यूब. ३३:२६; भजन १२२:६; मत्ती. ५:४४; ९:३८; २६:४१; लूक. १८:३,३८. रोम. १५:३०; १ कर. ७:५; याक. ५:१३; १ पित. ३:७; ४:७।

—करने की आज्ञा. यश. ५५:६; मत्ती. ७:७; २६:४१; लूक १८:१; २१:३६. इफ. ६:१८; फिल. ४:६; कल. ४:२; १ थिस. ५:१७,२५; १ तिम. २:१,८।

—के लिये साहस. अय्यूब. ३३:२६; भजन. ६:९; ३२:६; ६६:१९. यश. ६५:२४; जक. १३:९. मत्तो १८:१९; २१:२२; मार्क. ११:२४; लूक. ११:९; रोम. १०:१३; याक. १:५।

—परमेश्वर सुनता और उत्तर देता है. भजन. १०:१७; ६५:२; ९९:६; यश. ५८:९; योहन. ११:४२।

—किस प्रकार की जाए, भजन. १४५:१८; नीति. १५:२९; सभोप. ५:२; मत्ती. ६:५,७; २१:२२; मार्क. ११:२४; लूक. ११:५; १८:१; योहन. ९:३१; १५:७; रोम. १२:१२; इफ. ६:१८; कल. ४:२; १ तिम. २:८; ५५; इब्र. ११:६; याक. १:६; ४:८।

—खीष्ट के द्वारा. इफ. २:१८; इब्र. १०:१९।

—खीष्ट के नाम पर. योहन. १६:२६।

—के लिये प्रतिज्ञाएं; यश. ६५:२४; आमोस ५:४; जक. १३:९; मत्ती. ६:६; लूक. ११:९; योहन. १४:१३।

का ढंग—गिन. १६:२२; यहोशू. ५:१४; १ राजा. ८:२२; १ इति. २१:१६; २ इति. ६:१३; भजन. २८:२; ९५:६; यश. १:१५; विलाप. २:१९; मत्ती. २५:३९; मार्क. ११:२५; लूक. २२:४१; प्रेरित. २०:३६; १ तिम. २:८।

—सब लोगों के आगे. निर्ग. २०:२४; २ इति. ७:१४,१६; यश. ५६:७; मत्ती. १२:९; १८:१९,२०; लूक. ४:१६; ११:२।

उदाहरण—यहोशू. यहोशू. ७:६-९—दाऊद. १ इति. २९:१०,१२; २ शम ६:१८—सुलेमान. २ इति. ६:१२—यहूदी. लूक. १:१०—मंडली. प्रेरित. २:४६; ४:२४; १२:५,१२—पितर और योहन. प्रेरित. ३:१—अन्ताकिया की मंडली प्रेरित. १३:३—पावल और सीलास. प्रेरित. १६:१६—पावल और पुरनिये. प्रेरित. २०:३६; २१:५।

—गुप्त में. भजन. ५५:१७; ८८:१; दान. ६:१०; १ थिस. ५:१७।

उदाहरण—इब्राहीम. उत्प. १८:२३-३२—लूत. उत्प. १९:१९.

—इलियाजर. उत्प. २४:१२—याकूब. उत्प. ३२:९—गिदियोन.न्यायी ६:१३,२२,३६,३९—हन्ना. १ शम. १—दाऊद. २ शम. ७:१८; १ इति. २९:१०—एलियाह. १ राजा. १८:३६—हिजकियाह. २ राजा २०:२—यशायाह. २ राजा. २७:११—याबेज. १ इति. ४:१०—मनश्शे. २ इति. ३३:१९—एज्रा. एज्रा. ९:५,६—नहेमया. नहेम. २:४; —यिर्मया. यिर्म. ३२:१६—दानिएल. दान. ९:३—योना. योन. २:१—हन्ना. लूक. २:३७. पावल—९:११; १ थिस. ५:२३—कर्णिलिय. प्रेरित. १०:२,३०—पितर. प्रेरित. ९:४०; १०:९।

—कपटियों की—घृणित ठहराई गई है. भजन. १०९:७; नीति. १:२८; २८:९; मत्ती. ६:५।

—प्रार्थना—
—प्रभु की. मत्ती. ६:९. लूक. ११:२।
—चोर की क्रूश पर से. लूक. २३:४२।
—खीष्ट की. मत्ती. १४:२३; २६:३६; २७:४६; मार्क. ६:४६; १४:३२; १५:३४; लूक. ६:१२; ९:२८; २३:३४,४६. योहन. १७:१।

प्रीति—परमेश्वर के घर से. १ इति. २९:३; भजन. २६:८; ८४:२,१०।
—परमेश्वर के लिये भजन. ४२:१; ११९।
—ऊपर की वस्तुओं से रखो. कल. ३:२।
—शरीर की लालसा को क्रूश पर चढ़ाओ. गल. ५:१६,२४; २ पित. २:१०।

प्रेम—परमेश्वर से, आज्ञा दी गई. व्यवस्था. ६:५; १०:१२; ११:१; यहोशू. २२:५; भजन. ३१:२३; दान ९:४; मत्ती. २२:३७; १ योहन. ४; ५।
—की आशीष. नहेम. १:५; भजन. १४५:२०; १ कर. २:९; ८:३।
—आज्ञी रोम. १२:९,१०।
—पति का. उत्प. २९:२०. २ शम. १:२६; इफ. ५:२५; कल. ३:१९; तीत. २:४।
—खीष्ट से. मत्ती. १०:३७; प्रकाश. २:४।
—संसार से. १ योहन. २:१५।
—परमेश्वर का हम से और हम में—रोम. ५:५; तीत. ३:४; १ योहन २:५,१५; ३:१७; ४:९,१२,१६. यहूदा. २१।
—पूरा भय को दूर कर देता है. १ योहन. ४:१८।
—बैर के साथ नहीं हो सकता. १ योहन. ४:२०।
—के बिना संसार के और दान तुच्छ हैं. १ कर. १३:२।
—की बड़ाई. १ कर. १३।
—खीष्ट का हम में और हम से. योहन. १५:१३. रोम. ८:२५; २ तिम. १:१३।
—आत्मा का और आत्मा में. रोम. १५:३०. गल. ५:२२. कल. १:८।

—प्रेम—

—पड़ोसी से. लैव्य. १९:१८,३४. मत्ती. १९:१९; २२:३९. मार्क. १२:३१; इफ. ५:२; कल. ३:१४; १ योहन. ३:१७,१८; ४:२० ।

—देखो, प्रीति ।

प्रेरणा—धर्म पुस्तक का लिखा जाना. लूक. १:७०; प्रेरित. १:१६; ३:२१; रोम. १:२; २ तिम. ३:१६; इब्र. १:१; २ पित. १:२१. देखो. गिन. १२:६-८; रोम. १५:४; १ कर. १०:११. देखो ईश्वर की प्रेरणा ।

प्रेरित—उनका बुलाया जाना. मत्ती. ४:१८-२१; ९:९; मार्क. १:१६; लूक ५:१०. योहन १:३८ ।

—उनका चुना जाना और बल. मत्ती. १०; १६:१९; १८:१८; २८:१९; मार्क. ३:१३; १६:१५; लूक. ६:१३; ९; १२:११; २४:४७; योहन. २०:२३. प्रेरित. ९:१५,२७; २०:२४; १ कर. ५:३; २ थिस. ३:६; २ तिम. १:११ ।

—खीष्ट की साक्षी देना. लूक. १:२; २४:३३,४८; प्रेरित. १:२,२२; १०:४१; १ कर. ९:१; १५:५; २ पित. १:१६; १ योहन. १:१ ।

—उनका दुःख सहना. मत्ती. १०:१६; लूक. २१:१६; योहन. १५:२०; १६:२,३३; प्रेरित. ४. इत्यादि. १ कर. ४:९; २ कर. १:४; ४:८; ११:२३; प्रकाश. १:९ इत्यादि ।

—उनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं. प्रकाश. २१:१४ ।

—झूठे, दोषी ठहराये गये. २ कर. ११:१३. गल. १:७; फिल. १:१५,१६; कल. २:४,१८. २ पित. २:१; यहूदा ४ ।

फ

फरीशी—प्रसिद्ध—निकोदिमस. योहन. ३:१—शिमोन. लूक. ७—गमलिएल प्रेरित. ५:३४. शावल—प्रेरित. २३:६; २६:५; फिल. ३:४ ।

—जिसने खीष्ट को भोजन करने बुलाया. लूक ७:३६; ११:३७; १४:१ ।

—ख्रीष्ट उनकी दशा पर शोक करता है. मत्ती. २३:१३; लूक. ११:४२।

—ख्रीष्ट से प्रश्न किये. स्त्री को त्यागने के विषय में. मत्ती. १९:३; भोजन करने के विषय में. मत्ती. ९:११; १५:१; मार्क. २:१६; लूक. ५:३०. पाप क्षमा किये जाने के विषय में. लूक. ५:२१; विश्रामवार के विषय में. मत्ती. १२:२.१०. उपवास. मार्क. २:१८; कर के विषय में मत्ती. २२:१७।

—ख्रीष्ट का ठट्ठा किया. लूक. १६:१४।

—ख्रीष्ट के विरुद्ध कुड़कुड़ाए. मत्ती ९:३४. लूक १५:२।

—ख्रीष्ट से तुच्छ समझे गये. मत्ती. ५:२०; १६:६; २१:४३; २३:२; ११:३९।

—लोगों को उनके कारण चितावनी दी गई. मार्क. ८:१५. लूक. १२:१।

—ख्रीष्ट से चिन्ह ढूंढ़ते हैं. मत्ती. १२:३८; १६:१।

—ख्रीष्ट के विरुद्ध सलाह करते. मत्ती १२:१४. मार्क. ३:६।

—निकोदिमुस उनके सलाह से नहीं मिलता. योहन. ७:५१।

—अन्धे को जो चंगा किया गया निकाल देते हैं. योहन. ९:१३।

—में बिभेद योहन. ९:१६।

—ख्रीष्ट को पकड़ने के लिये सिपाही भेजते हैं. योहन. ७:३२।

—खतने के विषय में तकरार करते. प्रेरित. १५:५।

—जी उठने के विषय में उनके विचार. प्रेरित. २३:८।

फल—पहिले तीन वर्ष के न छुए जाएं. लैव्य. १९:२३।

—आज्ञाकारियों के आशीष पावेंगे. व्यवस्था ७:१३; २८:४।

—विश्वास के पश्चात्ताप के लिये. मत्ती. ३:८; ७:१६; योहन. ४:३६; १५:१६; रोम. ७:४; २ कर. ९:१०; गल. ५:२२; कल. १:३; इब्र. १२:११. याक. ३:१७।

—के पेड़, युद्ध के समय नष्ट न किये जाएं. व्यवस्था. २०:१९।

—देखो, बदला।

फांसी—देखो टिकटी।

फाटक—स्वर्ग के. उत्प. २८:१७; भजन. २४:७; यश. २६:२।

मृत्यु और नरक का. भजन. ९:१३; मत्ती. १६:१८।

कबर का. यश. ३८:१०।

तंग और चौड़ा. मत्ती. ७:१३; लूक. १३:२४।

फाल—देखो, हल की फाल।

फिरना—देखो, चलना।

फिलिस्तियों के प्रधान—देखो, प्रधान।

फुसलाना—देखो, छल, धोखा।

फूट—प्रेरित. १५:१।

फैसला—देखो, निर्णय. परख, जांच, परीक्षा।

फोड़ा—निर्ग. ९:१०. प्रकाश. १६:२. देखो. २ राजा. २:७; अय्यूब. २०:७।

ब

बंधक—देखो, बन्धक।

बंश—औरत का. उत्प. ३:१५. प्रकाश. १२।

—सर्प का. उत्प. ३:१५; मत्ती. १३:३८; योहन. ८:४४; १ योहन. ३:८,१०।

—की बाचा. उत्प. ३:१५; १२:३; १३:१५,१६; १५:५,१८; १७:८; २१:१२; २२:१८; २४:७; २६:३; २८:४,१३,१४; ३२:१२; ४८:४; निर्ग. ३३:१; व्यवस्था. १:८; ३४:४. भजन. २२:३०।

—इस्राएलियों का. उनका नाम, याकूब के पुत्र. उत्प. ३५:२३-२६। अपने घरानों समेत. ४६:८-२७; निर्ग. १:२-५; ६:१४-२५; १ इति. २।

उनका बंश. २ से ८।

—सीना में गिनती. गिन. १. मोआब के मैदान में. २६:५-६२.

—दाऊद से गिना जाना. २ शम. २४; १ इति. २१।

—वंश—

—इस्राएल ने आशीष दी. उत्प. ४६. बिलाप ने. गिन. २३:२४. मूसा ने. व्यवस्था ३३।

के सरदार. गिन. १:५-१६।

उनके देश का बांटा जाना. व्यवस्था. २७:११-१३।

के अनुसार फाटकों के नाम रखना. यहेज. ४८।

वे जो प्रति वंश से छाप लगाये गये. प्रकाश. ७:४-८।

—देखो, घराना।

वंशावली—आदम की. उत्प. ५; १ इति. १; लूक. ३।

नूह की. उत्प. १०; १ इति. १:४।

शेम की. उत्प. ११:१०।

तारा की. उत्प. ११:२७।

इब्राहीम की. उत्प. २५; १ इति. १:२८।

याकूब की. उत्प. २६:३१; ३०; ४६:८. निर्ग. १:२. गिन. २६; १ इति. २।

एसाव की. उत्प. ३६; १ इति. १:३५।

इस्राएल के वंश की. १ इति. २; ४; ५; ६; ७।

दाऊद की. १ इति. ३।

खीष्ट की. मत्ती. १; लूक. ३:२३।

—जिसका अन्त नहीं. १ तिम. १:४।

बकबक—करना व्यर्थ है. अय्यूब. ११:२; नीति. १३:३; २१:२३. सभोप. १०:१४; इफ. ५:४; १ तिम. १:६; ५:१३. तीत. १:१०।

बकवादी—नीति. १५:२; सभोप. १०:१४।

बकवाही—लैव्य. १६:१६; नीति. ११:१३; १८:८; २६:२०. यहेज. २२: ६; १ तिम. ५:१३; १ पितर. ४:१५।

वचन—ईश्वर का. खीष्ट का एक नाम. योहन. १:१,१४; १ योहन. १:१; ५:७; प्रकाश. १६:१३—की बड़ाई. भजन. ५६:४,१०; ११९. यिर्म. १५:१६।

—बचन—

—ईश्वर की पूर्णता का. गिन. ११:२३. व्यवस्था. ४:२. यश. ५५:११; मत्ती. २४:३५; इब्र. १:३; ४:१२ ।

—अनर्थ. मत्ती १२:३६. सभोप. ५:२; यहेज. ३५:१३; मल. २:१७; ३:१३ ।

—जो योंही कहा जाए उन पर कान लगाना. सभोप. ७:२१,२२ ।

—हमारा कर्त्तव्य हमारे बचन के लिये. भजन. १४१:३; सभोप. ५:२. मत्ती. १२:३७. इफ. ७:२९; कल.४:६. याक. १:२६; ३:२-१२ ।

—देखो, भाषा, व्यवस्था. इत्यादि ।

बचाना—देखो, छुड़ाना, त्राण ।

बचा हुआ—विश्वासियों का भाग. १ राजा. १९:१८; यश. १७:५; २७:१२ इत्यादि ।

बच्चे—परमेश्वर के दान हैं. उत्प. ३३:५; भजन. १२७; १२८ ।

—एक आशीष हैं. नीति. १०:१; १५:२०; १७:६; २३:२४; २७:११; २९:३.

—का कर्त्तव्य. निर्ग. २०:१२; लैव्य. १९:३,३२. व्यवस्था. ५:१६; ३०:२; नीति. १:८; ६:२०; १३:१; १५:५; १९:२७; २३:२२; २४:२१; २८:७,२४. सभोप. १२:१; इफ. ६:१; कल. ३:२०; १ तिम. ५:४, इब्र. १२:९; १ पित. ५:५ ।

—जो भालुओं से फाड़े गये. २ राजा. २:२३ ।

—बेतलहम के हेरोद ने घात किये. मत्ती. २:१६ (यिर्म. ३१:१५)।

—खीष्ट ने उन्हें आशीष दी. मत्ती. १९:१३; मार्क. १०:१३; लूक. १८:१५ ।

—परमेश्वर के. इब्र. १२:५; इफ. ५:१; १ पित. १:१४ ।

—ज्योति के. लूक. १६:८. योहन. १२:३६. इफ. ५:८; १ थिस. ५:५ ।

—आज्ञाकारी—

खीष्ट. लूक. २:५१—इसहाक. उत्प. २२:६—यिप्ताह की पुत्री. —न्यायी. ११:३६—शमूएल १ शम. २:२६ ।

—दुष्ट—१ शम. २:१२,२५; नीति. १५:५; १७:२१; १९:१३,२६; २८:७,२४; ३०:११; यश. ३:५; यहेज. २२:७ ।

—बच्चे—

—उनका दण्ड. निर्ग. २१:१५; व्यवस्था. २१:१८; २७:१६; २ राजा. २:२३; नीति. ३०:१७. मार्क. ७:१० ।

—शैतान के. प्रेरित. १३:१० ।

—दूध पीते. उनसे परमेश्वर की स्तुति. भजन. ८:२; मत्ती. ११:२५; २१:१६ ।

बच्चों के समान—होने की आज्ञा दी गई. मत्ती. १८:३-५; १९:१३-१५; २१:१६; मार्क ९:३६; १०:१३-१६; लूक. ९:४६-४८; १०:२१; १८:१५-१७; १ कर. १४:२०; १ पितर. २:२. (भजन. १३१:२) ।

बछड़ा—सोने का, हारून ने बनाया. निर्ग. ३२; प्रेरित ७:४० ।

—सामरिया में बनाया गया. होशे. ८:५,६ ।

बछड़े—यरूबियाम ने बनवाए. १ राजा. १२:२८ ।

बछिया—बलिदान के लिये. उत्प. १५:९; गिन. १९:२; व्यवस्था. २१:३; इब्र. ९:१३ ।

बड़बड़ाना—देखो, कुड़कुड़ाना ।

बड़ी भोर—देखो, भोर ।

बदगुमान—देखो, सन्देही ।

बदलना—वस्त्र. देखो, वस्त्र ।

—संसारिक वस्तु के विषय में व्यवस्था. उत्प. ३:१९; अय्यूब. १४:१४, १८-२०; २०:५-११; भजन. ३७:३५,३६; ४९:१०-१२; ७३:१८-२०; ९०:५-१०; १०३:१५,१६. सभोप. १:४-७; ३:१९,२० ।

बदला—परमेश्वर के हाथ में है. व्यवस्था. ३२:३५; भजन. ९४:१; मत्ती. ५:३९; रोम. १२:१९. इब्र १०:३० ।

—वह अपने दुश्मनों से लेता है. व्यवस्था. ३२:४१,४३; न्यायी. ११:३६; भजन. ९९:८. यश. ३४:८; ३५:४; ४७:३; ६३:४. यिर्म. ५०:१५,२८; ५१:११; नहूम. १:२; रोम. ३:५; २ थिस. १:८ ।

—ख्रीष्टियान के लिये हो सकता है. रोम. १२:२० ।

—देखो. पलटा, प्रतिफल ।

—बदला—

—लेना. वर्जित है. निर्ग. २३:५; लैव्य. १६:१८. नीति २०:२२; २४:२६; मत्ती. ५:३९,४४. रोम. १२:१७,१६; १ थिस. ५:१५; १ पित. ३:६।

—के समय. न्यायी. १४:१६; १५:४,५; १६:२१; २ शम. ३:१-१२; १३:२८,२६; २०:१०; १ राजा. ११:४०; १६:२; २ राजा. ६:३१; एस्तर. ३:१-१५।

—लेनेहारा—लोहू का. गिन. ३५:१२,१६-२७; व्यवस्था. १९:६,१२; यहोशू. २०:३,५; २ शम. १४:७-११. देखो. रोम. १३:४।

—देखो, पलटा।

बध—देखो, हिंसा।

बनाना—देखो, रचना।

बन्धक—नहेम. ५:३. देखो. लैव्य. २५:१०-१६; २७:२४ व्यवस्था. १५:१-३।

—रखने की व्यवस्था. अय्यूब. २२:६; २४:३,६,१०. यहेज. १८:७,१२, १६; ३३:१५; आमोस. २:८।

बन्धुवाई—मिस्र देश में इस्राएलियों की. निर्ग. १ से १२. भजन. १०५:२५; प्रेरित. ७:६।

—भूलनी न चाहिये. व्यवस्था. ५:१५; १५:१५; २४:१८।

—बाबुल देश में. २ राजा. २५: एज्रा. १; ९:७; नहेम. १; एस्तेर. ३; दान. १।

—और जातियों की. न्यायी. ३:८,१४; ४:२; १०:६-९।

—फिलिस्तियों की. न्यायी. १३:१; १४:४; १५:११; १ शम. १३:१९-२२: १४:११।

—से छुटकारा. यश. ४२:७; ४९:६; ६१:१; यहेज. २०:५-१०; जक. ६:१२; लूक. ४:१८; २ तिम. २:२६; इब्र. २:१४,१५।

—आत्मिक. योहन. ८:३४. प्रेरित. ८:२३; रोम. ६:१६; ७:२३; ८:२; गल. २:४; ४:३; १ तिम. ३:७; २ तिम. २:२६; इब्र. २:१४; २ पित.

—बन्धुवाई—

२:१९. ख्रीष्ट के द्वारा निस्तार. यश. ६१:१. लूक. ४:१८. योहन. ८:३६ रोम. ८:२; गल. ३:१३ ।

—इस्राएल के विषय में आगे से कहा गया. लैव्य. २६:३३. व्यवस्था. २८:३६—दस बंशों की. आमोस. ३; ४; ७:११—पूरी हुई. २ राजा. १७; १ इति. ५:२६—यहूदा की. आगे से बताई गई. यश. ३९:६. यिर्म. १३:१९; २०:४; २५:११; ३२:२८—पूरी हुई. २ राजा. २५; २ इति. ३६; भजन. १३७. एस्तेर. २. यिर्म. ३९; ५२; दान. १ ।

—से लौट आना. एज्रा. १. नहेम. २; भजन. १२६ ।

बन्धुवे—के संग व्यवहार. गिन. ३१:१३-१९. व्यवस्था. २:३४,३५; ३:६; २१:१०-१४ ।

बन्दीगृह—देखो, बाइबल की शब्दावली में "बन्दीगृह" ।

बपतिसमा—योहन का. मत्ती. ३:६,१५; २१:२५; मार्क. १:४-८. लूक. ३:३-१६; ७:२९; योहन. १:२५-२८,३३; ३:२३; ४:१; प्रेरित. १:५, २२; १०:३७; ११:१६; १३:२४; १८:२५; १९:३,४ ।

—यीशु ख्रीष्ट का. मत्ती. २८:१९, मार्क. १६:१६. योहन. ३:३-२६; ४:१,२; प्रेरित. २:३८:४१; ८:१२-१६,३६-३८; ९:१८; १०:४७,४८; १६:१५,३३; १८:८; १९-५; २२:१६; रोम. ६:३,४; १ कर. १:१३; १०:२; १२:१३. गल. ३:२७; इफ. ४:४. कल. २:१२; तीत. ३:५. इब्र. ६:२—पवित्रात्मा से. मत्ती. ३:११. मार्क. १:८. लूक. ३:१६. योहन. १:३३; ३:५; प्रेरित. १:५; २:३८; ११:१६; १ कर. १२:१३ ।

—उदाहरण के रूप में. यहेज. १६:९; ३६:२५ ।

—की ठीक बिधि. मत्ती. २८:१९ ।

—किसने दिया. योहन. ४:२. प्रेरित. ८:१२-१६; १ कर. १:१७ ।

—की आवश्यकता. मत्ती. ३:१५; १ पितर. ३:२१ ।

—हम को ख्रीष्ट से मिला देता है . योहन. ३:५. रोम. ६:३-५. गल. ३:२७; कल. २:१२; उसके देह से १ कर. १२:१२,१३ ।

—बपतिस्मा—

—हम को बचाता है. १ पित. ३:२१ ।

—के द्वारा हम पुत्र ठहरते हैं. गल. ३:२६,२७ ।

—हम को नये जीवन में बांध देता है. रोम. ६:३-७; कल. २:१२. तीत. ३:५-८; १ पितर. ३:२१ ।

मृतकों के लिये. १ कर. १५:२९ ।

बपमुए देखो, अनाथ ।

बयाना—पवित्रात्मा का. १ कर. १:२२; ५:५; इफ. १:१४ ।

बयाबान—में इस्रायेलियों ने यात्रा की. निर्ग. १४. गिन. १०:१२; १३:३; २२; ३३; व्यवस्था. १:१९; ८:२; ३२:१०. नहेम. ९:१९. २९:८; ७८:४०; १०७:४—में हागार भाग कर गई. उत्प. १६:७ ।

—एलियाह भागा. १ राजा. १९:४ ।

—योहन बपतिस्मा देनेहारा उपदेश करता था. मत्ती. ३ ।

बरदान—देखो, दान ।

बरसात—देखो, बारिश ।

बर्त्तन—देखो, बासन ।

बर्दाश्त करना—देखो, सहना ।

बर्षा—देखो, बारिश ।

बल—इस्राएलियों का, परमेश्वर है. निर्ग. १५:२. १ शम. १५:२९. भजन. २७:१; २८:८; २९:११; ४६:१; ८१:१; यश. २६:४. योएल. ३:१६. जक. १२:५ ।

—पाप का. रोम. ७; १ कर. १५:५६ ।

—दुर्बलता में पूरा होता है. २ कर. १२:९; इब्र. ११:३४. भजन. ९:२ ।

—देखो, शक्ति ।

बलिदान—पहिला वर्णन. उत्प. ४:३,४ ।

—मनुष्य का. २ राजा. ३:१७. यहेज. २०:२६,३१ ।

—खीष्ट का. देखो, खीष्ट ।

— बलिदान—

आत्मिक. व्यवस्था. ३३:१९; भजन. ४:५; २७:६; ५०:१४; ५१:१९; १०७:२२; ११६:१७; ११९:१०८; १४१:२. होशे. १४:२; रोम. १२:१. इफ. ५:२; फिल. २:१७; ४:१८. इब्र. १३:१५,१६; १ पित. २:५।

—यहूदियों का, उदाहरण के रूप में. इब्र. ५ से १०।

—परमेश्वर इस से आज्ञाकारी होने को बड़ा ठहराता है. १ शम. १५:२२. भजन ४०:६-८; ५०:८-१५; ५१:१६,१७; ६९:३१. नीति. १५:८; २१:३,२७; २८:९. यशा. १:१२-१७. यिर्म. ७:२२,२३. होशे. ६:६; आमोस. ५:२४-२७. मत्ती. ९:१३; १२:७; २१:१९. मार्क. १२:३३. प्रेरित. ७:४२, ४३।

—कब परमेश्वर ग्रहण न करेगा. नीति. १५:८. यशा. १; ६१:८. यिर्म. ६:२०. होशे. ८:१३. आमोस. ५:२१-२३. मल. १:१०; २:१३।

—अयोग्य. मल. १:७-१४।

—हमारे देह का. रोम १२:१।

—देखो, प्रायश्चित।

बस्त्र—चमड़े के कुर्त्तों का. उत्प. ३:२१।

—फाड़ना. उत्प. ३७:२९,३४; गिन. १४:६; न्यायी. ११:३५; प्रेरित. १४:१४—धोने की आज्ञा. निर्ग. १९:१०; लैव्य. ११:२५; गिन. १९:७।

—याजकों का. निर्ग. २८,३९।

—शुद्ध करने की बिधि. लैव्य. १३:४७ (सभोप. ९:८. जक. ३:३. यहूदा. २३)।

—मिली हुई बस्तु का न हो. लैव्य. १९. व्यवस्था. २२:११।

—स्त्री और पुरुष एक दूसरे का न पहिनें. व्यवस्था. २२:५।

—ख्रीष्ट का. उस पर चिट्ठी डाली गई. भजन. २२:१८. मत्ती. २७:३५. योहन १९:२३।

बहरा—को बुरा कहना वर्जित है. लैव्य. १९:१४।

—ख्रीष्ट ने चंगा किया. मार्क. ७३२; ९:२५।

बहाना—झूठा, परमेश्वर ग्रहण नहीं करता. यिर्म. ७:१०; १ कर. १०:१३ ।

—दिखावे का. १ शम. २०:६,२९; २८:१,२; २९:८; १ राजा. १३:११-१९. यिर्म. ४१:१-६ ।

बहाल—करना. इसकी विधि. लैव्य. २४:१८-२१. नीति. ६:३१. लूक. १९:८ ।

बहुतायत—ईश्वर की ओर से होती है. उत्प. २७:२८. व्यवस्था. १६:१०,१७; २८:११; ३०:९; भजन. ६५:९-१३; ६८:९; १०४:१०-१५; १४४:९-१५; १४७:१३,१४. यिर्म. ५:२४; योएल. २:२६; ३:१८. आमोस. ९:१४; जक. ९:१७. प्रेरित. १४:१७; १ कर. १६:२ ।

बांझ—होने का अनादर. उत्प. ३०:२३; १ शम. १:६. अय्यूब. २४:२१. यश. ४:१; लूक. १:२५ ।

—थीं—सारह. उत्प. ११:३०; १६:१; १८:१; २२—रिबकाह. उत्प. २५:२१—राहिल. उत्प. २९:३१; ३०:१—मनुहा की स्त्री. न्यायी. १३—हन्ना. १ शम. १—शुनोमत. २ राजा. ४:१४—इलिशब. लूक. १. देखो. भजन. ११३:९. यश. ५४:१; गल. ४:२७ ।

—देखो, निन्दा ।

बांया हाथ—वाला. न्यायी. २०:१६. १ इति. १२:२; न्यायी. ३:१५ ।

बांह—परमेश्वर का. निर्ग. १५:१६. व्यवस्था. ३३:२७. अय्यूब. ४०:९; भजन. ७७:१५; ८९:१३; ९८:१. यश. ३३:२; ५१:५; ५२:१०; ५३:१; यिर्म. २७:५; लूक. १:५१; प्रेरित. १३:१७ ।

—सनातन के. व्यवस्था. ३३:२७ ।

बाचा—परमेश्वर की ।

नूह से. उत्प. ६:१८—इब्राहीम से. उत्प. १५:७,१९; १७:२. लूक. १:७२. प्रेरित. ३:२५. गल. ३:१६,१७—इसहाक से. उत्प. १७:१९; २६:३—याकूब से. उत्प. २८:१३. निर्ग. २:२४; ६:४; १ इति. १६:१६ ।

—इस्राएलियों के संग. निर्ग. ६:४; १९:५; २४; ३४:२७; लैव्य. २६:

—बचा—

१; व्यवस्था. ५:२; ९:१; २६:१६; २९. न्यायी. २:१; यिर्म. ११; ३१:३३. प्रेरित. ३:२५।

—फिनियास के संग गिन. २५:१३।

—दाऊद के संग. २ शम. २३:५. भजन. ८९:३,२८,३४; २५:१४।

—परमेश्वर इस बात का ख्याल रखता है. व्यवस्था. ७:९; १ राजा. ८:२३; भजन. १०५:७; १११:५।

—को तुच्छ जानने से हानि. व्यवस्था. २८:१५; यिर्म. ११:२; इब्र. १०:२९।

—का चिन्ह. लोण लैव्य. २:१३. गिन. १८:१९; २ इति. १३:५. (निर्ग. ३१:१२)।

—की पुस्तक. निर्ग. २४:७; २ राजा. २३:२; इब्र. ९:१९।

—इब्राहीम और अबिमलिक के बीच. उत्प. २१:२७।

—यहोशू और इस्राएलियों के बीच. यहोशू. २४:२५।

—दाऊद और यूनतन के बीच. १ शम. १८:३; २०:१६; २३:१८।

—नई. यिर्म. ३१:३१; रोम. ११:२७. इब्र. ८:८।

—ख्रीष्ट ने अङ्गीकार की. (मल. ३:१) लूक. १:६८-८०; गल. ३:१७. इब्र. ८६; ९:१५; १२:२४।

—शान्ति की. यश. ५४:१० यहेज. ३४:२५; ३७:२६।

—बदल नहीं सकती. भजन. ८९:३४. यश. ५४:१०; ५९:२१।

—सनातन की. उत्प. ९:१६; १७:१३; लैव्य. २४:८. यश. ५५:३; ६१:८. यहेज. १६:६०,६२; ३७:२६; इब्र. १३:२०।

—देखा, व्यवस्था, व्यवहार, विधि, नियम, प्रतिज्ञा।

बाजा बजाने के यन्त्र—बनाये गये. उत्प. ४:२१।

—धार्मिक कार्य में काम में आये. निर्ग. १५:२०; २ शम. ६:५; १ इति. १५:१६-२८; १६:५,६,४२; २५:१-७; २ इति. ५:११-१४; ७:६; १३:१२-१४; २०:२८; २३:१३; २९:२५-२८; ३०:२१; ३४:१२; ३५:१५,२५; नहेम. १२:३५,३६।

—मूर्त्तिपूजकों की पूजा के समय बजाये गये. दान. ३:५-१५।

— बाजा —

—दूसरे समयों में बजाये गये. न्यायी. ११:३४; १ शम. १८:६. सभोप २:८. यशा. ५:१२; १४:११; २४:८; ३०:२६,३२. यिर्म. ३१:४. आमोस ६:५; लूक. १५:२५ ।

युद्ध के समय. गिन १०:२-६; ३१:६; यहोशू. ६:४,८. न्यायी. ७: ८,१९; २ इति. १३:१२. सपन्या. १:१६ ।

बाजी—देखो, खेल ।

बात—में उतावली करना उचित नहीं. नीति. १५:२८; १७:२७,२८. सभोप. ५:२; याक. १:१९,२६ ।

बात चीत—परमेश्वर की मूसा के संग. निर्ग. ३३:९—यीशु की निकोदीम के संग. योहन. ३ —सामरी स्त्री के संग योहन. ४:७-२७—दो शिष्यों के संग. लूक. २४:१३—पितर की कर्नीलिय के संग. प्रेरित. १०:२७ —फोष्ट की अगरिपा के संग. प्रेरित. २६:३१ ।

बादल—देखो, खम्बा ।

बादविवाद—देखो, झगड़ा, झगड़ना ।

बारिष—तूफान की. उत्प. ७; निर्ग. ९:३४; १ शम. १२:१७. भजन. १०५:३२ ।

—परमेश्वर का दान है. मत्ती. ५:४५. प्रेरित. १४:१७ ।

—बन्द की गई. १ राजा. १७; यिर्म. १४. जक. १४:१७. याक. ५:१७ ।

—उदाहरण के रूप में. लैव्य. २६:४. व्यवस्था. ३२:२; २ शम. २३: ४. भजन. ६८:९. होशे. १०:१२ ।

बाल—देखो, दाढ़ी ।

—कोढ़ के समय मुड़वाना. लैव्य. १३:३३; १४:८ ।

—नाजीर नहीं मुड़वाते थे. देखो. नाजिरी ।

—अबिसलूम के. २ शम. १४:२६; १८:९ ।

—लम्बे—पुरुष के लिये अनादर, स्त्री के लिये आदर के कारण. १ कुर. ११:१४,१५ ।

—बाल—

—को सजाना बर्जित है. १ तिम. २:९; १ पित. ३:३ ।

—से खोह के पांव पोंछना. लूक. ७:३८,४४. योहन. ११:२; १२:३ ।

—सिर के गिने हुए हैं. मत्ती. १०:३०. लूक. १२:७ ।

—मूर्तिपूजक मुड़वा देते थे. लैव्य. १९:२७; २१:५. व्यवस्था. १४:१; यश. १५:२. यिर्म. ९:२६; १६:६; ४७:५; ४८:३७. यहेज. ७:१८. श्रामोस ८:१० ।

बालक—देखो, बच्चे ।

बासन—मन्दिर के. बाबूल को ले जाये गये. २ इति. ३६:७,१०,१८ । बेलशजर राजा ने उनको अपवित्र किया. दान. ५:२-४ ।

—यिरूशलीम में लौटाये गये. एज्रा. १:७-११; ५:१४,१५; ६:५; ७:१९ ।

बिचार—देखो, न्याय ।

—का प्रभाव. मत्ती. ५:२२,२८-३०; १५:१०-२०. मार्क. ७:१४-२३. याक. १:१४ ।

—देखो, ध्यान ।

बिजन्मा—व्यवस्था. २३:२ ।

बिजय—देखो, जीत ।

बिधवा—ने एलिया नबी को रोटी से पाला. १ राजा. १७ ।

—का दृष्टान्त. लूक. १८:३ ।

—का छदाम. मार्क. १२:४२ लूक. २१:२ ।

—उदाहरण के रूप में. यश. ४७:८; ५४:४. विलाप. १:१ ।

बिधवाओं—का आदर औ पालन किया जाए. निर्ग. २२:२२; व्यवस्था. १४:२९; २४:१७; २७:१९. अय्यूब. २९:१३. यश. १:१७; यिर्म. ७:६; प्रेरित. ६:१; ९:३९; १ तिम. ५:३; याक. १:२७ ।

—का रक्षक परमेश्वर है. व्यवस्था. १०:१८. भजन. ६८:५. १४६:९; नीति. १५:२५; यिर्म. ४९:११ ।

—को दुःख देनेहारे बुरे समझे गये. व्यवस्था. २७:१९; भजन. ९४:६;

—बिधवाओं—

यश. १:२३; १०:२; यहेज. २२:७; मल. ३:५; मत्ती. २३:१४; मार्क. १२:४०. लूक. २०:४७।

—के विवाह के नियम. लैव्य. २१:१४; व्यवस्था. २५:५; यहेज. ४४:२२. मार्क. १२:१६; १ कर. ७:८।

बिधि—की बहुमूल्यता. कल. २:२०-२३।

बिनती—परमेश्वर की अपने लोगों से. यश. १; ३:१३; ५:३; ४३:२२-२८. यिर्म. २; ४:१,२. यहेज. १७:१-३४; १८; २०:१-३२; २२. होशे. २; ११; मीका. ६:२-४।

—अय्यूब की परमेश्वर से. अय्यूब. ६:१९; १६:२१।

—देखो, प्रार्थना।

बिनना—(चुनना) कंगालों के लिये छोड़ देना. लैव्य. १६:६,१०; २३:२२. व्यवस्था. २४:१९-२२ रूत. २:७-१९।

बिनाश—शैतान पुत्र कहवाता है. योहन. १७:१२; २ थिस. २:३।

क्योंकर कोई पहुंचता है. फिल. १:२८; १ तिम. ६:६. इब्र. १०:३६; २ पित. ३:७; प्रकाश. १७:८।

बिराना—देखो, परदेशी।

बिरोधी—देखो, बैरी, शत्रु।

बिलाप—मृतकों के लिये. उत्प ५०:१०; २ शम. १:१७-२७; ३:३१; २ इति. ३५:२५. यिर्म. २२:१८. प्रेरित. ८:२।

—बर्जित है. यिर्म २२:१०. यहेज २४:१७,१८।

—खीष्ट के लिये. लूक. २३:२७।

—जातियों के लिये. यश. १४:३१; १५; २३:१-१६. यिर्म. ४८; ४६:३-५; यहेज. २६:१७; २७; २८:१२; ३२; प्रकाश. १८:१०।

—देखो, रोना, शोक, धूम मचाना।

—यिर्मया नबी का, देखो बिलाप की पुस्तक।

बिवाद—देखो, झगड़ा, झगड़ना।

बिवाह—स्थापित होना. उत्प. २:१८; इफ. ५:३१।

—बिवाह—

—आदरयोग्य. भजन. १२८. नीति. ३१:१०; इब्र. १३:४ ।

—अन्य जातियों के संग बर्जित है. निर्ग. ३४:१६. व्यवस्था. ७:३. यहोशू. २३:१२. न्यायी. १४:३; १ राजा. ३:१; ११:१-१३ एज्रा. ९:२-४. १०:१०-४४. नहेम. १०:३०; १३:२३-३० ।

—व्यवस्था के बिरुद्ध. लैव्य. १८:१-१८; २०:१६-२१ ।

—बुद्धिमानी की आशीष. भजन. १२८:३; नीति. १८:२२; १९:१४; ३१; १०-३१ ।

—खीष्टीय व्यवस्था. मत्ती. १९:४-७; मार्क. १०:२-१२. रोम. ७:२; १ कर. ७. आनेहारे जगत में नहीं होता. मत्ती. २२:३०. मार्क. १२:२३ ।

—मतावलंबी बर्जते हैं. १ तिम. ४:३ ।

—सन्त पावल का विचार. १ कर. ७:१-९,२५-२९; १ तिम. ५:१४ ।

—मेम्ने का. प्रकाश. १९:७ ।

—खीष्ट का काना नगर में जाना योहन. २:१-११ ।

—में गुप्त भेद. इफ. ४:२५-३२ ।

—के समय पर फारस देश के राजाओं की बिधि. एस्तैर २:१-१७ ।

बिवाह— एक से अधिक से—

सब से पहिले वर्णन हुआ. उत्प. ४:१९ ।

के उदाहरण. उत्प. १६:३; २६:३४; २८:९; २९:२८; ३०:३,९ १ शम. ३०:५; २ शम. २:२; ३:२-५; १ राजा. ११:३; २ इतिहास. ११:२१,२३; २४:३ ।

व्यवस्थानुसार हो सकता था. निर्ग. २१:१०. व्यवस्था. २१:१५ ।

बिवाहिया—मनुष्य. का कर्त्तव्य. देखो, प्रेम ।

—व्यवस्थानुसार. व्यवस्था. २०:७;२४:५ ।

—की पवित्रताई की आशीष. नीति. ५:१५-१९ ।

बिवेक—देखो, हृदय, मन ।

बिशेष्य—देखो, उत्तम ।

बिश्राम—परमेश्वर की संगत में मिलता है. निर्ग. ३३:१४-१६; १ इति. २३:२५; २ इति. १५:१५; २०:३०. यश. १४:३।

—यीशु ख्रीष्ट देता है. मत्ती. ११:२८-३०; २ थिस. १:७ (देखो. व्यवस्था. ३:२०; १२:६; २५:१६; यहोशू १:१३-१५; २१:४४; २२:४; यश. ११:१०)।

—अविश्वासियों को नहीं दिया जाता. भजन. ८५:११; इब्र. ३:११-१८; ४:१-११—पुराने मार्गों में मिलता. यिर्म ६:१६।

—पाप से दूर हो जाता है. भजन. ३८:३।

—मृत्यु में मिलता. अय्यूब. ३:१७; १७.१६।

—देखो, चैन।

बिश्रामवार—ठहराये जाने का कारण उत्प. २:२; निर्ग. २०:११; २३:१२; ३१:१२-१७. व्यवस्था. ५:१५. यहेज. २०:१२।

—परमेश्वर की वाचा का चिन्ह. निर्ग. ३१:१३. यहेज. २०: १२,२०।

—को मानना. निर्ग. १६:२३; २०:८,१०; ३१:१५-१७; ३४:२१; ३५:१-५. लैव्य. १६:३०; २३:३; २६:२. गिनती १५:३२-३६; २८:६,१०; व्यवस्था. ५:१२-१४. नहेम. ६:१४; १०:३१. १३:१५-२२. यश. ५६:२-७; ५८:१३. यिर्म. १७:१९-२७. यहेज. ४४:२४; ४६:१-३. आमोस. ८:५; मत्ती. २८:१. मार्क. १६:१. लूक. २३:५६।

—बुरी रीति से मानना. यश. १:१३; यहेज. २०:१३-२४; २२:८,२३; २३:३८।

—के विषय में नये धर्म नियम की शिक्षा. मत्ती. १२:१-१३. मार्क. २:२३-२८; ३:१-५; लूक. ६:१-१०; १३:११-१६; १४:१-५; योहन. ५:८-१८; ७:२१-२४; रोम. १४:५-६. गल. ४:१०,११; कल. २:१६।

—के दिन बलिदान. १ इति. २३:३१; २ इति. २:४; ८:१३; ३१:३. नहेमया १०:३३; यहेज. ४६:४।

—भेंट की रोटियां चढ़ाना. लैव्य. २४:८; १ इति. ९:३२।

—भवन में छाया हुआ स्थान. २ राजा. १६:१८।

—विश्रामवार—

—सातवां वर्ष माना जाय. निर्ग. २३:१०. लैव्य. २५:१।

—खीष्ट प्रभु है. मार्क २:२७. लूक. ६:५।

—हफ्ते का पहिला दिन होवे. मत्ती. २८:१; मार्क. १६:२,६. योहन. २०:१; १९:२६; प्रेरित. २०:७; १ कर. १६:२; प्रकाश. १:१० ।

विश्वास—इब्र. ११ ।

—से धर्मी ठहरना. रोम ३:२८; ५:१,१६; गल २:१६ ।

—से शुद्धता. प्रेरित. १५:९ ।

—से पवित्रता. प्रेरित. २६:१८ ।

—का अभिप्राय. पिता, पुत्र और पवित्रात्मा. मार्क. ११:२२; योहन. ६:२६; १४:१; २०:३१; प्रेरित. २०:२१; २ कर. १३:१४ ।

—आत्मा के द्वारा दिया जाता है. १ कर. २:५; १२:६ ।

—खीष्ट में. प्रेरित. ८:१२; २ तिम. ३:१५ ।

—की एकताई. इफ. ४:५,१३; यहूदा. ३ ।

—से त्राण मिलता है. मार्क. १६:१६; योहन. १:१२; ३:१६,३६; ६:४०,४७. प्रेरित. १६:३१; गल. ३:११; इफ. २:८ इब्र. ११:६; १ पितर. १:६; १ योहन. ५:१० ।

—प्रेम के द्वारा कार्य करता है. १ कर. १३; गल. ५:६; कल. १:४; १ थिस. १:३; १ तिम. १:५; फिलेमून. ५; इब्र. १०:२३; १ पितर. १:२२; १ योहन ३:१४, २३ ।

—बिना कार्य के मुर्दा है. याकूब. २:१७,२० ।

—के द्वारा शान्ति, आनन्द और आशा उत्पन्न होती है. रोम. ५:१; १५:१३; २ कर. ४:१३; १ पितर. १:८ ।

—में घमण्ड नहीं होता. रोम. ३:२७; ४:२; १ कर. १:२९; इफ. २:९. ।

—के द्वारा आशीष मिलती है. मार्क. १६:१६; योहन. ६:४०; १२:३६; २०:३१; प्रेरित. १०:४३; १६:३१; २६:१८. रोम. १:१७; ३:२१; ४:१६; ५:१; २ कर. ५:७; गल. २:१६; ३:१४,२६; इफ. १:१३; ३:१२,१७; १ तिम. १:४; इब्र. ४:३; ६:१२; १०:३८; १ पित. १:५; यहूदा. २० ।

—विश्वास—

—के द्वारा आश्चर्य कर्म किये जाते हैं. मत्ती ९:२२. लूक. ८:५०. प्रेरित. ३:१६।

—का बल. मत्ती. १७:२०. मार्क. ९:२३; ११:२३; लूक. १७:६।

—की परीक्षा. २ थिस. १:४. इब्र. ११:१७. याक. १:३,१३; १ पितर. १:७।

—जगत पर विजय पाता है. १ योहन. ५:४।

•—खीष्टियान की ढाल है. गल. ६:६; १ थिस. ५:८।

—के लिये साहस का उपदेश. यहूदा. ३।

—में बढ़ते जाने का उपदेश. १ कर. १६:१३; २ कर. १३:५; इफ. ६:१६; फिल. १:२७; कल. १:२३; २:७; १ थिस. ५:८; १ तिम. १:१९; ४:१२; ६:११; २ तिम. २:२२; तीत. १:१३. इब्र. १०:२२।

—के उदाहरण. गिन. १३:३०; दान. ३:१७; ६:१०; योना. ३:५; मत्ती. १६:१६. योहन. १:४९; ११:२७. प्रेरित. ६:५; ८:३७; ११:२४।

विश्वासयोग्य—परमेश्वर की सेना में हो. २ राजा. १२:१५; २ इति. ३१:१२. मत्ती. २४:४५; २ कर. २:१७; ४:२; ३ योहन. ५।

—मनुष्यों के आगे. व्यवस्था. १:१६; भजन. १४१:५; नीति. ११:१३; १३:१७; १४:५; २०:६; २५:१३; २७:६; २८:२०; लूक. १६:१०; १ कर. ४:२; १ तिम. ३:११; ६:२; तीत. २:१०।

—होने के उदाहरण—इब्राहीम. उत्प. २२; गल. ३:९—यूसफ. उत्प. ३९:४,२२—मूसा. गिन. १२:७; इब्र. ३:५—दाऊद. १ शम. २२:१४; —दानियेल. दान. ६:४—पावल. प्रेरित. २०:२०—तिमताऊस. १ कर. ४:७—परमेश्वर. भजन. ३६:५; ४०:१०; ८८:११; ८९:१; ९२:२; ११९:७५. यश. २५:१; विलाप. ३:२३।

बिसारना—देखो, भूलना।

बिस्मित—देखो, आश्चर्य।

बीज—के उगने का दृष्टान्त. मत्ती. १३; लूक. ८:५।

बीता— समय वर्त्तमान से आगे न बढ़ाया जाय. सभोप. ७:१० ।

बीन— उत्प. ४:२१ ।

—दाऊद बजाया करता था. १ शम. १६:१६,२३; २ शम. ६:५ ।

—आराधना के समय बजाया जाता था. १ इति. २५:३; भजन. :३३२; ८१:२; १५०:३ ।

—स्वर्ग में. प्रकाश. १४:२ ।

बीमार— देखो, रोगी ।

बीर— पुरुष की बढ़ाई. न्यायी. ५ ।

बीरता— का उदाहरण. २ शम. २३:८-२२ ।

बुढ़ापा— अय्यूब. ३०:२; भजन. ६०:१०; सभोप. १२; तीत. २:२ ।

—के कारण आदर. लैव्य. १९:३२; नीति. २३:२२; १ तिम. ५:१ ।

बुद्धि— परमेश्वर से दी जाती है. निर्ग. ३१:३; १ राजा. ३:१२; ४:२९, १ इति. २२:१२; २ इति. १:१०; एज्रा. ७:२५; नीति. २:६; सभोप. २:२६. दान. २:२०; प्रेरित. ६:१०; ७:१०; २ पितर. ३:१५ ।

—के गुण. व्यवस्था. ४:६. अय्यूब. २८:१२. भजन. १११:१०. नीति १:२; ६; १४:८; २४:७; २८:७; सभोप. २:१३; ७:१९; ६:१३; यिर्म. ६:२४; मत्ती. ७:२४. याक. ३:१३ ।

—की ढूंढ़ करनी चाहिये. भजन. ९०:१२. मत्ती. १०:१६; रोम. १६: १९; इफ. ५:१५; २ तिम. ३:१५; याक. ३:१३ ।

—के द्वारा आशीष. नीति. १:५; ३:१३; ८:११; १६:१६; २४:३,१४; सभोप. ७:११; ६:१३; १२:११; मत्ती. २५:१ ।

—सुलैमान ने प्रार्थना के उत्तर में पाई. १ राजा. ३:९; १०:६; नीति. २:३; दान. २:२१. याक. १:५ ।

—मानो की पुरुष है. नीति. १:२०; ८;१ ।

—को तुच्छ जानने से हानि. नीति. १:२४; २:१२; ३:२१; ५:१२; ८:३६; ९:१२; १०:२१; ११:१२ ।

—परमेश्वर के कार्यों में दिखाई देती है. भजन. १०४:१,२४; १३६: ५; नीति. ३:१९; ६:६; यिर्म. १०:१२; रोम. १:२०; ११:३३ ।

—बुद्धि—

—पानेहारों के उदाहरण—यूसफ. उत्प. ४१:३३; ४७:१३—सुलैमान. १ राजा. ४:२९—दानियेल; यहेज. २८:३; दान. १:१७; ५:१४—संसारिक, मिट जायेगी. अय्यूब. ५:१३; ११:१२; नीति. ६:७; सभोप. २; यश. ५:२१; यिर्म. ८:१२; जक. ९:२; मत्ती. ११:२५; १ कर. १:१७; २:४; ३:१८; २ कर. १:१२; याक. ३:१५।

बुद्धिमान—अपनी दृष्टि में अपने को समझना. मूर्खता है. नीति. ३:७; यश. ५:२१; रोम. १२:१६।

—स्त्री, दाऊद को मिली. २ शम. १४।

—देखो, चतुराई।

बुराई—देखो, कुकर्म, अधर्म, पाप।

—बेकार. देखो, आलसी।

बेदी—बनाने की आज्ञा. उत्प. ३५:१।

—किस प्रकार बनायी जाती है. मिट्टी की. निर्ग. २०:२४—पत्थर की. निर्ग. २०:२५—लकड़ी की. निर्ग. २७:१।

—धूप जलाने की. निर्ग. ३०:१; ३७:२५।

—सोने की. प्रकाश. ८:३; ९:१३।

—पर चढ़ावा चढ़ाना. मत्ती. ५:२३।

—हमारी बेदी. इब्र. १३:१०।

—बनाई. नूह ने. उत्प. ८:२०—इब्राहीम ने. उत्प. १२:७,८; १३:४, १८; २२:९—इसहाक ने. उत्प. २६:२५—याकूब ने. उत्प. ३३:२०; ३५:७—मूसा ने. निर्ग. १७:१५—बालाम ने. गिन. २३:१—रूबीनियों ने. यहोशू. २२:१०—शाऊल ने. १ शम. १४:३५—एलियाह ने. १ राजा. १८:३०,३२—सुलेमान ने. २ इति. ४:१—दिमिशक की. २ राजा. १६:१०।

—रक्षा का स्थान. १ राजा. १:५०; २:२८।

—अशूरियों की. २ राजा. १६:१०।

—जो अनदेखे ईश्वर के लिये बनाई गई. प्रेरित. १७:२३।

बोली—देखो, भाषा ।

व्यभिचार—तमर का. उत्प. ३८:२४ ।

—दाऊद का. २ शम. ११:२ ।

—हेरोद का. मार्क. ६:१७ ।

—वह स्त्री जो पकड़ी गई. योहन. ८:३ ।

—में क्या सम्मिलित है. मत्ती. ५:२८; १५:१६; १६:९; मार्क. ७:२१; १०:११ ।

—वर्जित है. निर्ग. २०:१४. व्यवस्था. ५:१८; मत्ती. १६:८. रोम. ३:९; गल. ५:१६ ।

—का दण्ड. लैव्य. २०:१०. मल. ३:३; १ कर. ६:६; इब्र. १३:४ ।

—आत्मिक. यिर्म. ३; १३:२७; यहेज. १६; २३; होशे. १; २; प्रकाश. २:२२ ।

व्यभिचारी—देखो, कुकर्म, लुचपन, इत्यादि ।

व्यर्थता—संसारिक वस्तुओं की. भजन. ३६:५.११; ४९; ९०; सभोप. १; यश. ४०:१७.२३; ४१:२६; ५६:४; हब. २:१३ ।

—मूर्त्ती पूजा की. व्यवस्था. ३२:२१; २ राजा. १७:१५; यिर्म. १०:८; १४:२२; १८:१५. प्रेरित. १४:१५ ।

व्यवस्था—परमेश्वर की ।

—आदम को दी गई. उत्प. २:१६; नूह को दी गई. उत्प. ९:३ ।

—मूसा के द्वारा प्रगट की गई. निर्ग. १९; २०; व्यवस्था. १:५; ५:६ ।

—पूरी रीति से आज्ञा पालन को चाहती है. व्यवस्था. २७:२६. गल. ३:१०; याक. २:१० ।

—का वर्णन हुआ. भजन. १६:७; ११६; रोम. ७:१२ ।

—के नीचे सब अपराधी ठहरे. रोम. ३:२० ।

—मूसा की ।

—ठहराई गई. निर्ग. २१; लैव्य. १; गिन. ३; व्यवस्था. १२ ।

—व्यवस्था—

—पत्थर पर खोदी गई. व्यवस्था. २७:१; यहोशू. ८:३२ ।

—राजा उसे पढ़े. व्यवस्था. १७:१८ ।

—हर सातवें वर्ष पढ़ी जाए. व्यवस्था. ३१:६ ।

—नियम के सन्दूक में रखी गई. व्यवस्था. ३१:२४ ।

—यहोशू ने पढ़ी. यहोशू. ८:३४; एज्रा ने पढ़ी. नहेम. ८ ।

—की पुस्तक पाई गई. २ राजा. २२:८ और यूसिया ने पढ़ी. २ राजा. २३:२ ।

—खीष्ट ने पूरी की. मत्ती. ५:१७; रोम. ७:१८ ।

खीष्ट में मिट गई. प्रेरित. १५:२४; २८:२३. गल. २ से ६. इफ. २:१५; कल. २:१४. इब्र. ७ ।

खीष्टियान उसके दंड से मुक्त है. योहन. १:१७; प्रेरित. १३:३९; १५:२४-२८. रोम. १०:४. गल. ३:१३ ।

—देनेहारा—परमेश्वर है. यश. ३३:२२. याक. ४:१२ ।

मूसा भी कहलाया. गिन. २१:१८. (व्यवस्था. ३३:२१. न्यायी. ५:१४) ।

—देखो, वाचा, नियम ।

व्यवहारिक—बातें सदाचार के आधीन हों. यश. १:१०-१५. होशे. ६:६; मीका. ६:६-८; मत्ती. ९:१३; १२:१-१३; २३:२५. मार्क. २:२३-२८. लूक. ११:३९-४२ ।

व्याकुल—देखो, दुःख ।

व्याज—देखो, सूद ।

व्यालु—रात का भोजन. पिछला. मत्ती. २६:२६. मार्क. १४:२२. लूक. २२:२०; १ कर. ११:२५ ।

व्योपार—प्राचीन समय में. उत्प. २३:१६; ३८:२५,२८ ।

—पिछले समय में. १ राजा. १०:२८. २ इति. १:१६,१७; ८:१८; ९:१३,१४,२१. यश. ४५:१४. यहेज. २८:१-२५ ।

व्योपारिक—उन्नति का चित्र. यहेज. २७. प्रकाश. १८:१२-२३ ।

ब्योपारी,—का विलाप. प्रकाश. १८:११; यहेज. २७:२७-३४ ।

वृक्ष—देखो, पेड़ ।

भ

भंडार—देखो, भण्डार ।

भंडारी—देखो, भण्डारी ।

भक्ति—केवल परमेश्वर की की जाय, देखो ईश्वर. मत्ती. ४:१०; लूक. ४:८ ।

—झूठे देवी देवताओं की न की जाय, देखो मूर्त्ति पूजा ।

—न मनुष्य और न दूतों की—प्रेरित. १०:२६; १४:१४; कल. २:१८. प्रकाश. १९:१०; २२:९ ।

—राजाओं के समय में. १ इति. २६; २ इति. ५; ६; ८:१४; १३:११; २०:३-१९; २९:२०-३५ ।

—बंधुवाई से लौट आने के पीछे. नहेम. ९:३-३८; १२:२४-४७. देखो. भजन. ६८:२४,२५; ८१:१-४ ।

—का लाभ. भजन. ४२:४; ६३:२; ८४:२,१०; ९६:८; ६६:६; १०२:२-४; १३२:६-८. इब्र. १०:२५ ।

—करना छोड़ दिया. यश. ४३:२२-२४ ।

—करना कब व्यर्थ ठहरता है. यश. १:१०-१५ ।

—सभा के घरों में किस प्रकार की जाती थी. लूक. ४:१६. प्रेरित. २३:१५,२७; १५:२१ ।

—ख्रीष्टीय मंडली में. १ कर. १४; १ तिम. २:१-३ ।

—अनजान भाषा में न की जाय. १ कर. १४:१३-२५ ।

—नियमानुसार हो. १ कर. १४:२३-४० ।

—में ख्रीष्ट का हाजिर होना. मत्ती. १८:२० ।

—आत्मिक. किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं. योहन. ४:२०-२४; देखो. प्रेरित. ७:४८; १७:२४; और १ राजा. ८:२७; २ इति. २:६; ६:१८; यश. ६६:१ ।

—भक्ति—

—स्वर्ग में. यश. ६:१-६; प्रकाश. ४:१-११; ५:७-१४; ७:६-१२; ८:३;४; ११:१६-१६; १४:१-५; १५:२-८; २१:१-७।

—करने की आज्ञा. व्यवस्था. ४:१०; २ राजा. १७:३६; १ इति. १६:२६; भजन. २६:२; ४५:११; ९५:६; ६६:९; ९६:५,६; १००:४; १३२:७।

—देखो—धर्म, पवित्रता।

भक्तिहीन—देखो, पापी, दुष्ट, अपवित्र।

भजन—प्रभु भोज के पीछे गाया गया. मत्ती. २६:३०; मार्क. १४:२६।

—ख्रीष्टियानों को गाना उचित है. इफ. ५:१६; कल. ३:१६. देखो. प्रेरित. १६:२५. याक. ५:१३।

—देखो, गीत।

भजन संहिता—

इन ५ हिस्सों में बांटे जा सकते हैं।

१. दाऊद के. १ से ४१ तक।

२. दाऊद के. ४२ से ७२ तक।

३. आसफ के. ७३ से. ८६ तक।

४. बंधुवाई के समय के. ९० से १०६ तक।

५. बहाली के समय के. १०७ से १५० तक।

विषयानुसार उनको इस प्रकार बांट सकते हैं।

—१. भाग. प्रार्थना के भजन।

१. पाप के कारण. भजन. ६; २५; ३२; ३८; ५१; १०२; १३०।

२. दु:ख के कारण. भजन. ७; १०; १३; १७; २२; ३१; ३५; ४१-४३; ५४-५७; ५६; ६४; ६७-७१; ७७; ८६; ८८; ६४; १०६; १२०; १४०; १४१-१४३।

३. सताये जाने के कारण. भजन. ४४; ६०; ७४; ७९; ८०; ८३; ८९; ६४; १०२; १२३; १३७।

४. समाजिक आराधना के समय. भजन. २६; २७; ४२; ४३; ६३; ६५; ८४; ६२; ६५-१००; ११८; १२२; १३२; १४४; १४५-१५०।

५. परमेश्वर पर विश्वास करने के लिये. भजन. ३-५; ११; १२;

—भजन—

१६; २०; २३; २७; २८; ३१; ४२; ४३; ५२; ५४; ५६; ५७; ५९; ६१-६४; ७१; ७७; ८६; १०८; ११५; ११८; १२१; १२५; १३१; १३८; १४१।

६. दया के लिये. भजन. ७; १७; २६; ३५; १०१; ११९।

—२. कृतज्ञता के।

१. भजन लिखनेहारे अपने लिये कृतज्ञ हैं. भजन. ९; १८; २०; ३२; ३४; ४०; ६१-६३; ७५; १०३; १०८; ११६; ११८; १३८; १४४।

२. समाज के लिये. भजन. ३३; ४६; ४७; ६५; ६६; ६८; ७५; ७६; ८१; ८५; ८७; ९५; ९८; १०५-१०७; १२४; १२६; १२९; १३५-१३६; १४९।

—३. भक्ति के भजन।

१. परमेश्वर की दया औ कृपा के लिये. भजन. ३; ४; ९; १६; १८; ३०-३४; ३६; ४०; ४६; ६५-६८; ८४; ८५; ९१; ९९; १००; १०३; १०७; १११; ११३; ११६; ११७; १२१; १२६; १४५; १४६।

२. परमेश्वर की शक्ति, विभव व महिमा के लिये. भजन. २; ३; ८; १८; १९; २४; २९; ३३; ४५-४८; ५०; ६५-६८; ७६; ७७; ८९; ९१-१००; १०४-१०८; ११०; १११; ११३; ११४-११८; १३५; १३६; १३९; १४५-१५०।

—४. अर्पण करने के।

१. इसलिये कि परमेश्वर ने अपने लोगों को आशीष दी और बैरियों को दण्ड दिया है. भजन. १; ३-५; ७; ९-१५; १७; २४; २५; ३२; ३४; ३६; ३७; ४१; ५०; ५२; ५३; ५८; ६२; ७३; ७५; ८२; ८४; ९१; ९२; ९४; १०१; ११२; ११९; १२१; १२५; १२७-१२९; १३३; १४१।

२. परमेश्वर की व्यवस्था की बड़ाई के लिये. भजन. १९; ११९।

३. मनुष्य की आयु की व्यर्थता के लिये. भजन. १४; ३९; ४९; ५३; ७३; ९०।

—भजन—

—५. भविष्यद्वाक्य और उदाहरण और ऐतिहासिक भजन।
भजन. २: १६: २२; २४; ३१; ३५; ४०; ४१; ४५; ५०; ५५; ६८; ६९; ७२: ७८; ८७; ८८: १०२; १०५; १३६; १०९; ११०; ११८; १३२; १३५; १३६।

भटकना—इस्राएलियों का बयावान में. देखो. नियम का सन्दूक।

—देखो, भूलना।

भट्ठी—को तेज करके जलाना. दान. ३; ६,११,१५ इत्यादि।

—परमेश्वर के क्रोध और परीक्षा की. व्यवस्था. ४:२०; भजन. १२:६; नीति. १७:३; यश. ३१:९; ४८:१०; यहेज. २२:१८-२०; मल. ३:३; मत्ती. १३:४२,५०; प्रकाश. १९:२०; २०:१०,१४।

भण्डार—स्वर्ग पर इकट्ठा करो. मत्ती. ६:२०।

—नगर. मिस्र देश के. निर्ग. १:११।

—जिन में रोकड़ डाला जाता था. मार्क. १२:४१; लूक. २१:१. (२ राजा. १२९)।

भण्डारी—का दृष्टान्त. लूक. १६:१।

—प्रभु के सेवक कहलाते हैं. लूक. १२:४२; १ कर. ४:१; तीत. १:७।

—ख्रीष्टियान कहलाते हैं. लूक. १६:१; १ पितर. ४:१०।

भय—परमेश्वर का. अय्यूब. २८:२८; भजन. १९:९; नीति. १:७; ८:१३, ९:१०; १४:२७; १५:३३।

—मानना उचित है. व्यवस्था. १०:१२; यहोशू. ४:२४; अय्यूब. १३:११; भजन. २:११; ७६:७; १३०:४; यिर्म. १०:७; मत्ती. १०:२८; लूक. १२:५; इब्र. १२:२८; प्रकाश. १४:७; १५:४।

—का लाभ. भजन. १५:४; २५:१४; ३१:१९; ३३:१८; ६०:४; ६१:५; ८५:९; १०३:११; १११:५; ११२:१; १४५:१९; १४७:११; नीति. १०:२७; १४:२६; १५:३३; १९:२३; २२:४; सभोप. ८:१२; मल. ३:१६; ४:२; लूक. १:५०; २ कर. ७:१; प्रकाश. ११:१८।

—मानते रहने की आज्ञा. लैव्य. १९:१४; व्यवस्था. ४:१०; ६:२; २८:५८; यहोशू. २४:१४; १ शम. १२:१४; २ राजा. १७:३८; १ इति.

—भय—
१६:३०; भजन. २:११; ३३:८; नीति ३:७; २३:१७; २४:२१; यश.
८:१३; सभोप. ५:७; ८:१२; १२:१३; रोम. ११:२०; इफ. ६:५; फिल.
२:१२; कल. ३:२२; इब्र. ४:१; १ पितर. २:१७; प्रकाश. १४:१७।
—दण्ड पाने का. उसका दुःख. उत्प. ३:८; ४:१४; नीति. २८:१;
यश. २:१९; ३३:१४; लूक. १९:२१; प्रेरित. २४:२५; रोम. ८:१५;
इब्र. १०:२७; १ योहन. ४:१८; प्रकाश. ६:१६; २१:८।
—देखो. डर।

भरमाना—देखो, कपट, छल।

भरोसा—विश्वास और आशा का. यश. ३२:१७; कल. २:२; १ थिस.
१:५; २ तिम. १:१२; इब्र. ६:११; १०:२२।
—प्रेम से सिद्ध होता है. १ योहन. ३:१४.१९; ४:१८।
—विश्वास के द्वारा. नीति. ३:२६; १४:२६; इफ. ३:१२; इब्र. २:६,
१४; १०:३५; १ योहन. २:२८; ३:२१; ५:१४।
—देह का करना उचित नहीं. फिल. ३:३।
—देखो, शरण, आशा।

भलाई—देखो, करुणा, दया।

भवन—देखो, ईश्वर का भवन।

भविष्य—जीवन. महिमा में बढ़ता जायेगा. १ कर. १५:३९-४४।
—के विषय में कोई मनुष्य नहीं जानता. सभोप. ३:२२; ६:१२; ८:७;
९:१२; १०:१४।

भविष्यद्वक्ता—परमेश्वर की ओर से भेजे जाते हैं. यश. ५८:१; यिर्म.
१:४; २३:२८; २५:४. यहेज. २:३।
—ख्रीष्ट को कहा. व्यवस्था. १८:१५; मत्ती. २१:११; लूक. ७:१६.
ठट्ठे से भी कहा लूक. २२:६४।
—ख्रीष्ट के विषय में साक्षी देते हैं. लूक. १६:१६; २४:२५; योहन.
१२:४१; प्रेरित. ३:२२-२४; १०:४३; २६:२२-२७; १ पितर.
१:१०-१२।

—का प्रभाव. गिन. २२:५; न्यायी. ४:४; १ शम. ३:१९—४:१; २ शम. १२:७-११; १४:२; १ राजा. २०:४३; २१:१७-२९; २२:६; २ राजा. ९:१-१४; १३:१४-१९; १९:२-५; २२:१४; १ इति. १७:२; २ इति. ११:२-४; १२:५-७; १५:१-१५; १६:७-१०; १८:४-६; २०:३७; २५:७-१७; २८:८-१५; ३४:२२; यश. ३७:२।

—से बुरा व्यवहार किया गया. १ राजा. १३:४; १८:४; १९:२; २२:२७; २ राजा. ६:३१; २ इति. १८:२६; २४:२१; ३६:१६; यिर्म. २०:१; २६:८-२४; ३२:२; ३३:१; ३६:५; ३७:१५; ३८:६-१३; मत्ती. २३:३४-३७; लूक. १३:३४; रोम. ११:१-५।

—को दुःख सहने का नमूना समझो. याक. ५:१०।

—का वस्त्र. २ राजा. १:८; जक. १३:४; मत्ती. ३:४; मार्क. १:६।

—अपने देश में आदर नहीं पाता. मत्ती. १३:५७; मार्क. ६:२-४; लूक ४:२४।

—ख्रीष्टीय मण्डली में. (शिक्षा देनेहारे). प्रेरित. १३:१; १ कर. १४; इफ. २:२०; ४:११; १ थिस. ५:२०।

—झूठे—१ राजा. २२:११,१२; २ इति. १८:१०; यश. ९:१५; यिर्म. १४:१३-१६; २३:२५-३२; २७:९-११,१४-१८; २८:१-१७; २९:३०-३२; विलाप. २:१४; ४:१३; यहेज. १३:३-२३; १४:९; होशे. ९:७,८; मीका. २:११; ३:५-११; सपन्या. ३:४. जक. १३:४; मत्ती. ७:१५; २४:२४; प्रेरित. १३:६; २ पितर. २:१।

—क्योंकर पहिचाने जावें. व्यवस्था. १८:२१,२२; यिर्म. २८:९; मत्ती. ७:१६,२०।

—का दण्ड. व्यवस्था. १३:५; १८:२०; यिर्म. २३:३४; २८:१७; २९:३२।

—शावल भी गिना गया १ शम. १०:९-१३; १९:२२-२४।

भविष्यद्वाणियां—ख्रीष्ट के विषय में. उत्प. ३:१५।

—इब्राहीम को दी गई—उत्प. १२:३; १८:१८; २२:१८।

इसहाक को. उत्प. २६:४—याकूब को उत्प. २८:४,१४—बलाम को. गिन. २४:१७—मूसा को. व्यवस्था. १८:१५-१९—दावो को. व्य-

वस्था. ३३:१०-१२—दाऊद को. २ शम. ७:१२-१६. १ इति. १७:१४; भजन ८९:२०-२९—अय्यूब को. अय्यूब. १९:२३-२७—भजन रचने-हारों और भविष्यद्वक्ताओं की. भजन १६:१० (प्रेरित. २:२७, ३१; १३:३५). २२:१-२२. (मत्ती. २७:३५,४६; मार्क. १५:२४, ३४; लूक २३:३४; योहन. १९:२३,२४; ३४-३७; २०:२५) ६९:२१ (मत्ती. २७:३४,४८, मार्क. १५:२८. योहन. १९:२९). ८५:१०-१३; ८९:३५-३७; ११०:४; ११८:२२; १३२:११-१८. यशा. ४:२; ७:१०-१६; ८:१-८; ११:१-१०; २६:१९; २८:१६; ३२:१,२; ४०:१-११; ४२:१-७; ४८:१६; ४९:७-१२,१६; ५०:५-७; ५१:११; ५२:१३; ५३:१२; ५५:४; ६१:१-३; ६२:११; ६३:१-६; यिर्म. २३:५-६; ३०:९; ३१:२२; ३३:१५-१७: दान. ७:१३, १४; ९:२४-२७. होशे. ६:१-३; १३:१४; मीका. ५:२; हग. २:२-९; जक. ३:८; ६:१२; ९:९; ११:१३; १२:१०; १३:१, ६-९; मल. ३:१-३; ४:२।

—ख्रीष्टीय मण्डली के विषय में—उत्प. १२:३; १३:१६; १५:५; भजन. २२:३०; ८७; १३२:१३-१८. यशा. २:२-५; ४:३-६; ११:६-९; २६:१,२; ३०:१८-२६; ३३:२०,२१; ३५; ४९:२३; ५१:४; ५३:१०; ५४; ५५:३,१२,१३; ६०; ६१:४-९; ६५:२५ यिर्म. ३३:१६-२२. यहेज. १६:६०-६२; ३४:११-३१; ३७:२०-२८. दान. २:४४ होशे. २:१९-२०. योएल. २:२८-३२. मीका. ४:१,२; हब. २:१४. जक. ८:२३; ९:१०-१६; १२:८; १४:९; गल. १:११।

—पुराने धर्म नियम में, जो पूरी हो गईं।

—इस्राएलियों के बलवे के विषय में—व्यवस्था ३१:१६-२१,२९।

—एली के घराने के विषय में. १ शम. २:३०-३६; ४:११-१४ (१ राजा. २:२७)।

—दाऊद. १ इति. ११:५,६।

—यरीहो. यहोशू ६:२६ (१ राजा. १६:३४)।

—यारोबाम. १ राजा. १३:२; १४:७-१६ (२ राजा. २३:१५-१८)।

—बाशा. १ राजा. १६:१-४,१०।

—आहाब. १ राजा. १७:१; २०:१३:३९-४२; २१:१९-२४; २२:१७-२३।

(देखो. पद. ३४-४३; २ राजा. ६:२६; १०:१०)।

—इजाबेल १ राजा. २१:२३ (२ राजा. ९:३५,३६)।

—आज्ञा तोड़नेहारा भविष्यद्वक्ता. १ राजा. १३:२२,२४।

—आज्ञा तोड़नेहारा मनुष्य. १ राजा. २०:३६।

—अहज्याह. २ राजा. १:४, ६,१६,१७।

—एलियाह २ राजा २:३,५।

—**मोआबियों के विषय में.** २ राजा. ३:१७-२३।

—सामरिया के घेरे जाने के. २ राजा. ७:१,१८।

—आकाल के. २ राजा. ८:१,२।

—अराम पर विजय के. २ राजा. १३:१८-२५।

—सनहेरिब के. २ राजा. १९:२८-३७।

—इस्राएल और यहूदा के. २ राजा. २०:१७,१८; २१:१०-१६: २२:१५-१७; २ इति. ३४:२३-२८. यशा. २९:१-१७ ५१:२२; यिर्म. १३:१९; २७:१९-२२; यहेज. २१:१-१७।

—सुलैमान के. १ इति. १७:११-१३; २८:६,७; २ इति. ७:१७,१८।

—इफ्राईम. यशा. २८:१-४।

—योशियाह. १ राजा. १३:२; २ राजा. २२:१८-२०; २ इति. ३४:२६-२८ (देखो. २ राजा. २३:१-३०; २ इति. ३५:२४)।

—मोआब—यशा. १५; १६:६-१४; यिर्म. ४८; यहेज. २५:८-११; आमोस. २:१-३. सपन्याह. २:८-१०।

अराम. यशा. १७:१-३. यिर्म. ४९:२३-२७. आमोस. १:३-५।

—मिस्र. यशा. १९:२०; यिर्म. ४६:१३-२६; यहेज. २९:१-१२; ३०:३१; ३२।

—अम्मोन के. यिर्म. ४९:१-६. यहेज. २१:२८-३२; २५:१-८. आमोस. १:१३-१५ सपन्याह. २:८-१०।

—एदोम. यिर्म. ४९:७-२२. यहेज. २५:१२-१४; ३२:२९; ३५; आमोस १:११. ओबदिया. १-१६।

—एलाम के विषय में. यिर्म. ४९:३४-३९. यहेज. ३२:२४।

—सूर और सैदा के. यहेज. २८:२०-२३।

—कूश के विषय में. यश १८:१; यहेज. ३०:१-१० ।

—अश्शूर के. यहेज. ३२:२२ योना. ३; नहूम. २; ३; सपन्याह. १:१३ ।

—सोरे के. यश. २३:१-१८. यहेज. २६ से २८. योएल. ३:४-८; आमोस १:९ ।

—बाबुल के. यश. १३:१-२२; १४:४-२८; २१:१; ४७; यिर्म. २५:१२-१४; ५०; ५१ ।

—फिलिश्तियों के. यिर्म. ४७; यहेज. २५:१५-१७; आमोस. १:६-८. सपन्या. २:४-७. जक. ९:५-७ ।

—इस्राएलियों के बंधुवाई से लौट आने के. भजन. ५३:६; १०२: १३-२२; यश. १४:१-३; २७:१२; ४९:१८-२१. यिर्म. १२:१५; ३२: १३-१५,३७-४४; ३३:५-१६,२६; ४६:२७; यहेज. १६:५३; २०:४०-४४; २८:२५; ३४:१३ होशे. ३:५. १४:३-९. योएल. ३:१. आमोस. ९:११-१५; ओबदिया. १७ मीका. ७.८-१२; सपन्या. ३:९-२०. जक. १:१७; २:४; ८:३-७,११-१५; १०:६-१२ ।

—दूसरे मन्दिर के विभव के विषय में. हग. २:३-९; जक. १:१६; ४:७-१० ।

—जिनके विषय में नये धर्म नियम में पूरे होने की साक्षी दी गई—मत्ती. १:२२; २:५,६; १७,१८,२३; ३:३; ४:१४-१६; ५:१७; ८: १७; १२:१७; १३:१४; १५:७-९; २१:५, ४२; २२:४४; २४:१५; २६:५४-५६; २७:९,१०,३५,४३,४६. मार्क. १:३; ७:६; १२:३६; १३:१४; १५: २८. लूका. १:१७,७०,७६; ३:४-६; ७:२७; १८:३१. २०:१७,४२-४४; २२:३७; २४:२७,४४-४७. योहन. १:२३,४५; २:१७; ६:४५; ७:३८; १२:३८-४०; १९:२४,३६,३७; २०:९; प्रेरित. १:२०; २:१६-२१,२५-२८,३४; ३:२२-२५. ४:११,२५,२६; ८:३२-३५; १३:२२,२३,३३-३७; १५:१६,१७; १७:३; रोम. ९:७-१७, २५-२९; १०; ११:८-१०; २६; १५:८-२१; १ कुर. १५:२७; २ कुर. ६:१६-१८; इब्र. १:५-१४; २:६-८; ३:७-१५; ४:१-९; ५:६-१०; ६:१३; ७:१७-२१; ८:८-१३; १०:५-१०,१६-१८; २ पित. १:२१ ।

—योहन बपतिस्मा देनेहारे के विषय में. यश. ४०:३; (मत्ती. ३:३. मार्क. १:३. लूक. ३४.) मल. ४:५. (मत्ती. ११:१४; १७:११; मार्क. ६:१३. लूक. १:१७)।

—ख्रीष्ट प्रभु ने कहीं. मत्ती. १७:१२,२२,२३; २०:१७-१६; २४; मार्क. ६:१.३१; १०:३३,३४; १३:१. लूक. ६:२२,२४; १८:३१-३३; २१; २३:२८-३१. योहन. २:१६-२२; २१:१८,१९; २ पित १:१४।

—कियाफा महायाजक को. योहन. ११:४६,५०।

—आगाब. प्रेरित. ११:२८; २१:११।

—सन्त पावल. प्रेरित. २०:२६,३०; १ तिम. ४:१-३।

—सन्त पितर ने कही. २ पितर. २:१-३,१२; ३:३,४।

—सताये जाने के विषय में. मत्ती. १०:३४-३६; १३:२१; २३; ३४. मार्क. ४:१७; १०:३०. लूक. ११:४६; १२:५३. योहन. १५:१६-२५; १६:२-४,३३; १ थिस. ३:३,४; २ तिम. ३:१२।

—जो पवित्रात्मा की सहायता से कही गईं. लूक. १:७०; १ कर. १२:१०; १ पित १:२१. (प्रकाश. १:१; ११:३।

—का मूल्य. २ पित. १:१६-२१।

भविष्यद्वाणी बोलनेहारियां—

हन्ना—लूक. २:३६. दबोरा—न्यायी. ४:४. हुल्दा—२ राजा. २२:१४. मिरियम—निर्ग. १५:२०. नोअद्याह—नहेम. ६:१४।

भाई— पर क्रोधित होना. मत्ती ५:२२।

भाई की विधवा स्त्री—के विषय में व्यवस्था. व्यवस्था. २५:५. मत्ती २२:२४।

भाईयों—की ओर हमारा कर्त्तव्य. उत्प. १३:८. व्यवस्था. १५:७; २४:१४; भजन. १३३ मत्ती. ५:२२; १८:१५-२१; २५:४०. योहन. १३:३४; १५:१२; रोम. १२:१०; १ कर. ६; ८:१३; गल. ६:१; १ थिस. ४:६; २ थिस. ३:१५; इब्र. १३:१; १ पित. १:२२; ३:८; २ पितर. १:७; १ योहन. २:६; ३:१७।

—प्रभु मसीह के. मत्ती १२:४६; १३:५५; मार्क. ६:३; लूक. ८:१६; योहन. २:१२; ७:३; प्रेरित. १:१४; गल १:१६; १ कर. ९:५।

—मण्डली—

—का संगठन. प्रेरित. १४:२३; १ कर ४:१७; १४:४,५ ।

—का सताया जाना. प्रेरित. ८:३; १२:१; १५:९; गल. १:१३; फिल. ३:६ ।

—के सलाम. प्रेरित. १८:२२. रोम. १६:५; १०:१६; १ कर. १६:१६ ।

—से खीष्ट प्रेम करता है. इफ. ५:२५,२९ ।

—की सभ्यता. १ कर. १४:४,१६,२८,३४ ।

—का रखवाला—उसकी योग्यता. १ तिम. ३ ।

आत्मिक. खीष्ट. १ पित. २:२५ ।

—के सेवक—चुने गये. प्रेरित. ६; फिल. १:१ ।

उनकी योग्यता. प्रेरित. ६:३; १ तिम. ३:८ ।

मण्डलियां—एशिया की सात. प्रकाश. १:४,११,२०; २:७,११,१७, २६; ३:६,१३,२२ ।

मतवाला—होना. नूह का. उत्प. ९:२१—लूत का. उत्प. १९:३३—नाबाल का. १ शम. २५:३६—एलाह का. १ राजा. १६:९—बिनहदद का. १ राजा. २०:१६—बेलशज्जर का. दान. ५:४—करिन्थियों का. १ कर. ११:२१ ।

मतावलंबी—देखो. पर मत ग्राही ।

मददगार—देखो, सहायक ।

मदिरा—नूह ने बनाई. उत्प. ९.२० ।

—इब्राहीम और मलिकिसिदेक ने काम में लगाई. उत्प. १४:१८ ।

—भेंट चढ़ाने में. निर्ग. २९:४०. लैव्य. २३:१३. गिन. १५:५ ।

—प्रभु भोज में. मत्ती. २६:२९ ।

—नजीर नहीं पीते थे. गिन. ६:३. न्यायी. १३:१४ ।

—रैकाबी नहीं छूते थे. यिर्म. ३५ ।

—पानी से बनाई गई. योहन. २ ।

—से प्रेम करना. नीति. २१:१७; २३:२०, ३०; होशे. ४:११; हब. २:५; इफ. ५:१८ ।

—को उचित रीति से काम में लाना. न्यायी. ९:१३; १९:१९; भजन.

—मदिरा—

९१०४:१५; नीति. ३१:६ सभोप. १०:१९; इफ. ५:१८; १ तिम. ५:२३।

—नेशवाली पीना वर्जित है. लैव्य. १०:९ गिन. ६:३; न्यायी. १३:१४ लूक. १:१५।

को काम में लाना. नीति. ३१:६; १ तिम. ५:२३।

की बुराई. यश. ५:११.२२।

हौरा मचानेहारी हैं. नीति. २०:१

—पीनेहारे—उन पर शोक. यश. ५:११; २८:१; योएल. १:५; लूक. २१:३४. रोम. १३:१३; १ कर. ५:११; गल. ५:२१. (१ थिस. ५:७; १ पितर. ४:३)।

का दंड. व्यवस्था. २१:२०. आमोस. ६:७; नहूम. १:१०. मत्ती. २४:४९. लूक. १२:४५; १ कर. ६:१०. गल. ५:२१।

मद्यप—देखो, मतवाला।

मधु—उत्प. ४३:११; १ शम. १४:२५; भजन. १९:१०; सभोप. २४:१३; २५:१६; २७:७; यश. ७:१५. श्रेष्ठ गीत. ४:११; प्रकाश. १०:९।

—होमबलि में काम में न लाया जावे.. लैव्य. २:११।

मध्यस्थ—एक. गल. ३:१९, २०; १ तिम. २:५; इब्र. ८:६; ९:१५।

—यीशु है. इब्र. १२:२४।

मन—परमेश्वर की सेवा में लगा हुआ. मत्ती. २२:३७; मार्क. १२:३०. रोम ७:२५।

—माननेहारा—१ इति. २८:९. नहेम. ४:६; २ कर. ८:१२।

—जुड़ा हुआ. १ कर. १:१०; २ कर. १३:११. फिल. २:२: १ पित. ३:८. (इब्र. ८:१०)

—देखो, हृदय।

मनभाऊ—देखो, अभिलाष, प्रसन्न।

मनभावना—देखो, प्रसन्न।

मान व मन्न—की बाचा. निर्ग. १६:४।

—दिया गया. निर्ग. १६:१४. व्यवस्था. ८:३. नहेम ९:२०. भजन. ७८:४; योहन. ६:३१।

—मन्ना—

—नियम के सन्दूक में रखा गया. निर्ग. १६:३२. इब्र. ९:४ ।

—से इस्राएली कुड़कुड़ाये. गिन. ११:६ ।

—कनान पहुंचते ही बन्द हो गया. यहोशू ५:१२ ।

—गुप्त. प्रकाश. २:१७ ।

मनुष्य—का सृजा जाना. उत्प. १:२६; २:७ ।

—का महत्व उत्प. १:२७; २:२५; सभोप. ७:२९ ।

—का पापी होना. उत्प. ३ ।

—की बुराई. उत्प. ६:५,१२; १ राजा. ८:४६. अय्यूब. १४:१६; १५:१४. भजन; १४:५१. सभोप. ९:३; यश. ४३:२७; ५३:६; यिर्म. ३:२५; १७:९; योहन. ३:१९; रोम. ३:९; ५:१२; ७:१८; गल. ३:१०; ५:१७; याक. १:१३; १ योहन. १:८ ।

—उसकी त्रुटियां. २ इति. २०:१२; मत्ती. ६:२७; रोमी. ९:१६; १ कर. ३:७; २ कर. ३:५ ।

—दुःख पानेहारा है. अय्यूब. ५:७; १४:१; भजन. ३९:४; सभोप. ३:२; प्रेरित. १४:२२; रोम. ८:२२; प्रकाश. ७:१४ ।

—की मूर्खता. अय्यूब. ८:९; ११:१२; २८:१२; नीति. १६:२५; २७:१; सभोप. ८:१७; यश. ५९:१०; १ कर. १:२०; ८:२ (यश. ४७:१०) याक. ४:१४ ।

—का मृत्यु के वश होना. अय्यूब. १४; भजन. ३९; ४९; ६२:९; ७८:३९; ८९:४८; १०३:१४; १४४:४; १४६:३; सभोप. १:४; १२:७; रोमी. ५:१२; इब्र. ९:२७ ।

—के जीवन का व्यर्थ ठहरना. भजन. ४९; सभोप. १; २ ।

—का पूरा कर्त्तव्य. सभोप. १२:१३; मीक. ६:८; १ योहन ३:२३ ।

—का छुटकारा. रोम. ५; १ कर. १५:४९; गल. ३:४; इफ. ३; ५:२५; फिल. ३:२१; कल. १; इब्र. १:२; प्रकाश. ५. ।

—**हत्या**—निर्ग. २१:१३; गिन. ३५:६, २२-२८. व्यवस्था. १९:४-१०. यहोशू २०:१-६ ।

—की पुत्रियां—उनका बिवाह. उत्प. ६:४ ।

—देखो, पुरुष ।

मनुष्य-घाती—देखो, हत्या, घात, बध।

मन्दिर—यिरूशलीम नगर का।

—दाऊद ने बनाने का बिचार किया. २ शम. ७:३; १ इति. १७:२; २८:२।

—दाऊद को बनाने की आज्ञा न मिली. २ शम. ७:५. १ इति. १७:४; २८:३।

—सुलेमान बनावेगा. २ शम. ७:१२; १ इति. १७:११; २८:५।

—दाऊद ने तैयारी की. १ इति २८:११।

—सुलेमान बनाता है. १ राजा. ६; २ इति. ३:४।

बनाते समय हथौड़े का शब्द सुनाई नहीं देता. १ राजा. ६:७।

का भीतरवार सोने से मढ़ा जाना. २ इति. ३:४।

को परमेश्वर को चढ़ाना. १ राजा. ८:९; २ इति. ६:७।

परमेश्वर का तेज भर जाता है. २ इति. ५:१४।

मिस्र का राजा उसे लूटता है. १ राजा. १४:२५; २ इति. १२:९।

योआस राजा बहाल करता. २ राजा. १२:५,१२।

हिजकियाह शुद्ध करता है. २ इति. २९:५।

मनश्शेह अशुद्ध करता. २ इति. ३३:७।

यूशिया मरम्मत करता. २ इति. ३४।

कलदी लोग लूट ले जाते हैं. २ राजा. २५:९; २ इति. २९।

को फिर से बनाने की आज्ञा. एज्रा. ६:३, १२।

फिर से बनाना. एज्रा. ३:८।

पूरा होना. एज्रा. ६:१५,१६।

नहेमया ने शुद्ध किया. नहेम. १३:३०।

लुटेरों का खो बनाया गया. मत्ती. २१:१२; मार्क. ११:१५. लूक. १९:४६।

—प्रभु यीशु शुद्ध करता है. मत्ती. २१:१२; मार्क. ११:१५. लूक. १९: ४५. योहन. २:१४।

—के नष्ट किये जाने के विषय में. मत्ती. २४:२; मार्क. १३:२; लूक. २१:६।

—मन्दिर—

—में ख्रीष्ट उपदेश देता था. लूक. २१:७।

—शिष्य लोग भी जाते रहे. प्रेरित. २:४६।

—पितर और योहन जाते और प्रार्थना करते हैं. प्रेरित. ३:१,१२।

—पावल जाता और पकड़ा जाता है. प्रेरित. २१:२६।

—उदाहरण के रूप में. यहेज. ४०:४४।

—ख्रीष्ट के देह का. योहन. २:२१।

—परमेश्वर का और पवित्रात्मा का।

—ख्रीष्टियान हैं. प्रेरित. ६:१९; १ कर. ३:१६,१७; २ कर. ६:१६; देखो. प्रकाश. ३:१२; ७:१७; १५:८; २१:२२।

—परमेश्वर का भवन है. भजन. ६५:४. सभोप. ५:१; १ तिम. ३:१३; इब्र. १०:२१; १ पितर. ४:१७।

—में सदा रहने की भाग्यमानी. भजन. ५६:४; ८४:१,१००; १०:४ १२२; यश. २:३।

मन्नत—मानना, विशेष नियम. लैव्य. २७; गिन. ६:२; ३०; व्यवस्था. २३:२१; देखो. भजन. ६५:१; ६६:१३; ७६:११; ११६:१८; सभोप. ५:४; मल. १:१४।

—के उदाहरण—याकूब की. उत्प. २८:२०; ३१:१३—इस्राएलियों की. गिन. २१:२—इफाह की. न्यायी. ११:२१-३९—हन्नाह की. १ शम. १:११—अबिशलूम की. २ शम. १५:७,८—पावल की. प्रेरित. १८:१८—यिरूशलीम के चार पुरुषों की. प्रेरित. २१:२३।

मरण—देखो, मृत्यु।

मरन—देखो, मृत्यु।

मरी—आज्ञा उलघन करने का दंड. लैव्य. २६:२५. गिन. १४:१२. व्यवस्था. २८:२१. यिर्म. १४:१२; २७:१३. यहेज. ५:१२; ६:११; ७:१५; मत्ती. २४:७; लूक. २१:११।

—इस्राएलियों पर पड़ी. गिन. १४:३७; १६:४६; २५:९; २ शम. २४:१५; भजन. ७८:५०।

—दूर की गई. गिन. १६:४७; २ शम. २४:१६।

माप—देखो, नाप।

मार डालना—देखो, घात, हिंसा।

मार्ग—ख्रीष्ट है. योहन. १४:६. इब्र. १०:२०।

—दो. व्यवस्था. ११:२६; ३०:१५; यहोशू. २४:१५; १ राजा. १८:२१; भजन. ११९:२९,३०; नीति. ४:१८,१९; १५:९,२४. यिर्म. २१:८; योहन ६:६६-६९।

माल—देखो, धन।

मांस—खाने की आज्ञा. उत्प. ९:३. (देखो, देह, शरीर)।

मिट्टी—देखो, भूमि।

मिथ्याधर्म—लैव्य. १८:२१; २०:१-६. व्यवस्था. १२:३१. न्यायी. १७:१३; १ शम. ४:३,४; २८:७-१४; १ राजा. २०:२३-२५; २ राजा. ३:२७; १७:७-१८; २३:५-१०. सभोप. ५:७; यश. ८:१९; २९:४; ४७:१३. यिर्म. ३२:३५; ४४:१७; यहेज. ८:७-१८; २१:२१-२३; २३:३७,३९. मत्ती. २७:६-८. प्रेरित. १९:१९; २८:४।

मिला हुआ वंश, बीज, वस्त्र—वर्जित है. लैव्य. १९:१९. व्यवस्था. २२:९-११।

मिलाप—देखो, मेल।

मित्र—परमेश्वर का. इब्राहीम कहलाया. २ इति. २०:७; यश. ४१:८; याक. २:२३—का होना उत्तम है. नीति. १८:२४; २७:६.९,१७; योहन १५:१३।

—बुरे से हानि. व्यवस्था. १३:६. नीति. २२:२४; २५:१९. मीका. ७:५. जक. १३:६।

—ख्रीष्ट ने अपने शिष्यों से कहा. लूक. १२:४. योहन. १५:१४; ३ योहन. १४।

मित्रता—दाऊद और योनातन की. १ शम. १८:१; १९; २०; २ शम. १:२६।

—संसार से—वर्जित है. रोम. १२:२; २ कर. ६:१७; याक. ४:४; १ योहन. २:१५।

मुर्दा—अय्यूब ३:१८; १४:१२; भजन. ६:५; ८८:१०; ११५:१७; १४६:४; सभोप. ९:५; १२:७. यशा. ३८:१८।

—का जी उठना. अय्यूब. १९:२६. भजन. ४९:१५. यशा. २६:१९. दान. १२:२,१३; योहन. ५:२५; १ कर. १५:१२।

—एलिया ने जिलाया. १ राजा. १७:१७. इलिशा ने. २ राजा. ४:३२; १३:२१—ख्रीष्ट ने. मत्ती. ९:२४; मार्क. ५:४१. लूक. ७:१२; ८:५४. योहन. ११—पितर ने. प्रेरित. ९:४०—पावल ने. प्रेरित. २०:१०।

—ख्रीष्ट में सो जाते हैं १ थिस. ४:१३।

—देखो, मृत्यु।

मुसाफिर—उदाहरण के रूप में. उत्प. ४७:९; निर्ग. ६:४ भजन. ११९:५४. इब्र. ११:१३; १ पितर. २:११।

मुंह बांधना—बैल का. १ कर. ९:९; १ तिम. ५:१८।

मुंह के बल गिरना—लैव्य. ९:२४; गिन. १४:५; १६:४,२२,४५; २२:३१; यहोशू. ५:१४; ७:६; न्यायी. १३:२७; १ राजा. १८:३९. यहेज. १:२८; ३:२३; ९:८; ११:१३; ४३:३; ४४:४. दान. २:४६. मत्ती २६:३९. लूक. ५:१२; १७:१६. प्रकाश. ११:१६।

मूढ़—देखो, मूर्ख।

मूर्ख—कहता है कि ईश्वर नहीं है. भजन. १४:१; ५३:१।

—को किस प्रकार उत्तर देना चाहिये. नीति. २६:४,५।

—को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है. नीति. १२:१५; २८:२६।

—आप अपनी मूर्खता प्रगट करता है. नीति. १२:२३; १३:१६; १५:२; १८:२; २९:११. सभोप. १०:३।

—शिक्षा को तुच्छ जानता है. भजन. ९४:८. नीति. १:७,२२; १५:५; १८:२।

—दोषी होने को ठट्ठा जानता है. नीति. १४:९।

—को ज्ञान सीखना चाहिये. १ कर. ३:१८।

'मूर्खता—बुराई में है. उत्प. ३४:७; व्यवस्था. २२:२१. यहोशू. ७:१५; न्यायी. १९:२३; २०:६; २ शम. १३:१२ ।

—से बुराई होती है. सभोप. १०:१ ।

—का धर्म के स्थान पर प्रभुता करना. एस्तेर. ३:१-६. नीति. १९:१०; ३०:२२; सभोप. १०:५-७ ।

—उबल आती है. नीति. १५:२. सभोप. १०:१४ ।

—की बातचीत से हाथ उठाओ. इफ. ५:४; १ तिम. ४:७; ६:२०; २ तिम. २:१६; तीत. ३:९. याक. १:२६ ।

मूर्छित—देखो, कातर ।

मूरत—की व्यर्थता. व्यवस्था. ४:२८. भजन. ९६:५; ११५:४-८; १३५:१५-१८; यशा. २:८; ४४:९-२०; ४५:२०; ४६:७. यिर्म. १०:३-१५; हब. २:१८; १ कर. ८:४; १०:१९; १२:२. देखो, व्यर्थता ।

—के आगे चढ़ाया हुआ मांस. प्रेरित. १५:२०,२९; १ कर. ८; १०:२५-३३; (रोमी. १४:१५-२१ को भी देखो) ।

—देखो, देवता ।

मूर्तिपूजा—निर्ग. २०:२; २२:२०; २३:१३. लैव्य. २६:१ व्यवस्था. ४:१५; ५:७; ११:१६; १७:२; १८:९२; ७:१५. भजन ९७:७. यिर्म. २:११; १ कर.१०:७,१४; १ योहन. ५:२१ ।

—की बुराई—१ राजा. १८:२६. भजन. ११५:४; १३५:१५. यशा. ४०:१९; ४१; ४४:९; ४६:१; यिर्म. २:२६; १० ।

—की लाटों को नष्ट करना. निर्ग. २३:२४; ३४:१३; व्यवस्था. ७:५ ।

—इस्राएली मूर्तिपूजा करनेवाले हुए. निर्ग. ३२; गिन. २५; न्यायी. २:११; ३:७; ८:३३; १८:३०; २ राजा. १७:१२. और देखो. न्यायी. १७; १ राजा. ११:५; १२:२८; १६:३१; १८:१९; २ राजा २१:४; २ इति. २८:२ ।

—अन्यदेशियों की. दान. ३; ५; प्रेरित. १४:११; १७:१६; १९:२८ ।

—के विरुद्ध हुए. आसा राजा. १ राजा. १५:१२—यहूसफत. २ इति. १७:६—हिजकिया. २ इति. ३०:१३—यूसिया. २ इति. ३४ ।

—मूर्तिपूजा—

—का दंड—व्यवस्था. १७:२; यिर्म. ८:१; १६:१; ४४:२१; होशे. ८:५; १ इति. ६:६; इफ. ५:५; प्रकाश. १४:६; २१:८; २२:१५।

मूर्तिपूजक—का दंड. लैव्य. २६:३०. व्यवस्था. ४:२५-२८; १७:२-७; २ राजा. २३:२० यशा. १०:११; ४५:१६. यिर्म. ८:१-३; ४४:२०-२८. यहेज. ६:३-१३; २३:४५-४६; १ कुर. ६:६. इफ. ५:५. प्रकाश. २१:८; २२:१५।

—छोड़ दिये जाएं. १ कुर. ५:११।

—जातियां. निर्ग. २३:२६,३०. व्यवस्था. ७:२२।

वर्णन की गई. इफ. २:१२; ४:१८; ५:१२; १ कुर. १:२१।

को सुसमाचार प्रचारा गया. मत्ती. २४:१४; २८:१६. रोमी. १०:१४; १६:२६. गल. १:१६।

का नया मन प्राप्त करना. प्रेरित. १०:३५. रोम. १५:१६।

—देखो, अन्यदेशी।

मेघ—देखो, खम्बा मेघ का।

मेंडक—मिस्र में मरी आई. निर्ग. ८:६. भजन. ७८:४५; १०५:३०—अशुद्ध आत्माएं उनके समान हैं; प्रकाश. १६:१३।

मेम्ना—बलिदान के लिये. उत्प. २२:७. निर्ग. १२:३. लैव्य. ३:७. यशा. १:११।

—देखो, भेड़।

मेल—आराधना और प्रार्थना में. भजन. ३४:३; ५५:१४; १२२; रोम. १५:३०; २ कुर. १:११. इफ. ६:१८. कुल. १:३; ३:१५. इब्रा. १०:२५।

मेल मिलाप—परमेश्वर के संग. यशा. ५३:५; दान. ६:२४; रोम. ५; २ कुर. ५:१६. इफ. २:१६. कुल. १:२०; इब्रा. २:१७।

मेंह—देखो, बारिश।

मैं हूं—निर्ग. ३:१४. योहन. ८:५८. प्रकाश. १:१८।

मैल—देखो, अशुद्ध, अपवित्र।

—मृत्यु—

—दूसरी—प्रकाश. २:११; १९:२०; २०:१४; २१:८ ।

—से त्राण खीष्ट के द्वारा. योहन. ३:१६; ८:५१ ।
पाप से, नये जीवन के द्वारा. याक. ५:२० ।

—खीष्ट की—आगे से बताई गई. यश. ५३: दान. ९:२६; जक. १३:७; (मत्ती. २७:२१). व्यवस्था. २१:२३ (गल. ३:१३). इब्र. २:९; १२:२; १ पित. १:११ ।

—आनन्द से ग्रहण करना. लूक. १२:५०; योहन. १०:११,१८; इब्र. १०:७ ।

—का आशय. यश. ५३. दान. ९:२६. मत्ती. २०:२८; १ कर. ५:७; १ तिम. २:६; तीत. २:१४. इब्र. ९:२६; १ पित. १:१८. प्रकाश. १:५ ।

—धर्मी लोगों की. गिन. २३:१०; २ राजा २२:२०; भजन. २३:४; ४८:१४; ११६:१५. नीति. १४:३२; यश. २६:१९; ५७:१; दान. १२:२; लूक. १६:२५. योहन. ११:११; २ कर. ५:८. फिल १:२१; २ तिम. ४:८; इब्र. ११:१३. प्रकाश. २:१० ।

—के उदाहरण. उत्प. २५:८; ३५:२९; उत्प. ४९; गिन. २०:२३; व्यवस्था. ३४:५. यहोशू. २४:२९; १ राजा. २; २ राजा. १३:१४; प्रेरित. ७:५४; ९:३७ ।

—दुष्टों की. अय्यूब. १८:१; २१:१३; २७:१९; भजन. ३४:१६; ४९:१४; ७३:१९; नीति. १०:७; ११:७; १४:३२; २९:१; यश. १४:९. यहेज. ३:१९; १८:२३; दान. १२:२; लूक. १२:२०; १६:२२. योहन. ८:२१ प्रेरित. १:२५ ।

—के उदाहरण. लैव्य. १०:१,२; गिन. ३:४; १६:३२; १ शम. ४:११; २ शम. १८:९; १ राजा. २२:३४. २ राजा. ९:३३; २ इति. २३:१५; एस्तेर. ७:१२. मत्ती. २७:५ प्रेरित. ५:१८; ५:५; १२:२३ ।

—और जीवन—तुलना. २ कर. ५:१-४; फिल. १:२१-२४ ।

मृदुता—१ कर. ७:२८; फिल. ४:५ ।

य

यत्न—देखो, परिश्रम, काम, कर्म ।

यथार्थ—देखो, न्याय ।

यरूशलीम—का राजा मारा गया. यहोशू. १० ।

की सीमा. यहोशू. १५:८ ।

दाऊद ने वहां राज्य किया. २ शम. ५:६ ।

वहां नियम का सन्दूक लाया गया २ शम. ६ ।

मरी से बचाया गया. २ शम. २४:१६ ।

—में मन्दिर बनाया गया. १ राजा. ५-८; २ इति. १-७ ।

का युद्ध से दुःख पाना. १ राजा. १४:२५; २ राजा. १४:१४; २५; २ इति. १२; २५:२४; ३६; यिर्म. ३९; ५२ ।

का नबूखदनसर से लूटा और नष्ट किया जाना. यिर्म. ५२:१२-१५.

—में बन्धुओं का लौट आना. मन्दिर का बनाया जाना. एज्रा. १-३ नहेम. २ ।

नहेमया ने दोबारा दीवार बनाई. नहेम. १२:३८ ।

में बुराइयां. यहेज. १६:२ ।

—में मसीह को ले जाना. लूक. २:२२ ।

में मसीह बच्चा रह गया. लूक. २:४२ ।

मसीह प्रवेश करता है. मत्ती. २१:१. मार्क. ११:७. लूक. १९:३५. योहन. १२:१४ ।

के लिये खीष्ट विलाप करता है. मत्ती. २३:३७. लूक. १३:३४; १९:४१ ।

के नष्ट किये जाने के विषय में भविष्यद्वाक्य कहता है. मत्ती. २४. मार्क. १३; लूक. १३:३४; १०:२३; १९:४१; २१ ।

—में शिष्य पवित्रात्मा से भर गये. प्रेरित. २:४ ।

—जो ऊपर है. गल. ४:२५ ।

—नया. प्रकाश. २१:२ ।

यश—धर्मियों का. भजन. ३६:८; ३७:११, १८; ७५:१०; ८४:११; ९२:१२; नीति. ३:२. सभोप. ८:१२ ।

—दुष्टों का. अय्यूब. १२:६; २०:५; २१:७. भजन. १७:१०; ३७; ७३:३; ९२:७. सभोप. ८:१४; ९:१; यिर्म. १२ ।

—से हानि. व्यवस्था. ६:१०. नीति. १:३२; ३०:८. लूक. ६:२४; १२:१६; १६:१९; याक. ५:१ ।

यहूदी—इस्राएली पहिले कहलाये. २ राजा. १६:६ ।

—मसीह उन लोगों के पास आया. मत्ती. १५:२४; २१:३७. प्रेरित. ३:२६ ।

—के लिये मसीह का प्रेम. मत्ती. २३:३७; लूक. १९:४१ ।

—लोगों ने मसीह को रद्द किया; मत्ती. ११:२०; १३:१५, ५८; योहन. ५:१६, ३८; ४३. प्रेरित. ६:१३; १३:४६; १ थिस. २:६५ ।

—लोगों को सुसमाचार सुनाया गया. मत्ती. १०:६; लूक. २४:४७; प्रेरित. १:८ ।

—लोगों ने पावल की शिक्षा को रद्द किया. प्रेरित. १३:३६; २८:२४,२६ ।

यहोवा—निर्ग. ६:३; भजन. ८३:१८. यश. १२:२; २६:४ ।

—यिरे—उत्प. २२:१४ ।

—निस्सी. निर्ग. १७:७ ।

—शालोम. न्यायी. ६:२४ ।

—देखो, ईश्वर ।

याजक—लावियों में से—निर्ग. २८:१; लैव्य. ८ ।

—उनका कर्त्तव्य, चढ़ावे और दस्तूर इत्यादि. लैव्य. १; ६; २१; २२; गिन. ३; व्यवस्था. ३१:९. यहोशू. ३; ४; १ राजा. ८:३ ।

—शावल की आज्ञा से मारे गये. १ शम. २२:१७ ।

—जो दाऊद ने चिट्ठी डाल कर बांट दिये. १ इति. २४ ।

—अल्प विश्वासी होने के कारण तुच्छ समझे गये. यिर्म. १:१८; ५:३१; होशे. ५; ६; मीका. ३:११. सपन्या. ३:४; मल. २ ।

—बाल के, मारे गये. १ राजा. १८:४०; २ राजा. १०:१९; ११:१८ ।

—याजक—

—खीष्टियान कहलाये १ पित. २:५; प्रकाश. १:६; ५:१०, २०:६ ।

—प्रधान—निर्ग. २८; ३९; लैव्य. ८:१६ ।

याजकीय पद—मलिक सिदेक का. उत्प. १४:१८. भजन. ११०:४; इब्र. ५:६-१०; ६:२० से ७:२८ ।

—साधारण लोगों का. निर्ग. १९:५,६; यश. ६१:६; ६६:२१; १ पितर. २:५,९; प्रकाश. १:६; ५:१०; २०:६ ।

—के लिये पवित्रताई की आवश्यकता. प्रकाश. २२:२. यश. ५२:११. (निर्ग, २८:३६; ३९:३०) ।

—यहूदियों का—त्राण नहीं दे सकता. इब्र. ७:११-२३ ।

—के लोगों का मारा जाना. १ शम. २२:१७; २ इति. २४:२०-२२. मत्ती. २३:३५ ।

—खीष्ट का. रोम. ८:३४. इब्र. ७:१७; ६; ५; ७; १ योहन. २:१ ।

यादगार—देखो, स्मारक ।

यात्रा—उदाहरण के रूप में. उत्प. ४७:९; निर्ग. ६:४. भजन. ११९:५४. इब्र. ११:१३; १ पित. २:११ ।

यात्री—देखो, मुसाफिर ।

यिहूदी—देखो यहूदी ।

यीशु—देखो, खीष्ट ।

युद्ध—की विधि. व्यवस्था. २०:१; २३:९; २४:५ ।

—में कौन न जाये. निर्ग. २०:५-७ ।

—परमेश्वर के बड़े दिन का. प्रकाश. १६:१४ ।

—इस्राएलियों के उत्प.१४; निर्ग. १७; गिन. ३१; यहोशू. ८; १०; न्यायी ४; ७; ११; १८; २०; १ शम. ४; ११; १४; १७; ३१; २ शम. २: १०; १८; २१:१५; १ राजा. २०; २२; २ राजा. ३; १ इति. १८ से २०; २ इति. १३; १४:९; २०; २५ ।

—के यन्त्र—२ इति. २६:१५. यहेज. २६:९ ।

यूनानी—लोगों के विषय में भविष्यद्वाक्य. दान. ८:२१; १०:२०; ११:२; जक. ९:१३ ।

—यूनानी—

—यीशु को देखना चाहते हैं. योहन. १२:२० ।

—प्रभु यीशु पर बिश्वास करते हैं प्रेरित. ११:१२; १७:४ ।

योद्धा—उन को चितावनी. लूक. ३:१४ ।

—ख्रीष्ट को क्रूश पर चढ़ाते हैं. योहन. १९:२,२३,३२ ।

—रक्षक का कार्य करते हैं. मत्ती. २७:६६; २८:४, १२ प्रेरित १२:४; २३:१०; २८:४२ ।

र

रचना—कपड़े का. उत्प. ३:२१ ।

—भाषा. उत्प. २:१९.२३ ।

—गायन विद्या. उत्प. ४:२१ ।

—धात का काम. उत्प. ४:२२ ।

—मदिरा. उत्प. ९:२० ।

रथ—आग का २ राजा. २:११ ।

—युद्ध का. निर्ग. १४:७: १ शम १३:५: २ शम. १०:१८; भजन. २०:७. नहैम. ३:२ ।

—जो शूर के राजा ने भेजे. २ राजा ६:१४ ।

—आग के जो इलिशा की रक्षा को भेजे गये. २ राजा ६:१७ ।

—परमेश्वर का. भजन. ६८:१७ ।

रद्द करना—शावल को. १ शम. १३:१४: १५:२३, २९; १६:१; २८:१५-१८ ।

—इस्राएल को. २ राजा. १७:६-२३; १ इति. ५:२५,२६ ।

—यहूदा को. २ राजा. २५; २ इति. ३६:११-२१. यिर्म. ५२; ७:२९ भी ।

—परमेश्वर को. यिर्म ६:७, ७:२१-२४; ११:१९-२१; २२:३-७; २५:३-७; २६:२-११,२३; २९:१९; ३४:८-११. यहेज. २०:८. होशे. ४:६; प्रेरित. ७:२-५३ ।

—रद्द करना—

—ख्रीष्ट को. मत्ती. ११:१६-२४. २१:२३,३३-४६; २२:१-८; २०:२०-२५. मार्क. १२:१-१२; १५:११-१५; लूक. ७:२६-३४; २०:६-१८; २३:२३. योहन. १:११; ३:३२; ५:४०-४७; ६:६६; ७:७,४८; ८:३७-५९; ९:२९; १०:२६-३६; ११:५३,५७; १५:१८-२५; १६:३; १८:३०-३२,३५,४०; १९:६-१५; प्रेरित. २:३६; ३:१४,१५; ४:१८; ५:१७,२८,३३,४०; १३:२७-३०,४५; १८:६; १९:९; २८:२४-२७; रोमी. १०:१६-२१; १२:११-१५; १ थिस. २:१५-१६।

—की हानि. योहन. १२:४८. इब्र. २:३,४; ३:१७; १०:२८-२९; १२:२५।

रक्षा—परमेश्वर अपने लोगों की करता है. अय्यूब. २२:२५; भजन. ५:११; ७:१०; ३१:२; ५९:९; ८९:१८; ९१:१० १५; १२१:३-८; १२५:२. नीति. १६:९।

—पावल की. प्रेरित २२ से २६।

राख—से मनुष्य की तुलना की गई. उत्प. १८:२७. अय्यूब. ३०:१९।

—शोक के समय ऊपर डाली जाती थी. २ शम. १३:१९; एस्तेर. ४:१; अय्यूब. २:८; ४२:६; यश. ५८:५. योना. ३:६. मत्ती. ११:२१।

राजकुमार—शान्ति का. यश. ९:६।

—जीवन का. प्रेरित. ३:१५।

—इस जगत का. योहन. १२:३१; १४:३०; १६:११।

—हवा के अधिकार का. इफ. २:२।

—भूतों का. ख्रीष्ट के आश्चर्यकर्म उसकी सहायता से किये गये हैं करके कहा. मत्ती. ९:३४; १२:२४. मार्क. ३:२२. लूक. ११:१५।

—देखो, प्रधान।

राजगिरि—मन्दिर की. १ राजा. ६; ७:१३-५१; २ इति. ३; ४।

—सुलेमान के भवन की. १ राजा ७:१-१२; २ इति. ९:१७-१९।

—येहेजकेल के दर्शन के मन्दिर की. यहेज. ४०; ४१; ४२:१-१२, ४६:१९-२४।

राजश्री—अधिकार. १ शम. ८:११-१८; १२:२५; २ शम. २३:३. भजन. १०१; नीति. १६:१३,१५; १९:१२; २०:२,८,२६,२८; २५:५; २८:१५; २९:४,१४; सभोप १०:१६,१७।

राजा—इस्राएलियों का मांगना. १ शम. ८:५।

—परमेश्वर से चुना गया व्यवस्था. १७:१४; १ शम. ९:१७; १६:१; १ राजा. ११:३५; १९:१५. १ इति. २८:४. दान. २:२१।

—को चितावनी. भजन. २:१० नीति ३१:४।

—का कर्त्तव्य. नीति. २५:२; यश. ४९:२३।

—का आदर. नीति. २४:२१; २५:६. सभोप. ८:२; १०:२०. मत्ती. २२:२१; रोम. १३; १ पितर. २:१३,१७।

—के लिये प्रार्थना. १ तिम. २:१।

—और उसके सेवकों का दृष्टान्त. मत्ती. १८:२३।

—और उसके नेवतेहारियों का दृष्टान्त. मत्ती. २२:२।

राजाओं का राजा—भजन. २:६; १०:१६; २४:७; ११०; जक. ९:९; लूक. २३:२; १ तिम. १:१७; ६:१५. प्रकाश. १५:३; १७:१४।

राजीनामा—उचित और अनुचित. २ राजा. ५:१८; १७:३३-४१. प्रेरित. १६:१-३; २१:२०-२६. गल. २:३।

राज्य—ईश्वर का. १ इति. २९:११; भजन. २२:२८; ४५:६; १४५:११; यश. २४:२३; दान. २:४४।

—खीष्ट का. यश. २; ४; ९; ११; ३२; ३५; ५२; ६१; ६६; मत्ती. १६:२८; २६:२९. योहन. १८:३६. २ पितर. १:११।

—स्वर्ग का. मत्ती. ३:२; ८:११; ११:११; १३:११।

में कौन प्रवेश करेगा. मत्ती. ५:३; ७:२१; लूक. ९:६२; योहन. ३:३; प्रेरित. १४:२२; रोम. १४:१७; १ कर. ६:९; १५:५०; २ थिस. १:५।

—के दृष्टान्त. मत्ती. १३; २४।

रात—उत्प. १:५; भजन. १९:२।

—उदाहरण के रूप में. योहन. ९:४. रोम. १३:१२; १ थिस. ५:५।

—स्वर्ग में न होगी. प्रकाश. २१:२५ (यश. ६:२०)।

रानी—स्वर्ग की, उसके लिये धूप जलाना. यिर्म. ४४:१७,२५ ।

रास्ता—देखो, मार्ग ।

रीति—देखो, व्यवहार ।

रूप—दिखावे का, परमेश्वर को पसंद नहीं है. १ शम. १६:७ ।

—मनुष्य बहुत विचार करता है. १ शम. १६:७; २ कर. १०:७ ।

—बुराई का, छोड़ देना चाहिये. रोम. १२:१७; १ कर. १६:३,४; २ कर. ८:२१; १ थिस. ५:२२; १ पितर. २:१२ ।

—बदलना—खीष्ट का. मत्ती. १७; मार्क. ९:२; लूक. ९:२९; योहन. १:१४; २ पितर. १:१६ ।

रोग—जो मनुष्य और पशुओं पर परमेश्वर की ओर से भेजे गये. निर्ग. ९:३-१२; १५:२६; गिन. १२:१०. व्यवस्था. ७:१५; २४:९; २८:२७, ३५,६०; १ शम. ५:६; २ राजा. ५:२७; १५:५; २ इति. २१:१४,१५; २६:१८-२१. अय्यूब. २:७. भजन. ७८:५० ।

रोगी—याक. ५:१४,१५ ।

—होना. दाऊद के पुत्र का. याक. ५:१४,१५; १२:१५-२३. यरूबिआम के पुत्र का. १ राजा. १४:१-१८. सारपत की विधवा के पुत्र का. १ राजा. १७:१७. अहज्या का. २ राजा. १ शुनेमत के पुत्र का. २ राजा. ४:१८-२०. बिनहदद का. २ राजा. ८:७-१५. हिजकियाह का. २ राजा. २०:१-११. २ इति. ३२:२४. यश. ३८. लाजर का. योहन. ११:१. इपाफ्रादीत का. फिल. २:२६,२७ । त्रोफीम का. २ तिम. ४:२० ।

—होने से परमेश्वर हमें बचा सकता है. भजन. ४१:३ ।

रोगियों को देखना—मत्ती. २५:३६.४३ ।

रोटी—आदम को कमानी पड़ी. उत्प. ३:१९ ।

—स्वर्ग से बरसी. निर्ग. १६:४ ।

—आश्चर्यकर्म द्वारा पहुंचाई गई. २ राजा. ४:४२ योहन. ६ ।

—परमेश्वर के आगे चढ़ाई गई. निर्ग. २०:३०. लैव्य. ८:२६; २४:५ ।

—पवित्र. दाऊद ने खाई. १ शम. २१:४ ।

—रोटी—

—प्रभु भोज में. लूक. २२:१६; २४:३०; प्रेरित. २:४२; २०:७; १ कर. १०:१६; ११:२३।

—बे खमीरी. उत्प. १६:३. निर्ग. १२:८; १ शम. २८:२४; १ राजा. २३:६।

—उदाहरण के रूप में. १ कर. ५:८।

रोना—भजन. ६:८; ३०:५; योएल २:१२; मत्ती. ८:१२; २२:१३; लूक. ६:२१; ७:३८; रोम. १२:१५; १ कर. ७:३०; फिल. ३:१८; प्रकाश. १८:१५।

—उनके लिये जो चले गये. उत्प. २३:२; २ शम. १:२४; सभोप. १२:४; यिर्म. ६:१७; २२:१०; यहेज. २४:१६; आमोस. ५:१६. मार्क. ५:३६; योहन. ११:३५; २०:१३; १ थिस. ४:१३।

—स्वर्ग में न होगा. प्रकाश. २१:४।

—देखो, विलाप, शोक, धूम मचाना।

रोनेहारे—देखो, धूम मचानेहारे।

ल

लंगड़ा—देखो, लङ्गड़ा।

लगा रहना—मत्ती. २४:१३. मार्क. १३:१३. लूक. ९:६२. प्रेरित. १३:४३; कर. १५:१८; १६:१३. इफ. ६:१८. कल. १:२३; २ थिस. ३:१३; १ तिम. ६:१४. इब्र. ३:६,१३; १०:२३,३८; २ पितर. ३:१७. प्रकाश. २:१०,९५।

लङ्गड़ा—याजक नहीं हो सकता था. लैव्य. २१:१८।

—पशु बलिदान के योग्य न था. व्यवस्था. १५:२१. मल. १:८,१३।

—यीशु ने चंगा किया. मत्ती. ११:५; २१:१४; लूक. ७:२२।

—प्रेरितों ने चंगा किया. प्रेरित. ३:८:७।

लज्जा—देखो, लाज।

लटकाना—दण्ड के लिये. उत्प. ४०:२२. गिन. २५:४; एस्तेर. ७:१०; ९:१४।

—लटकाया हुआ मनुष्य स्रापित है. व्यवस्था. २१:२२; गल. ३:१३।

लड़के—देखो, बच्चे।

लड़ाई—देखो, युद्ध।

ललकार—१ शम. १७।

लवना—देखो, कटनी।

लाचारी—पौवल की. २ कर. ६:४; १२:१०।

लाज—उत्प. २:२५; ३:१०. निर्ग. ३२:२५. देखो. नीति. ३:३५; ११:२; १३:५. यहेज. १६:६३. रोम. ६:२१।

—परमेश्वर के बैरियों को. भजन. ४०:१४; १०९:२९. यहेज. ७:१८. दान. १२:२।

—आशा उसे तोड़ती है. रोम. ५:५।

—देखो, निन्दा।

लाठी—देखो, छड़ी।

लालच—देखो, लोभ।

लालसा—देखो, प्रीत, इच्छा, अभिलाष।

लुचपन—का मूल. मार्क. ७:२१. गल. ५:१९।

—डांटा गया. २ कर. १२:२१. इफ. ४:१९; १ पितर. ४:३. यहूदा. ४।

लुतरा—पन, वर्जित है. भजन. १५:३. नीति. २५:२३. रोम. १:३०; २ कर. १२:२०. देखो, चुगली।

लूट—बांटना. गिन. ३०:२७. व्यवस्था. १३:१६; २०:१४।

—यरीहो नगर की. यहोशू. ६:१८,१९।

लूटनेहारे—इस्राएल के. न्यायी. २:१४; ६:२-६,११; १ शम. १४:१७; २ राजा. १७:२०।

लेपालक—परमेश्वर के पुत्रों का. योहन. १:१२; २०:१७, रोम. ८:१४; २ कर. ६:१८. गल. ४; इफ. १:५; इब्र. २:१०; १२:५. याक. १:१८; योहन. ३:१।

अन्यदेशियों का. यश. ६६:१६. होशे. २:२३. प्रेरित. १५:३. रोम. ८:१५,२३; ६:२४. गल. ४:५. इफ. १:५; २; ३; कल. १:२७।

लोण—लैव्य. २:१६; मार्क. ६:४६।

—लूत की पत्नी बन गई. उत्प. १६:२६।

—पृथिवी के. मत्ती. ५:१३ (लूक. १४:३४. कल. ४:६)।

—सागर. उत्प. १४:३; गिन. ३४:३,१२; व्यवस्था. ३:१७; यहोशू. ३:१६; १२:३; १५:१,२।

लोभ—वर्णन. भजन. १०:३. नीति. २१;२६. सभोप. ४:८; ५:१०. यहेज. ३३:३१. हब. २; मार्क. ७:२२; इफ. ५:५; १ तिम. ६:१०; २ पित. २:१४।

—वर्जित है. निर्ग. २०:१७. लूक. १२:१५. रोम. १३:६।

—के बुरे फल. नीति. १:१८; १५:२७; २८:२०; यहेज. २२:१३; १ तिम. ६:६।

—का दण्ड. अय्यूब. २०:१५; यश. ५:८; ५७:१७; यिर्म. ६:१२; २२:१७. मीका. २:१ हब. २:६; १ कर; ५:१०; ६:१०. इफ. ५:५. कल. ३:५।

—करनेहारों के उदाहरण. उत्प. ३१:४१. गिन. २२:२१ (२ पित. २:१५; यहूदा. ११). यहोशू. ७:२१; १ शम. १५:६; १ राजा. २१; २ राजा. २१; २ राजा. ५:२०. मत्ती. २६:१४. प्रेरित. ५; २४:२६।

लोमड़ी—श्रेष्ठ गीत. २:१५. विलाप. ५:१८. मत्ती. ८:२०. लूक. १३:३२। समसून ने बदला लिया. न्यायी. १५:४।

लोहा—२ शम. २३:७; अय्यूब. २८:२. नीति. २७:१७. यश. ४५:२. यहेज. २७:१२. दान. २:३३-४०।

—की कलम. अय्यूब. १६:२४।

—की छड़ी. भजन. २:६. प्रकाश. २:२७।

लोहार—१ शम. १३:१६; २ राजा. २४:१४. यिर्म. २४:१।

लोहू—खाना वर्जित है. उत्प. ६:४. लैव्य. ३:१७; १७:१०,१२,१३. व्यवस्था. १२:१६,२४. १ शम. १४.३२,३३।

—लोहू—

—पानी बनाया गया. निर्ग. ४:३०; दण्ड था. निर्ग. ७:१७. प्रकाश. ८:८; ११:६।

—के विषय में व्यवस्था. लैव्य. ७:२६; १७:२६. व्यवस्था. १२:१६. यहेज. ३३:२५. प्रेरित. १५:२०. (१ शम. १४:३२)।

—बहाना—मनुष्य का, वर्जित है. उत्प. ९:५,६; व्यवस्था. २१:१,९. भजन. १०६:३८. नीति. ६:१६,१७; यश. ५९:३. यिर्म. २२:१७. यहेज. २२:४. मत्ती. २७:६।

—उचित बलिदानों का. निर्ग. २३:१८; २९:१२; ३०:१०; ३४:२५; लैव्य. ४:७; १७:११. इब्र. ९:१३,१९-२२; १०:४।

—वाचा का. निर्ग. २४:८. जक. ९:११. इब्र. १०:२९; १३:२०।

—ख्रीष्ट का. १ कर. १०:१६. इफ. २:१३. इब्र. ९:१४. १ पित. १:१९; १ योहन. १:७. से निस्तार. इब्र. ९:१२; १३:१२. प्रकाश. १:५।

—प्रभु भोज में. मत्ती. २६:२८. मार्क. १४:२४. लूक. २२:२०; १ कर. ११:२५।

—से त्राण. इफ. १:७; कल. १:२०; इब्र. १०:१९; १९:२४; १ पित. १:२; १ योहन. १:७. प्रकाश. १:५; ५:९; १२:११।

—उदाहरण के रूप में. निर्ग. १२:१३; २९:१६; ३०:१०; लैव्य. १:५; ४; १६:१५. इब्र. ९:७।

लौकिक—वस्तुओं से आत्मिक भली हैं. यिर्म. ४४:१७. होशे. २:१२; ९:१; १ योहन. ५:४४; १२:४३।

लौंडी—का बिवाह अपने पति से करना. उत्प. १६:२; ३०:४,९।

व

वारिस—ख्रीष्टियान है. वर्त्तमान में. प्रेरित. २६:१८. रोम. ८:१७. गल. ३:१८; ४:७ ३०. इफ. १:११,१८. कल. १:१२; ३:२४. तीत. ३:७. याक. २:५. १ पित. १:४।

—भविष्य में. प्रेरित. २०:३२; इफ. १:१४. इब्र. ९:१५।

—वारिस—

कौन न होने पावेंगे. गल. ५:२१. इफ. ५:५. देखो. प्रकाश २२:१५ ।

विवेक—देखो, हृदय, मन ।

वृक्ष—देखो, पेड़ ।

श

शक्ति—का मूल परमेश्वर है. भजन. २७:१; २९:११; ६८:३५; ७३:२६; १३८:३. यश. २५:४; ४०:२९,३१. दान. २:३७. योएल. ३:१६ ।

—का मूल ख्रीष्ट है. मत्ती. २८:१८. कल. २:१०; २ पित. १:३ ।

—ख्रीष्ट पर विश्वास से भी मिलती है. मत्ती. ९:६; १०:१; मार्क. ३:१५; लूक. ९:१; १०:१९; २४४९. योहन. १:१२. प्रेरित. ३:१२; ४:७; ६:८; ८:१९. रोम. १:१६; १ कर. १:१८; २:४,५; २ कर. ४:७; १२:९; १३:१०; इफ. ३:२०. फिल. ३:१०; २ तिम. १:७. इब्र. ७:१६ ।

—आत्मा के द्वारा. प्रेरित. १:८. रोम. १५:१३,१९ ।

शक्तियां—अनदेखे जगत की. मत्ती. २४:२९. रोम. ८:३८. इफ. ३:१०; ६:१२. कल. २:१५; १ पित. ३:२२ ।

—संसार की. उनके आधीन होना उचित है. रोम. १३:३. तीत. ३:१; १ पित. २:१३-१५ ।

शतपति—बहुधा अच्छे पुरुष थे. मत्ती. ८:८-१०; २७:५४. मार्क. १५:३९. लूक. ७:१-९; २३:४७. प्रेरित. १०:१-३५ ।

—क्रूश के आगे ख्रीष्ट को ग्रहण करता है. मत्ती. २७:५४ ।

शब्द—परमेश्वर का. व्यवस्था देता है. निर्ग. १९:१९; २०:१. भजन. ८१:७ ।

—का पराक्रम और बल. अय्यूब. ३७:४; ४०:९. भजन. १८:१३; ४६:६; ६८:३३. योएल. २:११ ।

एलियाह ने सुना. १ राजा. १९:१२ ।

यहेजकेल ने. यहेज. १:२४; १०:५ ।

—शब्द—

ख्रीष्ट ने बपतिस्मा के समय. मत्ती. ३:१७. मार्क. १:१०. लूक. ३:२२; ख्रीष्ट के रूप बदलते समय. शिष्यों ने. मत्ती. १७:५; मार्क. ९:७; लूक. ९:३५; २ पितर. १:१८।

पावल ने. प्रेरित. ९:७।

योहन. ने. प्रकाश. १:१०।

ख्रीष्ट के लोग सुनते हैं. योहन. १०:३,१६,२७।

मृतक, ख्रीष्ट का सुनेंगे. योहन. ५:२५,२८।

शरण—परमेश्वर की ओर से. व्यवस्था. ३३:२७; २ शम. २२:३; भजन. ९:९; ४६:१; ४८:३. इब्र. ६:१८।

—के नगर. गिन. ३५; व्यवस्था. ४:४१; १९. यहोशू. २०।

—देखो, आशा, भरोसा।

शरीर—देखो, देह, मांस।

—आत्मा के विरुद्ध इच्छा करता है. रोम. ७:५; ८:१. गल. ३:३; ५:१७; ६:८।

—की इच्छा, मृत्युजनक है. २ कर. ७:१. गल. ५:१६; ६:८. कल. २:११; १ पितर. ४:२; १ योहन. २:१६।

शत्रु—के संग व्यवहार. निर्ग. २३:४; १ शम. २४-१०. अय्यूब. ३१:२९. नीति. २४:१७; २५:२१; मत्ती. ५:४४. लूक. ६:३५।

—दाऊद और शाऊल. १ शम. २४:१०; २६:९।

—से परमेश्वर छुड़ाता है. १ शम. १२:११; एज्रा. ८:३१. भजन. १८:४८; ५९; ६१:३।

—परमेश्वर के. उनका दण्ड. निर्ग. १५:६. व्यवस्था. ३२:४१. न्यायी. ५:३१; एस्तेर. ७,८; भजन. ६८:१; ९२:९; यश. १:२४; ३०:३६; २ थिस. १:८; प्रकाश. २१:८।

—देखो, बैरी।

शत्रुता—परमेश्वर और मनुष्य के मध्य में. रोम. ८:७. याक. ४:४।

क्योंकर मिटाई गई. इफ. २:१५; कल. १:२०।

शान्ति—१ थिस. ४:१८; ५:११; फिल. २:१ ।

—परमेश्वर से पाने की आशा रखो. एज्रा. ६:१०. यिर्म. २९:७; १ तिम. २:२ ।

परमेश्वर से दी जाती है. लैव्य. २६:६; १ राजा. २:३३; ४:२४; २ राजा २०:१९. नीति १६:७; यश. ४५:७. यिर्म. १४:१३ ।

—पाने के विषय में शिक्षा. भजन ३४:१४. मत्ती. ५:९. रोम. १२:१८; १४:१९; १ कर. ७:१५. इफ. ४:३; १ थिस. ५:१३; २ तिम. २:२२; याक. ३:१८; १ पितर. ३:११ ।

—आत्मिक. परमेश्वर का दान है. (योहन. १४:२७). प्रेरित. १०:३६; रोम. १:७; ५:१; ८:६; १४:१७; फिल. ४:७. कल. ३:१५; १ थिस. ५:२३; २ थिस. ३:१६. प्रकाश. १:४ ।

अन्यदेशियों के लिये. जक. ९:१०. इफ. २:१४,१७; ३ ।

आत्मा के द्वारा. गल. ५:२२ ।

दुष्टों को नहीं मिलती. २ राजा. ९:३१. यश. ४८:४२; ५९:८; (रोम. ३:१७). यिर्म. १२:१२. यहेज. ७:२५ ।

किस को मिलेगी. भजन. २९:११; ८५:८; १२२:६; १२५:५; १२८:६; १४७:१४. योहन. १४:२७. गल. ६:१६. इफ. ६:२३ ।

पृथिवी पर. लूक २:१४ ।

स्वर्ग पर. लूक. १९:३८ ।

—का राजा. इब्र. ७:२ ।

—स्रोत. यश. ९:६ ।

—दाता—योहन. १४:२६; १५:२६; १६:७ ।

—देखो—मेल ।

शारीरिक—मन स्थापित है. रोम. ८:७; १ कर. ३:१; कल. २:१८ ।

शिक्षक—उदाहरण के रूप में. गल. ३:२४ ।

—यहूदा में ठहराये गये. २ इति. १७:७; एज्रा. ७:१० ।

—मसीही (बिशप, डीकन) प्रेरित. १३:१. रोम. १२:७; १ कर. १२:२८. इफ. ४:११. कल. १:२; ३:१६; १ तिम. ३; तीत. १:५ ।

आदर योग्य है. १ कर. ९:९; गल. ६:६; तिम. ५:१७ ।

—शिक्षक—

—झूठे, बताये गये. यिर्म. ५:१३; ६:१३. यहेज. १४:६; २२:२५. होशे. ६:७. मीका. २:११; ३:११; सपन्या. ३:४; मत्ती. २४:४; प्रेरित. १६:६; २०:२६; २ कर. ११:१३; १ तिम. १:६; ४:१; ६:३; २ तिम. ३:८; तीत. १:११; २ पितर. २; यहूदा ४; प्रकाश. २:१४,२०;

की शिक्षा ग्रहण न की जाय. व्यवस्था. १३:१; मत्ती. २४:५; कल. २:८; १ तिम. १:४; ४:१; इब्र. १३:६; २ पित. २; १ योहन. ४:१; २ योहन. १०; प्रकाश. २:१४।

क्योंकर जाने जावें. यश. ८:२०; रोम. १६:१७; तीत. ३:१०; १ योहन. ५:२,३; २ योहन. १०।

उनका अन्त. व्यवस्था. १३:१; १८:२०; यश ८:२०; ९:१५; यिर्म. २८:१५; यहेज. १३:९; १४:१०; मीका. ३:६. गल. १:८; २ तिम. ३:६; २ पितर. २:१; यहूदा. ४:१०,१६।

शिक्षा—परमेश्वर की ओर से. भजन. ७१:१७; यश. ५४:१३; यिर्म. ३१:३४; योहन. ६:४५; गल. १:१२; इफ. ४:२१; १ थिस. ४:६; १ योहन. २:२७।

—ख्रीष्ट की. मत्ती. ५; ७:२६।

—झूठी. यिर्म. १०:८; मत्ती. १५:६; १६:१२; इफ. ४:१४; २ थिस. २:११; १ तिम. ४:१; २ तिम. ४:३; इब्र. १३:६. प्रकाश. २:१४।

न मानी जाय. यिर्म. २३:१६; २६:८; कल. २:८; १ तिम. १:४; ६:२७।

—ख्रीष्ट की. मत्ती. ७:२८,२६. मार्क. ४:२; योहन. ७:१६; प्रेरित. २:२४; १ तिम. ३:१६; ६:३; २ तिम. ३:१६. तीत. १:१. इब्र. ६:१; २ योहन. ९।

को मानना. रोम. ६:१७।

के विरुद्ध न सिखाना. १ तिम. ९:१,३; तीत. २:७,१०; २ योहन. १०।

के सिवा कोई दूसरी न सिखाई जावे. १ तिम. १:३; ४:६,१३।

—देखो, प्रचार।

शिष्य—**खीष्ट के।**

सत्तर जो प्रचार करने भेजे गये. लूक. १० ।

उनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं. लूक. १०:२० ।

—मंडली में ३००० शामिल हुए. प्रेरित. २:४१ ।

५००० विश्वासी. प्रेरित. ४:४ ।

पीछे खीष्टियान कहलाए. प्रेरित. ११:२६ ।

—योहन के. खीष्ट के विषय में पूजते हैं. मत्ती. ६:१४; ११:२ ।

खीष्ट के पीछे चलते हैं. योहन. १:३७ ।

शुद्ध किये जाने के विषय में झगड़ा करते हैं. योहन. ३:२५ ।

पावल उन्हें पवित्रात्मा का बपतिस्मा पाने के विषय में कहता है. प्रेरित. १९:१ ।

शुद्ध—और अशुद्ध पशु—लैव्य. ११; २०:२५. व्यवस्था. १४:४-२०. देखो. प्रेरित. १०:९-१५ ।

—मन, परमेश्वर चाहता है. अय्यूब. ११:१४-२०; ३१:१,९-११. भजन. १५; २४:३-६; ११९:१,९. नीति. ४:२३; २२:११. यश. ३३:१५-१७; मत्ती. ५:८,२८-३०; १५:११-२२. मार्क. ७:१५-२३; इफ. ५:१-५; फिल. ४:८. कल. ३:५; १ तिम. ५:२२. याक. १:२७; ४:८; २ पित. ३:१४; १ योहन. ३:३; ५:१८. प्रकाश. २१:२७ ।

—परमेश्वर का बचन है. भजन. १२:६; १८:३०; १९:८,९; ११९:१४०; नीति. ३०:५ ।

—देखो, पवित्रता ।

शुद्धता—अपने देह की. उत्प. ३५:२. निर्ग. १९:१०,१४. लैव्य. ११:२५; १५:५; १७:१५; व्यवस्था. २३:१४ ।

शुद्ध करना—खीष्टीय धर्म के द्वारा. मत्ती. ५:१३-१६; १३:२३. मार्क. ९:५०; लूक. १३:२१; १४:३४; १ कर. ५:६-८. इफ. ४:२९. फिल. २:१५. कल. ४:६ ।

शूरवीर—उत्प. ६:४. गिन. १३:३३ ।

कनान देश में रहते थे. २:१०,११,१९,२०; ६:२ ।

भेदिये उनसे घबरा गये. गिन. १३:३३; व्यवस्था १:२८ ।

—शूरवीर—

कितने दाऊद और उसके संगियों से नष्ट किये गये. १ शम. १७; २ शम. २१:१६; १ इति. २०:४ ।

शेकल—उत्प. २३:१५; निर्ग. ३०:१३. यहोशू. ७:२१; २ शम. १४:२६; १ राजा. १०:१६. नहेम. ५:१५; यिर्म. ३२:६. यहेज. ४:१० ।

शेर—शमशून ने मारा. न्यायी. १४:५ ।

दाऊद ने मारा. १ शम. १०:३४ ।

के मध्य में दानिएल डाला गया. दान. ६:१८ ।

भविष्यद्वक्ता मारे गये. १ राजा. १३:२४; २०:३६ ।

जवान का दृष्टान्त. यहेज. १९ ।

शैतान की तुलना की गई. १ पितर. ५:८ (भजन १०:९) ।

उदाहरण के रूप में. उत्प. ४९:९ (प्रकाश. ५:५). गिन. २४:९; २ शम. १७:१७. अय्यूब. ४:१० ।

—का दर्शन. यहेज. १:१०; १०:१४; दान. ७:४. प्रकाश. ४:७ ।

शेष—देखो, बचा हुआ ।

शोक—भजन. ११९:८ ।

हंसी के समय अनुचित है. नीति. १४:१३ ।

कपटियों के समान ठीक नहीं. मत्ती. ६:१६ ।

संसार को छोड़ने का. मत्ती. १९:२२ ।

अपने भोजन से दूसरे को शोकित करना. रोमी. १४:१५ ।

ख्रीष्टियान नहीं करते. २ कर. ६:१०; १ पितर. ६:१० ।

शैतान—१ इति. २१:१; अय्यूब. १:६; २:१. भजन. १०८:६. जक. ३:१; मत्ती. १२:२६. लूक. १०:१८. योहन. १३:२७ ।

परमेश्वर और मनुष्य का बैरी है. १ पितर. ५:८ ।

दुष्टों का राजा. मत्ती. १२:२४ ।

हवा की शक्तियों का. इफ. २:२ ।

इस जगत का. योहन. १४:३० ।

आरंभ से ही पापी है. १ योहन. ३:८ ।

स्वर्ग से गिराया गया. लूक. १०:१८ ।

नरक में फेंका गया. २ पितर. २:४; यहूदा. ६ ।

सांप बन कर उसने मनुष्य को गिराया. उत्प. ३:१ ।

हव्वा से झूठ बोला. उत्प. ३:४ ।

स्रापित ठहरा. उत्प. ३:१४ ।

परमेश्वर के आगे खड़ा हुआ. अय्यूब. १:६; २:१ ।

—अबद्दून व अपोलियोन कहलाता है. प्रकाश. ९:११ ।

बालजिबूल. मत्ती. १२:२४ ।

बेलिआल. २ कर. ६:१५ ।

—ने खीष्ट की परीक्षा की. मत्ती. ४:३-१०. मार्क. १:१३. लूक. ४:२ ।

हव्वा की. उत्प. ३. दाऊद की. १ इति. २१:१. अय्यूब. २:७ ।

ने शिष्यों को ठगना चाहा. लूक. २२:३१ ।

यहोशू से लड़ा. जक. ३ ।

को खीष्ट ने लताड़ा. मत्ती. ४:१०. लूक ४:८,१२ ।

यहूदा में पैठा. लूक. २२:३. योहन. १३:२ ।

हनानिया में. प्रेरित. ५:३ ।

—इस जगत का प्रभु और राजा होकर :—

परमेश्वर के बचन से बहकाता है. मत्ती. ४:६ ।

परमेश्वर के कामों को उलटाता है. जक. ३:१; १ थिस. २:१८ ।

सुसमाचार प्रचार करने में रोक उत्पन्न करता है. मत्ती. १३:१९; २ कर. ४:४ ।

अद्भुत कार्य करता है. २ थिस. २:९; प्रकाश. १६:१४ ।

ज्योति का दूत जैसा दिखाई देता है. २ कर. ११:१४ ।

झूठ बोलनेहारों का पिता है. योहन. ८:४४; १ राजा. २२:२२ ।

—खीष्ट से पछाड़ा गया :—

साम्हना करने से. मत्ती. ४:११ ।

भूतों को उतारने से. मत्ती. ४:२४; ८:३१; मार्क. १:२३; ५:२; लूक. ९:२४; ११:२०; १३:३२ ।

के विरुद्ध लड़ने के लिये बल देने से. मत्ती. १०:१. मार्क १६:१७; लूक. ६:१; प्रेरित. १६:१८; १६:१२ ।

के कार्यों को नष्ट करने से. १ योहन. ३:८ ।

अपनी मृत्यु के द्वारा. कल. २:१५. इब्र. २:१४ ।

—प्रभु के भक्तों के द्वारा हटाया जावे. रोम. १६:२०; २ कर. २:११; ११:३; इफ. ४:२७; ६:१६; २ तिम. २:२६; याक. ४:७; १ पित. ५:६; १ योहन. २:१३. प्रकाश. १२:११ ।

—का चरित्र—

ढीठ. अय्यूब. १:६. मत्ती. ४:५,६ ।

घमंडी. १ तिम. ३:६ ।

बलवान. इफ. २:२; ६:१२ ।

दुष्ट. १ योहन. २:१३ ।

दोष लगानेहारा. अय्यूब. १:६; २:४ ।

छली. उत्प. ३:१ (२ कर. ११:३) ।

धोखा देनेहारा. २ कर. ११:१४. इफ. ६:११ ।

डरावना और अन्यायी. लूक. ८:२६; ९:३६,४२; १ पित. ५:८ ।

नास्तिकता फैलानेहारा. २ थिस. २:६; १ तिम. ४:१ ।

न्याय के दिन दोषी ठहराया जायेगा. यहूदा. ६; प्रकाश. २०:१० ।

के लिये सदा जलनेहारी आग तैयार है. मत्ती. २५:४१ ।

—की तुलना की गई :—जाल से. भजन. ६१:३; चिड़ियों से. मत्ती. १३:४; बोनेहारे से. मत्ती. १३:२५,२८. भेड़िये से. योहन. १०:१२; शेर से. १ पितर. ५:८. सांप से प्रकाश. १२:६; २०:२ ।

—दुष्ट मनुष्य—

उसके सन्तान हैं. मत्ती. १३:३८. प्रेरित. १३:१०. १ योहन. ३:१० ।

पीछे दूर करे जाते हैं. १ तिम. ५:१५ ।

की इच्छाओं पर चलते हैं. योहन ८:४४ ।

में वह रहता है. लूक. २२:३. प्रेरित. ५:३; इफ. २:२ ।

—शैतान—

को वह अन्धा कर देता है. २ कर. ४:४ ।

को धोखा देता है. १ राजा. २२:२१,२२. प्रकाश. २०:७,८ ।

फंदे में डालता है. १ तिम. ३:७; २ तिम. २:२६ ।

दुःख पाता है. १ शम. १६:१४ ।

—देखो, भूत ।

शोक—धर्म का. २ कर. ७:१० ।

—संसारिक—उत्प. ४२:३८. अय्यूब १७:७. भजन. १३:२; ६०:१०. नीति. १०:२२. यश. ३५:१०. लूक. २२:४५. रोम. ९:२; १ थिस. ४:१३ ।

—पाप के कारण. उत्प. ३:१६,१७; भजन. ५१ ।

—देखो, विलाप, रोना ।

शोकित—का विलाप. अय्यूब. ७:३-२१; १०:१,१८-२२; १६:११-२२; १७ ।

शोधन—देखो, सुधार ।

श्वास—जीवन का, परमेश्वर से. उत्प. २:७; ६:१७. अय्यूब. १२:१०; ३३:४. भजन. १०४:२९. यहेज. ६७:५. दान. ५:२३. प्रेरित. १७:२५ ।

—परमेश्वर का. उसका बल. २ शम. २२:१६. अय्यूब. ४:६. भजन. ३३:६; यश. ११:४; ३०:२८ ।

श्वेत—घोड़ा. प्रकाश. ६:२; १९:११. बादल. प्रकाश १४:१४ ।

—वस्त्र. खीष्ट का. मत्ती. १७:२; मार्क. ९:३. लूक. ९:२९ ।

दूतों का. मत्ती. २८:३; मार्क. १६:५ ।

सन्तों का. प्रकाश. ३:५; ४:४; ७:९; १९:८,१४ ।

—सिंहासन. प्रकाश २०:११ ।

स

संकट—देखो, दुःख ।

संग—छोड़ना—इस्राएलियों का. निन्दित समझा गया. यिर्म. ३:६-१४,२२; ७:२४; ३२:२२-३५ ।

—सताना—

—को आगे से खबर दी गई. मत्ती. १३:२१; २३:३४; मार्क. १०:३०; लूक. ११:४६. योहन. १५:२०; २ कर. ४:६; २ तिम. ३:१२।

—कब लोग सताते हैं. मत्ती. ५:४४; १०:२२; प्रेरित. ५:४१; रोम. १२:१४. फिल. १:२८; इब्र. १०:३४; १ पितर. ४:१३-१६।

—का फल. मत्ती. ५:१३; लूक. ६:२२; ६:२४. याक. १:२; १ पित. ४:१४; प्रकाश. ६:६; ७:१३।

—के उदाहरण. निर्ग. १; ५;-१ राम. २२:६; १ राजा. १२:४; २१; यिर्म. २६:२०. मत्ती. २; प्रेरित. १२।

सत्तर—पुरनिये. निर्ग. १८:२५; २४; गिन. ११:१६।

वर्ष की बन्धुवाई. यिर्म. २५:११।

हफ्ते. दान. ६:२४।

—शिष्य. ख्रीष्ट ने भेजे. लूक. १०।

सत्य—परमेश्वर का. निर्ग. ३४:६. गिन. २३:१६. व्यवस्था. ३२:४; भजन. १९:९; २५:१०; ३३:४; ५७:३,१०; ८५:१०; ८६:१५; ८६:१४ ६१:४; ६६:१३; १००:५; ११६:१६०; १४६:६; यश. २५:१; ६५:१६; दान. ४:३७; मोका. ७:२०; योहन. १७:१७; २ कर. १:२०; प्रकाश. १५:३; १६:७।

—सुसमाचार है. योहन. १:१७; ४:२४; ५:३३; १७:१७; १८:३७; रोम. २:८; १ कर. १३:६; २ कर. ४:२; गल. ३:१; इफ. ६:१४; २ थिस. २:१०; १ तिम. २:७; ३:१५; ४:३; ६:५; २ तिम. ३:८; ४:४; तीत. १:१; १ पित. १:२२।

—का बचन. भजन. ११६:४३; २ कर. ६:७; इफ. १:१३; कल. १:५; २ तिम. २:१५. याक. १:१८।

सत्यता—नीति. १२:१७. जक. ८:१६. इफ. ४:२५; १ योहन. १८।

सत्यानाश—देखो, विनाश, उजाड़ना।

सन्त—ख्रीष्टियान कहलाते हैं. लूक. १:७४,७५; रोम. १:७; १ कर. १:२; १ थिस. ४:७. इब्र. १२:१४; १ पित. १:१४,१५।

—सन्त—

का कर्त्तव्य—२ इति. ६:४१. भजन. ३१:२३; ३४:९; ८९:७; १४९: ५; रोम. १६:२. इफ. ४:१; ५:३. प्रकाश. १३:१०; १४:१२; १९:८।

—की परमेश्वर रक्षा करता है. भजन. ३१:२३; ३४:८-१०; ३७: २५-२८।

—लोगों के लिये चन्दा. प्रेरित. ११:२९,३०; २४:१७; रोम. १५:२५, २६; १ कर. १६:१; २ कर. ८:५-१५; ९।

सन्तान—देखो, बंश, बच्चे।

सन्तान—न होने का अपमान. उत्प. १६:४; १९:३१,३२; २५:२१; ३०: १,२३. न्यायी. ११:३४,३८; १ शम. १:५-८; २:१-११; भजन. ७८: ६३. यश. ४:१; ५४:४. लूक. १:२५।

सन्तुष्टता—यदि धर्म के संग हो तो लाभ है. भजन. ३७:१६. नीति. ३०:८; १ तिम. ६:६।

—के विषय में शिक्षा. नीति. ३७:१. लूक. ३:१४; १ कर. ७:२०; १ तिम. ६:८. इब्र. १३:५।

सन्देह—विश्वास रखनेहारों का. अय्यूब. १३:२५; १६:११,२१; २३:३-९:१५; भजन. २२:१; ७३:२; ७४:९,१०; ७७:७-१०; ७९:५; ८५:५; ८८:१४; ८९:४९. मत्ती. १४:३१; २८:१७; योहन. २०:२४-३१।

—विश्वास न करनेहारों का. गिन. ११:४. भजन. ७८:१८-२०; १०६:१४; १ कर. १०:५-११।

वर्जित है. मत्ती. १४:३१; १७:२०; २१:२१. मार्क. ११:२३; लूक. २१; १७:६. प्रेरित १०:२०; ११:१२; १ तिम. २:८।

सन्देही—होने के उदाहरण. १ शम. १७:२८; १८:६-२९; १९:१-१७; २०:२७-३४; २२:६-१९; २३:७-२६; २ शम. ६:१६,२०-२२; १९: ४१-४३; २०:१,२।

—पुरुष, नीति. ६:३४. श्रेष्ठ गीत ८:६।

—एक दिन भक्तों में न रहेगी. यश. ११:१३. यिर्म. ३:१८. यहेज. ३७:२२; होशे. १:११।

सप्तर्षि—अय्यूब. ९:९; ३८:३१. आमोस. ५:८।

सप्ताह—का पर्ब. व्यवस्था. १६:९।

—सत्तर की नबूवत. दान. ९:२४।

सबत्—बिश्राम का दिन. उत्प. २:२ (इब्र. ४:४). देखो, बिश्राम।

सब्र—करने की आज्ञा. भजन. ३७:७. सभोप. ७:८. यश. ३०:१५; ४०:३१. लूक. २१:१९. रोम. १२:१२; १ थिस. ५:१४; २ थिस. ३:५; १ तिम. ३:३; ६:११. इब्र. १२:१. याक. १:३; ५:७; १ पितर २:२०; २ पितर. १:६।

—के अच्छे फल. रोम. ५:३; १५:४. इब्र. ६:१२; प्रकाश. २:२; ३:१०।

सभा—यहूदियों की. मत्ती २६:३,५९. मार्क. १५:१।

में प्रेरित लाये गये. प्रेरित. ४:५:२९।

के आगे पावल. प्रेरित २३।

—के घर—में ख्रीष्ट का उपदेश. मत्ती. १२:९; लूक. ४:१६. योहन. ६:५९; १८:२०।

में पावल का उपदेश. प्रेरित. १३:५; १४:१; १८:४।

—से अलग करना—यहूदियों में. एज्रा. १०:८,११; नेहेम. १३:२८. योहन. ९:२२,३४।

ख्रीष्टियानों में. मत्ती. १८:१७; १ कर. ५:३-५; १ तिम. १:२०।

समझाना—झिड़कना, डपटना।

पिता का. १ शम. २:२३-२५।

रैयत का. २ शम. १९:५-७।

—का मूल्य. भजन. १४१:५; नीति. ६:२३; ९:८; १३:१८; १५:३१,३२; १९:२५; २४:२५; २५:१२; २७:५,६; २८:२३; २९:१५; सभोप. ७:५; गल. ६:१।

—बिना मिलौनी के. १ शम. १५:१६-२८; २ शम. १२:१-१४; १ राजा. १३:१-३; १८:१५; २१:१७-२४; २ इति. २४:२०; २६:१८. यश. ५८:१. यिर्म. १:८,१७. यहेज. २:६; ३३:७; मत्ती. ३:७-१२;

सम्पत्ति—देखो, धन ।

सरकंडा—तोड़ा हुआ. २ राजा. १८:२१. यश. ४२; मत्ती. १२:२० ।

—नापने के लिये. यहेज. ४०:३. प्रकाश. ११:१; २१:१५ ।

सरदार—फिलिस्तियों के. यहोशू. १३:३. न्यायी. ३:३; १६:५-३०; १ शम. ५:११; ६:४,१२,१८; ७:७ ।

सर्वप्रीति—पाना भला नहीं है. लूक. ६:२६. (योहन. १५:१९) ।

—न्याय को छोड़ प्राप्त करना ठीक नहीं. निर्ग. २३:२ ।

सलाह—अच्छी से लाभ—नीति. १२:१५; १३:१०; २०:१८; २७:९ ।

—परमेश्वर की इस्राएलियों ने मांगी. न्यायी. २०:१८ ।

—शावल ने चाही. १ शम. १४:३७ ।

—दाऊद ने. १ शम. २३:२,१०; ३०:८; १ इति. १४:१०. देखो, भजन. १६:७; ३२:११; ७३:२४. नीति. ८:१४. प्रकाश. ३:१८ ।

—न लेने से हानि. २ इति. २५:१६. नीति. १:२५,२६; यिर्म. २३:१८-२२. लूक. ७:३० ।

—दुष्टों की ठीक नहीं है. अय्यूब. ५:१३; १०:३; २१:१६. भजन १:१; ५:१०; ३३:१०; ६४:२-७; ८१:१२; १०६:४३; यश. ७:५; होशे. ११:६. मीका. ६:१६ ।

सलाह देनेहारे—जब बहुत हों तो लाभ है. नीति. ११:१४; १५:२२; २४:६ ।

सहनशीलता—देखो, कृपा, दया, धीरज ।

सहना—निर्ग. १८:१४. यहेज. २२:१४. मत्ती. १०:२२; २४:१३; मार्क. १३:१३; १ कर. १३:७; २ कर. १:६; २ थिस. १:४; २ तिम. २:३,१०; ४:५. इब्र. ३:६,१४; ६:१५; १०:३२; ११:२७; १२:२-७. याक. १:१२; ५:७-११; १ पितर. २:१८-२० ।

सहभागिता—ख्रीष्ट की. १ कर. १:९; १२:२७: २ कर. ४:११. फिल. ३:१० ।

—आत्मा की. फिल. २:१; १ योहन. १:३,६ ।

—सहाभागिता—

—सन्तों की. प्रेरित. २:४२; २ कर. ८:४-गल. २:९. फिल. १:५; १ योहन. १:३ ।

—दुष्टों की, वर्जित है. १ कर. १०:२०; २ कर. ६:१४. इफ. ५:११ ।

सहानुभूति—अय्यूब. २:११-१३. मत्ती. २५:३६. रोम. १२:१५; १ कर. १२:२६. कल. ४:१८; इब्र. १३:३; १ पितर. ३:८ ।

सहायक—ख्रीष्ट. १ योहन. २:१ ।

सहायता—उनको दी जाये जिन्हें देना उचित है. निर्ग. २३:४,५. व्यवस्था. २२:१-४. अय्यूब. २९:१३-१६; ३१:१३-२२. नीति. २१:१३; २४:११ ।

सांप—के रूप में आया. उत्प. ३:१. प्रकाश. १२:९; २०:२ ।

—पीतल का. गिन. २१:८,९. योहन. ३:१४,१५ ।

—का नष्ट होना. २ राजा. १८:४ ।

—छड़ी जो सांप बन गई. निर्ग. ४:३-१५ ।

—की मरी. गिन. २१:६. व्यवस्था. ८:१५; यश. १४:२९; ३०:६ ।

सात—तारे. अय्यूब. ३८:३१. आमोस. ५:८ ।

सामर्थ्य—देखो, बल, शक्ति ।

साराप—देखो, दूत ।

सास—और बहू का प्रेम. रूत. १:८,१४-१७ ।

साक्षियां—अपराध सिद्ध करने के लिये. गिन. ३५:३०. व्यवस्था. १७:६; १९:१५—देखो. मत्ती. १८:१६. योहन. ८:१७; २ कर. १३:१; १ तिम. ५:१९. इब्र. १०:२८ ।

—दो गवाहों की. प्रकाश. ११:३-५. देखो, जक. ४ ।

साक्षी—परमेश्वर देनेहारा है. उत्प. ३१:५०. व्यवस्था. ४:२६; यहोशू २२:२२; न्यायी. ११:१०; १ शम. १२:५; यिर्म. ४२:५; रोमी. १:९; २ कर. १:२३; फिल. १:८; १ थिस. २:५,१० ।

—परमेश्वर की ख्रीष्ट के विषय में. मत्ती. ३:१७; १७:५; लूक. ३:२२; योहन. ५:३२,३७; ६:२७; १२:२८; इब्र. २:४; १ योहन. ५:९ ।

—साक्षी—

—आत्मा की ख्रीष्ट के विषय में. मत्ती. ३:१६; लूक. ३:२२; योहन. १:३३; १५:२६; प्रेरित. २:२-४; ५:३२; इब्र. १०:१५; १ योहन. ५:६,८ ।

—परमेश्वर की मनुष्य के विषय में. प्रेरित. १३:२२; इब्र. ११:४,५ ।

—ख्रीष्ट के शिष्यों की. प्रेरित. १:८; २:४०; ५:३२; १०:४१; १३:३१; १४:३; २२:१५; २६:१६,२२; इफिसी. ४:१७; २ थिस. १:१०; १ पितर. ५:१; १ योहन. ४:१४; प्रकाश. १:२,९; २०:४ ।

—भविष्यद्वक्ताओं की. प्रेरित १०:४३; २६:२२; रोमी. ३:२१ ।

—ख्रीष्ट सच्चा है. प्रकाश. १:५,३,१४ ।

—ख्रीष्ट के विरुद्ध. मत्ती. २६:६०-६२. मार्क. १४:५६ ।

—की तख्तियां. निर्ग., ३१:१८; ३२:१४,१५; ३४:२९ ।

सिंह—का सा रूप. यहेज. १:१०; १०:१४. प्रकाश. ४:७ ।

यहूदा के कुल का. प्रकाश. ५:५ ।

के दर्शन. दान. ७:४. प्रकाश. ९:८,१७; १३:२ ।

सिद्ध—परमेश्वर के कार्य और मार्ग. व्यवस्था. ३२:३; २ शम. २२:३१; भजन. १८:३०. मत्ती. ५:४८. लूक. ६:४० ।

—परमेश्वर की व्यवस्था, भजन. १९:७; ११९; याक. १:२५ ।

सिद्धता—ख्रीष्ट की. इब्र. २:१०; ५;९; ७:२८ ।

—सन्तों की. १ कर. २:६. इफ. ४:१२; कल. १:२८; ६:१४; २ तिम. ३:१७ (२ कर. १२:९; इब्र. ६:१; ११:४०)।

सिरका—क्रूश के ऊपर ख्रीष्ट को दिया गया. मत्ती. २०:३४,४८. मार्क. १५:३६; लूक. २३:३६. योहन. १९:२९,३० ।

—के विषय में भविष्यद्वाक्य. भजन. ६९:२१ ।

सिवाना—हटाया न जाए. व्यवस्था. १९:१४; २७:१७; अय्यूब. २४:२; नीति. २२:२८; २३:१०. होशे. ५:१० ।

—इस्राएल का. गिन. ३४:१-१५; यहोशू. १५ से १९ ।

शिक्षा—देखो, सुधार ।

—सुन्दरता—

—पवित्रताई की. १ इति. १६:२६; २ इति. २०:२१; भजन. २६:२; ११०:३।

मिटनेहारी वस्तु है. भजन. ३९:११; ४६:१४. नीति. ३१:३०. यश. ३:२४।

—को बंदी का द्वारा न बनाओ. अय्यूब. ३१:१; नीति. ६:२५-२६. मत्ती ५:२८।

—रखने से हानि का भय. उत्प. १२:११-१३; २०:२,१३; २६:७; ३४:२; २ शम. ११:२; १३:१-२०।

सुशीलता—स्त्री में. रूत. २:८,२१-२३।

—पुरुष में. रूत. ३:८।

—मंडली में. १ कर. ११:३-१६।

—वस्त्रादि वस्तुओं में. १ तिम. २:६; १ पित. ३:३।

सुस्त—देखो, आलसी।

सुसमाचार—सुनने का सौभाग्य. मत्ती. ११:२५; १३:१७. योहन. १:१२; १४:६,१६-१८; १५:१०,१४. रोमी. ५:२१; ६:२२,२३; ८:१,२; १ कर. १:२७-३०; २:६-८,१५,१६; २ कर. ३:१८; गल. ३:२९; इफ. १:३,६; २:१६; ३:१२; कल. १:२१,२२; तीत. ३:४,७; इब्र. १२:२२; १ योहन. २:२०; ५:११,१२।

—सारे जगत में प्रचारा जावे. मत्ती. २४:१४; २८:१६; मार्क. १६:१५. लूक. २४:४७. प्रेरित. २:३६. रोम. १०:१८. कल. १:२३।

—गरीबों को सुनाया जाता है—मत्ती. ११:५; लूक. ४:१८; ७:२२; याक. २:५।

—से त्राण देने के लिये परमेश्वर की सामर्थ है. रोम. १:१६; १ कर. १:१८,२१; २:४,५; ४:२०; १५:२।

—एक भेद की बात का प्रगट होना है. योहन. १:१८; १४:६. रोमी. १६:२५,२६; १ कर. २:७; इफिसी. १:९; ३:३-११; कल. १:२६,२७; २ तिम. १:९,१०।

—सुसमाचार—

—कोई दूसरा न सुनाया जावे. २ कर. ११:४. गल. १:७,८. प्रकाश. २२:१८,१९।

—नाश होनेहारों के लिये छिपा हुआ है. रोम. ९:३१,३२; १ कर. १:२३; २:८; २ कर. ४:३; २ थिस. २:१०।

—यहूदियों ने रद्द कर दिया. प्रेरित. १३:४५,४६; १४:४; १८:६; २२:१८,२२; २८:२४,२७. रोमी ९ से ११; १ थिस. २:१४-१९।

—जीवन और अमरता को प्रकाशित करता है. २ तिम. १:१०।

—खतनाहीनों के लिये सौंपा गया. गल. २:७।

—का असर. लूक. ४:१८।

—के प्रचारकों की भाग्यमानी. यश. ५२:७. नहूम. १:१५. रोम. १०:१५।

—परमेश्वर के ओर से है. गल. १:११,१२,१६,१७।

—प्रचारक—फिलिप जो पावल का साथी था. प्रेरित. २१:८।

—का काम. इफ. ४:११; २ तिम. ४:५।

सूखा—परमेश्वर के कोप के कारण होता है. लैव्य. २६:१९; व्यवस्था. २८:२४; १ राजा. १७:१; १८:१-६. यिर्म. ३:३; ९:१२; १४:१-६; ५०:३८. हाग्गै. १:११; याक. ५:१७।

सूद—लेना वर्जित है. निर्ग. २२:२५. लैव्य. २५:३५-३८. व्यवस्था. २३:१९-२१. नेहेम. ५:१-१३. भजन. १५:५. यहेज. १८:८; २२:१२।

सूधे—खीष्ट था. इब्र. ७:२६।

—शिष्यों को होना उचित है. मत्ती. १०:१६. रोम. १६:१९. फिल. २:१५।

सूरज—बनाया गया. उत्प १:१४. भजन. १९:४; ७४:१६; १ कर. १५:४१।

—की पूजा न की जाय. व्यवस्था. ४:१९. अय्यूब. ३१:२६. यहेज. ८:१६।

—यहोशू के समय ठहरा रहा. यहोशू. १०:१२—हिजकिया के समय

—सेवक—

—संसारिक योग्यता के कारण बड़ाई न पावें. १ कर. ३:४-७,२१; ४:६ ।

—मण्डली से सहायता पावें. १ कर. ९:७-१४ ।

—लोग उनके संग प्रेम से वर्त्ताव करें. १ कर. ९:१९-२२ ।

—का आनन्द. २ कर. २:३; ७:१३. फिल. २:२; ४:१. कल. २:५ ।

—देखो, दासी—परिश्रम ।

—व्यवस्था के अनुसार उनसे व्यवहार. लैव्य. १९:१३. व्यवस्था. २४:१४,१५. भजन. १२३:२ ।

—सुसमाचार के अनुसार—इफिसी. ६:९. कल. ४:१. फिलेमुन. १०-१८ ।

—को सलाह—१ कर. ७:२०-२३. इफिसी. ६:५-८. कल. ३:२२-२५; १ तिम. ६:१-३; तीत. २:९,१०; १ पितर. २:१८. (देखो मलाकी. १:६) ।

सेवा करनेहारी आत्माएं—इब्र. १:१४. देखो, स्वर्ग दूत और भजन. १०३:२१; १०४:४ ।

सोच—दूसरों के लिये—लूक. १०:२९-३७. योहन. १९:२६; २ कर. ७:१२; ८:८-१७; ९:१२-१५. फिल. ४:१०-१८ ।

—अपने जीवन के लिये—

—ईश्वर पर छोड़ा जाए—भजन. ९:९; ३७:३-७,३९,४०; ५५:२२; ६२:१. नीति. १६:३; मत्ती. ६:२५-३४. लूक. १२:६,७,२२-३१; १ कर. ७:३२; फिल. ४:६,७; १ पितर. ५:७. देखो ईश्वर पर भरोसा रखना, बाट जोहना ।

—ख्रीष्टियानों को चाहिये कि नमूना बनें. मत्ती. १३:२२; मार्क. ४:१९; लूक. ८:१४; १०:३८-४२; योहन. ६:२७; १ तिम. ६:८; २ तिम. २:४ ।

सोता—उत्प. ७:११ ।

—जीवते जल का (ख्रीष्ट व सुसमाचार) भजन. २३:२; ३६:८,९; यशा. १२:३; ३५:६; ४१:१८; ४३:१९,२०; ४४:३; ५५:१; यिर्म. २:

—सोता—

१३; १७:१३; यहेज. ४७:१-५; योएल. ३:१८. जक. १३:१; १४:८; योहन. ४:१०-१४; ७:३८; प्रकाश. ७:१७; २१:६; २२:१,१७।

सोना.—हवीला नाम देश में पाया जाता है. उत्प. २:११।

—निवास-स्थान के बनाये जाने में लगाया गया. निर्ग. २५ से ४०।

—मन्दिर में—१ राजा. ६ से ६; २ इतिहास. ३:६; ४:७,८,२२।

—सुलेमान के भवन में. १ राजा. १०:१६-२१; २ इतिहास. ६: १७,१८।

—की मूर्त्ति. निर्ग. ३२:२; १ राजा. १२:२८ भजन. ११५:४; १३५: १५; यश. २:२०; ३०:२२; ३१:४; ४०:१६. दान. ३:१; ५:४. प्रकाश ९:२०।

—फारस के राजा का राज—दण्ड. एस्तेर. ४:११; ५:२; ८:४।

—की परीक्षा—नीति. १७:३; २७:२१. जक. ३:६. गल. ८:३; १ पितर. १:७ प्रकाश. ३:१८।

—उदाहरण के रूप में वर्णन हुआ. २ तिम. २:२०; प्रकाश. ३:१८; १४:१४; २१:१५,१८।

—खीष्ट को भेंट किया गया—मत्ती. २:११।

सोसन—जङ्गली. श्रेष्ठ गीत. २:१; होशे. १४:५; मत्ती. ६:२८; लूक. १२:२७।

सजाने के लिये. १ राजा. ७:१९,२२।

सौगन्ध—परमेश्वर की—उत्प. २२:१६-१८; भजन. ८६:३,३५,४६; ९५:११; १०५:९; ११०:४; १३२:११; यश. ४५:२३; ५४:६; ६२:८. यिर्म. ४४:२३; ४६:१३. आमोस. ४:२; ६:८; ८:७. मीका. ७:२०; लूक. १:७३; प्रेरित. २:३०; ७:१७; इब्र. ३:११; ६:१३-१८; ७:२१।

—पूरा करने का कर्त्तव्य—यहोशु. ६:१८,१९; देखो. न्यायी. २१:१-७. २ शम. २१:७. भजन. १५:४; २४:४; मत्ती. ५:३३; २३:१६-२२।

—पावल को मार डालने की. प्रेरित. २३:१२,२१।

—पितर प्रेरित की. मत्ती. २६:७२,७४. मार्क. १४:७१।

—सौगन्ध—

—न खाने की आज्ञा. मत्ती. ५:३४-३७. याक. ५:१२ ।

के उदाहरण. उत्प. १४:२२; २१:२३-३१; २४:२-९; यहोशू. २२:२२; १ शम. २०:१२-१७,४२; २८:१०. नहेम. १०:२९ ।

—खाने को कहा गया. उत्प. २६:२८-३१; ५०:२५; १ राजा. १८:१०; २ राजा. ११:४. नहेम. ५:१२ ।

न्याय के लिये. निर्ग. २२:११; मत्ती. २६:६३ ।

में शीघ्रता करने के उदाहरण. उत्प. २५:३३. यहोशू. ९:१८,१९. न्यायी. ११:३०; १ शम. १४:२४-२८. मत्ती. १४:७-९; मार्क. ६:२६ ।

स्तुति—ईश्वर की करनी चाहिये. व्यवस्था. ३२:१-४; २ शम. २२:४,३१; १ इतिहास. २९:१०-१३. भजन. १८:३; ६६:४; ९८:१; १४५:३. यशा. १२:४-६; २५:१; यिर्म. ३१:१०-१२; दान. २:२०-२३. योएल. २:२६; मत्ती. ६:१३. लूक. १:४६-५५. इफिसी. १:६; १ तिम. १:१७; प्रकाश. ४:११; ५:१२,१३; १९:१,२ ।

—करना ख्रीष्टियान का कर्त्तव्य है. इफिसी. ५:१९. कल. ३:१६. याक. ५:१३ ।

—करने के विषय में शिक्षा. देखो. बाइबल की शब्दावली ।

—अपनी. नीति. २०:६; २५:१४; २७:२ ।

—मनुष्यों की. मत्ती ५:११. लूक. ६:२६. योहन. ५:४१-४४; १२:४३ ।

स्त्री—की उत्पत्ति. उत्प. २:१८-२५ ।

का पाप में गिरना. उत्प. ३:१-६ ।

को पुरुष के कपड़े पहिनना वर्जित है. व्यवस्था २२:५ ।

व्यभिचार का दंड. व्यवस्था. २५:११-१२ ।

के हाथ से मारे जाने की लाज. न्यायी. ४:९; ९:५४ ।

पराई—नीति. २:१६; ५:३-२०; ६:२४-२६; ७:५-२७ ।

धर्मी रूत. ३:११; नीति. १४:१. देखो, पत्नी ।

मूर्खतारूपी—नीति. ९:१३; १९:१३; २१:९-१९; १५:२४; २७:१५ ।

घमंडी. यशा. ३:१६-२४ ।

अपने बालक को भूल सकती है. यशा. ४९:१५ ।

—स्राप—
शिमी को. २ शम. १६:५-१३।
अपने जन्म दिन को. अय्यूब. ३:२-१०. यिर्म. २०:१४-१८।
व्यवस्था के तोड़नेहारे पर. लैव्य. २६:१४-३९. व्यवस्था. ११:२८; २७:१४-२६; २६:१५-६८; २६:१८-२६. यहोशू. ८:३४; नीति. ३:३३; मल. २:२; ३:९।
देने के लिये नबियों को बुलाना गिन. २२:६-१२; व्यवस्था. २३:४; यहोशू २४:६. नहेम. १३:२।
—देना—परमेश्वर के नाम को. लैव्य. २४:१०-१६,२३।
माता पिता को. निर्ग. २१:१७. लैव्य. २०:६. नीति. २०:२०; ३०:११. मत्ती. १५:४. मार्क. ७:१०।
अधिकारियों को. निर्ग. २२:२८. सभोप. १०:२०. प्रेरित. २३:५।
अनुचित ठहराया गया. लैव्य. १६:१४. भजन. १०:७; ५६:१२; १०६:१७,१८. रोम. ३:१४. याक. ३:१०।
—के बदले आशीष दो. मत्ती. ५:४४. रोमी. १२:१४।
—देनेहारे भजन. भजन. ३५; ४०; ५८; १०९; १३६:१६-२२।

स्वतंत्रता—ख्रीष्ट के संग एक होने के कारण. लूक. ४:१८. योहन. ८:३२-३६. रोमी. ६:६-१८; ८:२,२१; १ कर. ८:९; ९:१,१६; १०:२९. गल. ४:२६,३१; ५:१,१३. याक. १:२५; २:१२; १ पितर २:१६।
—ख्रीष्टियान की कहां तक है. १ कर. ६:१२; ७:१५-१७.३५-३८; ८:४-७; ६:१-५; १०:१९-२३,२९,३०. गल. ५:१३; १ पितर. २:१६; यहूदा. ४।
—मंडली का उदाहरण दिया गया. गल. ४:२२-३१।

स्वप्न—का भूठा ठहरना. अय्यूब. २०:८; भजन. ७३:२०. यश. २६:८; यिर्म. २३:२८; २७:६; जक. १०:२।
—परमेश्वर की ओर से. उत्प. ४१:१-२८; दान. ४; मत्ती. १२०; २:१२,१३,२०. (अय्यूब. ३३:१५; योएल. २:२८)।

—स्वप्न—

—के द्वारा झूठी भविष्यद्वाणियां. व्यवस्था. १३:१-५. यिर्म. २३:
२७-३२. २७:६. जक. १०:२. यहूदा. ८।

का अर्थ बताना. उत्प. ४०:५-१९; ४१:२५-२७. दान. २:१६-४५;
४:१६-२७।

—किस २ ने देखे—अबिमलिक. उत्प. २०:३; याकूब. उत्प. २८:१२,
३१:१०. लबान. उत्प. ३१:२४. यूसफ. उत्प. ३७:५।

फिराऊन के चाकरों ने. उत्प. ४०:५. फिराऊन. उत्प. ४१. मिदि-
यानी. न्यायी. ७:१३. सुलेमान. १ राजा. ३:५. नबूखदनजर.
दान. २:४. यूसफ. मत्ती. १:२०; २:१३. ज्योतिषी. मत्ती. २:१२.
पिलात की पत्नि. मत्ती. २७:१९।

स्वभाव—देखो, आदत।

स्वाभाविक—देखो, प्राकृतिक।

स्वामी—देखो, यीशु।

स्वर्ग—परमेश्वर ने बनाया. उत्प. १:१८; भजन. ८:१६. यश. ४४:२२.
प्रकाश. १०:६।

—परमेश्वर के रहने का स्थान है. १ राजा. ८:३०. भजन. २:४;
११५:३; १२३:१; यश. ६:१; ६६:१. यहेज. १; १०; मत्ती. ६:६;
प्रेरित. ७:४६. इब्र. ८:१. प्रकाश. ४।

—प्रभु यीशु खीष्ट वहां से आया. योहन. ३:१३-३१; ६:३३,३८,४२;
८:२३; १ कर. १५:४७. इब्र. १२:२५।

सदा स्वर्ग में है. योहन. ३:१३।

स्वर्ग को गया. मार्क. १६:१९. लूक. २४:५१. योहन. ३:१३. प्रेरित.
१:६; ३:२१. इफिसी. १:२०; ४:१०; १ तिम. ३:१६; इब्र. ४:१४;
७:२६; ८:१; ६:२४; १ पितर. ३:२२।

से लौट कर आवेगा. मत्ती. २४:३०; २६:६४. मार्क. १४:६२;
लूक. २१:२७. योहन. १४:३. प्रेरित. १:११; १ थिस. १:१०;
४:१६।

—स्वर्ग—

—नष्ट हो जाएगा. भजन. १०२:२५,२६. यश. ३४:४; ५१:६. मत्ती. २४:३५; २ पितर. ३:१०-१२; प्रकाश. ६:१४।

—नया. यश. ५१:१६; ६५:१७; ६६:२२; २ पितर. ३:१३. प्रकाश. २१:१।

—का आनन्द. भजन. १६:११; यश. ४६:१०. दान. १२:३; मत्ती. ५:१२; १३:४३; लूक. १२:३७. योहन. १२:२६; १४:१; १७:२४; १ कर. २:६; १३:१२; १ पितर. १:४; प्रकाश. ७:१६; १४:१३; २१:४; २२:३।

—में कौन प्रवेश करेंगे. मत्ती. ५:३; २५:३४. रोमी. ८:१७. इब्र. १२:२३; १ पितर. १:४. प्रकाश. ७:६,१४।

—में कौन प्रवेश न करेंगे. मत्ती. ७:२१; २५:४१; लूक १३:२७; १ कर. ६:६. गल. ५:२१. प्रकाश. २१:८; २२:१५।

स्वर्गीय—इफिसी. २:६; फिल. ३:२०. कल. ३:१-३।

—पिता. मत्ती. ६:१४,१५,१८. लूक. ११:२,१३।

स्वामी—उनका कर्त्तव्य. लैव्य. २५:४३; व्यवस्था. २४:१४,१५. अय्यूब. ३१:१३. इफिसी. ६:९; कल. ४:१. फिलेमून. ८:२०।

स्वीकार—ख्रीष्ट का।

—चटान जिस पर मण्डली की नेव है. मत्ती. १६:१८. देखो. योहन. ६:६८,६९; १ योहन. २:२२,२३; ४:१,२।

—की आवश्यकता. मत्ती. १०:३२; मार्क. ८:३८. लूक. ९:२६; १२:८,६; योहन. १२:४२,४३. प्रेरित. ८:३७. रोमी. १०:६. फिल. २:११; २ तिम. २:१२।

—पाप का—

कर्त्तव्य है—लैव्य. ५:५; २६:४०. गिन. ५:७; यहोशू. ७:१९. एज्रा. १०:११; भजन. ३२:५; ५१:३।

बदले में—लैव्य. १६:२१; एज्रा. ९;५-१५; नहेम. १:४-७. दान. ९:३-१५।

—स्वीकार—

—प्रभु के आगे—नहेम. ६; मत्ती. ३:६. मार्क. १:५; प्रेरित. १६:१७.

—पूरा. गिन. १२:११; २१:७; २२:३४. यहोशू. ७:२०,२१. न्यायी. १०:१०:१ शम. ७:६; १५:२४,३०; २४:१७; २६:२१; २ शम. १२:१३; १ इतिहास. २१:८,१७. अय्यूब. ४०:४; ४२:६; भजन. ३२:५; ४१:४; ५१; लूक. ५:८; १५:२१; २३:४१ ।

—पहिले फलों की बलि के समय. व्यवस्था. २६ ।

—आपस में. याकू. ५:१६ ।

ह

हंसी खेल—बे मौके का. नीति. २६:१८,१९. इफिसी. ५:४ ।

से सन्तुष्टता नहीं. नीति. १४:१३; सभोप. २:१,२; ७:२-६ ।

हक़—प्रत्येक मनुष्य का. रोमी. १३:७ ।

हठ—देखो, पक्षपात ।

—का दण्ड. व्यवस्था. २१:१८-२०. देखो "ईश्वर की आज्ञा तोड़ना" ।

—इस्राएलियों की. यश. २८:१५; ४८:४. यिर्म. ५:१२; ६:१७; ७:२४-२८; ११:७-१०; १८:१२; २२:२१; २५:१५; ३७:२; यहेज. ३:७. होशे. ११:७, मत्ती. ११:१६-२४; १३:१५; २१:२८-३२. मार्क. ४:१२; १ थिस. २:१५,१३ ।

—एक २ जन की. २ इति. २६:१६-१९. यिर्म. २०:१-३; २६:८-११; २८; २९:२५-२७; ४४:१५-१९. आमोस. ७:१६ ।

—का दंड. नीति. १:२४-३३; २९:१. यिर्म. १९:१५; २०:४; २८:१७. आमोस. ९:१०. जक. ७:११,१२ ।

हड्डी—यूसफ की. उत्प. ५०:२५; निर्ग. १३:१९. यहोशू. २४:३२. इब्र. ११:२२ ।

—दंड के कारण बिथराया जाना. २ राजा. २३:१४; भजन. ५३:५; १४१:७. यिर्म. ८:१,२. यहेज. ६:५ ।

—हड्डी—

—यहेजक्केल नबी का दर्शन. यहेज. ३७:१-१० ।

—निस्तार पर्ब के मेम्ने की तोड़ी न जाए. निर्ग. १२:४६. योहन. १६:३६ ।

हत्यारे—यश. १:२१: ५:४; यिर्म. २:२१; ४:२२; ५:१२,२३; ६:१० ।

—उन का दंड. लैव्य. २६:१४-४३; व्यवस्था. १३:१३; २८:१५-६८. यहेज. ७:१-४; १६:३५-६३; २०:१३-२६. २३:२२-४९. मत्ती. २६:२४. मार्क. १४:२१. लूक. २२:२२. योहन. १७:१२. इब्र. ६:४-६; १०:२६-२९; २ पितर. २ प्रकाश. २२:१५ ।

—देखो, घात, हिंसा ।

हथियार—देखो, अस्त्र ।

हमला—उसका दंड. निर्गमन. २१:१८-२७ ।

हल—चलाना. दो प्रकार के पशुओं को एक संग चलाना मना है. व्यवस्था. २२:१०. (देखो. २ कर. ६:१४-१६) ।

—उदाहरण के रूप में वर्णन किया गया. न्यायी. १४:१८. अय्यूब. ४:८. होशे. १०:११,१३; १ कर. ९:१० ।

—अन्याय का चिन्ह. भजन. १२९:३ ।

—की कल. का तोड़ा जा कर तलवारें बनाना. योएल. ३:१०. और तलवारों के हल बनाना. यश. २:४; मीका. ४:३ ।

हाथ—परमेश्वर का. आशीष के लिये. २ इतिहास. ३०:१२. एज्रा. ७:९; ८:१८. नहेम. २:१८ ।

—दंड देने के लिये. व्यवस्था. २:१५. रूत. २:१३. अय्यूब. २:१०; १९:२१; १ पितर. ५:६ ।

हाथों—का रखना. (पुरानी व्यवस्थानुसार). निर्ग. २९:१०,१५,१९. लैव्य. १:४; ३:२,८,१३; ४:४; ८:१४; १६:२१. गिन. ८:१२; २७:१८,२३. व्यवस्था. ३४:९ ।

—नयी व्यवस्थानुसार—अभिषेक करने में. प्रेरित. ६:६; ८:१७; १३:३; १ तिम. ४:१४; ५:२२; २ तिम. १:६ (देखो. प्रेरित. ९:२०) ।

—हाथों—

बपतिस्मे के पीछे—प्रेरित. ८:१७-१६; १६:६. इब्र. ६:२।

—अपने को अपराधी ठहराते समय धोना. व्यवस्था. २१:६-८. भजन. २६:६. मत्ती. २७:२४।

हाथीदांत—का व्यापार. १ राजा. १०:२२; २ इति. ६:२१. यहेज. २७:१५—सजाने के काम में. १ राजा, १०:१८; २२:३६; २ इति. ६:१७ भजन. ४५:८. यहेज. २७:६. आमोस. ३:१५; ६:४।

हाय—देखो, बाइबल की शब्दावली पुस्तक।

—जो प्रभु खीष्ट के मुंह से निकले. मत्ती. ११:२१; १८:७; २३:१३-२६; २६:२४. मार्क. १४:२१ लूक ६:२४-२६; १०:१३; ११:४२-५२; १७:१; २२;२२।

—दुष्टों पर. यश. ५:८; १०:१; २६:१५; ३१:१; ४५:९. यिर्म. २२-:१३. आमोस. ६:१. मीका. २:१. हब. २:६ सपन्या. ३:१. जक. ११:१७. मत्ती. २६:२४. लूक. ६:२४. यहूदा. ११. प्रकाश. ८:१३; ९:१२; ११:१४।

हृदय—मनुष्य का उत्प. ६:५; ८:२१. सभोप. ८:११; ९:३. यिर्म. १७:६. मत्ती. १२:३४; १५:१६. लूक ६:४५. मत्ती. २:५।

—परमेश्वर जांचता और खोजता है. १ इति. २८:६; २६:१७ भजन. ४४ २१; १३६:२३. नीति. २१:२; २४:१२; यिर्म. १२:३; १७:१०; २०:१०. प्रकाश. २:२३।

—परमेश्वर की ओर से उज्वल किया जाता है. २ कर. ४:६. भजन. २७:१४. नीति. १६:१; १ थिस. ३:१३; २ पितर. १:१६।

—नया देने की वाचा. यिर्म. २४:७; ३१:३२; ३२:३६. यहेज. ११:१६; ३६:२६ (२ कर. ३:३. इब्र. ८:१०)।

—देखो, मन।

होठों—की सेवा—यश. १:१०-२०; २६:१३; ५८:२-८; ६६:३; यिर्म. ६:२०; ७:२१-२३. यहेज. ३३:३१ मलाकी. १:६-१४ मत्ती. ७:२१; २१:१६,२८-३२. मार्क. ११:१३. लूक. ६:४६; १३:२५-२८

होम बलि—के नियम. लैव्य. १; ६:८।

—बराबर चढ़ाने के विषय में. निर्ग. २९:३८. गिन. २८:३; १ इतिहास. १६:४०; २ इतिहास. १३:११।

—कब ग्रहण होती है—देखो बलिदान।

—का दृष्टान्त के रूप में वर्णन. इब्र. ७:११-२८; ८:३-५; ९:६-१४, २४-२८; १०:१-१४।

—के उदाहरण. नूह. उत्प. ८:२०—इब्राहीम. २२:१३—यित्रू. निर्ग १८:१२—बिलाम गिन. २३:२,१४—यहोशू. यहो. ८:३१. —जिदाऊन. न्यायी. ६:२६-२८—शमुएल. १ शम. ७:९; १०:८—शाऊल १ शम. १३:९,१०—दाऊद. २ शम. २४:२५; १ इति. २१:२६—सुलेमान. १ राजा. ३:१५; २ इति. १:६—एलियाह. १ राजा. १८:३३-३८. अय्यूब. अय्यूब. १:५; ४२:८—इफताह ने (मनुष्य चढ़ाया). न्यायी. ११:३१,३९—मोआब के राजा ने चढ़ाया. २ राजा. ३:२७।

हौसला—बुरी बातों में. तुच्छ किया गया. मत्ती. १८:१; २ :२५; २३:८; लूक. २२:२४।

—दण्ड. नीति. १०:१९. यश. १४:१२. यहेज. ३१:१०।

—उदाहरण. बाबुल उत्प. ११:४—हारून. और मरियम. गिन. १२ १०—कोराह, दातन इत्यादि. गिन. १६:३—अबसलोम. २ शम १८:९—अदोनिया. १ राजा. १:५—याकूब और योहन. मत्ती. २०:२१—पाप-पुरुष. २ थिस. २:४—दियोत्रिफी. ३ योहन. ९।

क्ष

क्षमा—आपस में—आज्ञा हैं. उत्प ५०:१७. मत्ती. ५:२३; ६:१४; १८:२१, ३५. मार्क ११:२५. लूक. ११:४; १७:४; २ कर. २:७. इफिसी. ४:३२. कल. ३:१३. याक. २:१३।

—शत्रुओं को—मत्ती. ५:४४. लूक. ६:२७. रोमी. १२:१४,१९।

—क्षमा—

—पाप की. प्रार्थना की गई. निर्ग. ३२:३२; १ राजा. ८:३०; २ इति. ६:२१. भजन. २५:१८; ३२; ५१; ७९:९; १३०. दान. ९:१९. आमोस. ७:२. मत्ती. ६:१२।

—की वाचा दी गई. लैव्य. ४:२०; २ इति. ७:१४. यश. ३३:२४; ५५:७. यिर्म. ३:१२; ३१:२०,३४; ३३:८; यहेज. ३६:२५; होशे. १४:४. मीका. ७:१८. लूक. २४:४७. प्रेरित. ५:३१; २६:१८. इफिसी. १:७; कल. १:१४. याकूब. ५:१५; १ योहन. १:९।

त्र

त्राण—देखो छुटकारा।

—की शर्त. योहन. ३:१६,१७,३६; ६:४७; प्रेरित. १६:३१; १ योहन. ५:१०।

—के लिये साहस करना उचित है. मत्ती. ७:१४; २२:११-१४. लूक. १३:२४. १ कर. ९:२४-२७. फिल. २:१२. इब्र. २:१३; ६:११,१२; २ पितर. १:५-१०; १ योहन. २:२४।

—विश्वास का फल है. १ पितर. १:९।

की भाग्यमानी. यश. ६१:१०।

का सुसमाचार प्रचार करनेहारे. यश ५२:७. रोमी. १०:१५।

सुसमाचार में देने का बल है. रोमी. १:१६; १ कर. १:१८-२४।

के काम डरते और कांपते करने उचित हैं. फिल. २:१२. देखो. छुटकारा।

त्राण—देखो, त्रान।

त्रानकर्त्ता—देखो योशु मसीह।

त्रिदेव—पुरानी व्यवस्था में दिखाई देते हैं. उत्प. १:२६; ३:२२; ११:७; यश. ६:८।

—नयी व्यवस्था में. मत्ती. ३:१६,१७; २८:१९; मार्क. १:१०; ११; २ कर. १३:१४।

त्रैकत्व—देखो, त्रिदेव।

ज्ञ

ज्ञान—परमेश्वर से मिलता है. निर्ग. ८:१०; १८:१६; ३१:३; २ इति. १:१२; ११९:६६. नीति. १:४; २:६; सभोप. २:२६. यश. २८:९. यिर्म. २४:७; ३१:३३ दान. २:२१. मत्ती. ११:२५; १३:११; १ कर. १:५; २:१२; १२।

—के लाभ. भजन. ८९:१५. नीति. १:४,७; ३:१३; ४; ९:१0; १०: १४; २१:१; १३:१६; १८:१५. सभोप. ७:१२. मलाकी. २.७. इफिसी. ३:१८; ४:१३; याकूब ३:१३; २ पितर. २:२०।

—की कमी. नीति. १:२२; १९:२; यिर्म. ४:२२; होशे. ४:६; रोम. १:२८; १ कर. १५:३४।

—के लिये प्रार्थना. योहन. १७:३. इफिसी ३:१८. कल. १:९; २ पितर. ३:१८।

की खोज. १ कर. १४:१. इब्र. ६:१; २ पितर. १:५।

का बुरा फल. १ कर. ८:१।

की जिम्मावरी. गिन. १५:३०. व्यवस्था. १७:१२. लूक. १२:४७ योहन. १५:२२; रोमी. १:२१; २:२१. याक. ४:१७।

—मनुष्य का, अधूरा है. सभोप. १:१८; यश. ४४:२५; १ कर. १:१९; ३:१९; २ कर. १:१२।

—का वृक्ष. उत्प. २:९।

Printed by C. W. Boyle. at the Mission Press, Allahabad.